

१

पदं मानस कोपां आनीयं प्रयागदीरा [illegible]परखानीन ।। २१

सं) ५७ १९ पात ।। कारतिक सोढ्ढी नवमी दिवसे ।।

१५८

मानस-कोश

अर्थात्

रामचरितमानस

के

कठिन कठिन शब्दों के पर्यायवाचक
सरल शब्दों का कोश

इंडियन प्रेस, इलाहाबाद

१९०९

मानस-कोश

अर्थात्

रामचरितमानस

के

कठिन कठिाब्दों के पर्यायवाचक सरल शब्दों का कोश

जिसे

**काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के कतिपय सभासदों ने
सभा की आज्ञानुसार बहुत परिश्रम से
सम्पादित किया**

और

आँचकौड़ी मित्र द्वारा

इंडियन प्रेस, प्रयाग

से छपकर प्रकाशित हुआ।



दिसम्बर १९०९ ई०

सर्वाधिकार रक्षित मूल्य १)

मानस-कोश।

अर्थात्

गोस्वामि-तुलसीदासरचित

रामचरितमानस (रामायण)

का

हिन्दी में

शब्दार्थ-कोश।

नं० शब्द		अर्थ
१—अकथ	...	वर्णन करने की सामर्थ्य के बाहर, न कहने योग्य, जिस का बयान न कर सके।
२—अकथनीय	...	अवर्णनीय, वाक् शक्ति से परे, न कहने के योग्य, जो कहा न जा सके।
३—अकथ्य	...	बयान से बाहर, वाणी से परे, न कहने योग्य, गुप्त।
४—अकनि	...	सुन कर, श्रवण कर के।
५—अकरन	...	निष्कारण, बे-सबब, प्रयोजनरहित, बे-मतलब, हेतुशून्य, नाहक़, न करने योग्य।
६—अकल	...	कलारहित, निराकार, अवयवशून्य, ब्रह्म।
७—अक्षय	...	अविनाशी, जिस का कभी नाश न हो, नाशरहित, जिस का किसी प्रकार नाश न हो सके।
८—अकसर	...	विशेषतः, प्रायः, ख़ास कर के, केवल, अकेला।
९—अकाज	...	बिगाड़, हानि, घटी, घाटा, अनरथ, नुक़सान, कार्यहानि, काम का बिगाड़।
१०—अकाम	...	निःस्वार्थ कामनारहित, निष्काम, जिसको कुछ चाह न हो।
११—अकाल	...	असमय, कुसमय, बिना ऋतु, बे-मौसिम, बे-वक्त, दुर्भिक्ष।
१२—अकास	...	आकाश, शून्य, आसमान, गगन, नभ, पोल, अन्तरिक्ष।
१३—अकुल	...	कुलरहित, कुलहीन, जिसके कुल न हो, निगोड़ा, नीच।

नं० शब्द		अर्थ
१४—अकुलाना	...	घबराया, व्याकुल हुआ, घबराना, व्याकुल होना।
१५—अकूपार	...	समुद्र।
१६—अकंटक	...	निष्कंटक, कांटारहित, शूलरहित, निरुपाधि, शत्रुहीन, बेखटके।
१७—अकंपन	...	कंपरहित, दृढ़, मज़बूत, कठोर, एक राक्षस का नाम।
१८—अकिंचन	...	दीन, धनहीन, दरिद्री, निर्धन, जिसके पास कुछ भी न हो।
१९—अकुंठ	...	कड़ा, तीखा, चोखा, तेज़, पैना, जो न टूट सके न छिद सके।
२०—अखाड़ा, अखरा		खेलने का स्थान, नाच गान कुश्ती आदि करने वा सीखने का स्थान, साधु वा गुसाइयों का दल अथवा उनके रहने का स्थान।
२१—अखिल	...	सम्पूर्ण, पूर्ण, सारा, पूरा, समस्त, सब, सकल, सब का सब, अनन्त, अनगिनत।
२२—अखंड	...	पूरा, भागरहित, बेटूटा, नाशरहित, निरन्तर।
२३—अग	...	अचल, पर्वत, वृक्ष, जो न चल सके, अचर, जड़ पदार्थ।
२४—अगणित, अगनित		अनगिनत, असंख्य, जो गिना न जा सके।
२५—अगम	...	जहां कोई जा न सके; गमन की सामर्थ्य से बाहर, अथाह, बुद्धि से बाहर, कठिन।
२६—अग्र	...	अगुवा, आगे आगा, मुख्य, प्रथम, प्रधान, एक वैश्य राजा का नाम।
२७—अगर	...	सुगन्धित काष्ठ विशेष, एक सुगंधित लकड़ी।
२८—अगवानी	...	आगे जाकर लेआना, पेशवाई, आगे जाकर लेआने वाले।
२९—अगस्त	...	ऋषिविशेष, कुम्भज ऋषि, नक्षत्रविशेष, एक तारे का नाम।
३०—अगहन	...	मार्गशीर्ष मास, मगसिर महीना।
३१—अगहुड़	...	पहिले पहिल, आगे, पहिले, आगे की ओर, सामने।
३२—अगाध	...	अथाह, बहुत गहिरा।
३३—अगिनि, अग्नि	...	आग, आँच।
३४—अगुण, अगुन	...	गुणरहित, निर्गुण, ब्रह्म, औगुन, दोष।
३५—अगोचर	...	इंद्रियों की गति से बाहर, जो इन्द्रियों से न किया वा न जाना जाय।
३६—अघ	...	पाप, अपराध, अधर्म, दोष, गुनाह, चूक।
३७—अघटित	...	अगम, जो कभी नहीं हुआ वा कभी नहीं बना, असम्भव।
३८—अघाई	...	पेट भर के, तृप्त हो के, मनमानता पाकर।
३९—अघात	...	चोट, छेदन, मारना, खड़का।
४०—अघाती	...	मारनेवाला, बिना चोट का, तृप्त होती।
४१—अघारी	...	पापों का शत्रु, ईश्वर, श्रीकृष्णचन्द्र, श्रीरामचन्द्र।
४२—अचगरी	...	खोटाई, नटखटी, दुष्टता, बदज़ाती।
४३—अच्छ (अक्ष)	...	आँख, नेत्र, नयन, पासा, इंद्रिय, रुद्राक्ष, रथ, पहिया, सर्प, गरुड़।
४४—अच्छत (अक्षत)		पूरा, अछिद्र, साबूत, बिन टूटा चावल।
४५—अचर	...	जड़ पदार्थ, जो चल न सके, अचल, अटल।
४६—अचरज (आश्चर्य)		अचम्भा, तअ़ज्जुब।
४७—अचल	...	जो चलायमान न हो, स्थिर, पर्वत, वृक्ष इत्यादि जड़ पदार्थ।

नं० शब्द		अर्थ
४८—अचला	...	पृथ्वी, भूमि, ज़मीन ।
४९—अचंचल	...	शांत, स्थिर, निश्चल, थिर, चंचलतारहित ।
५०—अचंभा	...	आश्चर्य, तअ़ज्जुब ।
५१—अछत	...	होते, रहते, वर्तमान रहते, सब प्रकार से कुशल, बेदाग़ ।
५२—अछय (अक्षय)	...	नाशरहित, अविनाशी, जिसका क्षय न हो, जो कभी न टूटे ।
५३—अछयकुमार (अक्षयकुमार)	...	राक्षस विशेष, रावण के बेटे का नाम ।
५४—अज	...	ब्रह्मा, विष्णु, शिव, जो योनि से उत्पन्न न हो, जिसका जन्म न हो, एक राजा का नाम, बकरा, अब, आज ।
५५—अजगर	...	बड़ा भारी और मोटा सर्प, जिसे डोलना कठिन जान पड़े ।
५६—अजगव	...	बड़ा धनुष, शिवजी का धनुष, पिनाक ।
५७—अज्ञ	...	अज्ञान, मूर्ख, जड़, बेवक़ूफ़, बेसमझ, अजान, अनसमझ ।
५८—अज्ञता	...	अज्ञानता, मूर्खता, बेसमझी, बेवक़ूफ़ी ।
५९—अजय	...	अजित, अजीत जो जीता न जा सके ।
६०—अज्ञात	...	अनजाना, बेजाने, न जाना हुआ ।
६१—अज्ञान	...	अनजान, मूर्ख, बेसमझ, बेवक़ूफ़ ।
६२—अजर	...	जो बूढ़ा न हो, जो सदा जवान रहे ।
६३—अजसी	...	निन्दित, यशरहित ।
६४—अजहुं वा अजहूं		अब भी, आज भी, अद्यापि ।
६५—अजादि	...	ब्रह्मादिक देवता ।
६६—अजामिल	...	एक पापी का नाम जो चांडाली का संसर्गी था और अपने पुत्र का नारायण नाम लेकर तर गया ।
६७—अजित	...	जो जीता न जाय, अजेय, न जीतने योग्य ।
६८—अजिन	...	मृगचर्म, मृगछाला, पशुचर्म ।
६९—अजिर	...	आँगन, अँगनाई, घरके सामने का मैदान ।
७०—अजेय	...	न जीतने योग्य, अजित ।
७१—अट्टहास	...	ज़ोर की हँसी, ठठाय कर हास्य, खिलखिला कर हँसना ।
७२—अटन	...	भ्रमण, घूमना, चाल, गति, फिरना, अटारियाँ ।
७३—अटपट	...	उलटा पुलटा, बे सिर पैर का, बेहिसाब, बेपते ।
७४—अटवी	....	जंगल, वन, कानन, गहन ।
७५—अटा वा अटारी		कोठा, सब से ऊपर की कोठरी ।
७६—अढुकि	...	उठंग कर, सहारा लेकर ।
७७—अणिमा वा अनिमा		अष्ट सिद्धियों में से एक जिसके प्राप्त होने से अति छोटा रूप धारण कर सकता है ।
७८—अतएव	...	इस हेतु, इस कारण, इसलिए, इस वास्ते ।
७९—अतनु	...	बिना शरीर का, देहरहित, कामदेव ।
८०—अत्र	...	यहाँ, इहाँ, इस स्थान में, इस जगह, इसमें, इस ठिकाने ।

नं० शब्द		अर्थ
८१—अतर्क	...	तर्करहित, बेदलील, बिना हुज्जत, जिसमें हुज्जत करने की दरकार नहीं।
८२—अत्रि	...	मुनि विशेष, अनुसूया के पति।
८३—अति	...	बहुत, अधिक, बड़ा, बीता हुआ, हो चुका।
८४—अतिथि	...	पाहुन, मेहमान, जो किसी तिथि में न आता हो कभी अनायास आजाय।
८५—अतिसै(अतिशय)		अधिकतर, विशेषतर, बहुत ही।
८६—अतीत	...	संन्यासी, त्यागी, स्वतंत्र, जो बीत चुका, संसार से छुटा हुआ।
८७—अतुल	...	तुलनारहित, जिस की तोल न हो सके, अप्रमाण, बे-अन्दाज़।
८८—अतंक(आतङ्क)...		भय, डर, ख़ौफ़, दुःख, रोग, सन्ताप।
८९—अथ	...	मंगल, अनन्तर, आरम्भ, सम्पूर्णता, अथवा।
९०—अथब	...	अस्त होना, डूबना, बूड़ जाना।
९१—अथवा	...	वा, या, चाहे, किंवा, प्रकारान्तर, या तो।
९२—अथयउ	...	डूब गया, बूड़ गया, अस्त हो गया।
९३—अथाई	...	बैठक, बैठने का स्थान, बैठ कर, विश्राम कर के।
९४—अदत्ता	...	बिना दिया, असमर्पित।
९५—अदन	...	भोजन, आहार, खाना।
९६—अदभ्र	...	बहुत, पूर्ण, पूरा, ढेरसा, सम्पूर्ण।
९७—अद्भुत	...	विलक्षण, आश्चर्यजनक, विचित्र, अनोखा, अपूर्व।
९८—अदाया	...	दयाशून्यता, निठुरता, कठोरता, निर्दयता।
९९—अदिति	...	देवमाता, देवताओं की माँ, दक्षप्रजापति की कन्या, कश्यप मुनि की पत्नी।
१००—अदिन	...	बुरे दिन, बुरी दशा, खोटे दिन, कुदिन, दुर्दिन।
१०१—अदृश्य	...	गुप्त, छिपा हुआ, जो न देख पड़े, दृष्टि से बाहर।
१०२—अदृष्ट	...	नहीं देखा गया, भाग्य, दुर्भाग्य, प्रकृति से उत्पन्न।
१०३—अद्रि	...	पर्वत, पहाड़, अचल, गिरि।
१०४—अदेय	...	न देने योग्य, न देने के लायक़।
१०५—अद्वैत	...	द्वैतरहित, एक, भेदरहित, जिसके समान दूसरा नहीं, शंकराचार्य का मत जिस में उन्हों ने ब्रह्म और जीव को एक माना है।
१०६—अध	...	नीचे, तले, नीच।
१०७—अधगो	...	नीचे की इन्द्रियाँ, गुदा आदि।
१०८—अधम	...	नीच, पापी, चांडाल, पापिष्ठ।
१०९—अधमाई	...	पापिष्ठता, नीचता, दुष्टता।
११०—अध्यक्ष	...	स्वामी, प्रभु, मालिक, अफ़सर।
१११—अध्ययन	...	पढ़ना, पठन।
११२—अध्यापक	...	पाठक, पढ़ानेवाला, विद्यागुरु, उस्ताद।
११३—अध्याय	...	पाठ, पर्व, प्रकरण, टुकड़ा, बाब, हिस्सा।
११४—अधर	...	नीचे का होंठ, अन्तर, मध्य।
११५—अधर्म	...	पाप, अंधेर, अन्याय, अनीत, धर्म नहीं, विधर्म।
११६—अधरामृत	...	होठों में की मिठास, होठों का रस।

नं० शब्द		अर्थ
११७—अधार (आधार)		सहारा, अवलम्ब, आश्रय ।
११८—अधिक	...	बहुत, विशेष, ज़्यादा ।
११९—अधिकाई	...	बहुतायत, बढ़ती, अधिकता, आधिक्य, ज़्यादती ।
१२०—अधिकार	...	स्वामित्व, योग्यता, बपौती, अख़्तियार, ओहदा, काम, कार्य ।
१२१—अधिकारी	...	स्वामी, मालिक, प्रभु, अधिकारप्राप्त, जिसे अधिकार मिला हो ।
१२२—अधिगत	...	ऊपर गये हुए, स्वर्गीय, मुक्त ।
१२३—अधिप	...	अधिपति, राजा, स्वामी, मालिक, भूपाल ।
१२४—अधिवास	...	टिकने का स्थान, रहने की जगह ।
१२५—अधिवासी	...	निवासी, किसी स्थान में रहने वाला ।
१२६—अधीन	...	आज्ञाकारी, वशीभूत, सेवक, ताबेदार, आश्रित ।
१२७—अधीर	...	चंचल, उतावला, घबराया हुआ, असंतुष्ट, चपल, अस्थिर, चटपटा, जल्दबाज़, धीरज बिना, धैर्यरहित ।
१२८—अधीस (अधीश)		स्वामी, मालिक, राजा, ईश्वर ।
१२९—अधृष्ट	...	बोदा, नम्र, नहीं ढीठा, दीन ।
१३०—अधोमुख	...	नीचे मुँह वाला, जिसका मुँह नीचे की ओर हो, सिर झुकाये हुए, सलज्ज, शरमिन्दा ।
१३१—अन	...	न, नहीं ।
१३२—अनअहिवात	...	वैधव्य, रँडापा, विधवापन, सौभाग्यरहित ।
१३३—अनइच्छा	...	बिना चाह, चाह नहीं, बेदरकार ।
१३४—अनइच्छित	...	बिना चाह का, जिस की दरकार नहीं ।
१३५—अनइस	...	बुरा, निकम्मा, ख़राब ।
१३६—अनक (आनक)		मृदंग, नगारा, नीच, छोटा ।
१३७—अनख	...	ईर्ष्या, दाह, अकस, जलापा, कुढ़न, क्रोध, वैर, द्वेष, द्रोह ।
१३८—अनखगार	...	क्रोधयुक्त गाली, क्रोध की गाली ।
१३९—अनघ	...	पापरहित, सुकृती, पुण्यवान्, पवित्र, शुद्ध ।
१४०—अनट	...	अनुचित, अन्याय, विपरीत, गाँठ, गिरह, ऐंठ, छल ।
१४१—अनत (अन्त)	...	अन्यत्र, दूसरी ठौर, अन्य स्थान, सीमा, हद्द, आख़िर ।
१४२—अन्न	...	अनाज, नाज, ग़ल्ला ।
१४३—अन्नप्रासन (अन्नप्राशन)	...	अन्न चाखन, अन्न स्वादन, अनाज का चीखना, बालक के १६ संस्कारों में से एक जिस में पहले पहल अनाज चखाया जाता है ।
१४४—अनपायिनी	...	नाशरहित, अचला, नित्य, दृढ़ ।
१४५—अनभल	...	बुरा, खोटा, बुराई, खोटाई ।
१४६—अनभिज्ञ	...	अनजान, नादान, नावाक़िफ़, अज्ञान ।
१४७—अनमिल	...	बे-मेल, बे-जोड़, टूटे फूटे, बे-सिलसिले, अटपट ।
१४८—अन्य	...	और, दूसरा, पराया ।
१४९—अन्यत्	...	दूसरी जगह, और स्थान में ।
१५०—अन्यथा	...	नहीं तो, सिवा इसके, झूँठ, व्यर्थ, वृथा ।

नं० शब्द		अर्थ
१५१—अनयन	...	बिना आँख का, चक्षुरहित, अन्धा।
१५२—अन्यायो	...	अधर्मी, न्यायशून्य, न्यायरहित, दुष्टात्मा, बेइन्साफ़।
१५३—अनयास (अनायास)	...	आप से आप, स्वतः, बिना परिश्रम, बिना यत्न, एका एक, इत्तिफ़ाक़न्।
१५४—अनरथ(अनर्थ)	...	वृथा, अनुचित, निरर्थक, निष्फल, अकारथ, हानि, उत्पात।
१५५—अनल	...	अग्नि, आँच, आग।
१५६—अन्वय	...	सम्बन्ध, वंश, कुल।
१५७—अन्वहं	...	निरन्तर, हमेशा, क्रोधरहित।
१५८—अन्हवाए	...	नहवाए, स्नान कराए, नहलाए।
१५९—अनहित	...	वैरी, शत्रु, द्वेषी, बुरा करने वाला, बुरा, बुराई।
१६०—अनाथ	...	निराश्रय, बिना रक्षक, माता पिता रहित, जिसका कोई ख़बर लेने वाला न हो।
१६१—अनादर	...	अपमान, निरादर, हलकापन, तिरस्कार, त्याग, असत्कार।
१६२—अनादि	...	आदिरहित, आरम्भशून्य, जिसके आरम्भ का पता न हो कि कब से वा कहां से प्रारम्भ हुआ, ईश्वर।
१६३—अनाम	...	नामरहित, बे-नाम, जिसका कोई नाम न हो, ईश्वर।
१६४—अनामय	...	रोगरहित, नीरोग, आरोग्य, अच्छा भला, व्याधिरहित।
१६५—अनामिका	...	चौथी उँगली, मध्यमा और कनिष्ठिका के बीच वाली उँगुली।
१६६—अनायास	...	आप से आप, स्वतः, बिना परिश्रम बिना यत्न, एकबारगी, इत्तिफ़ाक़न्।
१६७—अनारंभ	...	अनुदय, उद्यमरहित, अनुपक्रम, बे-बुनियाद, निर्मूल।
१६८—अनिमनी(अनमनी)		उदास, निमान, हताश, विमना, बेमनकी।
१६९—अनिमा (अणिमा)		अष्ट सिद्धियों में से एक जिसके द्वारा अति लघुरूप धारण कर सके।
१७०—अनिर्वाच्य	...	अकथ्य, जो कहने योग्य न हो, जो कहा न जा सके।
१७१—अनिल	...	वायु, हवा, बयार, बतास, ४९ की संख्या।
१७२—अनी	...	नोक, किनारा, पतली वा तीखी धार, सेना, दल, कटक, फ़ौज, क्रोध, अनख, ग़ुस्सा।
१७३—अनीक	...	सेना, कटक, समूह, सेना का।
१७४—अनीस(अनीश)	...	ईश्वर नहीं, जीव, स्वामिरहित, जो किसी को भी ईश्वर न माने, अनीश्वरवादी।
१७५—अनीह	...	चेष्टारहित, इच्छारहित, निर्गुण, रूपरहित, आलसी, ढीला, बोदा।
१७६—अनु (अणु)	...	पीछे, साथ, अनुसार, अधीन, समीप, कण, अत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, थोड़ा।
१७७—अनुकथन	...	बराबर कहना, बार बार कहना, घड़ी घड़ी कहना, आपस की बात चीत, किसी के अनुसार वा अनुकूल कहना, कही हुई बात का कहना, फिर से कहना।
१७८—अनुक्रम	...	परिपाटी, रीति, भाँति।
१७९—अनुक्रमनिका वा अनुक्रमणिका	...	क्रमानुसार, प्रबन्ध, सूचीपत्र।

नं० शब्द		अर्थ
१८०—अनुकरन (अनुकरण)	...	नक़ल, अनुरूप, सदृशीकरण, प्रतिरूपकरण, ज्यों का त्यों करना।
१८१—अनुकंपा	...	दया, अनुग्रह, कृपा, मेहरबानी।
१८२—अनुग	...	अनुगामी, पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलने वाला, अनुचर, सेवक, ताबेदार।
१८३—अनुगत	...	आश्रित, ताबे।
१८४—अनुग्रह	...	कृपा, दया, प्रसन्नता, मेहरबानी।
१८५—अनुगामी	...	पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलने वाला, साथी, नौकर, अनुचर, सेवक, ताबेदार।
१८६—अनुचर	...	नौकर, सेवक, दास, चाकर, पीछे चलने वाला, अनुसार चलने वाला।
१८७—अनुज	...	छोटा भाई, लघु भ्राता, पीछे से जन्मा हुआ।
१८८—अनुज्ञा	...	आज्ञा, अनुमति, चितावनी।
१८९—अनुदिन	...	प्रति दिन, दिन दिन, सदा, नित्य, रोज़ रोज़।
१९०—अनुपम	...	उपमारहित, अनूप, अपूर्व, उत्तम, बेमिसाल, बेनज़ीर।
१९१—अनुभव	...	ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, विचार, बोध, प्रतीति, उपलब्ध ज्ञान।
१९२—अनुभाव	...	महिमा, बड़ाई, भाव का सूचक, प्रभाव, सज्जन के ज्ञान का निश्चय।
१९३—अनुभूत	...	अनुभव किया हुआ, विचार किया हुआ, प्रतीति किया हुआ, निश्चित।
१९४—अनुमत	...	सहमत, एक मत, एक राय।
१९५—अनुमति	...	सम्मति, आज्ञा, विचार, राय, सलाह।
१९६—अनुमान	...	अटकल, अन्दाज़।
१९७—अनुमोदन	...	आनन्दयुक्त, सम्मति, प्रवृत्ति प्रदान, प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार, ख़ुशी से मंज़ूरी।
१९८—अनुराग	...	प्यार, मुहब्बत, प्रेम, प्रीति, छोह, स्नेह, मोह, अल्प ललाई, फीकी लाली, हलकी सुर्ख़ी।
१९९—अनुरागी	...	प्रेमी, स्नेही, मुहब्बती।
२००—अनुरूप	...	सदृश, तुल्य, योग्य, बराबर, अनुसार, समान, एक सा, ज्यों का त्यों।
२०१—अनुरोध	...	रोक, रुकाव, उपकार, अपेक्षा, अनुसरण, प्रीति, अनुराग, अनुकूलता।
२०२—अनुवाद	...	उलथा, तरजुमा, एक भाषा से दूसरी भाषा में करना, निन्दा, बार बार कहना।
२०३—अनुवादक	...	उलथा करने वाला, तरजुमा करने वाला, भाषा पलटने वाला।
२०४—अनुसरहीं	...	अनुगमन करते हैं, पीछे चलते हैं, अनुसार चलते हैं।
२०५—अनुसासन अनुशासन	...	आज्ञा, हुक्म।
२०६—अनुष्टुप्	...	छन्द विशेष जो ३२ अक्षर का होता है।
२०७—अनुष्ठान	...	आरम्भ, प्रतिज्ञायुक्त आरम्भ।
२०८—अनुसरन अनुसरण	...	पीछे चलना, साथ साथ चलना, अनुसार चलना, अनुगमन, अनुवर्त्तन।

नं० शब्द	अर्थ
२०९—अनुसूया ...	अत्रिप्रिया, अत्रि मुनि की भार्या निन्दारहित, पापरहित ।
२१०—अनुहर, अनुहार...	तद्रूप, वैसाही, अनुसार, योग्य, तुल्य, सदृश, समान, ज्यों का त्यों ।
२११—अनूप ...	उपमारहित, अनुपम, अपूर्व, बेमिस्ल, बेनज़ीर ।
२१२—अनूपान ...	सहयोगी, औषधका सहकारी, बद्रक़ा ।
२१३—अनृत ...	झूठ, मिथ्या, असत्य, पाखंड ।
२१४—अनेक ...	बहुत, एक से अधिक, ढेर से, अधिक, कईएक ।
२१५—अनैसे ...	टेढे, कुदृष्टि से, बुरी नज़र से, टेढ़ी दृष्टि से ।
२१६—अप् ...	उलटा, हानि, नहीं, बुरा, भेद, छिपाव, बुरीतरह से, अलग, भिन्न, पानी, जल, नीर ।
२१७—अपकार ...	निरादर, शत्रुता, अनिष्ट, हानि, बिगाड़ ।
२१८—अपकीर्ति ...	अपयश, अपवाद, निन्दा, कुजस, बुराई,
२१९—अपगति ...	दुर्दशा, दुर्गति, —अपनी गति; अपनी चाल, अपनीपहुंच ।
२२०—अपगा (आपगा)...	नदी, सरित्, दरिया ।
२२१—अपघात ...	आत्महत्या, आपसे अपनी जान देना, आत्मघात, शत्रुता, धोखे से मार डालना, कार्यहानि ।
२२२—अपछरा (अप्सरा)	स्वर्ग की वेश्या, स्वर्ग की नाचने गाने वाली स्त्री, स्वर्गीय वारवधू ।
२२३—अपजस (अपयश)	अपकीर्ति, निन्दा, बुराई, बदनामी ।
२२४—अपडर ...	झूठा डर, अपना डर, बुरा डर, निज डर, भय, निडर, निर्भय ।
२२५—अपत ...	अप्रतिष्ठा, बेइज़्ज़ती, पापी, निर्लज्ज ।
२२६—अपत्य ...	सन्तान, पुत्र, औलाद ।
२२७—अपदेश ...	अपना देश, स्वदेश, निज देश ।
२२८—अपना वा अपनी...	निज, स्वकीय, आत्मीय ।
२२९—अपभय ...	भय, डर, निजडर, अपना डर, निर्भय, विगतभय, निर्लज्ज, झूठ ।
२३०—अपमान ...	अनादर, निरादर, तिरस्कार, हलकापन, बेइज़्ज़ती ।
२३१—अपजस (अपयश)	अपकीर्ति, बुराई, बदनामी, निन्दा, कुजस ।
२३२—अपर ...	दूसरा, बेगाना, पराया, और, सिवाय ।
२३३—अपरना (अपर्णा)	बिना पत्तेवाली, उमा, पार्वती, भवानी ।
२३४—अप्रतिहत ...	प्रतिबन्धरहित, बिना रोक, अपीड़ित, जिसमें रुकावट न हो ।
२३५—अप्रसन्न ...	दुःखी, उदास, प्रसन्नतारहित ।
२३६—अपराध ...	पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म, गुनाह, क़ुसूर ।
२३७—अपराधी ...	पापी, दोषी, अधर्मी, अन्यायी, मुजरिम, गुनहगार, क़ुसूरवार ।
२३८—अप्रिय ...	जो प्यारा न हो, शत्रु, दुखदायी ।
२३९—अपरिचित ...	अनजाना, बिना जान पहिचान का ।
२४०—अपरिमित ...	बेप्रमाण, अधिकतर, बेहद्द, बेअन्दाज़, बहुतही ।
२४१—अपलोक ...	अपना लोक, निज लोक, अयश, अपयश, अपकीर्ति, निन्दा, दोष ।
२४२—अपवर्ग ...	मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण ।
२४३—अपवाद ...	निन्दा, अपयश, बदनामी, कलंक, बुराई ।

नं० शब्द		अर्थ
२४४—अपवाद	...	बुरा शब्द, अशुद्ध शब्द, निरर्थक शब्द, निन्दा ।
२४५—अप्सरा	...	स्वर्ग की वेश्या, स्वर्ग की नर्त्तकी ।
२४६—अपसव्य	...	विपरीत, उलटा, दहिना अंग ।
२४७—अपहरई	...	चुराता है, नाश करता है, चुरा ले, छीन ले, नाश करे, हरण करे ।
२४८—अपहारी	...	चोर, हरण करने वाला, नाशक ।
२४९—अपान	...	अपना, गुदा की वायु, अधोवायु, अपनपौ, अपना आपा ।
२५०—अपार	...	पाररहित, अपरंपार, अनन्त, बेहद, निःसीम, जिसके पार न जा सके ।
२५१—अपि	...	भी, निश्चय ।
२५२—अपीह	...	यह भी ।
२५३—अपेय	...	नहीं पीने योग्य, नहीं पान करने योग्य ।
२५४—अपेल	...	अचल, न टालने योग्य, न हटाने योग्य, मानने योग्य ।
२५५—अफल	...	निष्फला, बिना फल की, वृथा, घृतकुमारी, घीकुवार ।
२५६—अफुल्ल	...	उदास, पुष्परहित, बिना फूल, कली ।
२५७—अफेन	...	झाग-रहित, बिना फेन, कफरहित ।
२५८—अब	...	इस घड़ी, इसी समय, अभी, इस वक्त ।
२५९—अब्ज,	...	कमल, पद्म, शंख, चंद्र, धन्वन्तरि वैद्य ।
२६०—अब्धि	...	समुद्र, सागर, सिंधु ।
२६१—अबध्य	...	न मरने योग्य, न वधकरने योग्य ।
२६२—अबल	...	निर्बल, दुर्बल, कमज़ोर, बलरहित ।
२६३—अबला	...	स्त्री, निर्बल स्त्री, सुकुमार स्त्री, दुर्बल स्त्री ।
२६४—अबाध्य	...	विना वाधा, अतर्क, वाधारहित, रोक-रहित ।
२६५—अबिरल	...	सघन, गझिझन, बिना छितराया ।
२६६—अबीर	...	बिना भाई का, कादर, होली में खेलने का एक प्रकार का चूर्ण ।
२६७—अबुध	...	बे-समझ, अज्ञानी, निर्बुद्धि, बेवक़ूफ़ ।
२६८—अबूझ	...	अनजान, अज्ञानी, बेवक़ूफ़, निर्बुद्धि, बे-समझ ।
२६९—अभय	...	निडर, निर्भय, भयरहित, ढीठा, बिना डर ।
२७०—अभया	...	निडर स्त्री, छोटी हड़, हरीतकी, खस ।
२७१—अभ्यागत	...	पाहुन, मेहमान, नित्य आनेवाला भिक्षुक, आया हुआ ।
२७२—अभ्यास	...	साधन, चिन्तन, बारबार करना, रब्त, मश्क़ ।
२७३—अभ्र	...	आकाश, बादल, मेघ ।
२७४—अभ्रक	...	अबरक, भोडल, भोडर ।
२७५—अभाग्य	...	दुर्भाग्य, अभागा, दरिद्री ।
२७६—अभागा	...	दरिद्री, भाग्यशून्य, दुर्भाग्य, मंदभागी, कम्बख़्त ।
२७७—अभि	...	सब ओर से, चारों ओर से, पास, को, इच्छा, चाह, बार बार, बहुत, सामने, ऊपर, अधिक, पहिले ।
२७८—अभिअंतर(अभ्यंतर)		अन्दर का, भीतरी, अन्तःकरण का, हृदय का, अन्तरीय ।
२७९—अभिज्ञ	...	प्रवीण, क़दरदान, गुणग्राहक, ज्ञानी, जानकार, समझदार ।

नं० शब्द		अर्थ
२८०—अभिजित	...	नक्षत्र-विशेष, लग्न-विशेष, दिन का अष्टम भाग ।
२८१—अभिधान	...	कोश, शब्द-संग्रह ।
२८२—अभिनय	...	नाटक का खेल ।
२८३—अभिनंदन	...	सेवा, अनुमोदन, संतोषपूर्वक प्रशंसा करना, आनन्ददजनक, स्तुति-स्वीकार ।
२८४—अभिप्राय	...	आशय, प्रयोजन, अर्थविचार, मतलब ।
२८५—अभिमत	...	वांछित, चाहा हुआ, माना हुआ, अभीष्ट, सम्मत, पसन्द किया हुआ ।
२८६—अभिमान	...	घमंड, अहंकार, दाप, दर्प, अकड़, शेख़ी ।
२८७—अभिमानी	...	घमंडी, अहंकारी, मदमत्त, शेख़ीबाज़ ।
२८८—अभिलाष	...	इच्छा, चाह, कामना, वांछा ।
२८९—अभिषेक	...	मार्जन, अभिषेचन, राजगद्दी के समय मंत्रयुक्त मार्जन वा स्नान ।
२९०—अभिसार	...	अपने प्रीतम से मिलने के लिए स्त्री की यात्रा, यात्रा, गमन ।
२९१—अभिसारिका	...	पति से मिलने के लिए संकेत स्थान में जानेवाली स्त्री ।
२९२—अभीरू	...	निडर, निर्भय, निर्दोष, महादेव, भैरव, शतावरी ।
२९३—अभीष्ट	...	वांछित, प्रिय, अभिलाषित, प्यारा ।
२९४—अभृतरिपु	...	अजातशत्रु, शत्रुरहित, रिपुहीन, जिसका कोई वैरी न हो ।
२९५—अभेद	...	भेदरहित, अछिद्र, जो न टूट सके न छिद सके, एक ही, एक जी, समान, एक सा ।
२९६—अभंग	...	बिना टूटा, समूचा, पूरा ।
२९७—अभंगू	...	न टूटनेवाला, दृढ़, मज़बूत ।
२९८—अम्र	...	आम, आम्रफल, अम्ब ।
२९९—अमर	...	देवता, जो कभी न मरे ।
३००—अमरता	...	मरणहीनता, देवत्व, सदा जीवन, चिरजीवन ।
३०१—अमर्ष	...	क्रोध, असह्य, गुस्सा, तामस, कोप ।
३०२—अमर्ष (अमर्षण)		क्रोधी, सहनेवाली या वाला, कोपयुक्त ।
३०३—अमराई	...	आम की बारी, आम का बगीचा, बारी, बगीचा ।
३०४—अमरावती	...	इन्द्र की पुरी, स्वर्ग, एक नगरी का नाम ।
३०५—अम्ल	...	खट्टा, खटाई ।
३०६—अमल	...	नशा, मादक वस्तु, निर्मल, उजला, साफ़, राज्य, काम, प्रयोग ।
३०७—अमात्य	...	मंत्री, दीवान, सचिव, वज़ीर ।
३०८—अमान	...	प्रमाण से बाहर, बेहद, अहंकाररहित, निरभिमान ।
३०९—अमानी	...	अभिमान न करनेवाला, वैरभावरहित, उदासीन ।
३१०—अमानुष	...	जो मनुष्य से न हो सके, मनुष्य की शक्ति से बाहर ।
३११—अमाया	...	मायारहित, कामनारहित, बिना छल, अंटा, समाय गया, अँट गया ।
३१२—अमावस्या	...	अमावस की तिथि, कुहू ।
३१३—अमित	...	बहुत, अनन्त, अत्यधिक, इति-रहित, प्रमाण बिना ।
३१४—अमिय	...	अमृत, पीयूष, सुधा ।

नं० शब्द		अर्थ
३१५—अमी	...	पीयूष, अमृत, सुधा, आबेहयात ।
३१६—अमुक	...	यह, वह, कोई, फ़लाना, फ़ुलां ।
३१७—अमूल्य	...	अनमोल, मूल्यरहित ।
३१८—अमृत	...	जो नहीं मरा, अमी, पीयूष, सुधा, आबेहयात ।
३१९—अमृषेव	...	सत्य की नाईं, सच के जैसा, सत्य के समान, सत्यवत् ।
३२०—अमेध्य	...	अशुद्ध, अपवित्र, मल ।
३२१—अमेय	...	अनूपम, अतुल, अप्रमाण, बे-परमान ।
३२२—अमोघ	...	सफल, जो कभी निष्फल न हो, जो कभी ख़ाली न जाय ।
३२३—अमोल	...	अनमोल, मूल्यरहित, अमूल्य, जिसका कोई दाम न लगा सके ।
३२४—अय	...	लोहा, वज़्र, गति, संबोधन ।
३२५—अयन	...	घर, गृह, मकान, आलय,—सूर्य्य की गति, सूर्य्य का मार्ग ।
३२६—अयं	...	यह, ऐसा ।
३२७—अयान	...	लड़काई, नादानी, मूर्खता, अनजानपन,—मूर्ख, नादान, अनजान ।
३२८—अयानप	...	लड़कपन, नादानी, मूर्खता, बेसमझी ।
३२९—अयाना	...	मूर्ख, अबूझ, अनसमझ, नादान, अनजान, बालक ।
३३०—अयुत	...	दस हज़ार, दश सहस्र, १०,००० ।
३३१—अये	...	यह, संबोधन ।
३३२—अयोग्य	...	अनुचित, नामुनासिब, नालायक़ ।
३३३—अयोध्या	...	अवधपुरी, सूर्य्यवंशियों की राजधानी ।
३३४—अर्गजा	...	एक सुगन्धित वस्तु प्रसिद्ध ।
३३५—अर्गल	...	बेंवड़ा ।
३३६—अर्घ	...	किसी के सत्कार के लिए पूजन की जल आदि कई वस्तु ।
३३७—अर्चन	...	पूजन ।
३३८—अर्चा	...	पूजा ।
३३९—अर्जुन	...	पांडुपुत्र, युधिष्ठिर के छोटे भ्राता, एक वृक्ष का नाम, श्वेत रँगवाला ।
३४०—अर्णव	...	समुद्र, जलधि, सागर ।
३४१—अर्थ	...	धन, कार्य्य, माने, लिए, वास्ते, हेतु ।
३४२—अर्थान्तर	...	दूसरे अर्थ, दूसरे माने, दूसरे काम ।
३४३—अर्थी	...	माँगनेवाला, मंगन, याचक, झगड़ालू, धनी, धनवान्, कार्यसाधक, मुरदा उठाने की रत्थी ।
३४४—अर्पित	...	अर्पण किया हुआ, भेंट किया हुआ, दिया हुआ, समर्पित ।
३४५—अर्बुद	...	पर्वतविशेष, दश करोड़, १०,००,००,००० ।
३४६—अर्श	...	बवासीर रोग, आकाश ।
३४७—अर्ह	...	पूजा ।
३४८—अरगाई	...	अलग की, अलग करके, जुदा होके, चुप होकर ।
३४९—अरगानी	...	अलग हुई, जुदा हुई, चुप हुई ।
३५०—अरन्य (अरण्य)	...	वन, कानन, जंगल ।

नं० शब्द		अर्थ
३५१—अरति	...	वैराग्य, नहीं प्रीति, विरक्ति ।
३५२—अरथ (अर्थ)	...	धन, अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य्य, कारण, वास्ते, लिए, हेतु, प्रयोजन ।
३५३—अर्थात्	...	अर्थ से, जानो, याने ।
३५४—अर्द्ध	...	आधा ।
३५५—अर्द्धंग (अर्द्धाङ्ग)	...	आधा अंग, आधा शरीर, आधा देह, पक्षाघात रोग ।
३५६—अरनि (अरणि)	...	काष्ठ विशेष जिसे रगड़ने से अग्नि प्रकट होता है ।
३५७—अर्प्पा	...	दिया, दे दिया, दे डाला, दिया हुआ, जो दे दिया ।
३५८—अरविन्द	...	कमल, पद्म, राजीव ।
३५९—अर्भक	...	बालक, छोटा लड़का, बच्चा ।
३६०—अरंभ (आरम्भ)	...	प्रारम्भ, आदि, शुरू ।
३६१—अराती	...	बैरी, शत्रु, दुश्मन ।
३६२—अरि	...	शत्रु, बैरी, आराति, दुश्मन ।
३६३—अरिमर्दन	...	शत्रुघाती, शत्रुघ्न, बैरियों को मसल डालनेवाला ।
३६४—अरिष्ट	...	अशुभ, विघ्न, कौवा, असुरविशेष, नीम का वृक्ष ।
३६५—अरी	...	शत्रु,—एरी, परस्पर में स्त्रियों का संबोधन शब्द ।
३६६—अरु	...	और ।
३६७—अरुचि	...	घृणा, घिन, अनिच्छा, रुचि नहीं ।
३६८—अरुझि	...	उलझ कर, उलझ के ।
३६९—अरुन (अरुण)	...	लालरंग, सूर्य्य के सारथी का नाम, प्रातःकाल के सूर्य्य, रक्तवर्ण, लोहितवर्ण ।
३७०— रुनचूड़ अरुनसिखा		कुक्कुट, मुरग़ा ।
३७१—अरुनारे	...	लाल, सुर्ख़, लाली लिए, सुर्ख़ीमायल, गुलाबी ।
३७२—अरुनोदय(अरुणोदय)		भोर, तड़का, भिनसार, सवेरा ।
३७३—अरुनोपल	...	लाल, मानिक, लाल पत्थर ।
३७४—अरुन्धती	...	वशिष्ठ मुनि की स्त्री ।
३७५—अरूप	...	रूपरहित, बिना रूप का ।
३७६—अरे	...	संबोधन वाक्य, नीच संबोधन ।
३७७—अलक	...	बालों के पटे, घुंघराले बालों की लट जो गालों पर झूलती है, काकुल ।
३७८—अलकनन्दा	...	श्रीगंगा, भागीरथी, वह धारा जो शिव जी की जटा पर गिर कर मृत्यु लोक में बही ।
३७९—अलक्षित	...	जो न देख पड़े, गुप्त, अनदेखा, जो दिखाई न दे, जो दृष्टि में न आवे ।
३८०—अलका	...	कुबेर की पुरी का नाम ।
३८१—अलख(अलक्ष)	...	जो न देख पड़े, अनदेखा, अगोचर, ईश्वर ।
३८२—अलच्छि	...	निर्धन, लक्ष्मीरहित, दरिद्री ।
३८३—अलपता	...	थोड़ा, न्यूनता, कमी ।

नं० शब्द		अर्थ
३८४—अलप (अल्प)	...	कुछ, थोड़ा, किंचित्, छोटा ।
३८५—अलान	...	हाथी के बाँधने का रस्सा, शृंखला, सिकड़, ज़ंजीर ।
३८६—अलि	...	भौंरा, भ्रमर, भँवर, सखी, सहचरी, सहेली ।
३८७—अलिनि	...	भ्रमरी, भँवरी, सखियों ने ।
३८८—अलीक	...	झूठा, मिथ्या, असार, असत्य, झूठ ।
३८९—अलीहा	...	झूठ, मिथ्या, असत्य ।
३९०—अलोल	...	स्थिर, शांत, अचंचल, निश्चल, निचला ।
३९१—अलौकिक	...	लोकोत्तर, अनोखा, अद्भुत, संसार से बाहर, दिव्य ।
३९२—अलंकार	...	गहना, भूषण, आभरण, ज़ेवर, शोभा, साहित्य का एक भाग ।
३९३—अलंकृत	...	शोभायमान, सजा हुआ, भूषित, सज्जित, सँवारा हुआ, आरास्ता ।
३९४—अलिंद	...	भँवरा, मधुकर, भ्रमरश्रेष्ठ ।
३९५—अलुझि	...	उलझकर, अरुझायकर ।
३९६—अवकथन	...	कुवाच्य, कठोर बोल चाल ।
३९७—अवकलित	...	निश्चित, दृढ़, निश्चय किया हुआ ।
३९८—अवकाश	...	अवसर, सुबीता, फुरसत, बीच का समय ।
३९९—अवकीर्न (अवकीर्ण)	...	नष्टवत्, भ्रष्ट नियम, जिसका व्रत व नियम बिगड़ जाय ।
४००—अवगति	...	ज्ञान, अनन्यगति ।
४०१—अवगथ	...	अपवाद, निन्दा, बुराई ।
४०२—अवगाह (अवगाहा)	...	स्नान, डुबकी, ग़ोता, अथाह, अतिगहरा, अनन्त ।
४०३—अवगुन (अवगुण)	...	दुर्गुण, दोष, ऐब ।
४०४—अवघट (औघट)		अड़बड़, ऊंचाखाला, टूटाफूटा ।
४०५—अवचट (औचट)		औचक, अचानचक, एकबारगी, चपकुलिस ।
४०६—अवज्ञा	...	अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा, बेइज़्ज़ती ।
४०७—अवट	...	औंटाकर, खौलाकर ।
४०८—अवडेरि	...	त्यागकर, धोखादेकर, बहकाकर, छोड़कर ।
४०९—अवढ़र	...	नीचपर भी ढलने वा दया करने वाला, बिना विचारे दया करने वाला ।
४१०—अवतार	...	जन्म, प्राकट्य, उत्पत्ति, भगवान का लीलार्थ प्राकट्य ।
४११—अवतीर्न (अवतीर्ण)	...	जन्मा हुआ, उत्पन्न, अवतार लिया हुआ ।
४१२—अवतंस	...	शिरोभूषण, माथे का गहना, चूड़ामणि, सिरपेच, कर्णफूल, कर्णाभरण ।
४१३—अवद्य	...	अधम, नीच, न कहने योग्य ।
४१४—अवदात	...	उज्ज्वल, शुभ्र, निर्मल, साफ़, शुद्ध, श्वेत, सफ़ेद ।
४१५—अवध	...	अयोध्या पुरी, सीमा, मुद्दत, समय, हद्द, अवध देश ।

नं० शब्द		अर्थ
४१६—अवधूत	...	एक प्रकार के साधु (जैसे दत्तात्रेय), जटिल ।
४१७—अवनत	...	झुका हुआ, दबा हुआ, नम्र, दीन, घटा हुआ, आजिज़ ।
४१८—अवनि	...	धरती, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन ।
४१९—अवनिप-रवनि (अवनिप-रमणि)	...	रानी, राजा की पत्नी, राजा की स्त्री ।
४२०—अवनीसा (अवनीश)	...	राजा, भूपति, पृथ्वी का स्वामी, भूप, भूस्वामी, नरेश ।
४२१—अव्यक्त	...	प्रकृति, ईश्वर, गुप्त, छिपा हुआ ।
४२२—अवयव	...	हाथ पैर आदि सब अंग, किसी वस्तु के अनेक भाग ।
४२३—अव्याहत	...	न रोकने योग्य, बे-रुकाव, जिसकी कोई रोक न हो ।
४२४—अवर्त्त (आवर्त्त)	...	जल का घुमाव जिसे नांद वा भंवर भी कहते हैं, एक प्रकार का राजा आदि का घर, देश का भाग, चक्र, घुमाव, घेरा, मेघविशेष ।
४२५—अवराधक	...	सेवक, सेवाकरने वाला, दास ।
४२६—अवराधना	...	सेवा, सेवना, सेवा करना ।
४२७—अवराधे	...	सेवा की, आराधना की, उपासना की, सेवा किये, उपासना किये ।
४२८—अवरेखि	...	लिखकर, लकीर खींचकर, प्रतिज्ञा करके ।
४२९—अवलेह	...	चटनी, चाटने वाली औषध, माजून, लऊक़, पाक ।
४३०—अवलोकन	...	दृष्टि, दीठ, नज़र, देखना, दर्शन करना, दृष्टि करना ।
४३१—अवलोकय	...	देख, देखो, देखिए, दृष्टि कीजिए ।
४३२—अवलंब	...	आधार, आश्रय, सहारा ।
४३३—अवश्य	...	निश्चय करके, निःसंदेह, ज़रूर ।
४३४—अवशेषित	...	बाक़ी, बचा हुआ, जो बच रहा ।
४३५—अवस्था	...	दशा, आयु, आवरदा, उम्र, हालत ।
४३६—अवसर	...	अवकाश, समय, विराम, ठहराव, मौक़ा ।
४३७—अवसान	...	अन्त्य, नाश, मरण, हद्द ।
४३८—अवसि	...	अवश्य. निश्चय कर के, ज़रूर ।
४३९—अवसेरि	...	देर, विलम्ब, उत्कंठा, चाह, आशा ।
४४०—अवाध्य	...	अतर्क्य, बिना बाधा ।
४४१—अवाधी	...	बाधाहीन, दुःखरहित, सुखरूप, सुखदाई, आराम देने वाला ।
४४२—अवाँ	...	आँवा, पजावा, जिसमें कुम्हार मट्टी के पात्र पकाते हैं ।
४४३—अविकल	...	ज्यों का त्यों, वैसाही ।
४४४—अविकारी	...	विकाररहित, जन्ममरणादि विकार शून्य, अज, अविनाशी, ईश्वर आदि ।
४४५—अविगत	...	चराचर में व्याप्त, व्यापक ।
४४६—अविचल	...	स्थिर, जो चलायमान न हो ।
४४७—अविच्छिन्न (अविछीन)	...	निरन्तर, सर्वदा, जो कभी न टूटे, जो कभी क्षीण न हो ।
४४८—अविद्या	...	मूर्खता, अज्ञान, माया, मोह ।

नं० शब्द		अर्थ
४४९—अविनय	...	धृष्टता, ढिठाई, गुस्ताख़ी ।
४५०—अविनासी (अविनाशी)	...	सर्वदा रहने वाला, जिसका कभी नाश न हो, ईश्वर ।
४५१—अविमुक्त	...	मोक्ष, मुक्ति ।
४५२—अविरल	...	निरंतर, सघन, अविच्छिन्न ।
४५३—अविरोध	...	निर्विरोध, विरोधरहित, बिना वैर ।
४५४—अविवेक	...	अज्ञान, बेवक़ूफ़ या बेवक़ूफ़ी, विवेकशून्यता ।
४५५—अवंतिका	...	पुरी विशेष, उज्जैन ।
४५६—अशक्त	...	निर्बल, असमर्थ, शक्तिहीन, लाचार ।
४५७—अशक्य	...	असमर्थ, शक्तिरहित, नाताक़त ।
४५८—अशन	...	आहार, भोजन, खाना ।
४५९—अशनि	...	बज्र, कुलिश, पवि ।
४६०—अश्रु	...	आँसू, नेत्रजल ।
४६१—अश्लील	...	अनुचित वाक्य, फ़ोहश बातें, निर्लज वाक्य ।
४६२—अश्लेष	...	श्लेष रहित ।
४६३—अश्व	...	सैंधव, बाजि, घोड़ा ।
४६४—अश्विनीकुमार	...	घोड़ी के बेटे, सूर्य्य के पुत्र का नाम, विबुध-वैद्य, देवताओं के वैद्य ।
४६५—अश्वमुख	...	घोड़े के मु हवाला, घोड़मुहा ।
४६६—अश्वमेध	...	घोड़े का यज्ञ ।
४६७—अशिव	...	अमंगल, अशुभ, बिना कल्याणवाला ।
४६८—अशुभ	...	बुरा, अमंगल, बुराई, आपदा, दुःख ।
४६९—अशेष	...	संपूर्ण, समस्त, निःशेष, बिना बाक़ी ।
४७०—अशोक	...	शोकरहित, प्रसन्न, एक वृक्ष का नाम, बेफ़िक्र ।
४७१—अशोच	...	निश्चिन्त, शोचरहित, बेफ़िक्र ।
४७२—अशौच	...	अशुद्धि, अपवित्रता, नजासत ।
४७३—अशंक	...	निःशंक, शंकारहित, निडर, ढीठा, धृष्ट, बेअदब ।
४७४—अष्ट	...	आठ, ८ ।
४७५—अष्टधात	...	आठोंधातु (सोना, रूपा, ताँबा, राँगा, जस्ता, काँसा, सीसा, लोहा) ।
४७६—अष्टादश	...	अठारह, १८ ।
४७७—अष्टावक्र	...	मुनि का नाम (जो आठ जगह से टेढ़े थे), आठ जगह जो टेढ़ा हो ।
४७८—अषाढ़ (आषाढ़)		मास विशेष, एक महीने का नाम, बरसात का प्रथम मास ।
४७९—अस	...	ऐसा, इस प्रकार का, इस भाँति का, इस चाल का, इस तरह का ।
४८०—असगुन	...	बुरा सगुन, विघ्न, कुसगुन, बुरा चिन्ह, अशुभसूचक चिन्ह ।
४८१—अस्त	...	छिपजाना, डूब जाना, अन्तर्द्धानहोना, ग़ायब होना ।
४८२—असत्य	...	झूठ, अलीक, मिथ्या, मृषा ।
४८३—अस्त्र	...	हथियार ।
४८४—अस्ति	...	है, विद्यमान, मौजूद, वर्त्तमान ।

नं० शब्द		अर्थ
४८५—अस्तुत	...	स्तुति, सराहना, प्रशंसा, भजन, तारीफ़ ।
४८६—अस्थि	...	हड्डी, हाड़ ।
४८७—असज्जन	...	दुष्ट, शठ, मूर्ख, दुर्ज्जन ।
४८८—असम	...	जिसके बराबर कुछ न हो, अद्वितीय, एकही, लासानी, बे-मिसाल, टेढ़ा ।
४८९—असमसर	...	कामदेव, अनङ्ग, कुसुमसर, पंचबाण, कुटिल बाणों वाला ।
४९०—असमंजस	...	द्विविधा, आगा पीछा ।
४९१—असवारा	...	सवार, घोड़सवार ।
४९२—असहाइ	...	सहायरहित, निःसहाय, निराश्रय, बेमदद ।
४९३—असाध्य (असाधो)		जिसके दूर होने की आशा न हो, दुस्तर, दुर्गम, न आरोग्य होने योग्य ।
४९४—असाधु	...	दुष्ट, दुर्ज्जन, शठ, बदखू ।
४९५—असि	...	तलवार, करवाल, तू है,—ऐसी ।
४९६—असित	...	काला, श्याम, कुटिल, सफ़ेद नहीं ।
४९७—असीम	...	बेप्रमाण, सीमारहित, बेहद्द ।
४९८—असीस	...	आशिष, आशीर्वाद, दुआ ।
४९९—असुर	...	राक्षस, दैत्य, निशाचर, देवता नहीं, दानव, दनुज ।
५००—अह	...	दिन, खेद, आश्चर्य ।
५०१—अहई	...	है, विद्यमान है, प्रस्तुत है, मौजूद है ।
५०२—अहमिति	...	हमी, अहङ्कार, मैं इतना ।
५०३—अहह	...	अत्यन्त खेद, अतिदुःख, आश्चर्य ।
५०४—अहहि	...	है, विद्यमान है, मौजूद है ।
५०५—अहार	...	भोजन, अशन, ख़ुराक, खाना ।
५०६—अहारी	...	खानेवाला, भोजनकरनेवाला ।
५०७—अहि	...	सर्प, साँप, कीड़ा ।
५०८—अहित	...	बैरी, शत्रु, वैर, विरोध ।
५०९—अहिनी	...	सर्पिणी, साँपिन ।
५१०—अहिप (अहिपति)		सर्पराज, शेष नाग, वासुकी ।
५११—अहिबेल	...	नागवेल नागवली तांबूल, पान ।
५१२—अहिभुज	...	सर्प की सी भुजावाला, गावदुम भुजावाला, उतार चढ़ाववाली भुजावाला, सर्पों को खानेवाला, मोर, गरुड़ ।
५१३—अहिमति	...	क्रोधी, लाग करनेवाला, लागी, दुष्ट, कटहा ।
५१४—अहिराज	...	सर्पराज, शेषनाग ।
५१५—अहिवात	...	सोहाग, सौभाग्य ।
५१६—अहीर	...	आभीर, ग्वाला, शूद्र-जाति-विशेष ।
५१७—अहीस (अहीश)		सर्पराज, नागराज, शेषनाग ।
५१८—अहेर	...	मृगया, आखेट, शिकार ।
५१९—अहेरा	...	शिकारी, शिकार खेलने वाला ।
५२०—अहो	...	आश्चर्य, हर्ष, दुःख, (तीनों जगह इस शब्द का प्रयोग होता है)

नं० शब्द		अर्थ
५२१—अहं	...	मैं, हमी, अहङ्कार, अभिमान।
५२२—अहङ्कार	...	घमण्ड, अभिमान, ग़ुरूर।
५२३—अहंकारी	...	अभिमानी, घमण्डी, मग़रूर।
आ		
५२४—आइ	...	आकर, आनकर, आयु, वय, ज़िन्दगी।
५२५—आकर	...	खान, वह स्थान जहाँ से कोई वस्तु बहुतायत से निकले।
५२६—आकुल	...	घबराया हुआ, व्याकुल, दुःखी, परेशान।
५२७—आकृति	...	स्वरूप, ढाँचा, आकार, मूर्त्ति, डौल, सूरत।
५२८—आख्य	...	संज्ञा, नाम, नामधारी।
५२९—आखर	...	अक्षर, वर्ण, अक्षर, हरफ़।
५३०—आखू	...	मूस, चूहा।
५३१—आगम	...	आना, आनेवाला, आगमन, भविष्य, तन्त्र शास्त्र।
५३२—आगमन	...	आना, आवाई, आवन।
५३३—आगर	...	चतुर, जानकार, जाननेवाला, नागर, होशियार, सयाना, पूर्ण।
५३४—आगरी	...	चातुरी, नागरी, सयानी, पूरिता।
५३५—आगार	...	घर, गृह, मकान।
५३६—आगिल	...	अगिला, होनहार, भविष्यत्-पिछला।
५३७—आगी	...	अग्नि, आग।
५३८—आगे	...	पहिले, सामने, सम्मुख, तब, फिर, बढ़कर।
५३९—आघात	...	चोट, खड़का, खटका, ज़ख़्म।
५४०—आचमन	...	अल्पजलपान, थोड़ा सा जल पीना, मंत्रपूत-जल-प्राशन।
५४१—आचरज(आश्चर्य)		अचंभा, तअ़ज्जुब, हैरानी।
५४२—आचरत	...	आचरण करता है, मान लेता है।
५४३—आचरन(आचरण)		चलन, करतूत, व्यवहार, रीति भाँति, चाल चलन।
५४४—आचार	...	आचरण, व्यवहार, वेदोक्त कर्म, पवित्रता, शौच।
५४५—आचार्य	...	वेद की व्याख्या करने वाला, गुरु, वेदगुरु।
५४६—आछी	...	अच्छी, उत्तमा, सुघर, बढ़िया, नीकी, भली।
५४७—आज	...	अद्य, वर्त्तमान दिन।
५४८—आजन्म	...	जन्मभर ज़िन्दगी भर, यावज्जीवन, उम्र भर।
५४९—आज्ञा	...	आदेश, आयसु, हुक्म, इजाज़त, मरज़ी।
५५०—आठ	...	अष्ट, ८।
५५१—आतप	...	ताप, तपन, धूप, घाम, सूर्य की गर्मी।
५५२—आतनोति	...	विस्तृत करता है, फैलाता है।
५५३—आत्म	...	अपना, निज, स्वयं, देह, मन, ईश।
५५४—आत्महन	...	आत्मघाती, आत्म-हत्यारा, अपनी जान मारने वाला, ख़ुदकुश।
५५५—आतुर	...	उतावला, जल्दबाज़, घबराया हुआ, अति दुःखी, आपत्तिग्रस्त।
५५६—आदर	...	मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, ख़ातिर।

नं० शब्द		अर्थ
५५७—आदि	...	प्रथम, पहिला, आरम्भ, मूल, इत्यादि, वग़ैरा।
५५८—आदिकवि	...	वाल्मीकि मुनि।
५५९—आदेस (आदेश)		आज्ञा, आयसु, मरज़ी, इजाज़त, हुक्म।
५६०—आधीन	...	आज्ञाकारी, वशीभूत, ताबेदार, आश्रित।
५६१—आन	...	और, दूसरा,-कानि, मर्यादा,-शपथ, क़सम,—लाकर,—लाओ, सौगन्द।
५६२—आनत	...	लाता है, ले आता है, लाते ही।
५६३—आनन	...	मुँह, मुख, चेहरा।
५६४—आनबी	...	लाइयो, ले आना, लेते आइयो।
५६५—आनहु	...	लाओ, ले आओ, हाज़िर करो।
५६६—आनि	...	लाकर, लेआकर।
५६७—आप	...	स्वयं, ख़ुद,-'तुम,'-जल, पानी, नीर।
५६८—आपद	...	आपत्ति, विपत्, दुःख का समय।
५६९—आपन	...	अपना, निज।
५७०—आपन्न	...	आपत्तिग्रस्त, विपत में पड़ा हुआ।
५७१—आभीर	...	अहीर, गोप, गोपाल, भील, छन्दविशेष, देशविशेष।
५७२—आमलक	...	आँवला, औरा, आमला, धात्रीफल।
५७३—आमिष	...	मांस, अखाद्य वस्तु।
५७४—आयत	...	चौड़ा, बड़ा, विशाल, फैला हुआ।
५७५—आयतन	...	घर, गृह, आगार, मकान, स्थान।
५७६—आयसु	...	आज्ञा, आदेश, हुक्म, इजाज़त, मरज़ी।
५७७—आयु	...	वय, आवर्दा, वयस, उम्र, जीवन काल।
५७८—आयुध	...	हथियार, शस्त्र, अस्त्र, धनुषादि।
५७९—आरत (आर्त्त)	...	अत्यन्त दुःखी, दुःख का दबोचा हुआ, अति पीड़ित, दुःखाच्छादित।
५८०—आरति (आर्त्ति)	...	पीड़ा, दुःख, दीनता, अतिप्रीति।
५८१—आरती	...	नीराजन, दीपक जलाकर सत्कारार्थ सामने घुमाना।
५८२—आराती	...	वैरी, शत्रु, रिपु, अरि, दुश्मन।
५८३—आराधन	...	सेवा, उपासना, परिचर्या।
५८४—आराध्य	...	सेव्य, उपास्य, सेवा के योग्य, उपासना के योग्य।
५८५—आराम	...	सुख, आरोग्य, तनदुरुस्ती,-बग़ीचा, उपवन, बाग़,-सुखी, तन्दुरुस्त।
५८६—आरूढ़	...	चढ़ा हुआ, सवार, असवार।
५८७—आरोग	...	नीरोग, आराम, सुखी, तन्दुरुस्त।
५८८—आरोग्य	...	नीरोगता, सुख, तन्दुरुस्ती।
५८९—आरोपन (आरोपण)		चढ़ाव, स्थापन, चढ़ाना, स्थापन करना।
५९०—आलबाल	...	थाँला, घेरा (जो वृक्षों के नीचे प्रायः जल ठहरने को बना दिया जाता है)।
५९१—आलय	...	घर, गृह, स्थान, मकान।
५९२—आलस (आलस्य)		सुस्ती, ढील, काहिली, कहालत।
५९३—आली	...	सखी, सहचरी, सहेली,—पंक्ति, लकीर।

नं० शब्द		अर्थ
५९४—आव	...	आता है, आवे, आता, आयु, उम्र।
५९५—आवइ, आवति	...	आवै, आती है।
५९६—आवा	...	आया, आगया।
५९७—आवाहन	...	बुलाना, हँकारना, मंत्रद्वारा देवताओं को बुलाना।
५९८—आश्रम	...	मठ, ऋषियों के रहने की जगह, जाति, चतुराश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास)।
५९९—आश्रित	...	अधीन, सेवक, तावेदार, शरणागत, अवलंबित, वश्य, वशीभूत।
६००—आशा	...	दिशा, आश्रय, आसरा, भरोसा, उम्मीद।
६०१—आशिष	...	आशीर्वाद, आसीस, वर, दुआ।
६०२—आशु	...	जल्दी, शीघ्र, तत्काल, उसी समय, निर्विलम्ब, फ़ौरन्।
६०३—आस	...	भरोसा, आसरा, सहारा, दिशा।
६०४—आसक्त	...	मोहित, अतिलग्न, लिप्त, लगा हुआ, लीन, लौलीन, आशिक़।
६०५—आसक्ति	...	मोह, लगन, अतिप्रीति, इश्क़।
६०६—आसन	...	पूजन के समय बैठने का बिछावन, बिछौना, साधु महात्माओं के रहने का स्थान, योग के ८४ आसन वा बैठने के प्रकार।
६०७—आसा	...	दिशा, आश्रय, सहारा, उम्मीद।
६०८—आसावसन	...	दिशा ही जिसके वस्त्र हों, नग्न, दिगम्बर, नंगा, महादेव।
६०९—आसीन	...	स्थित, बैठा हुआ, आसन जमाये हुए।
६१०—आही	...	है।
६११—आहुति	...	चरु, हवन करने की वस्तु, शाकल्य।
६१२—आँक	...	अंक, चिह्न, निश्चय, जाँच, जाँचकर।
६१३—आँकुवे	...	अंकुरित हुए, अंखुवा निकले, उत्पन्न हुए, जन्मे, जमे, उगे।
६१४—आँख	...	नयन, नेत्र, चक्षु, दृग।
६१५—आँच	...	अग्नि, आग, तपन, ताप, आतप।
६१६—आँजि	...	अंजन लगा कर, अंजन देकर, काजल लगा कर।
६१७—आँत	...	अँतड़ी, पेट के अन्दर की मोटी रगें।
६१८—आँधी	...	तीव्र वायु, तेज़ हवा, झकड़, तूफ़ान।
६१९—आँब	...	आम्रफल, अम्ब, आम, रसाल।
६२०—आँसु	...	अश्रु, नेत्रजल, आँसू।
इ		
६२१—इक	...	एक।
६२२—इक अंग	...	एक ओर का शरीर, आधा अंग, एक शरीर, एक ओर का, एक तरफ़ का, एक पक्ष, एक बाज़ू।
६२३—इच्छा	...	चाह, वांछा, आकांक्षा, अभिलाषा, कामना।
६२४—इच्छाचारी	...	मनमौजी, अपने मन का, मन के अनुसार घूमने वाला, स्वतंत्र।
६२५—इच्छित	...	ईप्सित, मन वाँछित के अनुसार, चाहा हुआ।
६२६—इत	...	इधर, इस ओर, इस तरफ़।

नं० शब्द		अर्थ
६२७—इतराई	...	इतरानी, छैलाई, मचलाई, फैल पड़ी, मचल पड़ी, छैला कर, मचल कर ।
६२८—इति	...	इतना, समाप्ति, इस प्रकार, ऐसा, यहाँ तक, पूरा, संपूर्ण, समाप्त ।
६२९—इतिहास	...	कथा, प्राचीन वृत्तान्त, पूर्व वृत्तान्त, परम्परा का वृत्तान्त, कहानी ।
६३०—इदमित्थं	...	यह इतना ।
६३१—इह	...	यह सब, इन सबने, इन्होंने ।
६३२—इभ	...	हाथी, गज, समान, सदृश, नाईं, तरह ।
६३३—इमि	...	ऐसे, इस प्रकार से, यों, इस तरह से ।
६३४—इव	...	नाईं, तरह, मानिन्द, जैसे, बराबर, सदृश, समान ।
६३५—इष्ट	...	चाहा हुआ, इच्छित,पूजनीय, पूजा योग्य, प्यारा, अपना मान्य देवता, कुल देवता, कर्त्तव्य ।
६३६—इष्टदेव	...	उपास्य देवता, सबसे बड़ा देवता, अवश्य पूजनीय देवता, कुलदेवता, सनातन देवता ।
६३७—इस	...	यह ।
६३८—इह	...	यह लोक, यहाँ का लोक, अंगुली दिखा करने वाला शब्द, यह ।
६३९—इहाँ	...	इस स्थान पर, इस जगह ।
६४०—इंद्रजाल	...	नटविद्या, छल, कपट, फरफ़न्द, धोखा, मन्त्र तंत्र योग द्वारा अचंभे की बातें दिखाने का ग्रंथ ।
६४१—इंद्रजीत	...	रावण के पुत्र का नाम, मेघनाद, जिसने इन्द्र को जीत लिया ।
६४२—इंद्री	...	हाथ पैर मुख इत्यादि १० इन्द्रियाँ,—पुरुष-चिह्न ।
६४३—इंदिरा	...	रमा, मा, लक्ष्मी, विष्णुभार्या ।
६४४—इंदु	...	चन्द्रमा, सुधाकर, चाँद, शशि, कर्पूर ।
(ई)		
६४५—ईति	...	उपद्रव, आपदा, ६ प्रकार की ईति (अतिवृष्टि १, अनावृष्टि २, टिड्डी पड़ना ३, मूसों से खेती का नाश ४, पक्षियों से खेती नाश ५, राजविद्रोह से क्लेश ६)।
६४६—ईश	...	ईश्वर, त्रिदेव, स्वामी, राजा, प्रभु, शिव ।
६४७—ईश्वर	...	प्रभु, सृष्टिकर्त्ता, मालिक, धनी, स्वामी, परमेश्वर, त्रिदेव ।
६४८—ईशान	...	शिवजी, दिशाविशेष, पूर्व और उत्तर दिशा की संधि का कोण ।
६४९—ईषन, ईछन, ईक्षण		देखना, दृष्टि, नज़र ।
६५०—ईषना (ईषणा)	...	लालसा, वासना, चाह, इच्छा, लालच, लोभ ।
६५१—ईर्षा (ईर्ष्या)	...	दाह, द्रोह, डाह, द्वेष, जलापा, जलन, कुढ़न, हसद ।
६५२—ईंधन	...	रसोईं बनाने के हेतु काष्ठादि जलाने की वस्तु, अग्नि जलाने वा सुलगाने की वस्तु, बालने की लकड़ी, कंडा आदि ।
(उ)		
६५३—उअहिं	...	उगते हैं, उदय होते हैं, निकलते हैं ।
६५४—उए	...	उगे, निकले, उदय हुये, निकले, देख पड़े ।

नं० शब्द		अर्थ
६५५—उकठि	...	उठंग कर, सहारा लेकर, ऊटपटांग काष्ठ, गठीले वा टेढ़े मेढ़े काष्ठ करके, बिगड़ी हुई लकड़ी की, कुंठित ।
६५६—उक्ति	...	वचन, कहन, किसी बात का मन से उठान, उपज ।
६५७—उकसहिँ	...	ऊपर उठते वा निकलते हैं, उकसते हैं, उचकते हैं, बैठे ही बैठे उचकते हैं।
६५८—उग्र	...	तीव्र, प्रवर, उत्कट, प्रचंड, भयानक, श्रेष्ठ ।
६५९—उघरहिँ	...	खुलते हैं, खुल जाते हैं, स्पष्ट हो जाते हैं, नंगे हो जाते हैं ।
६६०—उघरे	...	खुले, ज़ाहिर हुए, प्रकट हुए, प्रकाशित हुए, खुले हुए ।
६६१—उच्च	...	ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर का, ऊपर की श्रेणी का ।
६६२—उचा	...	उठाय, ऊंचाकर, उभार, उभार कर ।
६६३—उचाटु	...	उखड़ा हुआ, व्यग्रचित्त, उचटा हुआ, उचटा, उखड़ा, हटा हुआ ।
६६४—उचित	...	योग्य, यथार्थ, लायक़, मुनासिब, वाजिब ।
६६५—उछंग	...	गोद, उत्संग, कनियां, अंक, गोदी, ऊरु ।
६६६—उजैनी	...	उज्जैन नगरी, अवन्तिका पुरी ।
६६७—उजयार	...	उँजेला, चाँदना, प्रकाश, रोशनी ।
६६८—उजरे	...	उजड़े, नष्ट होने से, वीरान होने से, बरबाद होने से, नष्ट हुए, उजड़ गये, सफ़ेद, शुक्ल, उज्ज्वल, श्वेत ।
६६९—उजागर	...	प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर ।
६७०—उजारि	...	उजाड़ कर, नाश करके, नष्ट करके, मिटा कर, बरबाद करके ।
६७१—उठा	...	उभरा, खड़ा हुआ, उत्पन्न हुआ, ऊँचा हुआ, निकला, जमा ।
६७२—उड़ावहिँ	...	उड़ाते हैं ।
६७३—उड़ाहीं	...	उड़ते हैं, उड़ जाते हैं ।
६७४ उडु	...	तारा, सितारा, तरैया, नक्षत्र ।
६७५ —उत	...	उधर, उस ओर, उस तरफ़ ।
६७६—उत्कर्ष	...	प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ़, उग्रता, ज़ोर ।
६७७—उत्कंठा	...	विशेष चाह, बड़ी अभिलाषा, पूर्णेच्छा, चित्त का उद्वेग ।
६७८—उत्तम	...	सबसे अच्छा, सर्वोत्कृष्ट, सबसे बढ़िया ।
६७९—उत्तर	...	बदला, जवाब, पलटा ।
६८०—उत्पति (उत्पत्ति)		जन्म, आरम्भ, प्रारम्भ, पैदाइश ।
६८१—उत्सव	...	उच्छो, उछाह, प्रसन्नता का प्रकाश ।
६८२—उताल	...	ढीठा, ऊँचा ।
६८३—उत्पात	...	उपद्रव, ऊधम, नटखटी, खोटाई, बदमाशी, शैतानी ।
६८४—उतरहिँ	...	उतरते हैं, नीचे आते हैं, गिरते हैं, डेरा करते हैं, ठहरते हैं, विश्राम करते हैं,
६८५—उतराई	...	मलाही, नदीपार होने की मज़ूरी, माँझी का नेग ।
६८६—उताना	...	छिछला, उलटा, औंधा, विपरीत ।
६८७—उतायल	...	उतावला, जल्दबाज़, घबरालू, व्याकुल, शीघ्र, जल्दी, फुरतीला ।
६८८—उतारि	...	उतार कर, गिरा कर, नीचे रख कर, पदच्युत करके ।

नं० शब्द	अर्थ
६८९—उतंग (उत्तंग)...	ऊचा, बुलन्द ।
६९०—उदक ...	जल, पानी, नीर ।
६९१—उदघाटो ...	खोली, उघारी, प्रकाश की जारी को, खुली हुई, उदयाचल की घाटी ।
६९२—उदधि ...	समुद्र, वारीश, सिंधु ।
६९३—उदभव (उद्भव)	उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश ।
६९४—उद्यम ...	यत्न, उपाय, परिश्रम, मेहनत, कोशिश, उद्योग, व्यापार, पेशा ।
६९५—उदय ...	उत्पत्ति, प्रादुर्भाव, उपज, उन्नति ।
६९६—उदयगिरि ...	उदयाचल, सूर्योदय वाला पर्वत ।
६९७—उदर ...	पेट ।
६९८—उदरवृद्धि ...	जलोदर रोग, जलंधर रोग ।
६९९—उदवेग (उद्वेग)	उत्कंठा, भय, वियोगजन्य दुख, छोभ, क्षोभ, चित्त का उग्र वेग ।
७००—उदार ...	दाता, दानी, देनेवाला श्रेष्ठ, बड़ा ।
७०१—उदास ...	बेपरवाह, आशारहित, इच्छाशून्य सर्वस्वत्यागी, सुस्त, दुःखित, व्यग्र-चित्त, रंजीदा ।
७०२—उदासी ...	सुस्ती, वैरागी, साधुविशेष, त्यागी, विरक्त ।
७०३—उदासीन ...	शत्रु मित्रभावरहित, ममतारहित, वासनाशून्य, विरक्त, संन्यासी, समदर्शी ।
७०४—उदित ...	निकला हुआ, उदय हुआ, दृष्टिगोचर ।
७०५—उघरे ...	उघड़े, फटे, खुले हुए, प्रकाशित, खुले ।
७०६—उनींद ...	कच्ची नींद, अपूर्ण निद्रा, अधूरी निद्रा ।
७०७—उनींदा ...	कच्ची नींदवाला, जो तृप्त होकर नहीं सोता ।
७०८—उप ...	समीप, पास, निकट, बराबर, छोटा, कम, न्यून, अधिक, आरम्भ ।
७०९—उपकार ...	कृपा, भलाई, सहायता, सलूक ।
७१०—उपकारी ...	सहायक, उपकार करनेवाला, भला करनेवाला, दयालु ।
७११—उपचार ...	उपाय, आकार, पूजन की सामग्री, प्रकार, सेवा, मंत्रजप, वैद्य का कार्य, चिकित्सा, इलाज, यत्न, घूँस, रिशवत ।
७१२—उपज ...	सूझ, स्फूर्त्ति, फुरन, उत्पत्ति, पैदावार ।
७१३—उपजहिं ...	उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं, पैदा होते हैं, जन्मते हैं ।
७१४—उपजाये ...	उत्पन्न किये, पैदा किये, निकाले ।
७१५—उपद्रव ...	बखेड़ा, उत्पात, उपाधि, ऊधम, बिगाड़, अन्याय, अन्धेर ।
७१६—उपदेश ...	शिक्षा, सीख, सिखावन, नसीहत, सम्मति, सलाह, मंत्र ।
७१७—उपधान ...	तकिया, उसीसा, सिरहाना, गेंडुआ, गिलिम ।
७१८—उपनिषध (उपनिषद्)	वेदाङ्ग, वेद का उत्तम भाग, वेदान्तशास्त्र, ब्रह्मविद्या ।
७१९—उपपातक ...	छोटा पाप, साधारण पाप ।
७२०—उपवन ...	बगीचा, विहारवाटिका, कृत्रिम वन, बनावटी वन ।
७२१—उपमा ...	बराबरी, समता, सादृश्य, समानता, दृष्टांत, तुलना, मिसाल, अलंकार-विशेष ।

नं० शब्द	अर्थ
७२२—उपरना ...	उत्तराय वस्त्र, ओढ़ने का वस्त्र, दुपट्टा, चादर, ओढ़ना, अँचरा।
७२३—उपरागा ...	यंत्रणा, निन्दा, ग्रहण, गहन, स्वीकार।
७२४—उपराजा ...	उपाया, उत्पन्न किया, उपजाया, बनाया, रचा, पैदा किया।
७२५—उपरोहित ...	पुरोहित, कुलगुरु, पुरोधा।
७२६—उपल ...	पत्थर, पाषाण, प्रस्तर, पाथर।
७२७—उपबरहन (उपवर्हण)	तकिया, उसीसा, गेंडुआ, गिलिम, सिरहाना।
७२८—उपवासा ...	उपास, लंघन, भूखे रहना, फ़ाक़ा।
७२९—उपवीत ...	जनेऊ, यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र,।
७३०—उपहार ...	भेंट, पूजा, सौग़ात, नज़, इनाम।
७३१—उपहास ...	ठट्ठा, हँसी, बोलीठोली, दिल्लगी, बेइज़्ज़ती।
७३२—उपाई ...	उत्पन्न की, उपजाई, गढ़ी, बनाई, रची, उपाय, यत्न।
७३३—उपाऊ ...	उपाय, इलाज, यत्न, तदबीर, उद्यम, उद्योग, साधन।
७३४—उपाटी (उत्पाटी)	उखाड़ी, नोचली, उखाड़ के, नोचकर।
७३५—उपाधि ...	उपनाम, ख़िताब, अल्ल, उपद्रव।
७३६—उपाय ...	यत्न, तदबीर, उद्यम, प्रयत्न।
७३७—उपाया ...	उपाय से, प्रयत्न से, उपाय किया, यत्न किया, उपजाया, यत्न।
७३८—उपासक ...	भक्त, उपासना करने वाला, सेवक, आराधक।
७३९—उपासना ...	भक्ति, आराधना, सेवा, सेवकाई।
७४०—उबका ...	वमन, उलटी, क़ै, वमन किया, क़ै करी।
७४१—उबटि ...	उबटन लगाय के, बटना लगा कर।
७४२—उबर ...	बचकर, बढ़कर, शेष रह के, उद्धृत होके, बचा, बढ़ा।
७४३—उबारा ...	बचा लिया, उद्धार किया, रख लिया, रक्षा की, रक्षा, बचाव।
७४४—उभय ...	दो, युगल, दोनों, आपस में।
७४५—उभौ ...	दो, दोनों, युगल, आपस में।
७४६—उमगत ...	प्रसन्न होते हुए, मग्न होते हुए, प्रफुल्लित होते हुए।
७४७—उमा ...	शिवा, पार्वती, भवानी, गौरी।
७४८—उयेउ ...	उगा, उदय हुआ, निकला, उआ, उत्पन्न हुआ, देख पड़ा, प्रकाशित हुआ।
७४९—उर ...	हृदय, हिया, कलेजा, छाती।
७५०—उरग ...	साँप, सर्प, अहि, नाग, भुजंग, भुअंग, भुअंगम, कीरा।
७५१—उरगाद ...	गरुड़, नागरिपु, वैनतेय, सर्पों के खाने वाले, सर्प-शत्रु।
७५२—उरगारी ...	सर्पशत्रु, गरुड़, मोर।
७५३—उरबसी ...	एक अप्सरा का नाम, हृदय में वास करने वाली, अतिप्रिय, पसन्दीदा।
७५४—उरमिला ...	लक्ष्मण जी की स्त्री का नाम।
७५५—उर्विजा ...	भूमिसुता, जो पृथ्वी से उत्पन्न हुई, जानकी, पृथ्वी की कन्या, सीता, रामप्रिया।
७५६—उरिन (उऋण)...	ऋणरहित, ऋण से उद्धृत, ऋण से छुटा हुआ, बेक़र्ज़।
७५७—उरु ...	जाँघ, जंघा, रान,—चौड़ा, विशाल, बड़ा, अधिक।

नं० शब्द		अर्थ
७५८—उल्का	...	लूका, आग, आकाश से जो बड़े से तारे की नाईं गिरता है।
७५९—उलटा	...	विपरीत, फेरा हुआ, पलटा हुआ, मोड़ा हुआ, औंधा, प्रतिकूल, बरअक्स।
७६०—उलीचा	...	उलचा, थोड़ा थोड़ा कर के जल को निकाल दिया, जल को फेंका, जल को उछाल कर निकाल दिया।
७६१—उलूक	...	उल्लू, घुग्घू।
७६२—उशना	...	शुक्राचार्य, दैत्यगुरु।
७६३—उसासु	...	दीर्घनिःश्वास, लंबी साँस, ठंढी साँस, आहेसर्द।
७६४—उहार	...	उघार, खोल, परदा खोल,—पट, परदा।
ऊ		
७६५—ऊख	...	ईख, इक्षुदंड, गन्ना, पौंडा।
७६६—ऊगर	...	उदुम्बर, गूलर, ऊमर।
७६७—ऊना	...	ऊन, कम, कमती, थोड़ा, कमती हुआ, घटा, उदास, सुस्त।
७६८—ऊपर	...	ऊर्ध्व, अधिक, ऊँचा।
७६९—ऊमर	...	उदुम्बर, गूलर।
७७०—ऊसर	...	मरु भूमि, परती ज़मीन, जिस पृथ्वी में कुछ न उपजे, खारी धरती।
७७१—ऊंच	...	उच्च, ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर की श्रेणीवाला।
७७२—ऊँट	...	उष्ट्र, पशु विशेष, शुतुर।
ऋ		
७७३—ऋषि	...	मुनि, तपस्वी, तपसी, तापस।
ए		
७७४—एक	...	प्रथम अंक, १, मुख्य, एकही, अलग, मात्र, अद्वितीय, भिन्न, कामादि षड् विकाररहित, एकरस।
७७५—एकतीस	...	एक ऊपर तीस, ३१।
७७६—एकन (एकन्ह)	...	एकने, किसी ने, एक को, किसी को।
७७७—एका	...	ऐक्य, एकमत, एकता, सम्मति, सहमति, सलाह।
७७८—एकाकिन्ह	...	अकेलों को।
७७९—एकाकी	...	अकेला, एकही, मात्र, केवल, एक, आप ही आप।
७८०—एकौ	...	एक भी, कोई भी।
७८१—एकंत (एकांत)	...	अकेला स्थान, सुनसान, सन्नाटा, निराला, अलग, किनारे, निर्जन।
७८२—एतादृश	...	ऐसा, इसके, जैसा, इस मुआफ़िक, इसी तरह से, ऐसाही, इस प्रकार का।
७८३—एव	...	ऐसा, इस प्रकार का, निश्चय करके, मात्र, केवल।
७८४—एवमस्तु	...	ऐसा ही हो, यही होवे।
७८५—एहा	...	यह, ऐसा, यही।
७८६—एहि	...	इस, इसको।
७८७—एहु	...	यह भी, और भी, यह।
ऐ		
७८८—ऐक (ऐक्य)	...	एकता, एकमत, एका, सम्मति, सहमति, सलाह।

नं० शब्द		अर्थ
७८९—ऐन (अयन)	...	घर, मकान, स्थान,—ठीक, ज्यों का त्यों, वाजबी, आँख,-नेत्र, चक्षु, सूर्य का मार्ग ।
७९०—ऐसेहि	...	इसी प्रकार से, इसी रीति से, इसी तरह से ।
ओ		
७९१—ओघ	...	समूह, ढेरी, थोक, राशि ।
७९२—ओट	...	आड़, परदा, पक्ष, बचाव, छाँह, ओझल, टट्टी, छिपाव ।
७९३—ओठ (ओष्ठ)	...	अधर, होंठ, लब, ऊपर का ओंठ ।
७९४—ओंड़नखाँड़े	...	पटेबाज़, खड्ग का रोकना वा रोकने वाला, ढाल-तलवार, ढाल-तलवार से ।
७९५—ओड़अहिँ	...	रोकेंगे, बचावेंगे, आड़ करेंगे, ओट करेंगे ।
७९६—ओढ़न	...	ओढ़ने का वस्त्र, चादर, चद्दरा, दुपट्टा ।
७९७—ओदक	...	जल, पानी, नीर ।
७९८—ओदन	...	भात, पका हुआ चावल ।
७९९—ओधे	...	लगे, लगे हुए, अधिकारी ।
८००—ओर	...	तरफ़, अलग, पार, छोर, सीमा ।
८०१—ओरे	...	ओले, बनौर, उपल, वर्षा के पत्थर ।
८०२—ओस	...	शीतल जल के कण जो प्रायः शीतकाल में आकाश से गिरते हैं, पाला ।
८०३—ओहि	...	उसको, उसे ।
औ		
८०४—औ	...	और ।
८०५—औढर	...	अटपटी ढार, खड़ी ढार, ऊटपटाँग ढार,—बेसमझ की ढरन, बिना विचार की प्रसन्नता ।
८०६—और	...	औ, फिर, अधिक, दूसरा ।
८०७—औषध (ओषधि)	...	दवाई, दवा, रोग-नाशक वस्तु ।
८०८—औसर (अवसर)	..	समय, अवकाश, फ़ुरसत, मौक़ा ।
अं		
८०९—अंक	...	आँक, चिह्न, निशान, गिनती, अक्षर, गोदी, कोराँ, कौला,-संकेत, संख्या ।
८१०—अंकित	...	चिह्नित, चिह्नयुक्त, लिखित, लिखा हुआ, हस्ताक्षर किया हुआ, खुदा हुआ, मुद्रित ।
८११—अंकुर	...	अँखुवा, कोपल, फुनगी, आँकुर ।
८१२—अंकुश	...	आँकुस, हाथी चलाने की लोहमय वस्तु का नाम, हाथी हाँकने का लोहे का काँटा, आँकड़ा, आँकड़ो ।
८१३—अंग	...	देह, शरीर, तनु,—भाग, हिस्सा,—प्रिय, प्यारा,—अवयव, (हाथ पैरादि) राज के ७ अंग (राजा१ मंत्री २ सुहृद् ३ कोष ४ राज्य ५ क़िला ६ सेना७)
८१४—अंगद	...	बाली के पुत्र का नाम, बानर विशेष ।
८१५—अंगना	...	स्त्री, लुगाई, कामिनी, सुन्दरी, बैयर, तीमत, ज़नानी, ज़न ।

नं० शब्द		अर्थ
८१६—अंगनाई	...	आँगन, अजिर, चौक, अंगना, मैदान, सेहन्, घर के आगे का खुला स्थान ।
८१७—अंगरी	...	कवच, बख़्तर, लड़ाई में अंग-रक्षा के लिए पहिरने के लोहमय वस्त्र, युद्धोपयुक्त लोह-वस्त्र ।
८१८—अंगलि (अंगुली)	...	अंगुरी, अंगुलि, उँगली ।
८१९—अँगवनि	...	अंगवन, सहन सहकर,—सहन करके ।
८२०—अंगीकार	...	स्वीकार, मंज़ूरी, अपनावन,—मंज़ूर, क़बूल ।
८२१—अंघ्रि	...	पैर, पाँव, पग, चरण, पाय, पाद, पद,—वृक्ष की जड़ ।
८२२—अँचवत	...	पीते ही, पान करते ही,—पीकर, पान करके,—पीता है, पान करता है ।
८२३—अंचवाई	...	पिलाकर, पान कराके, अंचवाय कर ।
८२४—अंचल	...	आँचल, अँचरा, अंचला, पल्ला ।
८२५—अंजन	...	काजल, कज्जल, सुरमा, इत्यादि आँख में लगाने की वस्तु ।
८२६—अंजि (आँजि)	...	अंजन लगाकर, सुरमा लगाकर, काजल देकर ।
८२७—अंजुलि (अंजलि)		अंजुरी, अंजुली, दोनों हाथ कनिष्ठिका की ओर से ऊपर से खुले रहें और कटोरा सा बन जाय ।
८२८—अंजोरी	...	उँजेली, चाँदनेवाली, प्रकाशित, प्रकाशमय, रौशन ।
८२९—अंड	...	अंडा, गोलाकार वस्तु, गोला, ब्रह्मांड, भूगोल ।
८३०—अंडकटाह	...	ब्रह्मांड, ब्रह्मांड का आधा भाग, अंड का कड़ाहा, अर्द्धांड ।
८३१—अंत	...	परिणाम, नतीजा, पीछे से, सीमा, हद, नाश, आख़िर, आख़िरकार, छोर, किनारा ।
८३२—अंतर	...	बीच, भेद, फरक़, तफ़ावत,—भीतर ।
८३३—अंतर्द्धान	...	गुप्त, ग़ायब, छिपा, अगोचर, जो देख न पड़े, दृष्टि से बाहर ।
८३४—अंतर्यामी	...	भीतर की जाननेवाला, अंतःकरण की बात जाननेवाला, मन की बात जाननेवाला ।
८३५—अंतरहित, अंतर्हित	...	अनन्त, असीम, जिसका अंत न हो, बेहद ।
८३६—अंतस्थ	...	अंतःकरण में बैठा हुआ, हृदय में विराजमान, मन में बसा हुआ ।
८३७—अंतावरि	...	आँत, अँतड़ी, पेट के भीतर की मोटी रगें ।
८३८—अँथयउ	...	अस्त हो गया, छिप गया, उठ गया, मर गया ।
८३९—अंध	...	अन्धा, नेत्रहीन, दृष्टिहीन, जिसे देख न पड़े, बिना दृष्टिवाला, चक्षुहीन, नाबीना ।
८४०—अंधकार, अंधियार	...	अँधेरा, अँधियारा, तम, छाया, अप्रकाश ।
८४१—अंब (अंबा अम्बा)		मां, माता, जननी, माई, मैय्या, माय, मातृ, महतारी ।
८४२—अंबक (अम्बक)		आँख, नेत्र का ।
८४३—अंबर	...	वस्त्र, कपड़ा,—आकाश, आसमान,—ओषधि विशेष ।
८४४—अंबरीष	...	एक राजा का नाम जो परम वैष्णव थे ।

नं० शब्द		अर्थ
८४५—अंबु	...	जल, पानी, नीर, आप, अप, आब ।
८४६—अंबुद	...	जल को देने वाला, मेघ, बादल, अब्र, नीरद ।
८४७—अंबुधर	...	जल को धारण करने वाला, जलधर, मेघ, नीरधर, बादल ।
८४८—अंबुधि,	...	समुद्र, जलधि ।
८४९—अंबुनिधि,	...	जलनिधि, समुद्र, नीरनिधि ।
८५०—अंबुपति	...	वरुण, जल का स्वामी ।
८५१—अंबोधि	...	समुद्र, पयोधि, उदधि ।
८५२—अंभोज	...	जल से उत्पन्न, कमल, सरोरुह, जलज, —शंख, घोंघा, जोंग इत्यादि ।
८५३—अँवा	...	आँवा, पजावा ।
८५४—अंश	...	खंड, टुकड़ा, हिस्सा, भाग ।
८५५—अंशिक	...	अंश का, अंश से, भाग का ।

इतिस्वर ।

क

८५६—कइकई (कैकेयी)		राजा दशरथ की एक रानी, भरतजी की माता, कैकय देश के राजा की कन्या ।
८५७—कच	...	बार, केश, सिर के बाल ।
८५८—कच्छप	...	कछुआ, कमठ, एक जलजन्तु, कच्छपावतार भगवान् ।
८५९—कछु, कछुक	...	कुछ, थोड़ा सा, कुछ एक, किंचित्, ज़रा सा ।
८६०—कजल	...	करिखा, कालिख, धुआँ, धूम, धूम्र, श्यामता, काजल, सुरमा, अंजन ।
८६१—कज्जलगिरि	...	काला पहाड़, काजल का पर्वत, सुरमें का पहाड़, कारिख का पर्वत ।
८६२—कटक	...	दल, फौज, सेना, समूह, —कड़ा, कंकण, —देश विशेष का नाम ।
८६३—कटकई	...	दल, सेना, फौज, झुंड ।
८६४—कटकटहिँ	...	बन्दर कटकटाते हैं, किचकिचाते हैं, गुस्से का शब्द करते हैं ।
८६५—कट्टहिं	...	काटते हैं, काट लेते हैं ।
८६६—कटाक्ष	...	तिरछी चितवन, भावयुक्त दृष्टि, आँख का इशारा ।
८६७—कटाह	...	कड़ाह, कड़ाहा, कड़ाही ।
८६८—कटि	...	कमर, करिहाँव ।
८६९—कटिसूत्र	...	करधनी, किंकिणी, मेखला ।
८७०—कटु	...	कड़ुआ, कड़ू ।
८७१—कटुक	...	कड़ुवासा, कुछ कड़ुआ ।
८७२—कठवता	...	कठौता, कठवत्, काष्ठ का पात्र ।
८७३—कठिन	...	कड़ा, कठोर, निठुर, सख़्त, मुश्किल ।
८७४—कठोर (कठोरा)		कड़ा, कठिन, निठुर, सख़्त, मुश्किल, निर्दय ।
८७५—कड़िहारू	...	कर्णधार, मल्लाह, केवट, माँझी, बल्लीमार ।
८७६—कत	...	क्यों, किसलिए, किस वास्ते, कहाँ, किस जगह ।
८७७—कतहुँ	...	कहीं भी, किसी जगह भी, किसी ठौर भी ।
८७८—कति	...	केतिक, कितने, कितने एक ।
८७९—कथनीय,	...	वर्णनीय, कहने योग्य, कहने के लायक़, क़ाबिल बयान ।

नं० शब्द		अर्थ
८८०—कथहिं	...	कहते हैं, वर्णन करते हैं, गान करते हैं, बयान करते हैं।
८८१—कथा	...	बात, वर्णन, कहानी, कहावत, वृत्तान्त, इतिहास।
८८२—कदराई	...	कादरता, कायरता, कादरपन, डरपोकनापन।
८८३—कद्रू	...	कश्यप मुनि की एक स्त्री का नाम, नाग तथा सर्पों की माता, दक्ष प्रजपति की कन्या।
८८४—कदली	...	रम्भा, केला, केरा।
८८५—कदाचित्	...	क्या जाने, कभी, कधी, स्यात्, कभू, शायद।
८६—कदंब	...	समूह, झुंड—वृक्ष विशेष, एक पेड़ का नाम, कदम।
८८७—कनक	...	सोना, सुवर्ण,—धतूरा,—गेहूँ।
८८८—कनक कसिपु	...	हिरण्यकशिपु, एक दैत्य का नाम, प्रह्लाद के पिता का नाम।
८८९—कनकलोचन	...	हिरण्याक्ष, एक दैत्य का नाम, हिरण्यकशिपु का भाई।
८९०—कन्या	...	दुहिता, बेटी, लड़की, पुत्री।
८९१—कनी	...	कन्द, कण, कणिका, किनका, अतिसूक्ष्म भाग, छोर, सिरा।
८९२—कनेकौ	...	एक कण भी, किनका मात्र भी, कण भर भी, ज़रासा भी, थोड़ा भी।
८९३—कपट	...	छल, धोखा, खोटाई, फ़रेब, ठगी, दग़ा।
८९४—कपटभू	...	माया की भूमि, जादू की धरती, माया से उत्पन्न।
८९५—कपाट	...	किवाड़, किवाड़ी, द्वार वा झरोखे का पल्ला।
८९६—कपाल	...	खोपड़ी, खोपरी, भाल, मस्तक, खप्पर।
८९७—कपाली	...	कपाल को धारण करनेवाला, शिव, महादेव।
८९८—कपासू	....	कपास, रुई, तूल,।
८९९—कपि	...	बानर, बन्दर, शाखामृग, मर्कट।
९००—कपिकुंजर	...	बड़ा बन्दर, बानरश्रेष्ठ, बलवान् बन्दर।
९०१—कपिल	...	कपिलदेव मुनि, बन्दर, पीले रंग का, पीला रंग, पीत वर्ण, अग्नि, विष्णु।
९०२—कपिला	...	गाय, गैया, गऊ, श्वेतवर्ण गौ।
९०३—कपीस (कपीश)	..	बानर-राज, बन्दरों का स्वामी, बानर-श्रेष्ठ (बालि, सुग्रीव, अंगद, हनुमानादि)।
९०४—कपूत	...	कुपुत्र, खोटा सन्तान, नालायक़ बेटा।
९०५—कपोत	...	कबूतर, परेवा, पारावत।
९०६—कपोल	...	गण्ड, गण्डस्थल, गाल, रुख़सार।
९०७—कपिंद (कपिंदा)	...	कपीन्द्र, कपिराज, बानर-श्रेष्ठ, (बालि, सुग्रीवादि)
९०८—कफ	...	श्लेष्मा, खखार, बलगम।
९०९—कब	...	किस समय, कौनी जून, किस वक्त।
९१०—कबहुँ	...	कभी भी, कभी, किसी समय भी, कवनिउ जून, किसी वक्त।
९११—कबारू	...	हुनर, गुण, झंझट।
९१२—कबि (कवि)	...	कविता बनाने वाला, — पंडित, चतुर।
९१३—कबित्त	...	कविता, काव्य, — एक प्रकार के छंद का नाम।
९१४—कबूली	...	मानी हुई,— कबूल की, स्वीकार की, मंज़ूर की।

नं० शब्द		अर्थ
९१५—कबंध	...	एक राक्षस का नाम,—बिना सिर वाला, जिसके सिर न हो, बिना सिर का धड़, सिर कटा हुआ धड़।
९१६—कमठ	...	कच्छप, कछुआ।
९१७—कमनीय	...	सुघर, सुंदर, सुहावन, मनोहर, कामना के योग्य, पसन्दीदा।
९१८—कमल	...	कँवल, पंकज, जलज।
९१९—कमलनाभ	...	पद्मनाभ, भगवान् विष्णु।
९२०—कमला	...	लक्ष्मी, रमा, विष्णुपत्नी।
९२१—कर	...	हाथ, पाणि, हस्त, दस्त, —किरण, —सूँढ़, —महसूल, दंड, जुरमाना,—के, का, करके, करना।
९२२—करइ वा करई	...	करे, करै, करता है।
९२३—करउ	...	करो, करौ, करिए, कीजिए।
९२४—करक	...	कड़क, दरद, दर्द, रह रह कर उठने वाली पीड़ा, चिनक, चमक, चुभने वाली पीड़ा।
९२५—करख (कर्ष)	...	खैंच, खिंचाव, हठ, —अत्यन्त, —दाम, द्रव्य, —तोल विशेष, दो भरी, दो तोले, —रगड़, वैर।
९२६—करखी (कर्षी)	...	खींची, आकर्षित की, अपनी ओर खींचली।
९२७—करगत	...	हस्तगत, हाथ लगा हुआ, प्राप्त, लब्ध, हाथ में आया हुआ।
९२८—करज	...	हाथ से उत्पन्न, अंगुली, नख।
९२९—करत	...	करता है, करते ही।
९३०—करतब(कर्त्तव्य)	...	कर्त्तव्य, काम, कार्य, काज, गुण, हुनर, करने योग्य, परख, तजरिबा।
९३१—करतरी	...	हाथ की तारी, अंगूठा, हथोरी, मुँदरी।
९३२—करतल	...	हथेली, हथोरी, हस्ततल।
९३३—कर्त्ता (करता)	...	करने वाला, बनाने वाला, रचयिता।
९३४—करतारी	...	हाथ की ताली, दोनों हाथों का शब्द, थपोड़ी, ताल (गान-विषयक)
९३५—करतूती	...	काम, धंधा, करतब, करतूत, कृतकर्म, करने की सामर्थ्य।
९३६—कर्दम	...	कींच, कींचड़, चहला, कांदो।
९३७—करन (कर्ण)	...	श्रवण, श्रोत्र, कान,—बनावन, वर्णन करना,—अर्जुन के भाई का नाम।
९३८—करनी	...	करने वाली, —कृतकर्म, किये हुए कर्म, पूर्व कृत कर्म।
९३९—करनीया	...	करने के योग्य, कर्त्तव्य, करने के लायक़।
९४०—करवरे	...	विपदा आपदा, विपत, आपत्ति, कुदृष्ट, अदृष्ट, होनहार।
९४१—क्रमनासा (कर्मनासा)		करमनासा, एक नदी का नाम।
९४२—करम (कर्म)	...	काम, धन्धा, भाग्य, क़िस्मत, नसीब।
९४३—करबाल	...	तरवार, तलवार, खड्ग, असि।
९४४—करषा	...	ईर्षा, वैर, क्रोध, रिस, अनख, रोष, खींचा, कालिमा, कारिख।
९४५—करषि	...	खींचकर, घींचकर, घसीटकर, ऐंचकर, ईंचकर।
९४६—करहिं	...	करते हैं, करैं।
९४७—कराइहि	...	करावेगा, करवावेगा।

नं० शब्द	अर्थ
९४८—करार ...	क़रारा,--इक़रार,--क़ौल ।
९४९—कराल ...	भयानक, भयंकर, डरावना, भयावना ।
९५०—करि ...	हाथी, हस्ति,--करके, लगाकर ।
९५१—करनि ...	हथिनि, हस्तिनी ।
९५२—क्रिया ...	काम-काज, व्यवहार, क्रियाकर्म, धर्मसंम्बधी कार्य्य, व्याकरण में धातु से बने शब्द ।
९५३—करिया ...	काला, श्याम, साँवर ।
९५४—करीजै ...	करिए, कीजिए, करें, करना योग्य है, करना ही चाहिए ।
९५५—क्रीड़ा ...	खेल, खिलवाड़, विहार, दिलबहलाव, कौतुक ।
९५६—करीला ...	करील वृक्ष, टेंटी का पेड़ ।
९५७—करुअई ...	कड़ुवापन, तिताई ।
९५८—करुना (करुणा) ...	दया, कृपा, अनुकम्पा, अनुग्रह, मेहरबानी ।
९५९—क्रुध (क्रुद्ध) ...	क्रोधयुक्त, क्रोधित, ग़ुस्से में भरा ।
९६०—क्रोध ...	रोष, रिस, ग़ुस्सा, कोप ।
९६१—करोरा (करोरी)...	शतलक्ष, सौलाख, १०००००००।
९६२—करों ...	करता हूँ, बनाता हूँ--करूँ, रचूँ ।
९६३—कल ...	गत दिन, आगामी दिन, मीठा शब्द, सुन्दर, प्रिय ।
९६४—कलकंठ ...	कोकिल, कोइल, पिक, कोकिला, मधुर कंठ स्वर वाली ।
९६५—कलप (कल्प) ...	ब्रह्मा का दिन, प्रलय, मनोरथ, सामर्थ्य, कल्पना, रचना, बनाना, बदल, पलट, बनाकर, दुखी होकर ।
९६६—कलपित (कल्पित)	मिथ्या, बनाया हुआ, बनावटी, कृत्रिम, निर्मित, कल्पना किया हुआ, अपने मन से निकाला हुआ ।
९६७—कलपतरु (कल्पतरु)	कल्पवृक्ष, कामतरु, सुरतरु ।
९६८—कलपांत (कल्पांत)	कल्प की समाप्ति पर्य्यन्त, प्रलय तक ।
९६९—कलबल ...	दावपेंच, दावघात, मारपेच, छल, कपट ।
९७०—कलभ ...	हाथी वा ऊँट का बच्चा ।
९७१—कलमले ...	कलमलाये, कुलबुलाये, रेंगे, हिलेडोले, चंचल हुए ।
९७२—कलश ...	कुंभ, घट, घैला, गगरी, घड़ा, ठिल्ला ।
९७३—कलहंस ...	सुन्दर हंस, राजहंस ।
९७४—कला ...	चंद्र का षोडशांश, अंश, भाग, टुकड़ा,--शिल्पादि विद्या की ६४ कला ।
९७५—कलाप ...	समूह, ढेर, मजमआ ।
९७६—कलित ...	सुन्दर, रुचिर, मनोहर,--रचित, बनाया हुआ ।
९७७—कलिमल ...	कलियुग का मैला, कलिकाल के पाप, कलियुग के कुकर्म ।
९७८—कलिमलसरि ...	कर्मनासा नदी ।
९७९—कलिल ...	पंक, कीचड़, चहला, दलदल ।
९८०—क़ली ...	मुकुलित पुष्प, बिन खिला फूल, संपुटित फूल, कच्चा फूल ।
९८१—कलुष ...	पाप, पातक, अघ, दुष्कृत, गदला ।

नं० शब्द		अर्थ
९८२—कलेवर	...	देह, शरीर, स्वरूप, मूर्ति।
९८३—कलेस (क्लेश)	...	दुःख, कष्ट, पीड़ा, तकलीफ़।
९८४—कलोल	...	क्रीड़ा, खेल, चंचलता, आनन्द।
९८५—कलोलिनी (कल्लोलिनी)		तरंगवाली नदी, तरंगिनी, कलोल करनेवाली, क्रीड़ा करनेवाली, खेलनेवाली।
९८६—कवच	...	वर्म, बख़्तर, युद्ध में पहिनने के लोहमय वस्त्र।
९८७—कवन	...	कौन।
९८८—कवनी	...	कौनसी।
९८९—क्वचित्	...	कभी, कुछ, कोई, कहीं।
९९०—कवल	...	कवर, ग्रास, कौर, निवाला, लुक़मा।
९९१—कवि	...	कविता बनानेवाला, काव्य रचनेवाला, पंडित, बुद्धिमान, चतुर, भाट, चारण।
९९२—कविनासा	...	कर्मनासा नदी।
९९३—कश्यप	...	एक मुनि का नाम जिन्होंने सृष्टि को उत्पन्न किया, जिनके सन्तानों से संसार भर गया वह मुनि।
९९४—कष्ट	...	दुःख, क्लेश, तकलीफ़, पीड़ा, संकट।
९९५—कस	...	कैसा, कैसे, किस तरह से, किस भाँति, क्यों, किसलिए, काहे को।
९९६—क्षण	...	सूक्ष्मकाल, छन, थोड़ी देर, लहज़ा, लमहा।
९९७—क्षत्री	...	वर्णविशेष, दूसरा वर्ण, खत्री, क्षत्री, एक जाति का नाम, राजकुल।
९९८—कसमसात	...	घबराते हैं, व्याकुल होते हैं।
९९९—क्षमा	...	छमा, मुग्राफ़ी।
१०००—कसि	...	कसकर, दबाकर, जाँचकर, परीक्षा करके, कसौटी पर रगड़ के।
१००१—क्षीर	...	खीर, दूध, छीर, पय, दुग्ध।
१००२—क्षुधा	...	छुधा, भूख।
१००३—कसे	...	कसने से, दबाने से, जाँचने से, परीक्षा करने से, कसौटी पर रगड़ने से।
१००४—क्षोणिप	...	राजा, भूपति, छोनिप, पृथ्वीपति।
१००५—क्षोभू	...	छोभ, मोह, ममता।
१००६—कह	...	कहता है, कहे, कहकर।
१००७—कहत	...	कहते हुए, कहतेही, कहता है, कहते।
१००८—कहरत	...	कराहता है, कराहते ही, पीड़ायुक्त शब्द करता है।
१००९—कहहि	...	कहता है, कहै।
१०१०—कहानी	...	कथा, कहावत, वर्णन, क़िस्सा।
१०११—कहार	...	शूद्र वर्ण की एक जाति, सेवकों की एक जातिविशेष।
१०१२—कहाव	...	कहन, वर्णन, बयान, कहावत, कथा, वार्त्ता, बात।
१०१३—कहि	...	कहकर, कहै।
१०१४—कहिजात	...	कहा जाता, वर्णन किया जाता, बयान किया जाता।
१०१५—कही	...	कह दी, वर्णन करी, बयान की।

नं० शब्द		अर्थ
१०१६—कहेउ	...	कहा, वर्णन किया, कह दिया, बयान किया।
१०१७—कहेउँ वा कहेऊँ		मैंने कहा, मैंने बयान की, मैंने वर्णन किया।
१०१८—कहँ	...	कहाँ, कहाँतो, को।
१०१९—कहुँ	.	कहीं, किसी ठौर, किसी जगह, कभी, किसी समय, किसी वक्त।
१०२०—काई	...	किसी को,—वह वस्तु जो जल के संसर्ग से पृथ्वी पर हरित वर्ण जम जाती है और उस पर चलने से पैर फिसल जाता है, जलमल, पानी का मैल।
१०२१—काऊ	...	कभी, कबहूँ, किसीने, किसी से, कोई।
१०२२—काक	...	काग, कौआ वायस।
१०२३—काकपच्छ(काकपक्ष)		सिर के पट्टे, कौवे का पर, बीच में क्षौर बना कर जो दोनों ओर बाल छोड़ दिये जाते हैं जैसे अब तक पंजाब और बुंदेलखंड में रीति प्रचलित है।
१०२४—काकु	...	व्यंगवचन, वक्रोक्ति, मेहनताना, टेढ़ी बोली, ध्वनि विशेष।
१०२५—काखासोती	...	कंधे से काँख पर्यन्त।
१०२६ काग	...	कौआ, काक, वायस।
१०२७—कागद	...	काग़ज़।
१०२८—कागभुसुंड	...	एक मुनि का नाम जिनका मुख कौए का था, कौए के मुँहवाला।
१०२९—काछिय	...	काछना चाहिए, पहिनना उचित है, बनाना चाहिए—काछिये, बनाइए, काछो।
१०३०—काछे	...	पहिरे, बनाये हुए, काछ मारे,—पहिनने से, बनाने से, काछने से।
१०३१—काज	...	काम-कार्य, धन्धा, मतलब।
१०३२—काटि	...	कमर।
१०३३—काठ	...	काष्ठ, लकड़ी, दारू।
१०३४—काढ़त	...	निकालता है, निकालते ही।
१०३५—कादर	...	कातर, सुस्त, डरपोंक, नामर्द, डराँकू, डरपोकना, अधीर, घबराया हुआ।
१०३६—कान	...	कर्ण, श्रोत्र, श्रवण,—आन, लज्जा, शपथ, क़सम।
१०३७—कानन	...	वन, जंगल,—कान का बहुवचन, दोनों कान।
१०३८—कानि	...	लज्जा, शर्म, मान, इ़ज़्ज़त, संकोच, बहाना।
१०३९—कानी	...	संकोच, मर्यादा, लज्जा, शर्म,—एक आँख वाली।
१०४०—काम	...	कार्य, काज,—कामदेव, मनोज,—अभिलाष, मुराद, कामना, विषय, धन्धा, इच्छा।
१०४१—कामतरु	...	कल्पवृक्ष, सुरतरु।
१०४२—कामद	...	कामना का देने वाला, मनोरथ को देने वाला, इच्छा पूर्ण करने वाला, मुराद देने वाला।
१०४३—कामदगाई } कामधेनु }		कामधेनु, सुरधेनु, ऐसी गाय जिससे जो माँगे सो पावे।
१०४४—कामना	...	इच्छा, मनोरथ, वासना, चाह, मुराद।
१०४५—कामरूप	...	इच्छानुसार रूप धारने वाला, जैसा चाहे वैसा रूप बन जाने वाला।

नं० शब्द		अर्थ
१०४६—कामारि	...	कामदेव के वैरी, शिव जी, महादेव जी ।
१०४७—कामिनि	...	स्त्री, युवा स्त्री, युवती, कामोन्मत्त स्त्री ।
१०४८—कामी	...	कामना करने वाला, कामदेव से पीड़ित, विषयानुरक्त ।
१०४९—काय	...	देह, शरीर, तनु, वपु, डील ।
१०५०—कायर	...	कादर, कातर, डरपोंकना, डरपोंक, आलसी, गीदड़, बुज़दिल ।
१०५१—कारक	...	कर्त्ता, करने वाला ।
१०५२ कारज(कार्य)	...	कार्य, काम, काज, धन्धा ।
१०५३ –कारण	...	हेतु, प्रयोजन, सबब, निमित्त,—पिता, मूल, जनक, प्रकृति ।
१०५४—कारणकरण	...	करता धरता, कारण के भी करने वाला, निमित्त, हेतु, निमित्त का आधार, महत्तत्वादि का भी कर्त्ता ईश्वर ।
१०५५—कार्मुक	...	धनुष, कर्म-सम्पादक ।
१०५६—कारिख	...	करिखा, कालख, स्याही, श्यामता ।
१०५७—कारी	...	काली, श्यामा,—करने वाला,—यथेष्ट, ठीक ठीक, यथार्थ, भरपूर ।
१०५८ —कारुणीक	...	कृपालु, दयालु, दयावान्, मेहरबान ।
१०५९—काल	...	समय,—दुर्भिक्ष,—सर्प,—मृत्यु,--यमराज,—काला, करिया ।
१०६०...कालकूट	...	विष, गरल, ज़हर ।
१०६१...कालनिशा	...	कालरात्रि, प्रलय की रात, दिवाली की रात, मरन समय, अंत की रात ।
१०६२...कालनेमि	...	एक दैत्य का नाम, कपटी मुनि ।
१०६३...कालिका	...	काली देवी, महाकाली ।
१०६४...काली	...	श्यामवर्ण, काले रंगवाली, कारी,--कलह, पूर्व दिन, परदिन,--कालिका देवी ।
१०६५...कालीना(कालीन)		समय का, कालवाला, चिरकालिक, बहुत पुराना, अतिवृद्ध ।
१०६६...कालौ	...	काल भी, मृत्यु भी,—समय भी, कलह भी ।
१०६७...कास(काश)	...	श्वास का रोग,--सरपत, एक प्रकार की घास, सरहरी ।
१०६८...कासी(काशी)	...	एक पुरी का नाम, वाराणसी, आनन्दवन, अविमुक्त क्षेत्र, बनारस ।
१०६९...काह	...	क्या, कौन वस्तु, कौन काम ।
१०७०...काहू	...	किसी, कोई, किसीको ।
१०७१...कि	...	के, क्या, क्यों, किसलिए, दो वाक्यों का संयोजक शब्द ।
१०७२...किएहु	...	किये से भी, करने से भी ।
१०७३...किन	...	क्यों न, क्यों नहीं,-किसने ।
१०७४...किन्नर	...	एक देव जाति, स्वर्ग के गवैयों की एक जाति, बानर जाति ।
१०७५...किमपि	...	कुछ भी ।
१०७६...किमि	...	क्योंकर, किस भाँति, किस उपाय से, किस तरह ।
१०७७...कियारी	...	क्यारी, चमन ।
१०७८...किये	...	करने से,--करे ।
१०७९...किरण	...	चमक, प्रकाश, रश्मि, किरिन ।
१०८०...किरात	...	भील जाति विशेष, बनचरों की एक जाति ।
१०८१...किरिच	...	टुकड़ा, खंड,--एक प्रकार का शस्त्र ।

नं० शब्द		अर्थ
१०८२—किरीट	...	मुकुट, देवता और राजाओं के सिर पर पहिनने की वस्तु, ताज।
१०८३—किल	...	निश्चय, निश्चित, निश्चय करके।
१०८४—किलकिला	...	किलकार का शब्द, एक प्रकार के बानरों का शब्द, चिल्लाहट, किलकारी।
१०८५—किशलय	...	कोमल पत्ते, नवीन पत्ते, फूल की पंखड़ियाँ।
१०८६—किशोर	...	युवा, १६ वर्ष की अवस्था वाला,—बाल और युवा की मध्य की अवस्था।
१०८७—किसान	...	खेतिहर, खेती करनेवाला।
१०८८—किसु	...	किसका, किसको, किसी को।
१०८९—की	...	करी, करदी, करडाली।
१०९०—कीच (कींच)	...	पंक, कींचड़, चहला, कर्दम, कांदो।
१०९१—कीजिय (कीजिये)		कीजे, करियो, करना चाहिये।
१०९२—कीजै	...	करिए, कीजिए, करना उचित है।
१०९३—कीट	...	कृमि, कीड़ा।
१०९४—कीती	...	कीर्त्ति, यश, प्रशंसा, नामवरी, तारीफ़।
१०९५—कीन्ह	...	किया, बनाया, रचा, सृजा।
१०९६—कीन्हे	...	करे, किये, करने से।
१०९७—कीर	...	सुग्गा, तोता, सुआ।
१०९८—कीरति (कीर्त्ति)		यश, नामवरी, सराहना, प्रशंसा।
१०९९—कीरा	...	कीड़ा,—सुग्गा, तोता,—सर्प, साँप, नाग।
११००—कील	...	खिरचा, तिनुका, तृण, खरका, मेख़, काँटा, स्तम्भनमंत्र।
११०१—कीश	...	बानर, बन्दर, मर्कट, कपि।
११०२—कु	..	निन्दा, बुरा, नीच, मन्द, खोटा।
११०३—कुक्कुट	...	अरुण शिखा, अरुन चूड़, मुर्गा।
११०४—कुकाठ	...	बुरी लकड़ा, निकम्मा काठ, घुनी सड़ी लकड़ी, टेढ़ी मेढ़ी लकड़ी।
११०५—कुचाली	...	बद चलन, उपद्रवी, खोटे चाल चलन वाला।
११०६—कुचाह	...	बुरा समाचार, बुरी इच्छा, प्रेम-रहित, बुरी प्रीति, कपट-स्नेह।
११०७—कुजोग	...	बुरा योग, बुरा संबन्ध, कुमेल, बेजोड़।
११०८—कुटिल	...	टेढ़ा, खोटा, कपटी, क्रूर, मगरा, छली।
११०९—कुटिलाई	...	कपट, छल, मचलापन, वक्रता, टेढ़ापन।
१११०—कुटी	...	कुटिया, झोपड़ी, छप्पर, साधुओं का छोटा सा निवासस्थान।
११११—कुटुम्ब	...	परिवार, लड़के वाले आदि, आत्म-संबंधी लोग, अपने नातेदार।
१११२—कुटुम्बी	...	परिवार वाला, लड़के वालों वाला, ढेर से नाते दारों वाला।
१११३—कुठार	...	फरसा, कुल्हाड़ी, टांगी, परशु।
१११४—कुठारी	...	फरसा, कुल्हाड़ी, परशु—परशु धारण करनेवाला।
१११५—कुठाहर	...	बे ठिकाने, बुरा स्थान, नीच स्थान, अनुचित स्थान, मर्म स्थान।
१११६—कुतर्क	...	बुरा तर्क, झूठा तर्क, व्यर्थ की हुज्जत, निरर्थक विचार।
१११७—कुतर्की	...	कुतर्क वाली, हुज्जती, व्यर्थ विचार करने वाली।
१११८—कुदान	...	बुरा दान, खोटा दान, अनुचित दान,—कूदने का स्थान।

नं० शब्द		अर्थ
११११—कुदारी	...	भूमि खोदने का औज़ार ।
११२०—कुदृष्टि	...	पापदृष्टि, खोटी चितवन, बुरी नज़र ।
११२१—कुधर	...	बुरी भूमि, खराब ज़मीन ।
११२२—कुधातु	...	बुरी धातु, लोहा ।
११२३—कुधर्म	...	बुरा धर्म, अधर्म, पाप ।
११२४—कुनीति	...	खोटी नीति, अन्याय, कुविचार ।
११२५—कुपथ(कुपंथ)	...	खोटा मार्ग, कुमार्ग, बदराह, बुरा रास्ता ।
११२६—कुपथ्य	...	अयोग्य भोजन, अपथ्य, न खाने योग्य, बद परहेज़ी ।
११२७—कुबरी	...	कुबड़ी, कूबड़वाली, कुब्जा ।
११२८—कुबलय	...	कमल, कोंईं ।
११२९—कुविचारी	...	कुतर्की, बुरा चाहने वाला, बुरा सोचने वाला, बुरा विचार करने वाला ।
११३०—कुविहग	...	बुरा पक्षी, बुरी चिड़िया, —बाज़ आदि घातक पक्षी,—कौआ आदि निषिद्ध पक्षी ।
११३१—कुबेर	...	यक्षराज, धनद, देवताओं के ख़ज़ानची, देवधनाध्यक्ष ।
११३२—कुवेष	...	खोटा स्वांग, बुरा भेस, बुरी सूरत ।
११३३—कुमार	...	बटुक, कुआरा बालक, अविवाहित, बिन व्याहा, ब्रह्मचारी १६ वर्ष, की अवस्था तक का, राजपुत्र, राजा का लड़का ।
११३४—कुमारी	...	कारी, अविवाहिता, बिन व्याही, राजपुत्री, -घीकुआर ।
११३५—कुमुद	...	कोईं, नलिनी, -एक बानर का नाम ।
११३६—कुमुदबंधु	...	कोंईं का हितू, चन्द्रमा ।
११३७—कुमुदिनी	...	कोंईं, कमलिनी, नीलोफर ।
११३८—कुररी	...	कुंज, जलाशय पर रहने वाली एक चिड़िया ।
११३९—कुराई	...	पाँव फसने योग्य,—देरी लगाई, उलटदी, उड़ेल दी, ।
११४०—कुरी	...	सब जाति, अनेक जाति ।
११४१—कुरुचि	...	खोटी वासना, बुरी इच्छा, नीच अभिलाषा ।
११४२—कुरंग	...	बुरा रंग, बुरा ढंग, कुढंग,—मृग, हरिन, हिरन ।
११४३—कुल	...	वंश,—घर,—समूह ।
११४४—कुलह	...	टोपी, कुलाह, सिर पर पहिनने का वस्त्र विशेष ।
११४५—कुलि	...	संपूर्ण, कुल, सब, समूचा, सारा, सभी ।
११४६—कुलिश	...	वज्र, पवि, हीरा ।
११४७—कुलीन	...	कुल वाला, उत्तम कुल वाला, निर्दोष वंशज, उत्तम वंश में उत्पन्न ।
११४८—कुश	...	कुशा, दर्भ, पवित्र घास,—श्रीरामचन्द्र के एक पुत्र का नाम ।
११४९—कुशकेतु	...	राजा जनक के भाई का नाम ।
११५०—कुशल	...	कल्याण,—चतुर, होशियार,-चौकस, ठीक, दुरुस्त ।
११५१—कुशलाई	...	कल्याणमय, चतुराई, कुशलता, होशियारी, चौकसी, दुरुस्ती ।
११५२—कुशली	...	सुखी, उपद्रव-रहित, आनंदित, कल्याणयुक्त, नीरोग, दुरुस्त ।
११५३—कुसमउ	...	अनवसर में भी, बुरे दिनों में भी, आपत् काल में भी, तकलीफ़ के वक्त भी ।

नं० शब्द — अर्थ

११५४—कुसुम ... पुष्प, फूल, गुल।

११५५—कुसुमित ... पुष्पित, फूला हुआ, फूलों से लदा, प्रफुल्लित।

११५६—कुहबर(कोहबर) वह स्थान जहाँ विवाह काल में स्त्रियाँ वर दुलहिन को ले जा कर कौतुक-रहस्यादि करती हैं।

११५७—कुवर ... राजकुमार, राजाओं के लड़के।

११५८—कुहू ... कोइल, कोकिल,—अमावस्या की रात।

११५९—कूजहीं ... कूंजते हैं, गुंजार करते हैं, गुटकते हैं।

११६०—कूट ... पहाड़, पहाड़ की चोटी, शिखर,—दिल्लगी, हँसी ठट्ठा, गुप्त गालियाँ, व्यंगोक्ति श्लेष युक्त वार्त्ता, दोमानी बात,—कुचल; कुचल कर।

११६१—कूटी ... व्यंग वचन,—कुचली, कुचल डाली।

११६२—कूड़ि ... लड़ाई में पहिरने की लोहे की टोपी,—अथरी, कूंडी।

११६३—कूद ... उछल कर, छलांगा मार कर, फाँद कर, डांक कर।

११६४—कूप .... कुआँ, गड़हा, खड्डा, टोआ, ख़ंदक।

११६५—कूरम(कूर्म) ... कछुआ, कच्छप।

११६६—कूर ... मूर्ख, उजड्ड, बेवक़ूफ़, बेशऊर, नीच, कठोर, दुष्ट, कपटी, कुचाली, वक्र, टेढ़ा, बद, खल, शठ।

११६७—कूबर ... कूबड़ा, कुब्ज।

११६८—कूल ... तट, किनारा, समीप, घाट, तीर।

११६९—कृत ... किया हुआ, बनाया हुआ, रचित।

११७०—कृतकृत्य ... पूर्ण काम, कृतकार्य, आप्त मनोरथ, अपनी मुराद पाये हुआ।

११७१—कृतज्ञ ... उपकार को मानने वाला, किसी के किये को समझने वाला।

११७२—कृतयुग ... सत्य युग, सत युग।

११७३—कृतार्थ ... मनोरथ को पाये हुआ, इच्छापूर्ण, कामयाब।

११७४—कृतांत ... यमराज।

११७५—कृपा ... दया, अनुग्रह, मेहरबानी।

११७६—कृपा(कृपाण) ... तलवार, एक शस्त्र का नाम।

११७७—कृपाल ... दयालु, कृपा करने वाला, मेहरबान।

११७८—कृपिन (कृपिण) सूम, सुमड़ा, कंजूस, बख़ील।

११७९—कृपनाई ... कंजूसी, सुमड़ापन।

११८०—कृमि ... कीड़ा, कीट।

११८१—कृश ... दुबला, दुर्बल, पीड़ित, दूबर, क्षीण, सूखा हुआ, निर्बल, शक्तिहीन, कमज़ो

११८२—कृसानु (कृशानु) अग्नि, आग, आँच।

११८३—कृषी ... खेती।

११८४—केकय ... एक देश का नाम, कैकेयी का नैहयर।

११८५—केकी ... मोर, मयूर, बर्हि, शिखी।

११८६—केतिक ... कितना, कितना एक, किस क़दर।

नं० शब्द		अर्थ
११८७—केतु	...	नवम ग्रह,– पताका, झंडी, ध्वजा,—पूंछवाला तारा, झाड़ूवाला तारा।
११८८—केते	...	कितने, कै।
११८९—केदलि	...	रम्भा, कदली, केला।
११९०—केन	...	किसने।
११९१—केर	...	का, की, के।
११९२—केलि	...	खेल, क्रीड़ा, केल, खिलवाड़, विहार।
११९३—केवट	...	कैवर्त्त, मल्लाह, कर्णधार, माँझी, नाव खेवने वाला।
११९४—केवल	...	मात्र, एकही, निराला, अकेला, मुख्य, सिर्फ़।
११९५—केश	...	सिर के बाल।
११९६—केशरी	...	सिंह, शेर,—एक बानर का नाम, हनुमान् जी के पिता,—केशर के रंग का।
११९७-केहरि	...	सिंह,—एक प्रकार का बानर।
११९८—केहि	...	किसे, किसको।
११९९—कैकेयी	...	राजा दशरथ की रानी, भरतजी की माता, केकय देश के राजा की कन्या।
१२००—कैटभ	...	एक दैत्य का नाम।
१२०१—कैरव	...	कुमुदनी, कोईं, सफेद कमल, चाँदनी,– धूर्त्त, शठ।
१२०२—कैलाश	...	एक पर्वत का नाम, जिस पर महादेव जी निवास करते हैं।
१२०३—कैवल्य	...	मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण।
१२०४—कैसे	...	किस प्रकार से, क्योंकर, किस प्रकार के।
१२०५—को	...	कौन, एक हिन्दी की विभक्ति प्राय: षष्ठी।
१२०६—कोई वा कोऊ		कई में से एक, कश्चित्।
१२०७—कोक	...	विष्णु—चक्रवाक, मेंढक,–भेड़िया, रतिशास्त्र।
१२०८—कोकनद	...	रक्त पद्म, लाल कमल।
१२०९—कोका	...	चक्रवाक, चकई चकवा,—रतिशास्त्र, कामशास्त्र।
१२१०—कोकिल	...	कोइल, पिक, कोकिला।
१२११—कोकी	...	चकई, चक्रवाकी।
१२१२—कोछे	...	कोख, कुक्षि, उत्संग, उछंग, गोदी, अँचल, अँचरा।
१२१३—कोट	...	गढ़, दुर्ग, क़िला।
१२१४—कोटि	...	करोड़, शत लक्ष१०००००००,—समूह, दल,—धनुष का छोर, गोशा।
१२१५—कोठर	...	वृक्ष का फोफला स्थान, खोंड़रा, वृक्ष के स्तंभ की पोल।
१२१६—कोतल	...	बिना सवार का घोड़ा, कोई सवारी जो ख़ाली हो, खाली।
१२१७—कोदंड	...	धनुष, धन्वा, धनुही, कमान।
१२१८—कोदव	...	कोदो, अन्न विशेष।
१२१९—कोना	...	कोण, किनारा, छोर, गोशा।
१२२०—कोप	...	क्रोध, ग़ुस्सा, रिस।
१२२१—कोपल	...	नरम पत्ते, नवीन दल, ताज़े निकले हुए पत्र, फूलों की पंखड़ियाँ।

नं० शब्द		अर्थ
१२२२—कोपी	...	कोई भी,—क्रोधी,—कुपित हुई, क्रोधयुक्त करी ।
१२२३—कोमल	...	नरम, मुलायम, सुकुमार, सुकुमार ।
१२२४—कोये	...	आँख के डेले ।
१२२५—कोर	...	किनारा, छोर, कगर ।
१२२६—कोरा	...	नया, टटका, बिनबर्ता, अछूता, अमनिया, सादा, साधारण, सफ़ा ।
१२२७—कोरि	...	खुरुचकर, खोदकर, कोरकर, धार धरके, बीस, २० ।
१२२८—कोरी	...	सादी, बिनबर्त्ता, अमनिया, अछूती, टटकी,--कोड़ी, २० ।
१२२९—कोल	...	शूकर, सुअर, एक जंगली जाति, भीलों की बिरादरी ।
१२३०—कोलाहल	...	बड़ा शब्द, ढेर मनुष्यों का शब्द, गुलगपाड़ा, हौरा झौरा, ग़ौग़ा ।
१२३१—कोविद	...	पंडित, विद्वान, बुद्धिमान्, चतुर ।
१२३२—कोश	...	कमल का मध्य, तलवार का म्यान, अंडकोष, ख़ज़ाना, शब्दसंग्रह ।
१२३३—कोशल	...	एक देश का नाम, अवधप्रांत,--कुशलयुक्त, चतुर ।
१२३४—कोशलपुरी / कोशला	...	अयोध्यापुरी ।
१२३५—कोशलेश	...	अवध के राजा, राजा दशरथ, कोशल देश के स्वामी ।
१२३६—कोष	...	कमल मध्य, ख़ज़ाना, गृह, धाम, अंडकोष, योनि, तलवार का मयान, शब्दों का संग्रह ।
१२३७—कोस	...	क्रोश, २ मील, मार्ग की नाप विशेष ।
१२३८—कोह(कोहु, कोहू)		क्रोध, तामस, रोष, रिस, ग़ुस्सा ।
१२३९—कोहाब	...	रूठना, कोहाना, ख़फ़ा होना, नाराज़ होना, मान करना, रूस जाना ।
१२४०—कोही	...	क्रोधी, तामसी, ग़ुस्सावर, लड़ाका ।
१२४१—कौतुक	...	कुतूहल, खेल, मन बहलाव, दिल्लगी, खिलवा, तमाशा, आश्चर्य, बे प्रयास ।
१२४२—कौतुकी	...	खिलवाड़ी, हँसोड़, दिल्लगीबाज़, मसख़रा, नट, बाज़ीगर ।
१२४३—कौतूहल	...	तमाशा, आनन्दमय खेल ।
१२४४—कौमुदी	...	चन्द्रिका, चाँदनी, अंजोरिया।
१२४५—कौर	...	कवल, ग्रास, निवाला, लुक़मा ।
१२४६—कौल	...	तंत्रोक्त कुलाचार मत, वाममार्ग--कवल, ग्रास ।
१२४७—कौसल	...	अवधपुरीवासी,-निपुणता, चतुराई ।
१२४८—कौशल्या	...	राजा दशरथ की बड़ी रानी, श्री रामचन्द्र की माता ।
१२४९—कौशिक	...	विश्वामित्र मुनि ।
१२५०—कंक	...	कुही, कौवा की जाति, एक पक्षी जिसका पर तीर में लगाया जाता है,-यमराज, छल, ब्राह्मण, विराट देश में युधिष्ठिर का नाम,--कंगाल ।
१२५१—कंकण(कंकन)	...	कंगन, कंगना, चूड़ी, कड़ा, वलय, हाथ का भूषण ।
१२५२—कंकर	...	कांकर, कंकड़, ढेला, चक्का ।
१२५३—कंगूरा	...	कैरी, किसी वस्तु के किनारे पर छोटी छोटी कलगी वा कलसी की नाईं जो बना रहता है ।

नं० शब्द		अर्थ
१२५४—कंचन	...	सोना, सुवर्ण,--स्वच्छ, निर्दोष ।
१२५५—कंचुकी	...	छोटा कपड़ा, चोली, अँगिया, झुलवा,--केचली ।
१२५६—कंज	...	पद्म, कमल, सरोज, कमल ।
१२५७—कंटक	...	कांटा शत्रु, दुशमन, वैरी, रिपु, चुभनेवाला, दुखद ।
१२५८—कंठ	...	ग्रीवा, गर्दन, गला,--स्वर, शब्द, आवाज़ ।
१२५९—कंठाभ	...	गले की प्रभा, गले की शोभा,-कंठ के तुल्य, गले की नाई ।
१२६०—कंडु	...	खाज, खुजलाहत, खुरक, खजुवाहट, खजुरी, खुजली, ख़ारिश ।
१२६१—कंत	...	पति, भर्त्ता, भतार, खावन्द, ख़सम ।
१२६२—कंद	...	मेठी मूल, ऋषियों के खाने की वन की वस्तु, मेघ, समूह, मिश्री ।
१२६३—कंदरा	...	गुहा, दरो, गुफा, खोह, पर्वत का पोल ।
१२६४—कंदुक	...	गेंद, गोला ।
१२६५—कंधर	...	कंधा, स्कंध,कंठ, गला ।
१२६६—कंप	...	कपन, कपकपो, थरथराहट, शीत वा भय से शरीर की थरथराहट ।
१२६७—कंपति	...	समुद्र, सागर, वरुण ।
१२६८—कंबल	...	कमरा, दुशाला, ऊनवस्त्र ।
१२६९—कंबु	...	शंख ।
१२७०—कँहरत	...	कराहता है, कांखता है, आर्त्त शब्द करता है।
१२७१—काँकरी	...	कंकड़ी, छोटा ढेला. गिट्टी ।
१२७२—काँख	...	कोख, कुक्षि, बगल, पसली ।
१२७३—काँच	...	कच्चा, बिना पक्का,--शीशा ।
१२७४—काँचा	...	कच्चा, बिन पका,- शीशा ।
१२७५—काँजी	...	सड़ा हुआ राई और जल, राई-मिश्रित अधार का रस वा पानी, राई का उठान,-खट्टा ।
१२७६—काँधी	...	कँधे पर उठाकर, स्वीकार कर, कुबूल कर,—कंधे पर उठाया, स्वीकार किया ।
१२७७—काँपा	...	डरा, थर्राया, थरथराया ।
१२७८—काँवरि	...	काँवर, बहँगी ।
१२७९—किंकर	...	दास. अनुचर, सेवक, ग़ुलाम ।
१२८०—किंवा	...	वा, या, वा तो, या तो, क्या तो, अथवा, यद्वा।
१२८१—कुंकुम	...	गंधविशेष, केशर, रोरी, हरदी, इत्यादि ।
१२८२—कुंज	...	एक पक्षी का नाम,—लताच्छादित स्थान, वृक्षों से घेरा हुआ स्थान, संकीर्ण स्थान, तंग जगह ।
१२८३—कुंजर	...	हाथी, हस्ती, गज ।
१२८४—कुंजित	...	गुंजरित, गूंजा हुआ, शब्दपूर्ण ।
१२८५—कुंठित	...	भोठर, कुंद, रद, बेकाम ।
१२८६—कुंड	...	चौबच्चा, हौद, टाँका, छोटा तालाब, सरोवर ।
१२८७—कुंडल	...	कर्णाभरण, कान का गहना, कर्णफूल इत्यादि ।

नं० शब्द		अर्थ
१२८८—कुंत	...	बरछी, भाला, नेजा ।
१२८९—कुंद	...	एक सफेद फूल का नाम ।
१२९०—कुंभ	...	घड़ा, ठिल्ला, मटका, जलपात्र विशेष,-हाथी का मस्तक ।
१२९१—कुंभकर्ण	...	घड़े के से कानों वाला, रावण के एक भाई का नाम ।
१२९२—कुंभज	...	घड़े से जन्मे हुए, अगस्त्य मुनि ।
१२९३—कुंवर	...	राजकुमार, राजा के लड़के, राजपुत्र ।
१२९४—कुंहड़	...	कोंहड़ा, कोंढ़ा ।
ख		
१२९५—खग	...	पक्षी, चिड़िया, आकाश में गमन करने वाला, परिन्द, गरुड़ ।
१२९६—खगकेतु	...	गरुड़ध्वज, भगवान्, श्रीविष्णु ।
१२९७—खागा	...	खड्ग, तलवार, खाँगा, खाँड़ा ।
१२९८—खगनायक	...	वैनतेय, गरुड़ ।
१२९९—खगहा	...	पक्षियों का मारनेवाला, व्याधा,—गैंडा ।
१३००—खगेश	...	गरुड़, वैनतेय, पाक्षराज, पक्षियों का स्वामी ।
१३०१—खचर	...	पशुविशेष, (जिसकी आदि में गर्दभ और घोड़े के योग से सृष्टि भई है) ।
१३०२—खचाई	...	खिंचवाई, बनवाई, खींची,—खींचकर खिंचवाकर ।
१३०३—खचित	...	बनाहुआ, निर्मित, जटित, जड़ाऊ ।
१३०४—खची	...	बनी, बनीहुई, निर्मित, जड़ाऊ ।
१३०५—खट्ट	...	खटिया, चारपाई, खाट, मंझा, पलंग ।
१३०६—खटाई	...	खट्टापन, खट्टी वस्तु, अम्ल वस्तु ।
१३०७—खटाहि	...	स्थिर रहते हैं, ठहर रहते हैं, परते हैं, ख़र्च होते हैं, पड़े रहते हैं। निपटते हैं, पूरे पड़ते हैं ।
१३०८—खद्योत	...	जुगनूँ, पटबोजना, सोनकिरवा, एक परवाला कीड़ा जो रात में चमकता है ।
१३०९—खनि	...	खोद कर, खोद करके ।
१३१०—खप्पर (खर्पर	...	साधु जोगी आदिकों का एक पात्र, खोपड़ी, कपाल ।
१३११—खभार (खभारु)		क्षोभ, मोह, हलचल, खडबड़ ।
१३१२—खर	...	एक राक्षस का नाम, दूषण का भाई,—गर्दभ, गधा,—तीक्ष्ण तेज़,—तृण, घास, तिनुका ।
१३१३—खरभर	...	छोभ, क्षोभ, उथल पुथल,—गुलगपाड़ा,—हलचल, गबड़ा, ग़ौगा ।
१३१४—खरारि (खरारी)		खर के शत्रु, श्रीरामचन्द्र ।
१३१५—खरी	...	गधी, गर्दभी,—चोखी, तीखी, पकी हुई, पक्की, मज़बूत, साफ़ साफ़, स्पष्ट निष्कपट ।
१३१६—खरो	...	चोखा, खरा, उत्तम,-तीखा, तेज़-गधाभी,-तृण भी ।
१३१७—खल	...	दुष्ट, नीच, निन्दक, अधर्मी, क्रूर,—औषधि घोटने का पाषाणमय पात्र ।
१३१८—खलै	...	अखरै, जब मालूम दे, गढ़ाय, बुरा लगै,—दुष्ट को, नीच को,-घोटै, रगड़ै
१३१९—खलु	...	निश्चय करके, सचमुच, निःसन्देह ।

नं० शब्द		अर्थ
१३२०—खस	...	आसाम देश में एक जाति विशेष,—सुगन्धिमय तृण, उशीर,—गिरपड़ा, सरक पड़ा ।
१३२१—खसी	...	गिरी, सरकी, खसकी, गिरपड़ी, सरक पड़ी ।
१३२२—खाइ	...	खायकर, भोजन करके, जेंकर ।
१३२३—खाइय	...	खाइये, जेंइये,—खाना चाहिये, जेंना उचित है ।
१३२४—खाई	...	खायली, जेंली,—परिखा, क़िले के चारों ओर की नहर ।
१३२५—खाटी	....	खटिया, मंझा, पलंग,—खट्टी, तुर्श, अम्ल ।
१३२६—खातेउँ	...	खाता, खायजाता, खाय लेता,—मैं खाय लेता,—खाते हुए भी ।
१३२७—खानिक	...	खान का, आकर का ।
१३२८—खानी	...	खान, आकर,—खोदी ।
१३२९—खारय	...	ख़ाली करै,—क्षार निकालै, क्षार से धोवै,—साफ़ करै, शुद्ध करै ।
१३३०—खारा	...	खारी, नोना, क्षारयुक्त,—खाराहुआ, शोधित, शुद्ध किया ।
१३३१—खाल	...	चर्म, चमड़ा, संपूर्ण शरीर का पूरा चर्म,—गड़हा, गड्ढा, पोल ।
१३३२—खाली	...	रीती, रीता, नीचे, खोदी, पोली की, खाय ली, जेंली ।
१३३३—खालु	...	देह का चर्म—खोद, पोल कर ।
१३३४—खाले	...	खोदे, पोल करे, नीची की ओर, गड़हे में ।
१३३५—खिचाय	...	खिचवा कर, इँचा कर, इँचाय ।
१३३६—खिन्न	...	उदास, दुखिया, दुःखित, दुखी, क्षीण, दुर्बल, दुबला, अनाथ, निराश्रय, दीन ।
१३३७—खिसियानि	...	लज्जित, शर्मिन्दगी,—लज्जा,—लजाई, लज्जित हुई, संकुचित हुई ।
१३३८—खीन (क्षीण)	...	दुर्बल, दूबल, दुबला, पतला, नाज़ुक, सुकुमार ।
१३३९—खीस	...	घटी, नाश, कमी, न्यूनता ।
१३४०—खीसा	...	घटा, उतरा, सरका, गिरा, खलीता, जेब ।
१३४१—खुटाई	...	दुष्टता, बुराई, नटखटी, बदमाशी ।
१३४२—खुटानी	...	पूरी हुई, समाप्त होगई, घटगई, निःशेष हो गई ।
१३४३—खुनुस	...	क्रोध, कोप, अनख, ग़ुस्सा ।
१३४४—खुवारू	...	ख्वार, ख़राब, बिगड़ा हुआ, नष्ट ।
१३४५—खेत (क्षेत्र)	...	छेत्र, भूमि, पृथ्वी—समरभूमि,—कृषिभूमि,—योनि ।
१३४६—खेद	...	दुःख, क्लेश, पीड़ा, मानसिक पीड़ा ।
१३४७—खेरे	...	पुरे, गाँव, ग्राम, छोटी छोटी बस्तियाँ ।
१३४८—खेलत	...	खेलता है,—खेलने में, खेलतेही ।
१३४९—खेलवार (खेलवारू)		खेल, कौतुक, खिलवाड़,—खेलने वाला, खेलाड़ी ।
१३५०—खेला	...	खेल, कौतुक, खिलवाड़,—खेल किया ।
१३५१—खेलाउब	...	खेलाना, तंग करना, सताना, बेर बेर किसी काम को ज़बरदस्ती कराना ।
१३५२—खोज	...	पता, ठिकाना, चिह्न, पहिचान ।
१३५३—खोइ	...	नष्ट कर, हिरवाय कर ।
१३५४—खोट	...	बुराई, दुष्टता, दोष, ऐब, हानि, बट्टा ।

नं० शब्द		अर्थ
१३५५—खोटी	...	बुरी, दुष्टा, दूषिता, ऐबी।
१३५६—खोड़स	...	सोलह, सोरह, १६।
१३५७—खोदै	...	खोद डाले, उखाड़े, निर्मूल करे।
१३५८—खोरी	...	ऐब, दोष, खोटाई,—गली, संकुचित मार्ग।
१३५९—खोरे	...	ऐबी, दोषी, लँगड़े।
१३६०—खोली	...	भोगल, चोंगी, नलिका,—ओछाड़, गिलाफ़।
१३६१—खोवै	...	हिरवावे।
१३६२—खोह	...	गुफा, गुहा, गड़हा, सुरंग।
१३६३—खौर	...	लहरियेदार रेखाओं वाला तिलक।
१३६४—खंजन खंजरीय	...	एक छोटा पक्षी, खेंड़रिच, (यह एक श्याम रंग की अति चंचल चिड़िया है जिससे नेत्रों की उपमा दी जाती है)।
१३६५—खंजर	...	खड्ग, तलवार, करवार, एक प्रकार का शस्त्र।
१३६६—खंड	...	टुकड़ा, भाग, हिस्सा,—खांड़, लाल शक्कर,—तोड़ कर।
१३६७—खंडित	...	टूटा हुआ, अस्त व्यस्त, बिगड़ा हुआ, बेसिलसिले, तोड़ा हुआ, भ्रष्ट-क्रम।
१३६८—खंडेउ	...	तोड़ा, तोड़ दिया, तोड़ डाला, भांगा, भंग किया, काट दिया, टुकड़े टुकड़े किया।
१३६९—खंभ	...	खंभा, स्तंभ, पावा, सुतून।
१३७०—खंभन	...	खंभों में, खंभों में से, खम्भ का बहुवचन।
१३७१—खँसि	...	गिरकर, सरक कर, उतर कर।
१३७२—खाँगे	...	कम होने से, घटने से,—घटे,—पोले किये हुए,—ख़ाली किये।
१३७३—खैंच	...	फाँस, काँटा, कंटक,—खींच कर, घसीट कर, ऐंच, ईंचकर।
ग		
१३७४—गई	...	चली गई, जाती रही, गमन किया।
१३७५—गईबहोर	...	गई हुई को फेर लाने वाला, बिगड़ी को बनाने वाला।
१३७६—गगन	...	आकाश, शून्य, आसमान।
१३७७—गच	...	छत।
१३७८—गज	...	हस्त, हाथी, कुंजर।
१३७९—गजवदन गजानन	...	हाथी के मुंह वाला, हाथी का मुख, गणेशजी।
१३८०—गजारि	...	हाथी का शत्रु, केहरि, शेर, बाघ, सिंह, व्याघ्र।
१३८१—गढ़	...	कोट, क़िला।
१३८२—गढ़नि	...	क़िले, गढ़ का बहुवचन,—कोटों में,—बनावट, रचना।
१३८३—गत	...	चाल, चलन,—लीन, प्राप्त, गमन, व्यतीत, नष्ट, भिन्न, गया, ज्ञात, निकृष्ट, मुक्त।
१३८४—गति	...	पहुँच, चाल, चलन, दशा, हाल, रीति, राह, रास्ता, ज्ञान, उपाय, ... क्रिया-कर्म, मुक्ति, मोक्ष, प्रेत-कर्म।
१३८५—गथ	...	मूल्य, दाम, मोल, धन, द्रव्य।

नं० शब्द		अर्थ
१३८६—गदगद (गद्गद)		आनंदयुक्त, पुलकित, आनन्दमगन, छकित।
१३८७—गदा	...	एक शस्त्र का नाम, वुर्ज़।
१३८८—गन (गण)	...	समूह, थोंक, झुंड, निकर,—सेवक, पार्षद, शिव के दूत,—कविता में ८ गण, ज्योतिष के गण,—गिनकर, गणना करके।
१३८९—गनई	...	गिनता है, गिनती करता है।
१३९०—गननायक (गणनायक)	...	दल-स्वामी, गणों के स्वामी, श्रीगणेशजी, गरोह का अफ़सर।
१३९१—गन्य (गण्य)	...	गिनने के योग्य, गिनती करने लायक़, हिसाब करने योग्य, गिनती में।
१३९२—गनराऊ / गनराज	...	गणराज, गणेश जी, गणपति, पार्वती-पुत्र।
१३९३—गनि	...	गिनकर, विचार करके।
१३९४—गनिक (गणक)		गिनती करने वाला, हिसाबी, ज्योतिषी, मुनीम।
१३९५—गनिका (गणिका)		वेश्या, पतुरिया, कसवी, रंडी, कुलटा।
१३९६—गनी	...	गिनी, विचारी, विचार की,—धनी, धनवान्, बड़ा आदमी, दौलतमन्द।
१३९७—गनेस (गणेश)		गणपति, पार्वतीनंदन, गिरिजासुत।
१३९८—गने	...	गिने हुए, गिनती के, गिने।
१३९९—गभुआरे	...	गर्भ के बाल, बालकों के बाल, गुच्छेदार बाल, झुप्पेदार बाल, झंडूले केश।
१४००—गम	...	गमन, गति, गम्य, जानने की शक्ति, जाने की सामर्थ्य,—शोक।
१४०१—गमन	...	जाना, चलना, चाल, गति, बिदाई, विसर्ज्जन।
१४०२—गम्य	...	जाने योग्य, गमन के योग्य,—पैठ, समझने योग्य, प्रवेश के योग्य।
१४०३—गय	...	हाथी, हस्ती, गज।
१४०४—गयउ	...	गया, चलागया, जाने पर भी, गये भी।
१४०५—गयल	...	मार्ग, मग, राह, रास्ता, पथ, पंथ,—गया, जा चुका।
१४०६—गया	...	जा चुका, गमन कर चुका,—एक पितृतीर्थ का नाम।
१४०७—गयंद	..	हाथी, गज, हस्ती, गजेन्द्र, बड़ा हाथी, मस्त हाथी।
१४०८—गर	...	गला, कंठ,—रोग,—विष, ज़हर।
१४०९—गरई	...	गल जाता है, सड़ जाता है, नष्ट हो जाता है, नाश को प्राप्त होता है, लज्जित होता है, नम्र होता है।
१४१०—गरज	...	चिंघाड़, गर्जन, घोरनाद, भयानक शब्द,—प्रयोजन, मतलब, गौ, अवसर, आशय।
१४११—गरद	...	रज, धूर, गर्दा,—विष देने वाला, ज़हर देने वाला।
१४१२—गरदन	...	गला, कंठ, ग्रीवा।
१४१३—गरदा	...	रज, धूल, गर्द,—विष देने वाली, ज़हर देने वाली।
१४१४—गरभ (गर्भ)	...	पेट, अंतर, भीतर का,—अहंकार, अभिमान।
१४१५—गरल	...	विष, कालकूट, माहुर, ज़हर।
१४१६—ग्रसन	...	ग्रास करना, खाय जाना, लीलन।

नं० शब्द	अर्थ
१४१७—गरह (ग्रह) ...	सूर्यादि नव ग्रह,—गठिया, वात रोग।
१४१८—गरहीं ...	गलजाते हैं, सड़जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं, बहजाते हैं।
१४१९—ग्राम ...	गाँव, दिहात, छोटी बस्ती, पुरा, खेरा,—समूह, बहुतायत, झुंड।
१४२०—ग्राम्य ...	गाँव का, दिहाती, ग्रामवासी, गँवार, असभ्य, मूर्ख,—गाँव के योग्य।
१४२१—ग्राह ...	मकर, मगर, जल-जन्तु विशेष।
१४२२—ग्राही ...	ग्रहण करने वाला, लेने वाला, ख़रीदने वाला, पकड़ने वाला।
१४२३—ग्रीवा ...	गला, कंठ, गर्दन।
१४२४—ग्रीषम (ग्रीष्म) ...	गरमी की ऋतु।
१४२५—गरीब ...	दीन, धनहीन, निर्धन,—शान्त, सीधा, सरल, निष्कपट, सुशील।
१४२६—गरुअ ...	भारी, बोझल, बोझ वाला, बोझयुक्त,—गम्भीर।
१४२७—गरुड़ ...	वैनतेय, विनतापुत्र, पक्षिराज, विष्णुवाहन,—गीध।
१४२८—गरुता ...	भारीपन, गुरुता, गौरव, बड़ाई।
१४२९—गल ...	गला, कंठ,—गलजाता है, पिघल जाता है, द्रव जाता है।
१४३०—गलित ...	गलाहुआ, बिगड़ा हुआ, नष्ट, सड़ा हुआ, पिघला हुआ।
१४३१—गव ...	गौ, ग़रज़, प्रयोजन, मतलब, औँसर, मौक़ा।
१४३२—गवनि ...	गमन करने वाली, चलने वाली,—गई,—जाकर।
१४३३—गवनी ...	गई, चली गई,—चलने वाली।
१४३४—गवहिं ...	गँव से, मौक़े से, ग़रज़ से, मतलब से, चुपके से, चुप चाप,—जाते हैं, गमन करते हैं।
१४३५—गवासा ...	गोभक्षी, गोहिंसक, बूचर, क़साई।
१४३६—गहई (गहहीँ) ...	पकड़ते हैं, ग्रहण करते हैं, लेते हैं, स्वीकार करते हैं, धरते हैं।
१४३७—गहगह ...	आनंद के बाजों की ध्वनि, ख़ुशी के नगारे का शब्द।
१४३८—गहन ...	सघन वन, विकट वन, घोर जंगल,—पकड़।
१४३९—गहवर ...	सघन, घना वन, वृक्षों से आच्छादित स्थान, संकुचित स्थान, शोचयुक्त, भराहुआ कंठ, रुकता हुआ कंठस्वर, खंडित स्वर।
१४४०—गहरु ...	देरी, अबेर, विलम्ब, अतिकाल, अरसा।
१४४१—गा ...	गया, चलागया, जाता रहा।
१४४२—गायगोरू ...	गायगोष्ठ, गैया गोरू, गो-समूह, गोशाला, गो-गोष्ठ।
१४४३—गाउँ ...	गाँव, ग्राम, पुर,—गाऊँ, गान करूँ।
१४४४—गाजन ...	गर्ज, गर्जन, नाद,—नाश करनेवाला।
१४४५—गाड़ ...	गड़हा, ग़ार, खड्डा,—चुभन, गड़न।
१४४६—गाडर ...	गहिरा,—गड़हे का,—घास विशेष, खस का भेद,—भेंड़ो।
१४४७—गाड़हिं ...	गाड़ते हैं, गड़हे में दबाते हैं, खोंसते हैं, धँसाते हैं, चुभाते हैं।
१४४८—गाढ़ ...	कष्ट, आपद, वेदना, विपत्ति, कठिनाई।
१४४९—गाढ़ा ...	कठिन, दृढ़, पंकवत्, घना, सघन,—आपत्ति।
१४५०—गात (गात्र) ...	शरीर, अंग, तनु, देह।
१४५१—गाथा ...	कथा, कहानी, गीत, गान, श्लोक, पद्य, छंद।

नं० शब्द		अर्थ
१४५२—गाथे	...	गुंथे, गूँधे, पिरोए, —गूँथे हुए।
१४५३—गादुर		चमगीदड़, चमगदुरा।
१४५४—गाधि	...	एक राजा का नाम, विश्वामित्र मुनि के पिता।
१४५५—गाधिसुवन	...	विश्वामित्र मुनि, राजा गाधि के पुत्र।
१४५६—गान	...	गावना, गीत, यश, कहना।
१४५७—गामिनि	...	गमन करनेवाली, जानेवाली, चलनेवाली।
१४५८—गामी	...	गमन करनेवाला, चलनेवाला, जानेवाला।
१४५९—गाय	...	गो, गौ, गैया, गऊ, धेनु, सुरभी।
१४६०—गायक	...	गानेवाला, गवैया, कथक।
१४६१—गारि (गारी)	...	गाली, कुवाच्य, बुरा वचन, अप शब्द, शाप।
१४६२—गारूड़ी	...	विषवैद्य, सर्प का विष हरने वाला, सँपेरा।
१४६३—गाल	...	कपोल, अंग विशेष,—वाचाल, बकवादी, बातूनिया,—गप, बकवाद।
१४६४—गाल बजाई	...	बात बनाकर, बकवाद करके, गप मार के, बका, बकवाद करी, गप मारी।
१४६५—गालव	...	एक मुनि का नाम, विश्वामित्र के अति भक्त शिष्य।
१४६६—गावत गावहि		गाता है, गान करता है,—गान करतेही।
१४६७—गाहक(ग्राहक)	..	चाहने वाला, अभिलाषा करने वाला, ग्रहण करने वाला, लेनेवाला, ख़रीदार, सौदा ख़रीदने वाला।
१४६८—गाहा	...	कथा, गाथा,—ग्राहक, ग्रहण करने वाला,—गुनगान।
१४६९—गिरत	...	गिरतेहीं,—गिरता है।
१४७०—गिरा	...	गिरपड़ा, खसा,—वाणी, सरस्वती, शारदा,—कविता।
१४७१—गिरा ग्राम	...	ग्राम-भाषा, गँवारू बोली।
१४७२—गिरि	...	पर्वत, पहाड़, भूधर, अचल,—एक संन्यासियों की जाति।
१४७३—गिरिजा	...	पार्वती, पर्वत से उत्पन्न पर्वत की कन्या, भवानी।
१४७४—गिरिधारी	...	पर्वत को धारण करनेवाला, पहाड़ उठानेवाला।
१४७५—गिरिन्दा	...	गिरीन्द्र, पर्वतराज, हिमालय, सुमेरु।
१४७६—गिरिनंदिनि	...	पार्वती, गिरिजा, गौरी, भवानी।
१४७७—गिरिनाथ	...	शिव, महादेव, भव, शंकर, कैलाशपति,—हिमालय, पर्वतराज।
१४७८—गिरिवर	...	पर्वतश्रेष्ठ, सुमेरु, हिमालय, विन्ध्या, इत्यादि।
१४७९—गिरीश	...	महादेव, कैलाशपति,—पर्वतराज, हिमालय।
१४८०—गिलई	...	निगल जाय, लीलजावे,—लील जाता है।
१४८१—गीध	...	एक पक्षी, गृद्ध, गिद्ध,—जटायु, संपाति।
१४८२—गुच्छे	...	झुप्पे, झब्बे, झुब्बे, फुँदने।
१४८३—गुड़ी	...	गुड्डी, पतंग, कनकौवा,—गुड़िया।
१४८४—गुण (गुन)	...	चतुराई, प्रवीणता, विद्या,—रस्सी, डोरी, त्रिगुन (सत, रज, तम), दया, स्वभाव, लक्षण, भलाई, यश, कीर्ति।

नं० शब्द		अर्थ
१४८५—गुणज्ञ	…	गुण को जानने वाला, गुण को समझनेवाला, गुणी, गुणवान्, विचारशील।
१४८६—गुणातीत	…	त्रिगुण से परे, निर्गुण, ब्रह्म।
१४८७—गुदरत	…	जानता है, जनाता है, कहता है, प्रकाशित करता है,—गुज़रते हैं, जाते हैं, चलते हैं ।
१४८८—गुदारा	…	घटहा, नदीतीर पर सर्वदा पार उतारने के लिये नियत नौकर।
१४८९—गुन (गुण)	…	सुभाव, विशेषण, हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, रस्सा, डोरी, त्रिगुण, (सत, रज, तम), प्रशंसा, लक्षण।
१४९०—गुनद	…	गुणदायक, लाभदायक, फ़ायदेमन्द।
१४९१—गुनहु	…	विचारो, गुणन करो,—लाभ भी, फ़ायदा भी।
१४९२—गुनिये	…	सोचो, विचारो, विचारिए, गुणन करिए, विचारते हो, लगाते हो,—विचारना चाहिए।
१४९३—गुनी (गुणी)	…	गुणवान्, विद्वान्, सोची, विचारी,—विचारकर।
१४९४—गुप्त वा गुपुत	…	छिपा हुआ, ढका हुआ, लुप्त, लुका हुआ, रक्षित।
१४९५—गुमान	…	मान, अभिमान, ग़रूर,—अनुमान।
१४९६—गुमानी	…	अभिमानी, मग़रूर, गुमान करनेवाली।
१४९७—गुरु	…	आचार्य, शिक्षक, पुरोहित,—द्विमातृक अक्षर,—वृहस्पति,—भारी, गरुआ, बड़ा।
१४९८—गुरुजन	…	बड़े लोग।
१४९९—गुलर	…	उदुम्बर, ऊमर।
१५००—गुसाँई	…	स्वामी, संन्यासी,—गोस्वामी, जितेन्द्रिय, प्रभु, मालिक।
१५०१—गुह	…	निषाद, भील, मल्लाह, माझी।
१५०२—गुहा	…	गुफ़ा, कन्दरा, खोह, सुरंग।
१५०३—गुहार	…	रक्षार्थ ज़ोर से बुलाने का शब्द।
१५०४—गुहारी	…	गुहार करने वाला, रक्षार्थ उच्च स्वर से बुलाने वाला,—उच्च स्वर से बुलाने का शब्द।
१५०५—गूढ़	…	गुप्त, छिपा हुआ, कठिन।
१५०६—गूलर	…	ऊमर, उदुम्बर, गुल्लर।
१५०७—गृध्रराज	…	गिद्धों का राजा, गीधश्रेष्ठ,—जटायु।
१५०८—गृह	…	घर, मकान, निवासस्थान, रहने की जगह।
१५०९—गृही	…	गृहस्थ, घर का स्वामी, घरवाला।
१५१०—गृहीत	…	पकड़ा हुआ, स्वीकृत, अंगीकृत, ग्रहण किया हुआ।
१५११—गे	…	गये, चले गये, बीत गये।
१५१२—गेरु	…	लाल रंग का पत्थर।
१५१३—गेह	…	गृह, घर, धाम, मकान, हवेली।
१५१४—गो	…	इन्द्रिय, दिशा, वाणी, जल, स्वर्ग, वज्र, इत्यादि।
१५१५—गोई	…	गुप्त की, छिपाई,—छिपी हुई, छिपी, गुप्त।
१५१६—गोए	…	छिपाये, छिपाने से, छिपे हुए।

नं० शब्द		अर्थ
१५१७—गोचर	...	इन्द्रियों से जानने योग्य, सम्मुख, सामने।
१५१८—गोतीत	...	इन्द्रियों से परे, जो इन्द्रियों से न जाना जाय।
१५१९—गोद	...	गोदी, अंक, उत्संग, उछंग, कोरां।
१५२०—गोदावरी	...	एक प्रसिद्ध नदी का नाम।
१५२१—गोपद	...	गोष्पद, गऊ का खुर, गाय का पैर, गौ के खुर का गढ़ा।
१५२२—गोप्य	...	छिपाने योग्य, छिपाने लायक, गोपनीय।
१५२३—गोपर	..	गोतीत, इन्द्रियों से परे।
१५२४—गोमती	...	एक प्रसिद्ध नदी।
१५२५—गोमायु	...	गीदड़, सियार, शृगाल, जम्बुक, उलकामुख।
१५२६—गोरोचन	...	गौ लोचन, गोमद, एक प्रकार का पवित्र गंध जो गऊ के मस्तक से पीत वर्ण का निकलता है।
१५२७—गोलक	...	चक्षु, आँख, नेत्र, इन्द्रियों का स्थान,—द्रव्य संग्रह करने का पात्र।
१५२८—गोला	...	अंड, कंदुक, गेंद, गोल पदार्थ।
१५२९—गोविंद	...	विश्व को जाननेवाला, ज्ञानसिन्धु, गोपाल, ईश्वर का एक नाम।
१५३०—गोसांई	...	गोस्वामी, जितेन्द्रिय, गुरु, स्वामी, मालिक, प्रभु।
१५३१—गौतम	...	एक ऋषि का नाम, अहिल्या के पति।
१५३२—गौतमनारि	...	अहिलया।
१५३३—गौन	...	गमन, गवन, जाना, देरी।
१५३४—गौर	...	गोरा, उजला, उज्ज्वल, सफ़ेद, श्वेत, सित।
१५३५—गौरव	...	यश, प्रशंसा, बड़ाई, भारीपन, बड़प्पन, रुआब।
१५३६—गौरि	...	पार्वती, गिरिजा।
१५३७—गौरीस(गौरीश)		महादेव, शंकर, पार्वती-पति, गौरी-पति।
१५३८—गंग(गंगा)	...	सुरसरि, देवसरि, जाह्नवी, भागीरथी।
१५३९—गंजन	...	नाश करनेवाला।
१५४०—गंजा	...	नाश किया,—खल्वाट, जिसकी चाँद में बाल न हों।
१५४१—गंध	...	विलेपन, चन्दन, सूंघने की वस्तु, सुगन्धित वस्तु।
१५४२—गंधर्व	...	योनि विशेष, जाति विशेष, स्वर्ग के गवैये-नचनिये,—घोड़ा।
१५४३—गंभीर	...	गहरा, शान्त, धैर्ययुक्त, अचंचल, गह्वर।
१५४४—गँव	...	गौं, गरज़, मौक़ा, अवसर, मतलब।
१५४५—गँवार	...	ग्रामीण, ग्रामवासी, गवँहा।
१५४६—गाँठी	...	ग्रंथी, गाँठ, गिरह।
१५४७—गुंजत	...	शब्द करता है, गुंजार करता है, गूंजता है, नाद करता है।
१५४८—गुंजा	...	घुंघची, करजनी।
घ	...	
१५४९—घट	...	घड़ा, कलश, कुंभा, ठिला,—अन्तःकरण, हृदय।
१५५०—घटज	...	कुम्भज ऋषि, अगस्त्य मुनि, जो घड़े से जन्मे।
१५५१—घटब	...	कम होना, क्षीण होना, न्यून होना,—गढ़ेंगे, बनावेंगे, करब, करेंगे।

नं०	शब्द	अर्थ
१५५२	—घटयोनी ...	अगस्त्य मुनि, कुंभज ऋषि, घटरूप योनि करके उत्पन्न।
१५५३	—घट्ट(घट्टा) ...	घाट, तीर, नदी वा सरोवर के जल में उतरने के हेतु सीढ़ी, बाँध वा द्वार।
१५५४	—घटा ...	कम हुआ, घटगया,--समूह,--अंधेरा, बदली, मेघ-समूह।
१५५५	—घटाटोप ..	चारों ओर से मूंद कर अँधेरा करने की वस्तु, अत्यन्धकार, गहरी बदली।
१५५६	—घटि(घटी) ...	घटिया,--कमती,—गढ़ कर, बना कर,—हानि, नुक़सान, टोटा,—घट गई, ... कम हो गई।
१५५७	—घटिहि ...	करेगा, बनावेगा, गढ़ेगा,—घटना होगी,—बनावट होगी।
१५५८	—घटे	बने, बनाये गये,--कम हुए, थोड़े हुए।
१५५९	—घन	बादल, मेघ,--घना, गझिन, सघन,—लोहा पीटने का बड़ा भारी ... हथौड़ा।
१५६०	—घनेरे ...	बहुतेरे, बहुत से, अनेकों, ढेर से।
१५६१	—घमोइ (घमोर)...	भड़भाँड़, एक प्रकार का कांटेदार पौदा।
१५६२	—घमंड ...	अभिमान, अहंकार, शेख़ी, ग़रूर।
१५६३	—घर ...	गृह, मकान, हवेली, निवासस्थान।
१५६४	—घरनी ...	घरवाली, गृहिणी, घर की स्वामिनी, भार्या, पत्नी, स्त्री, जोरू।
१५६५	—घरफोरी ...	घर फोड़ने वाली, घर में फूट कराने वाली, इधर की उधर लगाने वाली, चुग़लख़ोरिन।
१५६६	—घ्रान (घ्राण) ...	नासिका, नाक,—सूंघना,—वास लेना,—गंध, बू।
१५६७	—घरिक ...	घड़ी एक, एक घड़ी, घड़ी भर, थोड़ी देर।
१५६८	—घरी ...	घड़ी, एक नियत समय, २४ मिनट,—समय बतानेवाला यंत्र।
१५६९	—घवरि ...	घौर, घौद, गुच्छा, समूह,—एकत्र होकर।
१५७०	—घहरात ...	टूट पड़ते हैं,—टूट पड़तेही, झोंक से गिरतेही,—गरजतेही, नाद करतेही,--गरजते हैं।
१५७१	—घाउ ...	चोट, क्षत, घाव, छत, ज़ख्म।
१५७२	—घाट ...	डौल, रूप, सूरत,—घटी, कमी,—नीच—नदी वा सरोवर की चढ़, तीर, तट।
१५७३	—घाटा ...	घटी, हानि, टोटा, कमी, नुक़सान।
१५७४	—घाटारोह ...	घाटबन्दी, घाटों पर की रोक कि कोई पार न उतरने पावे,—घाट पर चढ़ना।
१५७५	—घाटि	नीच कर्म, नीचता, कमीनापन।
१५७६	—घात ...	धोखा, बहाली, दांवपेच,—घाव, चोट,—मारना, दुःखदेना, आन्तरिक क्लेश देना, दिल दुखाना।
१५७७	—घातिनि ...	मारने वाली, नाश करने वाली, बिगाड़ने वाली, धोखा देने वाली।
१५७८	—घाती ...	मारने वाला, नाश करने वाला,—धोखा देने वाला।
१५७९	—घाम ...	धूप, आतप, तपन।
१५८०	—घाय ...	घाव, क्षत, जख़्म,—दे, देकर।

नं० शब्द		अर्थ
१५८१—घायल	...	चोटैल, घाव खाया हुआ, चोट खाया हुआ, ज़ख़्मी ।
१५८२—घाये	...	दिये, देदिये ।
१५८३—घालक	...	नाशक, नाश करनेवाला, डालने वाला,—मिलाने वाला, गड़बड़ करने वाला ।
१५८४—घालत	...	मारता है, नाश करता है, नाश करतेही,—मिलाता है, गड़बड़ करता है, घाल मेल करता है, फेंकता है, डालता है, फेंकतेही ।
१५८५—घाला	...	नाश किया, डाला, मिलाया, गड़बड़ किया, घाल मेल किया, मारा, धोखा दिया, धोखे से मार डाला ।
१५८६—घालि	...	डालकर, फेंककर, मारकर, नाश करके ।
१५८७—घाली	...	डालदी, फेंकदी, मारडाली, नष्ट की ।
१५८८—घाव	...	क्षत, छत, चोट, ज़ख़्म ।
१५८९—घुन	...	जन्तु विशेष, वे जन्तु जो काष्ठ वा अनाज के भीतर से खा कर पोला कर देते हैं ।
१५९०—घुनाक्षर	...	घुन के काटे हुए चिह्न, घुनों की काट कर बनाई हुई रेखायें ।
१५९१—घुम्मरहि	...	घुमेर खाते हैं, घुमटा खाते हैं, घुमरी लेते हैं, चक्कर खाते हैं, घूमकर गिरते हैं ।
१५९२—घुरघुरात	...	घुरघुराता है, घुरघुर शब्द करता है ।
१५९३—घूर्मि	....	घूम कर, घुमेर लेकर, घुमटा खा कर, चक्कर खा कर ।
१५९४—घूर्मित	...	घूमाहुआ, घुमेर खाया हुआ, चक्कर खाया हुआ ।
१५९५—घृत	...	घी, सर्प ।
१५९६—घेरा	...	घुमाव, वृत्त ।
१५९७—घंटा	...	एक प्रकार का बाजा जो देवपूजन में काम आता है ।
च		
१५९८—च	...	और, पुनः, भी ।
१५९९—चक (चक्र)	..	पहिया, चक्का, चाक, चक्कर, चक्र, सुदर्शन चक्र ।
१६००—चक्कवे	...	चक्रवर्ती राजा, उदयास्त पर्यन्त राज करने वाला ।
१६०१—चकवाक	...	चकवा चकवी ।
१६०२—चकित	....	आश्चर्ययुक्त, भयचक, भौचक्का, भ्रमयुक्त, घबराया हुआ, जकित ।
१६०३—चकी	...	चकई, चकवी, चक्रवाकी ।
१६०४—चकोर	..	एक पक्षी का नाम, एक चिड़िया जो चन्द्रमा से अति स्नेह रखती है, चन्द्र को देखने वाला पखेरू ।
१६०५—चख	...	चक्षु, नेत्र, नयन, लोचन, आँख ।
१६०६—चटाई	...	तृण-निर्मित बिछावन, तिनकों का बना बिछौना ।
१६०७—चढ़इ	...	चढ़ता है, ऊपर जाता है, सवार होता है, धावा मारता है, चढ़ै, ऊपर जाय, सवार होवे, धावा मारै ।
१६०८—चढ़ै	...	चढ़ जाय, सवार हो, ऊपर आये, धावा मारे, चढ़ाई करे ।
१६०९—चतुर	...	धूर्त्त, बुद्धिमान्, होशियार, चालाक ।

नं० शब्द		अर्थ
१६१०—चतुराई	...	बुद्धिमानी, बुद्धिमत्ता, धूर्त्तता, होशियारी, चालाकी ।
१६११—चतुरानन	...	चार मुख वाला, ब्रह्मा ।
१६१२—चतुरंग	...	४ भाग में बटी हुई सेना (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल), चौसर, चौपड़, शतरंज ।
१६१३—चपरि	...	शीघ्र, तुरत, दबकर, दबककर, भूमि से मिलकर, घुस कर ।
१६१४—चपल	...	चंचल, अस्थिर, चिलबिला, चुलबुला, जल्दबाज़ ।
१६१५—चपलाई } चपलता }	...	चंचलता, चिलबिलापन, चुलबुलाहट ।
१६१६—चपेट	...	तमाचा, थप्पर, धक्का, थपेड़,—झोंक, धोखा ।
१६१७—चबेना	...	चर्वण, चबाकर खाने की वस्तु, दाना, भूंजा अनाज ।
१६१८—चमगादुर	...	चमगीदड़, गादुर, उल्लू, उलूक ।
१६१९—चमत्कार	...	आश्चर्य, अचम्भा,—लीला ।
१६२०—चमर	...	चँवर, चामर ।
१६२१—चर	...	दूत, चलने वाला,–खाने वाला, व्यवहार करने वाला ।
१६२२—चरण	...	पैर, पाँव, पग, पाद, पद,—श्लोकार्द्ध ।
१६२३—चरणपीठ	...	पैर के पीछे का भाग,—खडाऊँ, पादुका, पाँवरी, कठनहर ।
१६२४—चरना	...	चरण, पैर, पग, गोड़,—छन्द विशेष, दोहा जाति ।
१६२५—चरफराहि	...	चरचराते हैं, चिर्राते है, टूटते हैं ।
१६२६—चरम(चर्म)	...	चाम, चमड़ा,—ढाल, फरी ।
१६२७—चराचर	...	चल अचल, जड़ चैतन्य, सजीव निर्जीव, चलने वाले और न चलने वाले ।
१६२८—चरित	...	चरित्र, व्यवहार, चालचलन,—कथा, वार्ता, बात, वृत्तान्त, हाल, अहवाल ।
१६२९—चरु	...	यज्ञभाग, शाकल्य, होम करने की वस्तु, आहुति देने की वस्तु ।
१६३०—चलत	...	चलते हैं,—चलते ही ।
१६३१—चलन	...	चाल, रीति, व्यवहार ।
१६३२—चलनी	...	चलने वाली, चलन, रीति,—छिद्रमय पात्र जिस में आटा आदि वस्तु छानी जाती है ।
१६३३—चला	...	चल निकला, चल पड़ा, चल गया, प्रचलित हुआ, जाने लगा, जाया चाहता है, मरा चाहता है ।
१६३४—चलावा	...	चलाया, हाँका, प्रचलित किया,—चलौवा,(प्रायः महामारी आदि को टोटके द्वारा गाँव में उसके दोष को बाहर करने का एक व्यवहार) ।
१६३५—चले	...	चल निकले, प्रचलित हुए, जाने लगे, जाया चाहते हैं ।
१६३६—चवई	...	चुवै, बहै, टपकै, चूता है, टपकता है ।
१६३७—चवय	...	चुवै, बहै, टपकै ।
१६३८—चह	...	चाहता है, दरकार है, अपेक्षित है, चाहिए ।
१६३९—चहसि	...	तू चाहता है ।

नं० शब्द		अर्थ
१६४०—चहिय	...	चाहिए, दरकार है, अपेक्षित है ।
१६४१—चहुँ	...	चारो ।
१६४२—चहुँयुग	...	चारों युग, चारों युग में ।
१६४३—चहौं	...	चाहता हूँ, इच्छा करता हूँ, मनसूबा करता हूँ ।
१६४४—चाऊ(चाव)	...	आनन्द, उत्साह, इश्तियाक़,—मनोहर, मनभावन, पसंदीदा ।
१६४५—चाक(चाका)	...	चक्र, पहिया, चक्का, चरखा, गोल वस्तु, कुम्हार का यंत्र, उठाया ।
१६४६—चाकना	...	छापना, बिजुली ।
१६४७—चाकी	...	चक्की, जाँता, आटा पीसने का यंत्र, उठाली ।
१६४८—चाकू	...	छुरी, कर्द, काटने की वस्तु ।
१६४९—चाख	...	चखकर, स्वाद लेकर ।
१६५०—चाड़	...	सहारा, आश्रय,—जोर, तंदिही, दबाव, आवश्यकता, ज़रूरत, दरकार ।
१६५१—चातक	...	पपीहा, चात्रिक ।
१६५२—चाप	...	धनुष, दाब, दबाव,—एक वृक्ष का नाम ।
१६५३—चापत	...	दबाता है, दबाते ही ।
१६५४—चापी	...	दबाई ।
१६५५—चामर	...	चँवर, मोरछल, चौंर, चौंरी ।
१६५६—चामुंडा	...	एक देवी का नाम, एक योगिनी का नाम ।
१६५७—चार	...	दूत, जासूस,—एक अंक, ४ ।
१६५८—चारि	...	चार, ४,—चतुर, चुगलख़ोर, गप्पी, लबार, चौकन्ना ।
१६५९—चारि अवस्था	...	चारों अवस्था (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय) ।
१६६०—चारिपद	...	चतुष्पद, पशु, चार पैरवाला, धर्म (जिस के सत्य, शौच, दया, दान, यह चार पैर हैं) ।
१६६१—चारि भाँति भोजन,		चार प्रकार के भोजन (लेह्य, चोष्य, भक्ष्य, भोज्य) ।
१६६२—चारी	...	चार, चारों, चलनेवाला,—सुन्दर,—दूत ।
१६६३—चारु	...	सुन्दर, मनोहर, सुहावना, सुहावन, मनभावन, कमनीय ।
१६६४—चाल	...	गति, रीति, व्यवहार, चलन, परिपाटी ।
१६६५—चालति	...	चलाती है, डोलाती है, हिलाती है,—छानती है, छिद्रमय करती है ।
१६६६—चाहि	...	देखकर, निरखि, चाहकर,—चाह से,—दरकार, इच्छा, आवश्यकता ।
१६६७—चाही	...	देखी,—देखने की इच्छा की, इच्छा की, चाहना की ।
१६६८—चिउरा	...	चिउड़ा, चिड़वा, कूटा हुआ धान ।
१६६९—चिक्कन	...	चिकना, स्निग्ध, सचिक्कन, फिसलने वाला, फिसलना ।
१६७०—चिक्करहिं	...	चिक्कारते हैं, चिंघारते हैं, भयंकर शब्द करते हैं ।
१६७१—चिक्कार	...	चिंघाड़, भयंकर शब्द ।
१६७२—चिकनाई	...	चिकनापन, स्निग्धता, फिसलन ।
१६७३—चिकारा	...	एक प्रकार का बाजा सारंगी के सा,—चीक, डरावना शब्द ।
१६७४—चित	...	मन, हृदय, हिया, अन्तःकरण ।

नं० शब्द		अर्थ
१६७५—चितचेता	...	सावधान हुआ, मन में सावधान हुआ, चौकन्ना हुआ,—चित्त की सावधानता ।
१६७६—चित्र	...	मूर्त्ति, तसवीर, नक़शा,—आश्चर्य, कई भाँति का ।
१६७७—चित्रकूट	...	एक पर्वत का नाम, श्रीरामचन्द्र का वन विहार-स्थल ।
१६७८—चित्रकेतु	...	एक राजा का नाम ।
१६७९—चितव	...	देखता है, ताकता है, घूरता है ।
१६८०—चितवत	...	देखता है, ताकता है,—देखतेही, दृष्टि करते हैं ।
१६८१—चितवन	...	दृष्टि, नज़र, देखन, अवलोकन ।
१६८२—चिता	...	चिता, काष्ठ-समूह जिसमें मुरदा जलाया जाता है ।
१६८३—चितेरा	...	चित्रकार, मुसव्विर, तसवीर लिखनेवाला, रंगसाज़ ।
१६८४—चितै	...	देखकर, अवलोकन कर, निरख ।
१६८५—चिद्	...	चैतन्य, सजीव, जीवधारी ।
१६८६—चिदाकाश	...	चैतन्य आकाश, ब्रह्म, परमात्मा ।
१६८७—चिदानन्द	...	चैतन्य और आनन्द स्वरूप ।
१६८८—चिन्मय	...	चैतन्यमय, परमात्मा ।
१६८९—चिन्हारी	...	परिचय, चिन्हार, जान पहिचान ।
१६९०—चिबुक	...	ठोढ़ी, ठुड्डी, दाढ़ी ।
१६९१—चिर	...	विलम्ब, देरी, अरसा ।
१६९२—चिराना	...	चिरकालीन, बहुत दिन का, पुराना,—पुराना हुआ, वृद्ध हुआ,—फाटा, फटा हुआ,—फट गया, चिर गया, तड़क गया ।
१६९३—चिरं	...	देर, देरी, अरसा, अतिकाल, विलम्ब ।
१६९४—चिरंजीवी	...	चिरकाल जीनेवाला, बहुत दिन जीनेवाला, दीर्घायु,—अष्ट चिरंजीवी—(अश्वत्था, बलि, व्यास, हनुमान्, बिभीषण, कृपाचार्य, परशुराम, मार्कंडेय)।
१६९५—चिह्न	...	चीन्ह, चिन्हानी, स्मारक वस्तु, यादगार, दाग़, निशान ।
१६९६—चीखा	...	चखा, स्वाद लिया, मज़ा लिया ।
१६९७—चीठी	...	चिट्ठी, पत्री, पत्र ।
१६९८—चीता	...	चित्त,—चित्रक औषध—एक व्याघ्र जाति का पशु ।
१६९९—चीन्हा	...	पहिचाना,—चिह्न, निशानी, चिन्हानी ।
१७००—चीर	...	वस्त्र, कपड़ा, लुग्गा, वसन,—चिराव, लकीर—चीर कर, फाड़ कर, काट कर ।
१७०१—चुकइ	...	चूक जाता है, भूल जाता है, धोखा खा जाता है ।
१७०२—चुगहिं	...	चुगते हैं, खाते हैं, बीनते हैं, चुनते हैं ।
१७०३—चुनि	...	चुनकर, चुग कर, खाकर, बीन कर, छाँट कर, अलग कर के ।
१७०४—चुनौती	...	ईर्ष्या धिक्कार, लालच ।
१७०५—चुपचाप	...	मौन, शब्द-रहित, बिन बोले चाले, गुप्त रीति से ।
१७०६—चूक	...	भूल, ग़लती, भ्रम ।

नं० शब्द		अर्थ
१७०७—चूड़ाकरन	...	संस्कार विशेष, मुंडन, मूड़न ।
१७०८—चूड़ामनि	....	शिरोभूषण, सिर में पहिनने का गहना, चोटी के ऊपर बाँधने का मणि।
१७०९—चूरन (चूर्ण)	..	बुकनी, पिसी हुई वस्तु, रज, गर्दा, सफूफ़ ।
१७१०—चेत	...	सुधि, याद, स्मरण, विचार, बोध, ज्ञान, अनुभव, सावधानता, होशियारी, चेतनता ।
१७११—चेतन	...	सजीव, जीवित, आत्मा, प्राण, समझ, बुद्धि, विचार, ज्ञान ।
१७१२—चेता	...	चित्त, चेतना,—चैतन्य हुआ, सावधान हुआ, होश में आया,—सुरत, याद, स्मृति ।
१७१३—चेरा	...	किंकर, सेवक, दास, गुलाम ।
१७१४—चेरी	...	किंकरी, दासी, लौंडी ।
१७१५—चोखा	...	खरा, अच्छा, उत्तम, यथेष्ट, तेज़, धारदार ।
१७१६—चोप	...	उत्साह, उछाह, हौसला, लगन ।
१७१७—चोर	...	तस्कर, चोट्टा, हरण करनेवाला, चुपके से वस्तु लेजाने वाला ।
१७१८—चोरी		स्तेय, तस्करी, चुपके से किसी वस्तु का ग्रहण, दुज़्दी ।
१७१९—चौक	...	आँगन, अजिर, मैदान, शहर का प्रधान बाज़ार ।
१७२०—चौकी	..	तख़्त, तख़्त, काष्ठनिर्मित ४ पाये वाली बैठने की वस्तु ।
१७२१—चौके	...	चकले, हुरसे,—पवित्र लीपा हुआ स्थान रसोई आदि के लिए,—पूजनार्थ पचरंग निर्मित सर्वतोभद्रादि ।
१७२२—चौगान	...	खेलने का स्थान, गेंद खेलने की वस्तु विशेष ।
१७२३—चौतनी	...	चौगोसी टोपी, तनीदार बच्चों की टोपी जो पहिनाकर ठोड़ी पर बाँध दी जाती है ।
१७२४—चौथ	...	चतुर्थी तिथि,—चौथा, चतुर्थ ।
१७२५—चौथपन	...	चौथी अवस्था, जरा अवस्था, बुढ़ापा, बुढ़ौती ।
१७२६—चौदह	...	चतुर्दश, दस और चार, १४ ।
१७२७—चौपट		नष्ट, भ्रष्ट, बिगड़ा हुआ, बरबाद ।
१७२८—चौरासी	...	चार ऊपर अस्सी, ८४ ।
१७२९—चौहट	...	चौराहा, चौहट्टा, चौमुहानी, चौरस्ता ।
१७३०—चंग	...	कनकौवा, गुड्डी, पतंग, तुक्कल,—एक प्रकार का बाजा,—धुन, हठ, ज़िद,
	...	जोम ।
१७३१—चंचरीक	...	भ्रमर, भँवर, भौंरा, मधुप ।
१७३२—चंचल	...	चिविल्ला, चुलबुला, अस्थिर, जल्दबाज़ ।
१७३३—चंड	...	तेजस्वी,—तेज, क्रोध, ग़ुस्सा ।
१७३४—चंडाल	...	डोम, चांडाल, श्वपच, अन्त्यज ।
१७३५—चंद(चंद्र)	...	चाँद, इन्दु, विधु, चंद्रमा ।
१७३६—चंदन	...	गंध, मलयज, श्रीखंड, संदल ।
१७३७—चाँदनी	...	चाँदनी, अँजोरिया, कौमुदी, उँजियारी ।
१७३८—चंद्रमामुनि	...	एक ऋषि का नाम, निशाकर मुनि, अत्रि के पुत्र ।

नं० शब्द		अर्थ
१७३९—चंद्रमौलि	...	महादेवजी, शिवजी, शंकरजी, जिनके माथे पर चन्द्रमा विराजते हैं ।
१७४०—चंद्रहास	...	तलवार, करवाल, खड्ग ।
१७४१—चंद्रिका	...	चाँदनी, कौमुदी, अँजोरिया, ऊँजेरी ।
१७४२—चंदा	...	चन्द्रमा, चाँद, शशि, चन्द्र, इन्दु, विधु ।
१७४३—चँदोवा	...	वितान, चदरछत, शामियाना।
१७४४—चंपत	...	गुप्त, ग़ायब, अन्तर्द्धान ।
१७४५—चाँकी	...	उठा ली, लोक ली,—उठाकर, लोक कर, दबाकर ।
१७४६—चिंतति	...	स्मरण करती है, याद करती है, विचारती है, सोंचती है ।
१७४७—चिंता	...	सोंच, विचार, फ़िक्र, स्मरण, याद, चाह, वासना ।
१७४८—चिंतामणि	...	मणि विशेष जिसमें से प्रति दिन स्वर्ण झरता है, वह मणि जिससे मनोवांछित प्राप्त हो ।
१७४९—चोँच	...	चंचु, ठोर, पक्षियों का मुख ।
१७५०—चोँप	...	उत्साह, उमंग, हौसला, लगन, उछाह ।
छ		
१७५१—छई(क्षयी)	...	एक रोग जिसमें मुँह के द्वारा कलेजे से लोहू गिरता है ग्रैार शरीर दुबला होता जाता है ।
१७५२—छठ	...	षष्ठी, एक तिथि, छठी ।
१७५३—छठे		छठवें, छठयें, षष्ठम, छठवाँ ।
१७५४—छत(क्षत)	...	फोड़ा, घाव, ज़ख्म, -चिह्न, निशान, दाग़, चुभा हुआ दाग़ ।
१७५५—छतज(क्षतज)		रक्त, लोहू, पीव, मवाद ।
१७५६—छत्र	...	छतर, छाता ।
१७५७—छत्रक	...	कुकुरमुत्ता, खुम्भ, छताक, छत्ता, भुइफोर ।
१७५८—छत्रबंधु	...	क्षत्रियों का हितू वा नातेदार,—क्षत्री जाति में नीच, क्षत्रियाधम ।
१७५९—छत्री(क्षत्री)	...	वीर जाति, द्वितीय वर्ण, दूसरा वर्ण ।
१७६०—छति(क्षति)	...	घटी, हानि, टोटा, नुक़सान ।
१७६१—छन्द	...	काव्य-प्रबन्ध, कविता के प्रबन्ध,--एक प्रकार का हाथ का भूषण ।
१७६२—छन्न	...	ढाँपा हुआ, निर्जन, निभृत, एकाँत, ग्राच्छादित, लुप्त, नष्ट ।
१७६३—छबि	...	शोभा, सौंदर्य ।
१७६४—छबिगन	...	शोभा-समूह ।
१७६५—छबीले	...	सुंदर, मनोहर, शोभायुक्त।
१७६६—छमहु	...	क्षमा करो, सहन करो, माफ़ करो, दया करो ।
१७६७—छमा(क्षमा)	...	कृपा, दया, सहिष्णुता, माफ़ी,—पृथ्वी, धरणी, सहन, बरदाश्त ।
१७६८—छमि	...	क्षमा करके, सहन कर, माफ़ कर, दया करके ।
१७६९—छमिहहिं	...	क्षमा करेंगे, सहन करेंगे, माफ़ करेंगे ।
१७७०—छय(क्षय)	...	घटती, घटी, क्षीणता, हानि, न्यूनता, नाश, खराबी, बरबादी ।
१७७१—छयकारा	...	नाश, बिगाड़, बरबादी ।
१७७२—छयल	...	बना ठना, सुशोभित युवक, बाँका जवान ।

नं० शब्द		अर्थ
१७७३—छरभारू	...	बड़ा भार, अत्यन्त बोझा, अत्यन्त बोझ, अनेक बोझ ।
१७७४—छरे	...	छँटे, अलग, भिन्न, सबसे जुदे, अकेले, एकाकी, अनुपम, फ़र्द ।
१७७५—छल	...	कपट, धोखा, फ़रेब, बहाना, जाल, ठगी ।
१७७६—छली	...	कपटी, धोखेबाज़, फ़रेबी, बहानेबाज़, जाली, ठग, जालिया ।
१७७७—छाई	...	छाय गई, छा गई, फैल गई, पाट दी ।
१७७८—छाके	...	मतवाले, मत्त, उन्मत्त, छके हुए, पान किये,—हैरान, आश्चर्ययुक्त, किसी विषय में मग्न, डूबे हुए तन्मय,—तृप्त, अघाये हुए ।
१७७९—छाछी	...	तक्र, छाछ, मट्ठा ।
१७८०—छाजा	...	सोहा, शोभित हुआ, सजा, शोभा को प्राप्त हुआ, शोभा पाई,—सूप, डगरा,—छप्पर ।
१७८१—छाड़	...	छोड़कर, त्याग के, तजकर ।
१७८२—छाड़े	...	छोड़े, त्यागे,—छोड़े हुए, त्यागे हुए, छोड़ने से, त्यागने से ।
१७८३—छाती	...	वक्षःस्थल, सीना ।
१७८४—छाया	...	छाँह, अंश, प्रतिबिम्ब,—आच्छादित किया, ढाँप दिया,—शरण, पनाह, रक्षा ।
१७८५—छार, छारा	(क्षार)	खार, नोना, राख, भस्म ।
१७८६—छाला	...	फफोला, आबला,—त्वचा, चर्म, चमड़ा,—छिलका, छाल, बोकला ।
१७८७—छावा	...	छाय दिया, आच्छादित किया, ढाँप दिया, तोप दिया,—ढक गया, तोप गया ।
१७८८—छिति (क्षिति)	...	पृथ्वी, भूमि, धरती, धरनी, धरा, ज़मीन ।
१७८९—छिद्र	...	छेद, रन्ध्र, विवर, बिल, सूराख़,—दोष, दूषण, ऐब ।
१७९०—छिन	...	क्षण, खिन, छन, अल्प काल, थोड़ी देर ।
१७९१—छिप्र (क्षिप्र)	...	जल्दी, शीघ्र, शिताबी ।
१७९२—छीजै	...	घटे, कम हो, क्षीण हो, थोड़ा हो, कट जाय, दुबला हो ।
१७९३—छीना (क्षीण)		दुबला, दुर्बल, रहित, हीन, अत्यन्त पतला, कमज़ोर, थोड़ा, कम, छीन लिया, खोस लिया, ले लिया, बरबस ले लिया,—काट डाला, कतर डाला ।
१७९४—छीनि	...	छीनकर, ज़बरदस्ती लेकर,—काट कर, कतर कर ।
१७९५—छीने	...	काटे, कतरे,—छीने हुए, बरबस लिये हुए,—कम हुए, घटे, नष्ट हुए, घटावै,—बरबस लेले ।
१७९६—छीर (क्षीर)	...	दूध, पय, क्षीर, दुग्ध ।
१७९७—छुअत (छुवत)	...	छूते ही, स्पर्श करते ही, हाथ लगाते ही,—छूता है, स्पर्श करता है ।
१७९८—छुछुंदर	...	जन्तु विशेष, एक प्रकार का मूसा ।
१७९९—छुड़ाए	...	छुड़ा लिये, अलग कर लिये ।
१८००—छुद्र (क्षुद्र)	...	छोटा, तुच्छ, हलका, अल्प, थोड़ा सा ।
१८०१—छुधा (क्षुधा)	...	भूख, भोजन की इच्छा ।

नं० शब्द	अर्थ
१८०२—छुधित (क्षुधित)	भूखा, बुभुक्षित, क्षुधा-पीड़ित ।
१८०३—छुभित (क्षुभित)	क्षोभ को प्राप्त, मोहित, भयभीत ।
१८०४—छुभे ...	डरे ।
१८०५—छुहे ...	चित्रित किये, पोते, लेपन किये, लीपे हुए,—लीपने से, पोतने से ।
१८०६—छूछ ...	ख़ाली, रीता, रिक्त, शून्य ।
१८०७—छूटे ...	छूट गये, अलग हुए,—बाक़ी बचे, शेष रहे, बच रहे ।
१८०८—छेका(छँका)...	रोका, घेर लिया,—छिद्र, छेद, सूराख़ ।
१८०९—छेत्र (क्षेत्र) ...	खेत, भूमि, ज़मीन, लड़ाई का मैदान, युद्धस्थान,—खेती की भूमि, कृषीथल, जोतने बोने की पृथ्वी ।
१८१०—छेम (क्षेम) ...	सुख ,आनंद, मंगल, सुख ।
१८११—छेमा ...	क्षेम, सुख, मंगल, आनन्द ।
१८१२—छेमकरी / क्षेमकरी ...	एक चिड़िया का नाम ।
१८१३—छैल ...	बाँका, छैला, रसीला, रँगीला, छबीला, छवियुक्त ।
१८१४—छोट ...	छोटा, लहुरा, लघु, कनिष्ठ ।
१८१५—छोनिप(क्षोणिप)	राजा, भूपति, पृथ्वीपति ।
१८१६—छोनी(क्षोणी)...	भूमि, धरा, धरनी, पृथ्वी, धरती ।
१८१७—छोभा(क्षोभा)	घबराहट, चांचल्य, मन का चापल्य,—हिलाया, झकझोरा,—दुःख दिया, दुखाया ।
१८१८—छोरी ...	कन्या, लड़की, छोहरी,—खोल दी, छोर दी ।
१८१९—छोली ...	छीली, छील डाली, छील कर,—उघार दी, खोल दी,—साफ़ कर दी, स्पष्ट की ।
१८२०—छोह वा छोहू...	प्यार, स्नेह, प्रीति, मुहब्बत, उल्फ़त ।
१८२१—छौना ...	लड़का, छोरा, छोहारा, बालक, छोटा बच्चा ।
१८२२—छंद ...	स्त्रियों के हाथ का एक भूषण,—काव्य-प्रबन्ध,—वेद के छन्द, छलछन्द ।
१८२३—छाँड़ा ...	छोड़ा, छोड़ दिया, त्याग दिया, त्यागा,—उलटी की, क़ै करी, वमन किया ।
१८२४—छीँक ...	नासिका से निकलने वाली एक झोंके की वायु ।
१८२५—छेँका ...	रोका, छेका, आड़ की, अटकाया, थाम लिया, बंद किया ।

ज

नं० शब्द	अर्थ
१८२६—जक्ष (यक्ष) ...	देवजाति विशेष ।
१८२७—जग ...	जगत्, संसार, दुनियां ।
१८२८—जगमगित	चमचमाता हुआ, दीप्तिमान, चमकीला, जगमगाता हुआ ।
१८२९—जगजोनी / जगयोनी ...	ब्रह्मा, विधाता, विधि, जगत् को उत्पन्न करने वाला ।
१८३०—जगत ...	जग, संसार, दुनियाँ,—कुएँ का चौतरा ।

नं० शब्द		अर्थ
१८३१—जगतीतल	...	संसार, ब्रह्मांडकटाह, संपूर्ण पृथ्वीतल ।
१८३२—जगदाधार	...	संपूर्ण जगत् का आश्रय, ईश्वर, परमेश्वर ।
१८३३—जगदीश	...	जगत् का स्वामी, ईश्वर ,परमेश्वर ।
१८३४—जगदंबा	...	जगन्माता, भगवती, सब जगत् की माँ ।
१८३५—जगावहु	...	जागृत करो, जगाओ, उठाओ, बेदार करो ।
१८३६—जज्ञोपवीत, यज्ञोपवीत	...	जनेऊ, बरुआ, व्रतबन्ध, ब्रह्मसूत्र, यज्ञसूत्र ।
१८३७—जजाति(ययाति)		एक राजा का नाम, एक चन्द्रवंशी राजा ।
१८३८—जटा	...	सिर के लपटे हुए बाल, साधुओं के लटदार बाल,लटूरे बाल ।
१८३९—जटाजूट	...	जटासमूह, जटा की गाँठ, जटा का जूड़ा ।
१८४०—जटिल	...	जटाधारी,—जो सहज ही समझ में न आवे, दुर्बोध,—वटवृक्ष, ब्रह्मचारी ।
१८४१—जठर	...	पेट, उदर ।
१८४२—जठरागि	...	पेट की अग्नि, जठराग्नि ।
१८४३—जठेरा	...	बड़ा, जेठा, ज्येष्ठ ।
१८४४—जड़	...	मूल, कारण, नेव,—चेतनतारहित, जो चल फिर और बोल न सके, पेड़, पर्वतादि,—मूर्ख ।
१८४५—जड़जन्तु	...	मूढ़ जीव, मूर्ख जीव, पशु-पक्षी आदि ।
१८४६—जड़ता	...	मूढ़ता, मूर्खता, बेवक़ूफ़ी ।
१८४७—जड़ाऊ	...	जटित, जड़ा हुआ, बैठाया हुआ, पच्ची किया हुआ, नग जटित ।
१८४८—जड़ी	...	मूल, मूरि, बूटी,—जमाई हुई, जटित, पच्ची की हुई,—बैठा दी, मार दी ।
१८४९—जत	...	जो, जितने, जेते,—यत्न,—एक प्रकार का ताल ।
१८५०—जतन (यत्न)	...	उपाय, रक्षा, बचाव ।
१८५१—जती (यती)	...	संन्यासी, योगी ।
१८५२—जथा (यथा)	...	जैसे, जिसतरह से, जिस प्रकार से, ज्योंकर ।
१८५३—जथाथित	...	यथास्थित, ज्यों का त्यों, जहाँ का तहाँ, पूर्ववत्, जैसे का तैसा ।
१८५४—जथोचित	...	यथायोग्य, जैसा चाहिये, जैसा उचित है, वाजिबी ।
१८५५—जदपि	...	यद्यपि, चाहे, जो, जो भी, गोकि ।
१८५६—जन	...	मनुष्य,—सेवक, दास ।
१८५७—जनक	...	बाप, पिता, उत्पन्न करने वाला, जन्मदाता,—मिथिलापुरी के राजा का नाम ।
१८५८—जनक-सुता	...	जनक की कन्या—जानकी, सीता, रामप्रिया, रामपत्नी ।
१८५९—जनकौरा	...	जनक, जनक राजा के संबंधी, राजा जनक के नातेदार, जनक की ओर के ।
१८६०—जननि	...	माता, मां, मातृ, माई, मैया, जन्म देने वाली ।
१८६१—जन्म	...	प्रादुर्भाव, उत्पत्ति, पैदाइश ।
१८६२—जन्मान्तर	...	दूसरा जन्म, और जन्म, द्वितीय जन्म ।

नं० शब्द		अर्थ
१८६३—जनमे	...	जन्मे, उत्पन्न हुए, पैदा हुए।
१८६४—जनयित्री	...	जननी, माता, माय, महतारी।
१८६५—जनवास	...	मनुष्यों के टिकने वा रहने का स्थान, विवाह में बरात के टिकने का स्थान।
१८६६—जनवासे	...	जनवास में।
१८६७—जनावा	...	जनाय दिया, बताया, सुनाय दिया, हाल कहा, आगाह किया।
१८६८—जनि	...	जिन, नहीं, मत, जन्माकर, उत्पन्न करके।
१८६९—जनित	...	जन्मा हुआ, उत्पन्न, पैदा।
१८७०—जनु	...	मानो, जैसे, यथा, जिसतरह, जिस भाँति।
१८७१—जनेऊ	...	यज्ञोपवीत, यज्ञ सूत्र, बरुआ।
१८७२—जनेत	...	बरात, बर-यात्रा।
१८७३—जनेश	...	राजा, मनुष्यों का स्वामी।
१८७४—जनेषु	...	मनुष्यों में।
१८७५—जपत	...	भजता है, जाप करता है, भजते ही, जाप करते ही।
१८७६—जपना	...	भजन करना, स्मरण करना, बार बार उसी बात को कहना।
१८७७—जपामि	...	मैं जपता हूँ, मैं भजता हूँ, मैं सुमिरन करता हूँ।
१८७८—जपंति	...	जपते हैं, सुमिरन करते हैं, भजते हैं।
१८७९—जब	...	जिस समय, जिस काल में।
१८८०—जम (यम)	...	यमराज, कृतान्त,—योग का एक अंग।
१८८१—जमी (यमी)	...	संयमी, योगांग यम का साधक।
१८८२—जमुन (यमुन)	...	यमुना नदी, सूर्य की कन्या, श्रीकृष्ण की पटरानी, कालिन्दी।
१८८३—जमुहात	...	जँभाई लेता है, उबासी लेता है, जँभाता है।
१८८४—जय	...	जीत, विजय, फ़तह।
१८८५—जयउ	...	जीता, विजय करी, जीत लिया, फ़तह की।
१८८६—जयजीव	...	एक प्रकार का अभिवन्दन।
१८८७—जयति	...	जीतता है,—जयकार का एक शब्द।
१८८८—जयमाल	...	विजय की माला, वह माला जो विजयी को पहिराई जाती है, वह माला जो स्वयंवर में कन्या वर को पहिनाती है।
१८८९—जयशील	...	सर्वदा जीतने वाला, जीतने के स्वभाव वाला, जो कभी युद्ध में पराजय को प्राप्त न हो।
१८९०—जयंत (जयंता)		इन्द्र के पुत्र का नाम, वह कौवा जिसने जानकी जी को छल-वेष में चोंच से मारा था।
१८९१—जयंती	...	मुख्य अवतार-तिथि, (जन्माष्टमी, रामनवमी, बावन द्वादशी, नृसिंह-चतुर्दशी), एक वृक्ष का नाम।
१८९२—ज्ञात	...	जाना हुआ, समझा हुआ।
१८९३—ज्ञाता	...	जानने वाला, समझने वाला।
१८९४—ज्ञान	...	जो शास्त्रद्वारा जाना जाय, बूझ, पहिचान, समझ, किसी वस्तु को किसी रीति से समझ लेना।

नं० शब्द		अर्थ
१८९५—ज्ञानदा	...	ज्ञान को देने वाली, सरस्वती।
१८९६—ज्ञानी	...	ज्ञानवान्, तत्त्वदर्शी।
१८९७—ज्ञापक	...	बोधक, ज्ञानदाता, जानने वाला, समझाने वाला, गुरु।
१८९८—ज्याये	...	जिलाये, पाले, पोषे,—पाले हुए,—पालने से, पोषने से,—जीवित किये।
१८९९—जर	...	ज्वर, जुर, बुख़ार, ताप,—जल, भस्महो,—जलता है।
१९००—जरजर	...	पुराना, वृद्ध, बूढ़ा, चीराफाड़ा, फटा पुराना, गलित, गया गुज़रा, निःसार, अति प्राचीन, बेदम, निर्बल, गला हुआ।
१९०१—जरठ	...	वृद्ध, बूढ़ा, बुड्ढा।
१९०२—जरठपन	...	बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
१९०३—जरत	...	जलता है,—जलते,—जलतेही।
१९०४—जरनि	...	जलन, दाह, डाह, ताप।
१९०५—जरहिँ	...	जलते हैं—कुढ़ते हैं,—भस्म होते हैं।
१९०६—जरा	...	जल गया, बुढ़ापा, वृद्धावस्था,—थोड़ा, किंचित्, अल्प।
१९०७—जल	...	पानी, वारि, नीर।
१९०८—जलअलि	...	जलभौंरा, जलभ्रमर।
१९०९—जलकुक्कुट	...	जलमुरग़ा, मुर्ग़ाबी, एक पक्षी जो जल में पैंड़ता, गोता मारता और मछली का आहार करता है।
१९१०—जलचर	...	जलजंतु, पानी में रहने वाले जीव।
१९११—जलज वा जलजात		जल से उत्पन्न, कमल,—जोंक, मछली आदि,—कोंई।
१९१२—जलजान(जलयान)		जल की असवारी, नौका, नाव, जहाज़।
१९१३—जलद	...	जल देने वाला, मेघ, बादल।
१९१४—जलधर	...	जल को धारण करने वाला, मेघ, बादल।
१९१५—जलधि	...	समुद्र, जलराशि, उदधि।
१९१६—जलपक(जल्पक)		बक्की, बकवादी, बातूनिया, गप्पी, बोलनेवाला, बकनेवाला, वाचाल।
१९१७—जलपत(जल्पत)		बोलता है, बकवाद करता है, बात करता है, बकता है।
१९१८—जलपना	...	बकना, बोलना, बातचीत, बकवाद, गप्प।
१९१९—जलपसि	...	तू बकता है, तू गप मारता है, तू बातें बनाता है।
१९२०—जलपहिं	...	बकते हैं, सिट्ट मारते हैं, गप्प मारते हैं, बकवाद करते हैं।
१९२१—जलविहंग	...	जल-पक्षी, जल के तट पर रहनेवाले पक्षी।
१९२२—जलमल	...	जल की मैल, काई, जल के फेन।
१९२३—जलरासि	...	जल का समूह, जल का ढेर, समुद्र।
१९२४—जलरुह	...	कमल, कँवल, जल से उत्पन्न।
१९२५—जलाशय	...	जल के स्थान,—तालाब, बावली, कुंवा, नदी, झरना, इत्यादि।
१९२६—जलंधर	...	एक दैत्य का नाम,—जलोदर रोग।
१९२७—जवनिका	...	पर्दा, चिक, क़नात,—काई, मैल।
१९२८—जवास	...	एक प्रकार की काँटेदार घास जो जेठ बैसाख में हरी रहती है और वर्षा में सूख जाती है।
१९२९—जस(जसु	...	जैसे, जिस प्रकार से,—यश, कीर्ति, नामवरी, बड़ाई, प्रशंसा।

नं० शब्द		अर्थ
१९३०—जसोमति	...	नन्दरानी, यशोदा, श्रीकृष्णचन्द्र की माता ।
१९३१—जहि	...	जेहि, जिसे, जिसको,—मारो, त्यागो, छोड़ो,—छोड़कर, त्याग के ।
१९३२—जहिआ	...	जब, जिस समय, जिस वक्त ।
१९३३—जहँ (जहाँ)	...	जिस स्थान पर, जिस जगह ।
१९३४—जहान	...	संसार, दुनिया, जगत् ।
१९३५—जा	...	जाओ, चले जाओ, दूर हो, गमन कर, विदा हो ।
१९३६—जाई	...	जाकर, गमन करके,—जाती है,—बेटी, पुत्री, जन्माई हुई, उत्पन्न की हुई, जनी हुई, कन्या, दुहिता ।
१९३७—जाका	...	जिसका ।
१९३८—जाग	...	यज्ञ, जज्ञ, होम, हवन,—निद्रा छोड़, उठ, चैतन्य हो, होश में आव, नीन्द खोल ।
१९३९—जागवलिक	...	याज्ञवल्क्य मुनि ।
१९४०—जागाजागी	...	विगत निद्रा हुआ या हुई, नीन्द से उठा, या, उठी,—चमका वा चमकी, चला वा चली, प्रगट हुआ वा हुई ।
१९४१—जाचक	...	याचक, माँगनेवाला, भिक्षुक, मंगन, भिखारी,—नाऊ, बारी, भाट, बन्द, मागध, ढाढ़ी ।
१९४२—जाचत	...	याचत, माँगता है, प्रार्थना करता है, चाहता है ।
१९४३—जाचा	...	याचा, माँगा, प्रार्थना की, चाहा, परीक्षा की ।
१९४४—जाड़	...	जाड़, शीत, ठंड,—शीतकाल ।
१९४५—जात	...	ज्ञाति, जाति, बिरादरी, उत्पन्न, पैदा ।
१९४६—जातकर्म	...	जाति-व्यवहार,—जन्म समय के शास्त्रोक्त वैदिक संस्कार ।
१९४७—जातना	...	यातना, पीड़ा, तीव्र वेदना, साँसत, उग्र दंड ।
१९४८—जातरूप	...	सोना, सुवर्ण, कंचन ।
१९४९—जाता	...	गमन करता, गया होता,—जाति ।
१९५०—जाति	...	ज्ञाति, बिरादरी, वर्ण, चाल, तरह, क़िस्म, गोत्र, पुकार, भेद ।
१९५१—जातुधान	...	असुर, दैत्य, राक्षस ।
१९५२—जान	...	जानकर, समझ,—रूह, आत्मा,—यान, सवारी,—अतिप्रिय, बड़ा प्यारा ।
१९५३—जानकी	...	जनकतनया, राजा जनक की कन्या, सीता, वैदेही, श्रीरामप्रिया ।
१९५४—जानत	...	जानता है, समझता है, जानतेही, समझ करके ।
१९५५—जानब	...	जानना, समझना, जानो, समझो ।
१९५६—जाना	...	जानलिया, समझा, मालूम किया,—सवारी, यान ।
१९५७—जानबी	...	जानना, जानिए, जानिएगा, समझना, समझिएगा ।
१९५८—जानि	...	जानकर, समझकर ।
१९५९—जानी	...	जान ली, समझ ली, मालूम कर ली, पहिचान ली ।
१९६०—जानु	...	घुटना, घोंटू, ज़ानू,—जान, समझ ।
१९६१—जाप	...	जप, स्मरण, भजन ।

नं० शब्द अर्थ

१९६२—जापक ... जप करनेवाला, भजन करनेवाला, जपनेवाला, निरन्तर स्मरण करनेवाला।
१९६३—जाब ... गमन करना, जाना।
१९६४—जाबाली ... एक ऋषि का नाम।
१९६५—जाम ... याम, पहर, प्रहर, ३ घंटा।
१९६६—जामवंत ... जाम्बवान, ऋक्षराज।
१९६७—जामा ... जमा, उत्पन्न हुआ, अंकुरित हुआ,—स्थिर हुआ, लग गया, जम गया, ठहर गया,—एक प्रकार का गले में पहिनने का सिंया हुआ वस्त्र।
१९६८—जामाता ... जँवाई, दामाद, कन्या का पति, जामात।
१९६९—जामिक ... यामिक, योगांग का साधक,--पहरुआ, पाहरू, चौकीदार।
१९७०—जामिनी ... यामिनी, रात्रि, रात, निशा, रजनी।
१९७१—जाय ... गमन करे, चला जाय, जावै,—गमन करके,—वृथा।
१९७२—जाया ... स्त्री, भार्या, पत्नी, जननी,—उत्पन्न किया, जना, पैदा किया।
१९७३—जाये ... लड़के, उत्पन्न किये हुए, बेटे, बालक,—स्त्री के लिए संबोधन।
१९७४—जार ... घर, उपपति,—जलाकर, भस्म करके।
१९७५—जारा ... जलाया, भस्म किया,—यार, उपपति।
१९७६—जाल ... समूह, झरोखा, फंदा, बावर, फँसाने की चित्र युक्त वस्तु,—फ़रेब, धोखा।
१९७७—जावक ... यावक, अलक्त, अलक्तक, महावर, अलता।
१९७८—जासू ... जिसका, जिसकी।
१९७९—जाहि ... जिसको, जिसे।
१९८०—जिअत ... जीवत, जीता है, जीवते हुए।
१९८१—जिआउ ... जिलाव, जिलादे,--रोग से छुटाव,---आपत्ति से बचा।
१९८२—जिआये ... पाले, पाले हुए, जिलाये हुए, -जिलाये, पुनर्जीवित किये,—आरोग्य किये।
१९८३—जिति ... जितनी,--जीत,--जिधर, जिस तरफ़।
१९८४—जितहु ... जीतो, जीतलो, जीत भी।
१९८५—जिनकेरे ... जिनके।
१९८६—जिव ... जीव, आत्मा, मन।
१९८७—जिमि ... जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों, यथा।
१९८८—जिय ... जीव, प्राण, आत्मा,--मन, हिय, हृदय।
१९८९—जिवनमूरि ... संजीवनी औषध, जिलाने वाली बूटी।
१९९०—जिसु ... जिसका।
१९९१—जी ... मन, दिल, तबीअत, हृदय, चित्त,—प्रचलित भाषा में प्रतिष्ठा-पद।
१९९२—जीति ... जीत कर, जय प्राप्त करके।
१९९३—जीन ... चारजामा, ख़ोगीर,---काठी, घोड़े की पीठ पर कसने का बिछावन।
१९९४—जीभ ... जिह्वा, रसना, वाणी, जीहा, ज़बान।
१९९५—जीयत ... जीवते हुए, जीवित।

नं० शब्द		अर्थ
१९९६—जीव	...	प्राण, जी, आत्मा,—प्राणी, प्राणधारी, जंतु, जानवर, जानदार,--बृहस्पति ।
१९९७—जीवन	...	प्राण, ज़िन्दगी, आजीविका, रोज़ी, आधार,--जल, पानी ।
१९९८—जीह	...	जीहा, जीभ, जिह्वा, ज़बान,—प्राण, प्राणाधार, अति प्रिय ।
१९९९—जीहा	...	जिह्वा, जीभ, रसना, ज़बान ।
२०००—जुआरा	...	जुआ खेलने वाला ज्वारी,--नदी की बाढ़ वा साँस, नदी की लहर ।
२००१—जुआरिहि	...	ज्वारी को, जुआ खेलने वाले को ।
२००२—जुग	...	दो, दोनों, जोड़ा, उभय—चतुर्युग(सत्युग, त्रेता, द्वापर, कलि) ।
२००३—जुगल	...	दोनों, युगल, दोऊ, दुहू, जोड़ा ।
२००४—जुगवत	...	आसरा देखते, राह ताकते, परिखत, यत्न करते,संभालते, इंतिज़ार करते ।
२००५—जुगविधि	...	दोनों प्रकार, दोनों तरह से ।
२००६—जुगुति(युक्ति)		रीत, जुगत, तरकीब, चतुराई, अनुमान ।
२००७—जुझाऊ	...	युद्ध के, युद्ध वाले, लड़ाई के, लड़ने वाले, लड़ाई वाले, लड़ाका, शूर,
	...	बहादुर ।
२००८—जुझारा	...	जूझनेवाला, लड़नेवाला लड़ाका, वीर, शूर, योद्धा, बहादुर, जवाँमर्द ।
२००९—जुटत	...	मिलते हैं, जुड़ते हैं, इकट्ठे होते हैं, भिड़ते हैं, लड़ते हैं ।
२०१०—जुठारी	...	जूठा करके,—जूठी करदी, जूठी की हुई ।
२०११—जुड़ाना	...	शीतल हुआ, ठंढा हुआ, सीरा हुआ, शान्त हुआ ।
२०१२—जुरै	...	मिलै, प्राप्त हो, पाया जाय, लब्ध हो, हाथ लगे, मयस्सर होवे ।
२०१३—जुवती	...	युवती, युवा स्त्री, जवान औरत ।
२०१४—जुवराज	...	युवराज, कुमार, राजकुमार, राजकुँवर, राज्याधिकारी, नायब राजा ।
२०१५—जुवा	...	युवा, जवान, तरुण ।
२०१६—जुवानू	...	तरुण, जवान, युवा पुरुष, सिपाही, मरदाना ।
२०१७—जुहार	...	प्रणाम, एक प्रकार की बंदना ।
२०१८—जू	...	जी, एक प्रतिष्ठा का पद ।
२०१९—जूझा	...	लड़ा, भिड़गया, उलझा, लड़ पड़ा ।
२०२०—जूथ	...	समूह, सेना, फ़ौज, यूथ ।
२०२१—जूथप	...	यूथपति, सेनाध्यक्ष, सेनापति, फ़ौज का अफ़सर ।
२०२२—जून	...	समय, बेरा, बेर, वक्त,—पुराना, प्राचीन ।
२०२३—जूरी	...	जोड़कर, इकट्ठा करके, मुट्ठा बाँधकर, —समूह, मुट्ठा,—जाड़ा, सर्दी, शीत, ठंढ ।
२०२४—जूहा	...	समूह, यूथ, सेना ।
२०२५—जे	...	जो, जो लोग ।
२०२६—जेई	...	जो कोई,—भोजन कर के,—भोजन करी, खाई ।
२०२७—जेऊ	...	जो कोई भी ।
२०२८—जेठे	...	ज्येष्ठ, बड़े,—ज्येष्ठ मास में, जेठ के महीने में ।
२०२९—जेते	...	जितने, जो सो, जो वह,—खाते, भोजन करते ।

नं० शब्द		अर्थ
२०३०—जेवनार	...	पंगत का भोजन, दावत, अनेक मनुष्यों का एकत्र भोजन, आनंद के अवसर पर इष्ट मित्र बाँधवों का एकत्र भोजन ।
२०३१—जेहि	...	जिसको, जिसके, जिसने ।
२०३२—जैसे	...	यथा, जिस तरह, जिस भाँति, जिसप्रकार, जिस रीति से ।
२०३३—जो	...	जो कोई, जैान ।
२०३४—जोई		जो, जो कोई,—देखी,—देखकर ।
२०३५—जोग	...	योग्य, लायक़,—संयम नियमादि अष्टांग योग,—मेल—मिलाप, संबंध, संयोग, जोड़, अच्छा समय, शुभ घड़ी, ग्रहों का मेल,—तप ।
२०३६—जोगवत	...	परिखत,—यत्न करते हुए, सँभालते, आसरा देखते, इंतिज़ार करते, राह ताकते, रास्ता देखते ।
२०३७—जोजन	...	योजन, ४ कोस, ८ मील ।
२०३८—जोटा जोड़ा	...	जोड़ी, जुग, दोनों, युग्म ।
२०३९—जोतिष	...	ज्योतिष, गणना करने का शास्त्र, गिनती करने का शास्त्र, नजूम ।
२०४०—जोती	...	चमक, उजेला, प्रकाश, किरण, दीप्ति, रोशनी ।
२०४१—जोते	...	नाँधे, जाड़े, लगादिये, जोत दिये ।
२०४२—जोनी	...	योनि, कारण, जाति, शरीर ।
२०४३—जोबन	...	यैावन, जवानी ।
२०४४—जोरि	...	मिला के, जोड़ के, योग कर के ।
२०४५—जोरी	...	जोड़ी, एकस एक बराबर,—मिलाई, जोड़दी,—मिलाकर, जोड़कर ।
२०४६—जोवा	...	देखा, निहारा,—ढूँढ़ा, तलाश किया, हेरा ।
२०४७—जोषिता	...	स्त्री, नारि, योषित्, लुगाई ।
२०४८—जोसि		जो तू है ।
२०४९—जोहार	...	प्रणाम, एक प्रकार का अभिवंदन ।
२०५०—जोहारे	...	प्रणाम किये, जोहार किये, बंदन किये ।
२०५१—जोहि	...	देखकर, हेर कर, खोजकर, तलाश करके ।
२०५२—जोही	...	देखी, हेरी, ढूँढी, खोजी, तलाश की ।
२०५३—जोहै	...	देखै, ढूँढै, हेरै, तलाश करे, खोजै ।
२०५४—जैाँ	...	यव, जैा,—जिस प्रकार से, जिस भाँति, जैसे ।
२०५५—जंगम	...	चलनेवाला, चलता फिरता,—एक प्रकार के साधु ।
२०५६—जंजाल	...	बखेड़ा, उपद्रव, झमेला, झगड़ा ।
२०५७—जंत्रित	...	यंत्रित, ताला दिया हुआ, ताले में बंद, क़ैद, बंधा हुआ, कसा हुआ, पीड़ित, वशीकृत ।
२०५८—जंत्री	...	यंत्री, यंत्र का बनाने वाला,—जंतरी, कसने का यंत्र, शिकंजा, तार खींचने का औज़ार ।
२०५९—जंतु	..	क्षुद्र जीव, छोटे जीव, नीच जीव, कीड़े मकोड़े, मछली आदि ।
२०६०—जंबु	...	जामुन ।

नं० शब्द		अर्थ
२०६१—जंबुक	...	सियार, गीदड़, शृगाल, उल्कामुख ।
२०६२—जोंक	...	जलौक, रक्त पान करने वाला, जल का कीड़ा ।
झ		
२०६३—झख	...	मीन, मत्स्य, मछली, मच्छी, माही ।
२०६४—झखकेतु	...	मीनकेतु, माहीमरातिब, मछली के निशान वाला, कामदेव ।
२०६५—झगुलिआ	...	चोलना, बालकों का कुरता, चोला, झुलवा ।
२०६६—झटति झटिति	...	जल्दी, शीघ्र, झटपट, जल्दी से ।
२०६७—झपट	...	टूटकर, ज़ोर से दौड़कर, धावा मारकर, टपक कर,—धावा, झपेट ।
२०६८—झरति	...	गिरती है, झरती है, चूती है, टपकती है, पसीजती है।
२०६९—झरना	...	पर्वत के जल का सोता, स्रोत, सोता, छोटी नदी ।
२०७०—झराहिँ	...	झरते हैं, बहते हैं, गिरते हैं, टपकते हैं, चूते हैं, पसीजते हैं, छनकर गिरते हैं ।
२०७१—झरि	...	झड़ो, निरन्तर, जलवृष्टि,—झरकर, गिरकर, चूकर, टपक कर ।
२०७२—झरोखा	...	मोखा, गवाक्ष ,खिड़की, छोटा द्वार, घरों के ऊपरी भाग के छोटे २ द्वार।
२०७३—झलकत	...	चमकते हैं, प्रकाशित होते हैं, देख पड़ते हैं ।
२०७४—झाबा	...	झाँका, दौरा, बड़ा जालदार टोकरा।
२०७५—झारि	...	झाड़कर, गिराकर, झरझराकर ।
२०७६—झारी	...	समूह, झाड़ी, वृक्षसमूह, वृक्षजाल,—टूँटीदार जल-पात्र, कमंडलु ।
२०७७—झीनी	...	हलकी, महीन, झिंझरी, बारीक ।
२०७८—झुठाई	...	झूठा करके, झुठवायकर,—झूठापन ।
२०७९—झूठो	...	झूठा, मिथ्यावादी, झूठ बोलने वाला,—झूठ भी, असत्य भी ।
२०८०—झोटिंग	...	प्रेत भेद, झोंका देकर,—केश पकड़ कर लटकाना, केश पकड़ कर घसीटना, झोंटियाना,—झोंटिया कर ।
२०८१—झोटी	...	चोटी, लट, केश-समूह, जटा ।
२०८२—झँई	...	तिरमिराहट, आँखों के आगे का अँधेरा, धुंध, धुंधलापन, छाया, आभा, मंद प्रकाश, झिलमिलाहट ।
२०८३—झंपेउ	...	ढँक गया, ढाँप गया, झंप गया, छिप गया, ढंपा, अस्त होगया, अदृष्ट हो गया, आड़ में आ गया ।
२०८४—झांझ	...	झाल, वाद्य विशेष, छैना---झनझनाहट का शब्द, झनकार का शब्द ।
२०८५—झिंगुलिया	...	चोलना, चोला, बालकों का कुरता ।
२०८६—झोंटा	...	चोंटी, लट, बार, जटा, केश-समूह ।
ट		
२०८७—टक	...	निरंतर दृष्टि, लगातार देखना, अखंडावलोकन ।
२०८८—टकोर	...	ध्वनि, धुन, टंकार,----सेंक ।
२०८९—टरई	...	हटती है, टलती है, हटती, टलती ।
२०९०—टहल	...	सेवा, शुश्रूषा, ख़िदमत ।

नं० शब्द		अर्थ
२०९१—टाप	...	लाँघ, नाँघ, उल्लंघनकर, पार कर, डाँक,----घोड़ों का पैर, घोड़ों के सुम, घोड़ों के टाप ।
२०९२—टार	...	हटा कर, टाल कर, सरका कर, लाँघ कर, उल्लंघन कर ।
२०९३—टारन	...	उल्लंघन,—मत हटा, मत टाल,—नहीं टारता ।
२०९४—टारा	...	हटाया, मिटाया, टाला, सरकाया, उल्लंघन किया ।
२०९५—टिट्टिभ टिड्डी	...	टिड्डी (जो खेतों में पड़ती है)—पक्षि विशेष, टिटिहरी ।
२०९६—टूका	...	टुकड़ा, हिस्सा, खंड, भाग, बखरा ।
२०९७—टूट	...	टूट गया, नष्ट हो गया,—टूटना ।
२०९८—टेई	...	टेय के, चोखा करके, तीखा करके,----चोखा किया, तीखा किया, धार लगाई, सान लगाई ।
२०९९—टेक	...	हठ, ज़िद, प्रतिज्ञा, अवलम्ब, एक आश्रय ।
२१००—टेकी	..	हठ करके, थापि, स्थापन कर,—निश्चय की, हठ किया, प्रतिज्ञा की,—हठी, ज़िद्दी, दृढ़-प्रतिज्ञ ।
२१०१—टेढ़	...	टेढ़ा, वक्र, तिरछा, बंक, बाँका,—दुःस्वभाव, बिगड़ैल ।
२१०२—टेर	...	पुकार, गोहार, दीनतापूर्वक बुलाने का शब्द, शब्द, आवाज़ ।
२१०३—टेरे	...	बुलाने से, पुकारने से,—बुलावै, पुकारै ।
२१०४—टेव	...	बान, हठ, ज़िद, आदत, प्रतिज्ञा, स्वभाव, अभ्यास ।
२१०५—टांकी	...	पत्थर काटने का शस्त्र, संगतराशों का औज़ार ।
ठ		
२१०६—ठकुरसुहाती	...	मीठी मीठी बात, मुँहदेखी बात, शुश्रूषा की बोल, ख़ुशामद की बोलचाल, प्रिय बोली ।
२१०७—ठगे	...	छले, धोखा दिये, बहकाये हुए,----बुत ।
२१०८—ठट्ठा	...	ठट्ठा, दल, समूह, झुंड, भीड़ ।
२१०९—ठठाई	...	मारकर, पीटकर,----मारी, पीटी ।
२११०—ठठुकि	...	ठठकर, रुक कर, अटक कर, ठहर कर ।
२१११—ठवनि	...	चाल, खड़े होने की विशेष रीति, अंकड़, ऐंठ की चाल, डपेट वाली चाल ।
२११२—ठाउँ	...	ठहर, स्थान, जगह, ठाँव, घर, मौक़ा, अवसर ।
२११३—ठठ	...	समूह, दल, झुंड, भीड़ ।
२११४—ठाठ	...	रचना, समूह, नक़शा, ख़ाका, प्रारंभ की रचना, रूप खड़ा करना, डौल, ढाँचा ।
२११५—ठाढ़	...	खड़ा, स्थित, उपस्थित ।
२११६—ठाना	...	किया, ठहराया, निश्चय किया, दृढ़ किया ।
२११७—ठाम	...	स्थान, जगह, ठहर, ठाँव ।
२११८—ठाहरु	...	स्थान, जगह, ठाँव, मौक़ा, अवसर ।
२११९—ठीका	...	निश्चय, ठीक, दृढ़, वाजबी, उचित, इजारा ।

नं० शब्द … अर्थ

२१२०—ठुमुकि … बालकों की चाल, मन्द गमन के साथ, रुक रुक के चलकर।
२१२१—ठाँव / ठाऊँ … ठहर, ठाम, ठिकाना, स्थान, जगह, मौक़ा, अवसर।

ड

२१२२—डगमगानि … हिली, डावाँडोल हुई, चलायमान हुई, काँपी।
२१२३—डगै … हिलै, खसकै, सरकै, टसकै, चलै, चलायमान होवै।
२१२४—डमरुआ … घुटने की गाँठ का रोग, जोड़ों का दर्द, गठिया रोग।
२१२५—डमरू … एक प्रकार का बाजा, शिवजी का प्रिय बाजा जिसे वे सर्वदा हाथ में रखते हैं।
२१२६—डर … भयभीत, ख़ौफ़, दहशत।
२१२७—डरपति … डरती है, भयभीत होती है, ख़ौफ़ खाती है।
२१२८—डरपे … डरे, डरगये, भयभीत हुए।
२१२९—डस (डसि) … डसकर, काट के, डस के।
२१३०—डहकि … डँहक के, ठगाय कर, धोखे में आकर।
२१३१—डाकिन … डाकिनी, डाइन।
२१३२—डाढ़े … जलाये, भस्म किये,—लपक, शोअ्‌ले,—कठिन।
२१३३—डावर … गहिरा,—गड़हा।
२१३४—डार … फेंक दे, फेंककर, गिराकर,—शाखा, डाली, शाख़।
२१३५—डासन … बिछौना, दसौना, बिस्तरा, आसन, चटाई, बिछावन।
२१३६—डासि … डालकर, बिछाकर, गिराकर, फेंककर।
२१३७—डासी … बिछाई, डाली, पसारी, फैलाई।
२१३८—डिगहि … हटता है, सरकता है, हिलता है, टलता है।
२१३९—डिमडिमी … डुग्गी, डुगडुगी, मुनादी, ढिंढोरा।
२१४०—डीठा … देखा, देखपड़ा, दिखाई दिया,—दृष्टि, नज़र, दीठ, अवलोकनि।
२१४१—डीठी … दृष्टि, नज़र, दीठ, डीठ, चक्षु, आँख, अवलोकन,—देख पड़ी, नज़र पड़ी, दिखाई दी।
२१४२—डेरा … ख़ेमा, तम्बू,—रहने का स्थान, ठहरने की जगह।
२१४३—डेराहिं … डरते हैं, भय खाते हैं, डरपते हैं।
२१४४—डेवढ़ … क्रम, सिलसिला,—डेवढ़ा, एक और आधा।
२१४५—डोर … डोरी, रस्सी, रज्जु, लेजुरी, लेजुर।
२१४६—डोरिआये … रस्सी में बाँध कर पकड़े।
२१४७—डोल … चलन, हिलना—हिंडोरा,—कुएँ से पानी भरने का एक पात्र,—हिला, चलायमान हुआ, काँपा।
२१४८—डोलत … चलता है, फिरता है, डोलता है, हिलता है,—हिलते ही, डोलते ही।
२१४९—डोली … गई, चली गई, डोल गई, टहल गई,—बदल गई, चलायमान हो,—प्रतिज्ञा छोड़ी,—एक ज़नानी सवारी, पालकी।
२१५०—डाँटेहि … धमकाने से, डपटने से, डपेटे से।

नं० शब्द		अर्थ
२१५१—डिंडिमी	...	डुग्गी, डुगडुगिया, ढिंढोरा, मुनादी, एक साधारण बाजा ।
ढ		
२१५२—ढनमनी	...	ढुलकी, लुढ़क गई, ढँगलाय गई, लड़खड़ाकर गिरी ।
२१५३—ढरक	...	ढलक, बहाव, लुड़कन, ढरकन, ढरकाव ।
२१५४—ढरी	...	ढली, बही, द्रयगई, लुढुक गई, ढँगलाय गई, प्रसन्न भई ।
२१५५—ढहाए	...	गिराये, गिरा दिये ।
२१५६—ढहावहिँ	...	गिराते हैं, ढहाते हैं ।
२१५७—ढावर	...	गहरा—गदला, मैला ।
२१५८—ढारी	...	ढार, ढाल, ढरकाव, लुड़कन,—ढाली, ढाल दी, गिराय दी, बहा दी ।
२१५९—ढाहति	...	गिराती है, नाश करती है ।
२१६०—ढिग	...	निकट, समीप, नगीच, पास ।
२१६१—ढिठाई	...	ढीठापन, धृष्टता, प्रगल्भता, गुस्ताख़ी, साहस, निर्लज्जता, चंचलता ।
२१६२—ढीठ	...	ढीठा, धृष्ट, निर्लज्ज ।
२१६३—ढेक	...	सारस पक्षी ।
२१६४—ढेरी	...	समूह, राशि ।
२१६५—ढोटा	...	लड़का, बेटा, बालक, पुत्र ।
२१६६—ढोर	..	ढोल, ढोलक, ढोलकी, धुनि, ध्वनि, सिलसिला, क्रम,—ढरन, ढलन—लगन ।
२१६७—ढोल	...	ढोलक, ढोलकी ।
२१६८—ढँढोड़ी	...	ढूँढ़ी, खोजी, ढूँढ डाली, भलीभाँति हेरी ।
२१६९—ढाँकी	...	तोपी, ढाँकदी, मूँदी, छिपाय दी, गुप्त करदी ।
त		
२१७०—तकहु	...	ताको, देखो, अवलोकन करो, लक्ष्य करो ।
२१७१—तकि	...	ताककर, देख के, लक्ष्य कर के, निशाना बाँधकर ।
२१७२—तज	...	छोड़, छोड़दे, त्याग, सिवा,—एक ओषधि का नाम ।
२१७३—तजि	...	छोड़ कर, त्याग कर, परित्याग कर ।
२१७४—तजइ	...	छोड़ देता है, त्याग देता है, अलग करता है ।
२१७५—तज्ञ	...	स्वरूपज्ञ, ईश्वर को जाननेवाला, ज्ञानी ।
२१७६—तट	...	किनारा, तीर, निकट, समीप, नगीच ।
२१७७—तड़ाग	...	तलाव, सरोवर, ताल, सर, कुंड, जलाशय ।
२१७८—तड़ित्	...	बिजुली, कौंधा, विद्युत्, चपला, दामिनि ।
२१७९—तत्काल	...	उसी समय, उसी वक्त, चटपट, उसी दम, तत्क्षण ।
२१८०—तत्पर	...	लौलीन, मशगूल, लगा हुआ, निरत, तन्मय, सचेत ।
२१८१—तत्त्व	...	सार वस्तु, मूल, अन्त्य, नतीजा, पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) ।
२१८२—तथा	...	तैसे, तिस तरह पर, तिसकी भाँति ।
२१८३—तथापि	...	तौ भी, तैसा होने पर भी, तिसपर भी ।

नं० शब्द ... अर्थ

२१८४—तदपि ... तौ भी, तब भी, तिसपर भी।
२१८५—तन ... देह, शरीर, वपु,—ओर, तरफ़।
२१८६—तनक ... किंचित्, थोड़ासा, ज़रासा, कुछ।
२१८७—तनकाऊ ... थोड़ा भी, ज़रा भी, नेकऊ, किंचिदपि, कुछ भी।
२१८८—तनय ... लड़का, बेटा, पुत्र, आत्मज।
२१८९—तनु ... देह, वपु, शरीर, जिस्म।
२१९०—तनुजा ... लड़की, कन्या, बेटी, पुत्री, दुहिता।
२१९१—तनोतु ... फैले, फैलावे, विस्तृत होवे।
२१९२—तनोरुह ... शरीर से उत्पन्न, रोएँ, रोंगटे, लोम।
२१९३—तप ... पूजा, आराधना,—इन्द्रियों को तपाने व क्लेश देने की क्रिया, किसी प्रयोजनार्थ शरीर को कष्ट देना।
२१९४—तप्त ... तपा हुआ, गर्म, संतप्त,—क्रोधित, दुःखित, पीड़ित, आवेशित।
२१९५—तपसा ... तप से, तपस्या करके, तप के द्वारा, कष्ट से, आराधना से।
२१९६—तपसाल ... तपस्वी, तप करनेवाला, तपी।
२१९७—तपै ... तप जावे, तपस्या करे, गरमाय, संतप्त हो।
२१९८—तपोधन ... तपसी, तापस, तपस्वी, जिसका तपस्या ही मात्र धन हो।
२१९९—तब ... तद, तिस समय, उस काल में, फिर, उसके पीछे, तदनन्तर।
२२००—तबहिँ ... तभी, तधो, उसी समय, तदही, उसी काल में, उसके पीछे ही, उसीके बाद।
२२०१—तम ... अँधियारा, अंधकार,—अज्ञान,—तमोगुण,—अत्यन्त, सबसे बढ़कर।
२२०२—तमकि ... तमक के, क्रोध से, क्रोधयुक्त हो, त्यूरी बदल के, चिढ़ के, भृकुटी बदल के, फुरती से।
२२०३—तमारी ... दिनकर, सूर्य, अँधेरे के वैरी, भानु, आफ़ताब।
२२०४—तमाल ... एक वृक्ष का नाम (इसकी आड़ू की सी पत्ती और लसोड़े से फल होते हैं), लोक में आज कल सुरती को भी कहते हैं।
२२०५—तमी ... रात, रात्रि, निशि, निशा, शर्वरी, रजनी।
२२०६—तमीचर ... निशिचर, निशाचर, राक्षस, दैत्य, रात्रि में विचरनेवाले।
२२०७—त्याग ... छोड़ना, परित्याग, वर्जन।
२२०८—त्यागी ... छोड़नेवाला, विरक्त, जो संसार की ममता छोड़दे।
२२०९—तर्क ... विचार, हुज्जत, तकरार।
२२१०—तर्जनी ... अंगूठे के पास की अंगुली, प्रथमांगुली, पहली अंगुली, दिखानेवाली अंगुली, इशारा करनेवाली अंगुली।
२२११—तर ... तले, तरे, पीछे,—विशेष, बहुत।
२२१२—तरक ... तर्क, विचार, हुज्जत, तकरार,—तड़क,—चटक कर, टूटकर,—रुष्ट होकर।
२२१३—तरकऊ ... तर्क भी, विचार भी, हुज्जत भी,— रोष भी।
२२१४—तरकस ... तूनीर, त्रोण, तीरदान, बाण भर कर पीठ पर बाँधने का चोंगा।

नं० शब्द		अर्थ
२२१५—तरकि	...	तर्क करके, हुज्जत करके,—टूटके, तड़ककर,—रुष्ट हो कर, नाराज़ होके।
२२१६—तरज (तज)	...	तड़प, डपेट, डाँट—डाँटकर, निहार कर, दिखाय कर, इशारा करके।
२२१७—तरजत (तर्जत)		तड़पता है, डाँटता है,—डपटते हुए, दिखाते हुए,—डपेटते ही।
२२१८—तरजन (तर्जन)		तड़प, डपेट, डाँट, झिमकार,—तड़पना, झिझकारना, डपेटना।
२२१९—तरन	...	तरनेवाला, तैर जानेवाला, पार होनेवाला, मुक्त होनेवाला।
२२२०—तरनतारन	...	जो आप तरे और दूसरों को भी तारदे, जीवन्मुक्त।
२२२१—तरनि (तरणि)		सूर्य, भानु, रवि, दिनकर।
२२२२—तरनी	...	नौका, नाव, डोंगी, किश्ती।
२२२३—तरपन (तर्पण)	...	तृप्त करना, खुशकरना,—मंत्रों के द्वारा पितरों को जल देना।
२२२४—तरपहि	...	तड़पते हैं, गर्जते हैं,—तृप्त करते हैं।
२२२५—त्रय (त्रि)	...	तीन, ३।
२२२६—तरल	...	पतला, चंचल, तीक्ष्ण, चोखा।
२२२७—तरवारि	...	तलवार, खड्ग, ख़ंजर, एक शस्त्र का नाम।
२२२८—त्रसित	...	डराहुआ, भयभीत।
२२२९—तरहि (तर्हि)	...	तब, तिस समय, तिस वक्त।
२२३०—त्राता	...	रक्षक, बचानेवाला।
२२३१—त्रातु	...	रक्षा करे, बचावे।
२२३२—त्रास	...	भय, डर, ख़ौफ़।
२२३३—त्रासक	...	भयदायक, डरानेवाला, भयानक, डरावना।
२२३४—त्राहि	...	रक्षा करो, बचाओ।
२२३५—तरि	...	तरके, तीर पर लग कर, पार हो कर,—नाव, नौका।
२२३६—तरुन (तरुण)	...	जवान, युवा,—ताज़ा, प्रफुल्लित, खिला हुआ।
२२३७—तृकाल (त्रिकाल)		तीनों काल (भूत, भविष्य, वर्त्तमान)।
२२३८—तृकूट (त्रिकूट)	...	एक पर्वत का नाम, (जिस पर लंका वसी है)
२२३९—तृजटा (त्रिजटा)		एक राक्षसी का नाम, बिभीषण की कन्या।
२२४०—तृधा (त्रिधा)	...	तीन बार, तीन दफ़े,—तीन प्रकार का।
२२४१—तृपुर (त्रिपुर)	....	एक दैत्य का नाम।
२२४२—तृपुंड (त्रिपुंड्)	...	तीन धारीवाला तिलक, शैवों का तिलक।
२२४३—तृविक्रम (त्रिविक्रम)		भगवान् वामन का नाम।
२२४४—तृबेनी (त्रिवेणी)		गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम,—तीन चोटी।
२२४५—तृभुवन (त्रिभुवन)		तीनों लोक (स्वर्ग, मृत्यु, पाताल)।
२२४६—तृमुहानी (त्रिमुहानी)		तिरमुहानी, त्रिमार्ग, तिरस्ता, तीन मार्गों का योग।
२२४७—तृय (त्रिय)	...	स्त्री, युवती, बैयर, औरत, लुगाई।
२२४८—तृलोक (त्रैलोक्य)		त्रैलोक्य, तीनों लोक (स्वर्ग, मृत्यु, पाताल)।
२२४९—तृविधि (त्रिविध)		तीन प्रकार का, तीन तरह का, तीन चाल का।
२२५०—तृसंक (त्रिशंकु)		एक सूर्यवंशी राजा का नाम, राजा हरिश्चन्द्र के पिता।
२२५१—तृसूल (त्रिशूल)	...	तिरसूल, एक प्रकार का शस्त्र, महादेवजी का मुख्य शस्त्र।

नं० शब्द		अर्थ
२२५२—तरी	...	नाव, नौका, किश्ती, जलयान,—ठंढक, नमी, शीतलता ।
२२५३—तरु	...	वृक्ष, पेड़, रूख, पादप, विटप ।
२२५४—तरुनई	...	यौवन, जवानी ।
२२५५—तरुणी	...	युवती, युवा स्त्री, जवान औरत, स्त्री, औरत ।
२२५६—तरुवर	...	वृक्ष, पेड़,—श्रेष्ठ वृक्ष, उत्तम वृक्ष ।
२२५७—त्रेता	...	युग विशेष, द्वितीय युग, दूसरा युग ।
२२५८—तररे		घूरे, डाँटकर देखे, नेत्रों से डाँटे,—जल की निरन्तर धारायें ।
२२५९—त्रोन (त्रोण)	...	तरकस, तूण, तूणीर, बाण रखने का चोंगा ।
२२६०—तरंग	...	लहर, मौज, वीचि ।
२२६१—तरंगिनी	...	नदी, सरिता, सरित्, दरिया ।
२२६२—तरंगी	...	मौजी, लहरी, बहुरंगी, मनोनुगामी, स्वेच्छाचारी ।
२२६३—तल	...	तले, नीचे,—गच, छत, सतह ।
२२६४—तल्प	..	शय्या, सेज, सेजा, पलंग, खटिया, बिस्तरा ।
२२६५—तलफत	...	तड़फ़ता है, व्याकुल होता है, बेचैन होता है ।
२२६६—तलाई	...	तलैया, पोखरी, गड़हिया, छोटा तालाब ।
२२६७—तलाव	...	सरोवर, सर, तड़ाग, पोखरा ।
२२६८—त्वच	...	चमड़ा, खाल, बोकला, छिलका, छिकुला, बल्कल ।
२२६९—त्वदीय	...	तुम्हारा, आपका, तुम्हाराही, आपही का, भवदीय ।
२२७०—तसि	...	तैसी, यथोचित, जैसी चाहिये तैसी ।
२२७१—तहिआ	...	तब, तिस समय, तिस वक्त ।
२२७२—तहँ	...	तहाँ, तिस जगह, तिस स्थान पर ।
२२७३—तहँवाँ	...	तहाँ पर, तहाँहीं, तिस स्थानपर, उसी जगह ।
२२७४—ताकर	...	उसका, तिसका ।
२२७५—ताका	...	देखा, अवलोकन किया, निहारा, लक्षित किया, निशाना बाँधा,- तिसका
२२७६—ताकि	...	देखके, निहार के, लखकर ।
२२७७—ताग	...	डोरा, तागा, धागा, सूत्र ।
२२७८—ताज	...	राजाओं की टोपी, मुकुट, किरीट ।
२२७९—ताजी	...	अश्वजाति, घोड़ों की जाति,—टटकी, नवीन ।
२२८०—ताटंक	...	कर्णाभरण, कर्णभूषण, कर्णफूल, तरकी, ढेंढी, काँप ।
२२८१—ताड़का	...	एक राक्षसी का नाम, मारीच की माता ।
२२८२—ताड़त वा ताड़ति		मारता वा मारती है, डाँटता वा डाँटती है दंड देता वा देती है ।
२२८३—ताड़ित	...	डाँटा हुआ, दंड-प्राप्त ।
२२८४—ताड़ना	...	दंड, डांट, मार, दंड देना, मारना, डाँटना ।
२२८५—तात	...	पुत्र, भाई, पिता, सखा, प्रिय, प्यारा,—गरम, तप्त ।
२२८६—ताते	...	तिस करके, तिस कारण से,—गरमागरम, संतप्त, तपे हुए ।
२२८७—तानि	...	तानकर, खींचकर,—तिनको, तिन्हों को ।
२२८८—ताप	...	तपन, आतप, तपिश, जलन, ज्वर, बुख़ार, तप ।

नं० शब्द		अर्थ
२२८९—तापस	...	तपस्वी, तपसी, तपस्या करनेवाले ।
२२९०—तामरस	...	कमल, सरोज, कंवल, पंकज ।
२२९१—तामस	...	क्रोध, रोष, तमोगुण,—क्रोधी, तमोगुणी ।
२२९२—तारक	...	तारनेवाला, मंत्र विशेष, रामनाम,—दैत्य विशेष, तारकासुर,—आँख की पुतली ।
२२९३—तारन (तारण)		तारनेवाला ।
२२९४—तारय	...	तारो, तारिये, तार दीजिए ।
२२९५—तारा	...	तार दिया, उद्धार किया, पार कर दिया,—बाली की स्त्री का नाम,—बृहस्पति की स्त्री का नाम,—सितारा, नक्षत्र,—आँख की पुतली ।
२२९६—ताल	...	ताड़ का पेड़,—संगीत में समय-प्रबंध, काल समय, निश्चित समय,—बड़ा तालाब ।
२२९७—ताला	...	बड़ा तालाब,—द्वार बंद करने का यंत्र, कुल्फ़ ।
२२९८—ताली	...	कुंजी, चाभी,—थपोड़ी, हथेली का शब्द ।
२२९९—तालू	...	ताल, तालाब,—ताल वृक्ष,—मुँह के अंदर जीभ के ऊपर का भाग,—मूर्द्धा, सिर का चाँदा ।
२३००—तास	...	ताश, जरी, स्वर्ण-खचित वस्त्र,—खेलने के तास, खेल विशेष ।
२३०१—तासु	...	तिसका ।
२३०२—ताही	...	तिसको ।
२३०३—तितारी	...	तीन तार की, तीन सूत्र वाली,—तीन ताल वाली ।
२३०४—तितीर्षा	...	तरने की इच्छा ।
२३०५—तिथि	...	चन्द्रमा की प्रतिपदादि १६ तिथि, हिन्दी-तारीख़ ।
२३०६—तिन्ह वा तिन	...	उन, वे लोग ।
२३०७—तिमि	...	तिस भाँति, तिस प्रकार, तिस तरह ।
२३०८—तिमिर	...	तम, अंधकार, अंधियारा, अँधेरा ।
२३०९—तिय	...	स्त्री, मेहरारू, लुगाई, त्रिया, औरत, जोरू, पत्नी, भार्या ।
२३१०—तिरहुति	...	मिथिला देश ।
२३११—तिल	...	तिल्ली, अन्न विशेष,—शरीर में चिह्न विशेष ।
२३१२—तिलक	...	टीका, माथे पर चन्दन आदि के चिह्न,—राज्य का टीका,—ग्रंथों का अर्थ-विस्तार, पुस्तकों की व्याख्या,—श्रेष्ठ ।
२३१३—तिलांजलि	...	तिलके सहित जल की अंजली जो मृतक के नाम दी जाती है ।
२३१४—तिष्ठेत्	...	रहे, ठहरे, बैठे, विश्राम करे ।
२३१५—तिहुँ	...	तीनों ।
२३१६—तिहुँलोक	...	तीनों लोक, त्रैलोक्य (स्वर्ग मृत्यु, पाताल) ।
२३१७—ती	...	स्त्री, त्रिया, लुगाई ।
२३१८—तीछी	...	तीखी, तीक्ष्ण, चोखी, पैनी, रूखी ।
२३१९—तीछे	...	तीखे, पैने, तीक्ष्ण, चोखे ।
२३२०—तीतर	...	एक पक्षी का नाम, तीतिल, तित्तिर, तेज़,—रूखे, क्रोधी ।

नं० शब्द	अर्थ
२३२१—तीनकाल ...	तीनों काल, त्रिकाल (भूत, भविष्य, वर्तमान)।
२३२२—तीर ...	बाण, नाराच,—समीप, नगीच, पास, किनारा, निकट,—नदी का तट।
२३२३—तीरथ(तीर्थ) ...	यात्रा के स्थान, पवित्र स्थान,--चरणोदक, चरणामृत।
२३२४—तीरथपति, तीरथराऊ, तीरथराजू ...	तीर्थराज, प्रयाग, संपूर्ण तीर्थों का राजा।
२३२५—तीरा ...	तीर, बाण, नाराच,--समीप, निकट, किनारा, पास, तट, नदी-तट।
२३२६—तीस ...	त्रिंशत्, डेढ़ कोड़ी, २० और ३०,—पीड़ा।
२३२७—तुभ्यम् ...	तुम्हारे लिए, तुमको, आपको, तुम्हें।
२३२८—तुम्ह ...	तुम, आप।
२३२९—तुम्हरेहि ...	तुम्हारे ही, आपही के।
२३३०—तुमहि ...	तुमको, आपको।
२३३१—तुरग ...	घोड़ा, अश्व, तुरंग, वाजी।
२३३२—तुरत ...	साथही, उसी दम, उसी वक्त, तत्काल, शीघ्र ही, चटपट, झटपट जल्दी से।
२३३३—तुराई ...	तोशक,-- जल्द, शीघ्र, वेग से,—तोड़ाय कर।
२३३४—तुरीय ...	चौथी अवस्था, निर्गुण ब्रह्म।
२३३५—तुलसिका ...	तुलसी, हरिप्रिया, वृन्दा, एक पूजनीय पवित्र पौदा।
२३३६—तुलसी ...	तुलसिका, हरिप्रिया, वृन्दा, एक पवित्र पौदे का नाम,—गोस्वामी तुलसीदासजी, रामचरितमानस के कर्त्ता।
२३३७—तुलै ...	तुलता, तौला जा सकता, वज़न किया जाय, तौला जाय।
२३३८—तुसार-तुषार-तुहिन	पाला, ओस, कुहिरा, हिम।
२३३९—तून(तूण) ...	तरकश, भाथा, बाण रखने का चोंगा।
२३४०—तूनीर(तूणीर)	तरकश, भाथा, बाण रखने का चोंगा।
२३४१—तूरी ...	तुल्य, समान, बराबर,--तुरही, एक बाजा, सिंहा।
२३४२—तूल ...	रूई, कपास, धुनी भई रुई, तूँबी हुई रुई, साफ़ की हुई रुई।
२६४ —तृजग (त्रिजग)	तिर्यक्, तिर्यच्, योनि विशेष(पशु, पक्षी, कृमि आदि)।
२३४४—तृन(तृण) ...	तिनुका, घास, खर।
२३४५—तृष्णा ...	लालच, लोभ, चाह।
२३४६—तृषा ...	प्यास, चाह, दरकार।
२३४७—तृषित ...	प्यासा, लोलुप, लालची।
२३४८—ते ...	वे, वे सब।
२३४९—तेऊ ...	वे भी, वे सब के सब।
२३५०—तेज ...	प्रताप, पराक्रम, प्रभाव, ऐश्वर्य, बल, तीक्ष्णता, चमक, प्रकाश, ताप, आँच।
२३५१—तेति ...	ते इति, बस वे।
२३५२—तेते ...	वे वे, तितने, उतने।
२३५३—तेपि ...	वे भी।

नं० शब्द		अर्थ
२३५४—तेल तेला	...	तैल, रोग़न, चिकनाई, स्निग्धता।
२३५५—तेहि	...	तिसको, उसको, तिसकी, उसकी, तिसमें, उसमें।
२३५६—तेहिते	...	उससे, उस करके, तिस करके।
२३५७—तैसी	...	वैसी, तिस तरह की, उस भाँति की, उस चाल की, तिसके समान।
२३५८—तोतरि	...	तोतली, बच्चों की बोली, बच्चों के टूटे फूटे वाक्य, लड़बड़ी बोल, लड़खड़ाती हुई वाणी।
२३५९—तोप्यो	...	तोपा, ढाँपा, ढँका, ढाँकदिया, छिपाया।
२३६०—तोमर	...	एक शस्त्र का नाम,--एक प्रकार की कविता के छंद का नाम।
२३६१—तोयनिधि	...	समुद्र, जल का खज़ाना, वारिधि।
२३६२—तोरण	...	बन्दनवार, पत्ती की बनी झालर जो मंगल समय में द्वार पर बाँधी जाती है।
२३६३—तोरहिं	...	तोड़ें, तोड़ते हैं।
२३६४—तोरावति	...	त्वरावति, बेगवती, जल्दबाज़,—घबराती है, तोड़ाती है।
२३६५—तोष	...	सन्तोष, तृप्ति, अनिच्छा, प्रसन्नता, सब्र।
२३६६—तोषक	...	संतोष देनेवाला, तृप्त करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।
२३६७—तोषय	...	संतोष दे, तृप्त करै, प्रसन्न करे।
२३६८—तोषये	...	संतोष के लिए, प्रसन्नतार्थ, प्रसन्न करने के हेतु, तृप्त्यर्थ।
२३६९—तोहि	...	तुझको, तेरे को, तुझै।
२३७०—तौ	...	तब, उन दिनों।
२३७१—तौलौं	...	तब तक, तब ताईं, उन दिनों तक, उस समय पर्यन्त।
२३७२—तं	...	उसको।
२३७३—तंत्र	...	एक शास्त्र का नाम, यंत्र मंत्रादिक शास्त्र, योग।
२३७४—ताँती	...	तंतुकार, जुलाहा, कपड़ा बिनने वाला।
२३७५—तुंग	...	ऊँचा।
२३७६—तूबरी	...	तुमड़ी, तुंबी, तूंबी, तितलौकी, कड़ुआ कद्दू, साधु लोगों के कमंडल बनाने का फल विशेष, सर्पवालों के बजाने का एक बाजा।
थ		
२३७७—थकि	...	थककर, हारकर, दुखी हो, भयचक हो, लाचार हो।
२३७८—थकित	...	थका हुआ, हारा हुआ, आश्चर्ययुक्त, छका हुआ, भयचक, स्तब्ध।
२३७९—थरथर	...	कंप, कपन।
२३८०—थल	...	स्थल, भूमि, पृथ्वी, धरती, ठाम, स्थान।
२३८१—थलचर	...	भूचर, पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।
२३८२—थाक	...	थककर, हारकर,—समूह, थोंक, ढेरी।
२३८३—थाका	...	थक गया, हार गया, विस्मित हुआ,—समूह, थोंक, ढेर का ढेर, सब।
२३८४—थाती वा थाथी		धरोहर, अमानत।
२३८५—थाना	...	स्थान, ठिकाना, अड्डा, बैठने का स्थान, बैठक, चौकी।

नं० शब्द		अर्थ
२३८६—थापना	...	स्थापन, स्थापन करना, बैठाना, आधिपत्य देना, मुक़र्रर करना।
२३८७—थार (थारा)	...	थाल, परात, बड़ी थाली।
२३८८—थाह	...	आहट, अंदाज़, जल का गहराव, जल के नीचे की भूमि।
२३८९—थिति	...	स्थिति, रहन, ठहराव।
२३९०—थिर	...	स्थिर, ठहरा हुआ, अचल, निश्चित, नियत, क़ायम, मुक़र्रर।
२३९१—थिरु	...	स्थिर हो, ठहर, थिर हो, क़ायम रह।
२३९२—थीरा	...	थिर, स्थिर, अचंचल, ठहरा हुआ, ठहराया हुआ, ठहराया।
२३९३—थैली	...	हिमयानी, ओौछाड़, बटुआ, खोली।
२३९४—थोक	...	समूह, थाक, ढेर, इकट्ठा, समूचा, सबका सब।
२३९५—थोर	...	थोरे, अल्प, कुछ, किंचित्, संक्षिप्त।
द		
२३९६—दइय	...	दैव, विधिना, विधाता।
२३९७—दई	...	दैव, विधिना, विधाता।
२३९८—दक्ष	...	प्रजापति का नाम,—चतुर, निपुण, नागर, होशियार, चालाक।
२३९९—दक्षसुत	...	दक्ष प्रजापति के पुत्र, प्रचेता।
२४००—दक्षसुता	...	सती, दक्ष प्रजापति की कन्या, भवानी, महादेव की पत्नी।
२४०१—दच्छिन (दक्षिण)		एक दिशा का नाम, उत्तर के सामने की दिशा,—अनुकूल, सीधा, दहिना, दाहिन, मुआफ़िक़।
२४०२—दत्त	...	दिया गया, दिया हुआ।
२४०३—दधि	...	दही, जमाया हुआ दूध।
२४०४—दधिमुख	...	एक राक्षस का नाम।
२४०५—दधीचि	...	एक ऋषि का नाम, जिन की हड्डियों से इन्द्र का बज़् बनाया गया था।
२४०६—दनुज	...	दनु से उत्पन्न, दानव।
२४०७—दपट	...	डपटकर, डाँटकर, धमका कर।
२४०८—दम	...	इन्द्रियों का दबाना, इन्द्रियों को विषयों से रोकना, योग की एक क्रिया,—श्वास, प्राण,—भाफ को बंद करके किसी वस्तु को रींधना।
२४०९—दमक	...	चमक, प्रकाश,—दमन करनेवाला, योगी।
२४१०—दमनीय	...	दमन करने योग्य, दबाने के योग्य, तोड़नेवाला, नष्ट करनेवाला।
२४११—दमनू	...	नाश करनेवाला, दबानेवाला, दमन करनेवाला।
२४१२—दम्पति	...	स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, जोरू ख़सम, जोड़ा।
२४१३—दया	...	कृपा, अनुग्रह, करुणा, अनुकम्पा, मेहरबानी।
२४१४—दयाल	...	दयालु, कृपालु, दया करनेवाला, कृपा करनेवाला, मेहरबान।
२४१५—दर	...	शंख,—भय, डर,—छिद्र,—भाव,—दरजा,—खिड़की, वे किवाड़ी का द्वार,—दरार,—बल, अल्प, ईषत्, थोड़ा।
२४१६—दर्प, दर्पा	...	अहंकार, अभिमान, मद, ग़ुरूर।
२४१७—दरबार	...	राज-सभा, सभा।
२४१८—दर्भ	...	कुश, कुशा, एक प्रकार की पवित्र घास।

नं०	शब्द	अर्थ
२४१९	—द्रवउ	... ढरौ, द्रवौ, पिघलो, दया करो ।
२४२०	—द्रवा	... ढरा, पिघला, ढला, कृपा की ।
२४२१	—द्रवी	... ढरी, पिघली, ढरनेवाला, दया करनेवाला, कृपा-संयुक्त ।
२४२२	—द्रव्य	... धन, अर्थ,—वस्तु, चीज़ ।
२४२३	—दर्शन	... दरस, दिखाव, दीदार ।
२४२४	—दरस	... दर्शन, दीदार, दिखाव ।
२४२५	—दरसी	... देख पड़ी, दिखाई दी, देखने में आई, जान पड़ी, मालूम दी, सूझी ।
२४२६	—दरारा	... दरार, दरज, चीर, चिराव, फाड़, लकीर, फार, ख़त ।
२४२७	—दरिद्र	... दीन, ग़रीब, धनहीन,—दारिद्र्य, दीनता, धनहीनता ।
२४२८	—द्रुम	... पादप, तरु, वृक्ष, पेड़ ।
२४२९	—द्रोह	... झगड़ा, लड़ाई, द्वेष, विरोध ।
२४३०	—दल	... नाशकर, चूर्णकर,—सेना, समूह,—पत्ता, पत्र,—भाग ।
२४३१	—दलकि	... दहलकर, भयकंपित हो, धोखे से अचानक कोप कर, थर्रा कर,—फट कर ।
२४३२	—दलत	... चूर्ण करता है, दलता है, नाश करता है,—चूर्ण करतेही, दलतेही, नाश करते ही ।
२४३३	—दलन	... नाशक, दलनेवाला, टुकड़े करनेवाला, चूर्ण करनेवाला ।
२४३४	—दलमले	... पीस डाले, मसल के चूर्ण कर डाले ।
२४३५	—दलय	... चूर्ण करे, दले, दल डाले,—चूर्ण कर, तोड़, नाश कर ।
२४३६	—दलि	... चूर्ण करके, दलके, नाश करके ।
२४३७	—दलित	... टूटा हुआ, चूर्ण, दला हुआ, चूर्णित ।
२४३८	—दव	... वनाग्नि,—आँच, दाह, जलन ।
२४३९	—द्वादस	... बारह, १२,—बारहवाँ ।
२४४०	—द्वापर	... तृतीय युग, तीसरा युग ॥
२४४१	—द्वार	... डेवढ़ी, दरवाज़ा, फाटक ।
२४४२	—द्वारपाल	... दरबान, डेवढ़ीदार, चौकीदार, पाहरू, पहरुआ, द्वार का रक्षक ।
२४४३	—दवारि	... दावानल, वनाग्नि—दाह, जलन, आँच ।
२४४४	—द्विज	... त्रिवर्ग, ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य, जिनका यज्ञोपवीत होता है,—जो दो बार जन्मे, दाँत, दंत ।
२४४५	—द्विजराज	... चन्द्रमा,—ब्राह्मण-श्रेष्ठ ।
२४४६	—द्विविद	... एक बानर का नाम ।
२४४७	—द्वैत	... भेद, द्विभाव, भिन्नता, भेदबुद्धि, द्विविधा ।
२४४८	—द्वंद	... दोनों का, आपस में, एक के साथ एक,—दो, दोनों ।
२४४९	—दश	... दस, १० ।
२४५०	—दशकंठ दशकंध दशकंधर	...रावण, दश गलेवाला, दश कंधोंवाला ।
२४५१	—दशगात	... दशगात्र, दश शरीर,—दशगात्र कर्म, दश दिन का प्रेत-कर्म ।

नं० शब्द		अर्थ
२४५२—दशन	...	दाँत, दन्त, रद, द्विज ।
२४५३—दशरथ	...	अवधेश, रामजी के पिता, अयोध्या के राजा, जिन का रथ दशों दिशा में जाने की सामर्थ्य रक्खे ।
२४५४—दशशीस	...	दश शिर वाला, रावण ।
२४५५—दशा	...	अवस्था, गति, भोग, हालत,--नव ग्रहों के भोग ।
२४५६—दशानन	...	दश मुँह वाला, रावण ।
२४५७—दह	...	दाह, जलन,—जलानेवाला, भस्म करनेवाला,—नाशक,—जलाता है, जलाओ ।
२४५८—दहन	...	जलानेवाला,—जलन, दाह,—जलाना,—अग्नि ।
२४५९—दहय	...	जलावै, भस्मकरै, कुढ़ावै, सतावै,—जलाव, जलादे,—जलता है ।
२४६०—दहिना	...	दक्षिण, अनुकूल, सीधा ।
२४६१—दा	...	देनेवाला, दाता, दानी ।
२४६२—दाइज	...	दैजा, दान, विवाह में जो वस्तु कन्या का पिता वर को देता है ।
२४६३—दाऊ	...	दाव, दाँव, ठहर, स्थान,—बलदेवजो, संकर्षण भगवान् ।
२४६४—दागे	...	जलादे, छोड़े, आवाज़ करे—चिह्नित करे, दाग़ लगावे,—लिखे ।
२४६५—दाड़िम	...	अनार ।
२४६६—दाता	...	देनेवाला, दानी, उदार, दानकर्त्ता ।
२४६७—दातार	...	दायक, देनेवाला, दानी, उदार ।
२४६८—दादि } दादु }	...	दाद, दात, अभीष्ट, मुराद, मनोवांछित ।
२४६९—दादुर	...	मेढक, मेघा, मेडुका, भेंक, डडु ।
२४७०—दान	...	दातव्य, देना, देने वाली वस्तु, दी हुई वस्तु ।
२४७१—दानव	...	दनु की सन्तान, दनुज, दैत्य, असुर, राक्षस ।
२४७२—दाना	...	दान, दातव्य—अनाज,—छोटी गोल वस्तु,—गंभीर, समझदार ।
२४७३—दानि } दानी }	...	देनेवाला, दाता, दायक, दानकर्त्ता, दान करनेवाला ।
२४७४—दाप	...	दर्प, अभिमान, अहंकार, गर्व, बल, रुआब, सहम, तेज, प्रताप ।
२४७५—दापक	...	डाँटने वाला, घुरकने वाला, रुआब जमानेवाला, अहंकारी, अभिमानी ।
२४७६—दाबि	...	दाब कर, दबा कर, चाँप कर, कस कर ।
२४७७—दाम	...	रज्जु, रस्सी, रसरी,—माला,—धन, द्रव्य, रुपया ।
२४७८—दामिनी	...	तड़ित्, कौंधा, चपला, विद्युत्, बिजली ।
२४७९—दायक	...	देनेवाला, दान करनेवाला, दाता,—दावा करनेवाला ।
२४८०—दायनि	...	देनेवाली,—विभाग से,—दाँव से,—दाँव करके, पेच करके ।
२४८१—दाया	...	दया, कृपा, अनुग्रह, मेहरबानी ।
२४८२—दायिनी	...	देनेवाली, दान करनेवाली, दात्री ।
२४८३—दार	...	दारा, स्त्री, लुगाई, बैयर, औरत ।
२४८४—दारण	...	फाड़ना, तोड़ना, विदारन, चीरना,—फाड़नेवाला, चीरनेवाला ।
२४८५—दारय	...	नाशकरै, फाड़, चीर डाल, विदीर्ण कर ।
२४८६—दारा	...	स्त्री, दार, लुगाई, पत्नी, औरत, मेहरारू ।

नं० शब्द		अर्थ
२४८७—दारिका	...	लड़की, कन्या, बेटी, दुहिता, तनया।
२४८८—दारिद	...	दारिद्र्य, दरिद्रता, ग़रीबी, निर्धनता।
२४८९—दारु दारू	...	लकड़ी, काष्ठ, काठ,—दवाई, दवा, ओषधि, मद्य, शराब,—बारूद।
२४९०—दारुण	...	कठिन, भयानक, भयंकर, डरावन, विकट, कराल, कठोर।
२४९१—दारुनारि दारुनारी	...	काठ की पुतली, कठपूतरी।
२४९२—दारुपोत	...	लकड़ी की नाव, लकड़ी का जहाज़।
२४९३—दावन	...	भस्म करनेवाला, जलानेवाला, नाशक,—दामन, अंचल, पल्ला,—दाँव से, गौं से, पेच से।
२४९४—दावनी	...	एक भूषण, बेंदी,—भस्म करनेवाली, जलानेवाली, नाश करनेवाली।
२४९५—दास	...	सेवक, चेरा, नौकर।
२४९६—दाह	...	जलन, आँच, सेंक।
२४९७—दाहा	...	जलन, आँच, सेंक,—जलाया, भस्म किया, नष्टकिया।
२४९८—दाहिन	...	दक्षिण, दहिना, अनुकूल, सरल, सीधा।
२४९९—दिखराय	...	दिखाकर, दरसाय कर, जनाय कर।
२५००—दिग	....	दिशा, दिक, तरफ़, जानिब।
२५०१—दिग्गज	...	दिशाओं के हाथी जो पृथ्वी को आठों दिशा में दबाये रहते हैं।
२५०२—दिगपाल	...	दिशाओं के रक्षक (इन्द्र, वरुण, यम, कुबेर इत्यादि)।
२५०३—दिगंबर	...	दिग्वास, नग्न, नंगा, आशावास, वस्त्रहीन, दिशाही जिसके वस्त्र हों,—शिवजी, महादेव।
२५०४—दितिसुत	...	दिति के पुत्र दैत्य, (हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्षादि दैत्य मात्र)।
२५०५—दिन	...	दिवस, दिवा, वासर, रोज़।
२५०६—दिनकर	...	सूर्य, दिन के करनेवाले, दिनेश, तरणि, भानु, आफ़ताब।
२५०७—दिनदानी	...	अति उदार, महादानी, दिन प्रति देनेवाला, दिन निकलतेही दान देनेवाला, रोज़ दान देनेवाला, दिनभर देनेवाला, सर्वदा देनेवाला।
२५०८—दिनमनी	...	सविता, भानु, सूर्य, आफ़ताब।
२५०९—दिनमानी	...	दिन का प्रमाण करनेवाला, सूर्य।
२५१०—दिनहि	...	दिन के दिन, उसी दिन, प्रतिदिन, रोज़रोज़, दिन को।
२५११—दिनेश	...	दिन का स्वामी, सूर्य।
२५१२—दियट	...	दीपक बालने की वस्तु, दीप रखने की वस्तु, चिराग़दान, फ़तीलसोज़।
२५१३—दिया	...	दीपक, चिराग़, दीप,—देदिया, देडाला, देचुका, अर्पण किया।
२५१४—दिवस	...	दिन, वासर, रोज़।
२५१५—दिव्य	...	अलौकिक, स्वर्गीय, स्वर्ग का,—मनोहर, सुंदर, स्वच्छ,—एक प्रकार की कठिन शपथ।
२५१६—दिव्यदृष्टि	...	अलौकिक दृष्टि, चमत्कारिक दृष्टि, आश्चर्य-ज्ञान, वह दृष्टि जिससे एक स्थान पर बैठे सर्वत्र का व्यवहार देख सके।

नं०	शब्द	अर्थ
२५१७	दिशि / दिसि / दिशा	ओर, तरफ़, दशों दिशा ।
२५१८	दिशि कुंजर	दिग्गज, दिशाओं के हाथी, पृथ्वी को आठों दिशा में दाबने वाले ८ हाथी (ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक)
२५१९	दिशिप / दिशिपति	दिशाओं के स्वामी, दिक्पाल (इन्द्र, वरुण, यम, कुवेरादि) ।
२५२०	दिशिराज	दिक्पति, दिशाओं के राजा (इन्द्रादि दिक्पाल) ।
२५२१	दीक्षा	उपदेश, मंत्रोपदेश ।
२५२२	दीन दीन	कंगाल, दुखिया, दरिद्री, विनीत, अति नम्र ।
२५२३	दीनता	ग़रीबी, दुःख, दारिद्र , नम्रता, आजिज़ी ।
२५२४	दीनदयाल	दीनों पर दया करनेवाला, ग़रीबों पर मेहरबानी करनेवाला, ग़रीब नवाज़ ।
२५२५	दीन्ह	दिया, देदिया, दान कर दिया ।
२५२६	दीप्त	प्रकाशित, उंजेला, चमकीला, चमचमाता, रौशन ।
२५२७	दीप्ति	प्रकाश, उंजियाला, चमक, रौशनी, ज्योति, लाट, लौ ।
२५२८	दीपशिखा	ज्योति, लाट, दीप्ति, लौ ।
२५२९	दीसा	देखपड़ा, दिखाई दिया ।
२५३०	दुआर(द्वार)	दरवाज़ा, डेवढ़ी, दुआरी, फाटक ।
२५३१	दुई	दुरौइत, भेद बुद्धि, भिन्नता ।
२५३२	दुकाल	दुष्काल, दुर्भिक्ष, काल, मँहगी, अन्नहानि ।
२५३३	दुकूल	वस्त्र, उत्तरीय वस्त्र, उपरना, डुपट्टा, ओढ़ने का वस्त्र ।
२५३४	दुख	क्लेश, पीड़ा, कष्ट, तकलीफ़, व्यथा, आपदा, विपत्ति ।
२५३५	दुखारी	दुखी, पीड़ित, व्यथित, दुखदायी, दुख देनेवाला ।
२५३६	दुखित	दुखिया, दुखी, पीड़ित, व्यथित, रंजीदा ।
२५३७	दुचित	दुचित्ता, अव्यवस्थित, घबराया हुआ, द्विविधाग्रस्त चित्तवाला ।
२५३८	दुति	द्युति, दीप्ति, चमक, प्रकाश, प्रभा, रौशनी ।
२५३९	दुनी	दुनिया, संसार, जगत्, प्रपंच ।
२५४०	दुविद(द्विविद)	एक बानर का नाम ।
२५४१	दुभाषि	दो भाषा जाननेवाला, दो भाषा बोलनेवाला, दो भाषिया ।
२५४२	दुरई	छिपता है, छिपजाता है, लुक जाता है, गुप्त होजाता है,—छिपे, लुके, गुप्त होवे ।
२५४३	दुर्ग	गढ़, क़िला,—कठिन, अति कठिनता से जाने योग्य ।
२५४४	दुर्गम	अजय, न जीतने योग्य, कठिनता से गमन के योग्य, न प्राप्त होने योग्य। अति कठिन ।
२५४५	दुर्गा	क़िला, गढ़, भयानक, अगम, दुर्गा देवी, एक शक्ति का नाम ।
२५४६	दुर्घट	कठिन से बनने के योग्य, कठिनता से प्राप्त होने योग्य, अति कठिन, न जीतने योग्य ।

नं० शब्द		अर्थ
२५४७—दुर्ज्जन	...	खोटा मनुष्य, बुरा आदमी, लुच्चा, दुखदायी, दोष देखनेवाला मनुष्य ।
२५४८—दुरत	...	छिपता है, लुकता है, गुप्त होता है, छिपते ही ।
२५४९—दुरतिक्रम	...	दुस्तर, कठिन से पार होने योग्य ।
२५५०—दुर्बल	...	दुबला, दूबर, बलहीन, कमज़ोर, बेदम ।
२५५१—दुर्मद	...	एक राक्षस का नाम—बड़ा घमंडी, बुरे अभिमान वाला ।
२५५२—दुर्लभ	...	अलभ्य, कठिन से मिलने योग्य, कष्ट-साध्य, कष्ट से प्राप्त होने योग्य ।
२५५३—दुर्वचन	...	दुष्ट वचन, खोटी बोली, गाली, बुरी बोली, कड़ुवा बोल, कठोर वचन ।
२५५४—दुर्वादि	...	दुष्ट वचन, बुरी हुज्जत, निष्प्रयोजन, तकरार, बकवाद, वृथा भाषण, गाली, कठोर वचन ।
२५५५—दुर्वासन / दुर्वासना	...	बुरी वासना, खोटी इच्छा, बुरी अभिलाषा ।
२५५६—दुर्वासा	...	एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम ।
२५५७—दुरवासम	...	मैले वसनवाला, मलीन वस्त्र वाला, बुरे कपड़ों वाला, कुवेष ।
२५५८—दुराई	...	छिपाई, छिपाकर, लुकाकर, चुपके से ।
२५५९—दुराधर्ष	...	जो शत्रु से न डरे, अति निडर, अत्यन्त निर्भय ।
२५६०—दुराराध्य	...	आराधना करने में कठिन, दुःख से सेवा करने के योग्य ।
२५६१—दुराव / दुरावा	...	छिपाव, लुकाव, अंतर, आड़,—छिपाया, आड़ किया, लुकाया ।
२५६२—दुरासा(दुराशा)		खोटी आशा, बुरी इच्छा, कुवासना, बुरी उमैद,—बुरी तरफ़, बुरी ओर, कठिन दिशा, बुरा भोजन करनेवाला ।
२५६३—दुरि	...	छिपकर, लुककर ।
२५६४—दुरित	...	पाप, दोष, अपराध, अवगुण,—छिपा हुआ, गुप्त।
२५६५—दुरे	...	छिपे, छिपे हुए, छिपने से ।
२५६६—दुरंत		दुष्ट, दुर्ज्ञेय, अवाध्य, जिसका परिणाम कष्ट हो, अति दुखदायी, छिप जाते हैं ।
२५६७—दुलहा	...	दूलह, वर, विवाह करनेवाला लड़का, नौशा ।
२५६८—दुलारे	...	दुलार किये हुए, मुँह लगे, लड़ाये हुए, लाडिले, सिरचढ़े ।
२५६९—दुष्ट	...	कठोर, पाजी, दुखदायी, कुकर्मी, बुरा, खोटा ।
२५७०—दुष्ट जन्तु	...	खोटे जीव, दुःखद जीव (सर्प, बिच्छू, बाघ इत्यादि) ।
२५७१—दुस्तर	...	कठिन से तरने योग्य, कठिन से पार जाने योग्य ।
२५७२—दुसह	...	असह्य, न सहने योग्य, कठिन से सहने योग्य ।
२५७३—दुहाई	...	शरण,—शपथ, सौगन्ध, किरिया, सौंह, क़सम,--दुहा जाता है ।
२५७४—दुहि	...	दुहकर, सुरुक कर, निचोड़ कर, सार ग्रहण करके, तत्त्व निकाल कर,—कामना ।
२५७५—दुहुँ वा दुहूँ	...	दोनों, उभय, युगल, युग्म ।
२५७६—दुंदुभी	...	नगाड़ा, डंका, धौंसा,--एक दैत्य का नाम ।
२५७७—दूजा	...	दूसरा, द्वितीय, अन्य ।

नं० शब्द		अर्थ
२५७८—दूत	...	ख़बर ले जानेवाला, वार्त्ताहर, संदेशहर, चर, चार, एलची, हलकारा, पत्रवाहक, पैग़ामबर ।
२५७९—दूध	...	दुग्ध, पय, क्षीर, छीर ।
२५८०—दूधमुख	...	बालक, बच्चा, लड़का, दूध पीनेवाला बच्चा, वह बच्चा जिनके दूध के दाँत न टूटे हों ।
२५८१—दूना	...	द्विगुण, दुगना, दोचन्द ।
२५८२—दूब	...	दूर्वा, एक प्रसिद्ध घास ।
२५८३—दूबर	...	दुबला, दुर्बल, निर्बल, ग़रीब, असमर्थ, कमज़ोर, निबल ।
२५८४—दूरि	...	दूर, लमती, लाँबे, फ़ासले पर ।
२५८५—दूषन(दूषण)	....	दोष, निन्दा, चूक, अपराध, अपवाद, भूल, ऐब,--एक राक्षस का नाम ।
२५८६—दृग	...	अक्षि, चक्षु, चख, आँख, नेत्र, नयन ।
२५८७—दृगंचल	...	दृगपट, नेत्रपट, पलक ।
२५८८—दृढ़	...	कठोर, कठिन, पोढ़ा, ठोस, पक्का, मज़बूत ।
२५८९—दृढ़ाई	...	कठोरता, पक्कापन, मज़बूती,—पक्का करके, निश्चित करके, मज़बूत करके ।
२५९०—दृशा	...	दृष्टि से, आँख से, नेत्र से, निगाह से,—देख के ।
२५९१—दृष्टि	...	आँख, नेत्र,—नज़र, निगाह ।
२५९२—देअ (देय)	...	देने योग्य, देने के लायक ।
२५९३—देई	...	देवै,—देता है,—दे करके ।
२५९४—देख	...	अवलोकन कर ।
२५९५—देखत	...	देखते, देखते ही, देखता है, देखते देखते ।
२५९६—देखहि	...	देखता है ।
२५९७ देखि	...	देख कर ।
२५९८—देत	...	देता है,—देते ही, देते देते ।
२५९९—देनी	...	देनेवाली ।
२६००—देव	...	देवता, सुर, अमर,—राजाओं की एक उपाधि,—विबुध,—ईश्वर ।
२६०१—देवक	...	देव का, देवता का ।
२६०२—देवता	...	सुर, देव, अमर ।
२६०३—देवतरु	...	सुरतरु, कामतरु, कल्पवृक्ष ।
२६०४—देवधुनि	...	गंगा,—आकाशवाणी ।
२६०५—देवन	...	देवताओं ने, देवताओं को,—अनेक देवता ।
२६०६—देवऋषि	...	नारदादि, सनकादिक, तुंबुरू ।
२६०७—देवर	...	पति का छोटा भाई ।
२६०८—देवसर	...	मानसरोवर आदि ।
२६०९—देवहूती	...	कर्दम ऋषि की स्त्री, वा कपिलदेवजी की माता का नाम ।
२६१०—देवा	...	देवता, अमर, सुर ।
२६११—देवि	...	देवी, भगवती, देवशक्ति, देवता की भार्या ।

नं० शब्द		अर्थ
२६१२—देस (देश)	...	पृथ्वी का खंड, स्थान, मुल्क, शहर, बड़ी बस्ती।
२६१३—देह (देहा)	...	शरीर, तन, तनु, वपु, काया, जिस्म।
२६१४—देहरी	...	डेहरी, दहलीज, देहली, डेवढ़ी।
२६१५—देहि	...	दे, देओ, देडाल।
२६१६—देही	...	देता है,—शरीर, देह, तन, जिस्म।
२६१७—देहु	...	दो, देदो, देओ, दीजिये।
२६१८—दैअहिँ	...	दैव को, विधाता को, भाग्य को,—देंगे, देवेंगे।
२६१९—दैव	...	विधिना, भाग्य, विधाता, होनहार, प्रारब्ध।
२६२०—दैविक	...	प्रारब्ध का, प्रारब्धिक, प्रारब्ध करके, विधिवश, भाग्य करके।
२६२१—दैहिक	...	देह का, शारीरिक, देह करके, शरीर-द्वारा, जिस्मानी।
२६२२—दोउ / दोऊ	...	दोनों, उभय, युग्म।
२६२३—दोना	...	द्रोण, वृक्ष के पत्रों का पात्र, पत्तों से बना हुआ कटोरा।
२६२४—दोष	...	पाप, अपराध, ऐब, कलंक, भूल, चूक, अवगुण, क़ुसूर।
२६२५—दंड	...	लकड़ी, लाठी, छड़ी, सोंटा, बाँस, कांड़ी इत्यादि,—डांड़, कर, टिकस, घड़ी, घटी।
२६२६—दंडक	...	दंडकर्त्ता, राजा,—एक छन्द का नाम,—एक राजा का नाम,—एक वन का नाम, दंडकारण्य।
२६२७—दंपति	...	जोड़ा, पतिपत्नी, स्त्री-पुरुष, जोरू ख़सम।
२६२८—दंभ	...	पाषंड, विडम्बना, झूठा व्यवहार।
२६२९—दंस	...	वनमक्खी, कीटविशेष, जंगली मच्छर, डंस, डाँस।
२६३०—दुंदुभी	...	नगाड़ा, धौंसा, डंका,—एक राक्षस का नाम।
२६३१—धकधकी	...	धड़क, धड़का, हृदय का उछलना, चिन्ता।
२६३२—धन	...	अर्थ, माल, द्रव्य, संपत्ति, दौलत,—धन्य, भाग्यवान्,—बारह राशियों में से एक का नाम,—कभी।
२६३३—धनद	...	धन का देनेवाला, ख़जानची, धनाध्यक्ष, कुवेर।
२६३४—धन्य	...	भाग्यवान्, भागवान्, श्रेष्ठ,—आश्चर्यजनक शब्द।
२६३५—धन्या	...	एक नदी का नाम,—धन्या स्त्री, भाग्यवान् स्त्री, श्रेष्ठ स्त्री।
२६३६—धनिक	...	धनी, धनवान्, महाजन, मालवर, रुपयेवाला, दौलतमन्द।
२६३७—धनी	...	धनवान्,—प्रभु, स्वामी, मालिक,—पति, ख़सम।
२६३८—धनु / धनुष	...	धन्वा, धनुष, कमान, कमठा।
२६३९—धनुही	...	छोटा धनुष, खेलने का धनुष, धुनखी।
२६४०—धनेश	...	धनाधीश, धन का स्वामी, कुवेर।
२६४१—ध्यान	...	हृदय के नेत्रों से देखना, अदृश्य वस्तु को हृदय-चक्षु से देखना, स्मरण।
२६४२—ध्यानी	...	ध्यान करनेवाला, हृदय में किसी वस्तु को देखनेवाला।
२६४३—ध्यावहिँ	...	ध्यान करते हैं, स्मरण करते हैं।

नं० शब्द		अर्थ
२६४४—धर	...	धड़, सिरहीन-शरीर, कबंध,—भूमि, पृथ्वी,—पकड़, धरु, पकड़ले, धारण करनेवाला,—रख दे ।
२६४५—धरकी	...	धड़की, धकधकाई ।
२६४६—धरत	...	धरते ही, रखते ही, रखता है,—पकड़तेही, धारण करतेही,—पकड़ते हुए, रखते हुए ।
२६४७—धरनि	...	पृथ्वी, भूमि, धरा, ज़मीन ।
२६४८—धर्म्म	...	पुण्य, पवित्र कार्य, न्याय, पन्थ, मत, कर्त्तव्य, जातिव्यवहार, व्यवस्था, धर्मराज ।
२६४९—धर्म्मध्वज	...	धर्म की ध्वजावाला,—पाषंडी ।
२६५०—धर्मधुरंधर	...	धर्मनिष्ठ, अपने धर्म में पक्का, धर्म में दृढ़, धर्म पर आरूढ़, धर्म पर स्थिर ।
२६५१—धरसि	...	तू धरता है, तू पकड़ता है, तू धारण करता है ।
२६५२—धरषि (धर्षि)	...	दबाकर, डरा कर, भय दिखा कर, घुड़ककर, डाँटकर ।
२६५३—धरहीं	...	धारण करते हैं, पकड़ते हैं, उठाते हैं ।
२६५४—धरा	..	पृथ्वी, भूमि, ज़मीन, धरनी, धरती ।
२६५५—धरासुर	...	भूदेव, भूसुर, विप्र, द्विज, ब्राह्मण ।
२६५६—धरि	...	धारण करके, पकड़के, उठाकर ।
२६५७—धरी	...	धारण की, उठाई, पकड़ी ।
२६५८—धरे	...	धारण करे, उठावे, पकड़े ।
२६५९—ध्वज ध्वजा	...	झंडा, फरहरा, निशान, केतु, मरातिब ।
२६६०—धवल	...	श्वेत, सुफ़ेद, उज्ज्वल, उजला, निर्मल, विमल, स्वच्छ, सित, साफ़ ।
२६६१—धसै	...	चुभै, धसजाय, घुसजाय, प्रवेश करै, पैठै, असर करै ।
२६६२—धाइ	...	दौड़कर, भाग कर,—धात्री, धाय, बच्चों को दूध पिलानेवाली ।
२६६३—धाई	...	दौड़ी, भागी, दौड़ती हुई, भागी हुई ।
२६६४—धाता	...	ब्रह्मा, विधाता, बनानेवाला ।
२६६५—धान	...	अन्न, अनाज, बिना छीला चावल ।
२६६६—धाम	...	स्थान, घर, मकान,—वैकुंठादि धाम,—बदरिकाश्रमादि ४ धाम ।
२६६७—धार	...	जल का प्रवाह,—बाढ़, चोखापन,—समूह, झुंड,—सेना,—किनारा, बार, छोर,—धारण करके,—ऋण लेकर ।
२६६८—धारा	...	बहाव, प्रवाह, स्रोत, सोता,—धारण किया, उठा लिया,—उधार लिया ।
२६६९—धारि	...	धारण करके, उठाकर,—उधार लेकर ।
२६७०—धारिय	...	धारण करो, धारण करिए, उठाइए, लीजिए, पहिरिए ।
२६७१—धारी	...	धारण करी, पहिरी,—धारण करनेवाला, पहिरनेवाला, उठानेवाला, रखनेवाला, धरनेवाला, लेनेवाला,—रेखा, लकीर, ख़त ।
२६७२—धावन	...	दूत, हलकारा, दौड़नेवाला, चर, चार, एलची, पैग़ामबर ।
२६७३—धावहु	...	दौड़ो, भागो, चढ़ाई करो, धावा मारो ।
२६७४—धावा	...	दौड़ा, भागा, चढ़ा, चढ़ाई की,—चढ़ाई ।

नं० शब्द		अर्थ
२६७५—धिग (धिक्)	...	फिट, छी, छी छी, धिक्कार, घृणा, लानत ।
२६७६—धीर	...	धैर्य्यवान, धीरजवाला, किसी आपत्ति से न घबरानेवाला, साहसी, हिम्मतवर ।
२६७७—धीरज	...	धैर्य्य, ठहराव, हिम्मत ।
२६७८—धीरा	...	धीर, धैर्यवान्, धीरजवाला ।
२६७९—धुनि, धुनी } ध्वनि	...	शब्द, नाद, आवाज़, गुंजार,—धुनकर, पीटकर, धुनख कर, दुःख से, सिरमार कर ।
२६८०—धुनै (धुनय)	...	मारै पीटै, दुःख से सिर हिलावै,—धुनखै ।
२६८१—धुर	...	मुख्य, सीमा, हद, अन्त्य, मूल, जड़,—धुरा, ध्रुव, अचल, परिणाम ।
२६८२—धुरीन (धुरीण)	...	मूलक, सीमा तक पहुँचनेवाला, हद को पहुँचनेवाला, अचल, दृढ़, सच्चा ।
२६८३—धुरंधर	...	पक्का, पोढ़ा, मज़बूत, सच्चा, दृढ़, पूरा, अत्युग्र, धूर्त्त ।
२६८४—धूत	...	ठग, चालाक, छलिया, धूर्त्त, धोखेबाज़ ।
२६८५—धूति	...	ठगकर, धूर्त्तता करके, छल से, धोखे से ।
२६८६—धूप	...	आतप, तपन, सूर्य का ताप, सूर्य का प्रकाश,—जलाने से सुगन्धि देनेवाली वस्तु ।
२६८७—धूम	...	धुआँ, धूम्र,—उपद्रव, हलचल, हैरा, चर्चा, कोलाहल ।
२६८८—धूमउ	...	धूम्र भी, धुआँ भी,—उपद्रव भी, कोलाहल भी, चर्चा भी ।
२६८९—धूमकेतु	...	धुआँ जिसकी ध्वजा वा चिह्न हो, अग्नि, आगि,—एक राक्षस का नाम ।
२६९०—धूलि	...	धूल, धूर, गर्दा, रज, ख़ाक ।
२६९१—धूसर	...	रज-वेष्टित, धूल से भरा, धूर से छाया हुआ, गर्दालूदा ।
२६९२—धृग	...	धिक्, धिक्कार, घृणा, घिन, छिः, फिट, छीछी, लानत ।
२६९३—धृति	...	धीरता, धैर्य, धीरज, ढाढ़स ।
२६९४—धेनु	...	गाय, गैया, गऊ, गौ,—पृथ्वी ।
२६९५—धेनुमति	...	गोमती नदी, राजा भोज की स्त्री का नाम ।
२६९६—धेनुधूलि	...	गोधूलि, सायंकाल, संध्या का समय, धुंधला समय, गायों के चर कर आने का समय जब उनके खुरों की रज से धुंधला हो ।
२६९७—धो	...	धोय डाल, साफ़ कर, प्रक्षालन कर, छुड़ा डाल, शुद्ध हो ।
२६९८—धोइ		धो कर, साफ़ कर के, छुड़ा कर,—शुद्ध हो कर—प्रक्षालन करके, निर्मल हो के ।
२६९९—धोख	...	धोखा, अचानक, अचानचक ।
२७००—धोखे	...	धोखे से, एक बेरही, अचानचक ।
२७०१—धोती	...	धो डालती, प्रक्षालन करती,—कमर में धारण करने का वस्त्र, अधोभाग के ढाँपने का वस्त्र,—एक योग की क्रिया ।
२७०२—धोरी	...	बैल ।
२७०३—धंध्रक, धन्ध्रक, धंधरक	...	धंधा करने वाला, कामकाजी, उद्यमी, सर्वदा जुता रहनेवाला ।

नं० शब्द	अर्थ
२७०४—धुंधी	धुंधलापन, मंद प्रकाश।
२७०५—धौं	क्या, या तो, क्या तो, क्या जाने।

न

नं० शब्द	अर्थ
२७०६—न	नहीं, मत, जिन, जनि।
२७०७—नई	नवीना,—झुकी, दबी, धसी, नम्र हुई, लजाई,—लज्जिता, शर्मालू, लज्जावती, शीलवती, दबी हुई।
२७०८—नए	नवीन, ताज़े,—झुके, नम्र हुए, दबे,—झुकने से, दबने से, नम्र होने से, शीलवान्, नम्र, मुलहज़ेदार।
२७०९—नक्र	नाक, एक प्रकार का जल जन्तु।
२७१०—नकुल	नेवला, नेउर,—राजा युधिष्ठिर के छोटे भाई का नाम।
२७११—नख	नह, नखर, नाखून,—पतंग उड़ाने का तंतु, बटा हुआ महीन रेशम।
२७१२—नखत	नक्षत्र, नछत्र, तारा, सितारे।
२७१३—नखसिख	नख से लेकर शिखा पर्यन्त, नह से चुटिया तक।
२७१४—नगन (नग्न)	नंगा, दिगम्बर, वस्त्रहीन, आवरण-रहित, खुला हुआ।
२७१५—नचत	नाचता है, नृत्य करता है, नाचते ही।
२७१६—नचहिं	नाचते हैं, नृत्य करते हैं।
२७१७—नचावत	नचाता है, नृत्य कराता है।
२७१८—नट	नृत्य करनेवाला, नाचनेवाला,—बाज़ीगर, कौतुकी, तमाशा करनेवाला।
२७१९—नटत	नाचता है, नृत्य करता है,—फिर जाता है, मुकर आता है, बहाना करता है, हटता है, नाचता है, भागता है, बदलता है।
२७२०—नटा	नाचा, नृत्य किया,—भागा, मुकर गया, फिर गया, हट गया।
२७२१—नतरु	नहीं तो, नहीं फिर।
२७२२—नति	नवन, प्रणाम, झुकन, नम्रता।
२७२३—नतु	नहीं तो।
२७२४—नत	झुका हुआ, नम्र, विनीत।
२७२५—नद	बड़ी नदी।
२७२६—नदिन	नदियों में, नदियों को।
२७२७—नदीस	समुद्र, नदियों का स्वामी, जलधि।
२७२८—ननिऔरे	ननिहाल में, नानके, नाना के घर, ननियाउर में।
२७२९—नभ	गगन, आकाश, आसमान।
२७३०—नभग	पक्षी, परिन्द, उड़ने वाले, आकाश में गमन करनेवाले, नभचर,--देवता।
२७३१—नभगेश	पक्षियों के स्वामी, गरुड़, वैनतेय, पक्षिराज।
२७३२—नभचर	आकाश में घूमनेवाले, आकाशचारी, खेचर,--देवता, विद्याधर, पक्षी, मेघ।
२७३३—नमत (नमति)	नमस्कार करता है, प्रणाम करता है, नवता है, झुकता है, नम्र होता है,—नम्रता, झुकन, नवन, प्रणाम।
३७३४—नम्र	नरम, कोमल, दीन, झुका हुआ, निमाना, सरल, साधु, शीलवान्, आजिज़।

नं० शब्द		अर्थ
२७३५—नमामहे	...	हम लोग प्रणाम करते हैं।
२७३६—नमामि नमामा	...	मैं प्रणाम करता हूँ।
२७३७—नमित	...	झुका हुआ, झुकाया हुआ, नम्र, दीन, नीचा किया हुआ, सुशील, विनीत।
२७३८—नय	...	नीति, धर्म, न्याय।
२७३९—नयन	...	नेत्र, चक्षु, चख, लोचन, आँख।
२७४०—नयनपट	...	पलक, आँख का परदा, आँख की ओट वा आड़।
२७४१—नयनवंत	...	आँखवाला, चक्षुधारी, सुझाका।
२७४२—नयनागर	...	नीति में चतुर, नीति-निपुण, नीतिज्ञ।
२७४३—न्याव	...	न्याय, निबेरा, इन्साफ़।
२७४४—नर	...	मनुष्य, पुरुष, मनुष्य जाति, मर्द,—नरावतार भगवान्, अर्जुन।
२७४५—नर्क (नरक)	...	यमलोक, पाप भोगने का स्थान, पापियों के रहने का स्थान, दंडालय।
२७४६—नरकेशरी	...	नृसिंह भगवान्, नरश्रेष्ठ, मनुष्यों में सिंहवत् प्रतापी।
२७४७—नर्त्तक	...	नाचनेवाला, नचनिया, कथक, नट।
२७४८—नरतकी (नर्तकी)		नाचनेवाली, नटिन, नटी, वेश्या, रंडी, अप्सरा।
२७४९—नरमद (नर्मद)	...	सुखद, सुखदायक, सुखदेनेवाला,—ठिठोल, दिल्लगीबाज़, विदूषक, मसख़रा।
२७५०—नरहरि	...	नृसिंह भगवान्,—बाबा नरहरिदास, तुलसीदासजी के गुरु।
२७५१—नरा	...	मनुष्य, आदम, नर, पुरुष।
२७५२—नल	...	एक बानर का नाम,—एक राजा का नाम,—नाल, चोंगा,—जल आदि बहने का मार्ग।
२७५३—नलकूवर	...	कुवेर के एक पुत्र का नाम।
२७५४—नलिन	...	कमल, अम्बुज।
२७५५—नलिनी	...	कोंई, कमलिनी, कुमुदिनी, कमोदिनी, नीलोफ़र।
२७५६—नव	...	नया, नवा, नवीन, नूतन, ताजा,—नौ, ९, अंक विशेष।
२७५७—नवजल	...	वर्षा का पानी, मेह, वृष्टि का जल, मेघों का जल, बरसाती पानी।
२७५८—नवधा	...	नौ प्रकार का, नौ प्रकार से।
२७५९—नवनीत	...	मक्खन, माखन।
२७६०—नवभक्ति	...	नौ प्रकार की भक्ति, नवधा भक्ति,—नवीन भक्ति, ताज़ी भक्ति, (९ भक्ति—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवा, अर्चन, बन्दन, दास्य, सख्य, आत्म-निवेदन)।
२७६१—नवमी	...	नौमी तिथि।
२७६२—नवरस	...	नव प्रकार के रस (शृंगार, वीर, करुणा, अद्भुत्, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र, शान्त),—किसी मत से वात्सल्य।
२७६३—नवल	...	जवान, नया, नवा, ताज़ा, नवीन, टटका।
२७६४—नवसत	...	नौ औ सात अर्थात् १६ शृंगार (अंगशुचि, मज्जन, वस्त्रधारण, जावक, केशसुधार, मांग में सेंदुर, भाल में खौर, ठोढ़ी में तिल बनाना, हाथ

नं० शब्द		अर्थ
		पाँव में मेंहदी, अंग में अरगजा, नग-जटित भूषण, फूल का गहना, पान, मिस्सी, होंठ रंगना, काजल)।
२७६५—नवहिं	...	नवते हैं, झुकते हैं, नम्र होते हैं, प्रणाम करते हैं, दबते हैं।
२७६६—नवीन	...	नवल, नवा, नया, टटका, ताज़ा।
२७६७—नवै	...	झुकै, नय जाय, नम्र होवे, दीन हो।
२७६८—नवं	...	नया, नवीन, नवा, टटका, ताज़ा।
२७६९—नस्वर (नश्वर)		विनाशी, नाश हो जानेवाला, नाशवन्त।
२७७०—नस	...	आँत, अँतड़ो, नाड़ी, रग।
२७७१—नस्तर	...	शस्त्र विशेष, फोड़ा चीरने वा फस्दर लेने का औज़ार, चुभाने की वस्तु।
२७७२—नसवनि	...	नाश, नाशवन्त, नाश करनेवाली।
२७७३—नसाय	...	बिगड़ जाय, नाश हो जाय,—बिगाड़ कर, नाश कर, नष्ट कर।
२७७४—नहरुआ	...	एक रोग का नाम (इसमें एक छिद्र हो कर सूत की नाईं कृमि निकलता
	...	है—यह रोग प्रायः पैर में होता है और दुःसाध्य है।
२७७५—नहाई	...	स्नान करके, नहा कर,—नहाय ली।
२७७६—नहुष	...	एक राजा का नाम।
२७७७—नाइ	...	नवा कर, झुका कर, डालकर, डार के, फेंक के।
२७७८—नाई	...	डाली, फेंकी, सदृश, समान, तरह, तौर,—नाऊ, नापित, हज्जाम,—
	...	झुकाकर, नवाकर, झुकाई, नवाई, डार दी, डाला, डार कर, फेंक कर।
२७७९—नाऊ	...	नाई, नापित, हज्जाम।
२७८०—नाऊँ	...	संज्ञा, नाम, झुकाता हूँ, नवाता हूँ।
२७८१—नाक	...	नासिका,—नक्र, एक प्रकार का जलजन्तु,—स्वर्ग।
२७८२—नाकनटी	...	स्वर्ग की नाचनेवाली, अप्सरा, अपछरा।
२७८३—नाकाधीश	...	स्वर्ग का स्वामी, स्वर्ग का राजा, इन्द्र।
२७८४—नाग	...	सर्प, फनवाले सर्प, साँप,—हाथी, हस्ती, कुंजर,—तांबूल, पान,।
२७८५—नागपाश	...	सर्पसंयुक्त एक फंदा जिससे युद्ध के समय शत्रु को बाँध लेते थे।
२७८६—नागपुर	...	नाग लोक,—हस्तिनापुर, दिल्ली,—दक्षिण में एक देश का नाम।
२७८७—नागर	...	चतुर, होशियार, चालाक,—नगरवासी,—नगर देश के वासी,—सोंठ।
२७८८—नागरिपु	...	हाथी का वैरी, सिंह, अथवा, सर्पों का वैरी गरुड़।
२७८९—नाचहि	...	नाचते हैं, नृत्य करते हैं।
२७९०—नाठी	...	नष्ट करी, नष्ट हुई,—भागी, टलगई, हटगई, पलटगई, मुकर गई,—गई
	...	गुज़री, जिस के कोई न हो, कुटुम्ब-रहित स्त्री।
२७९१—नात	...	नातेदार, संबन्धी, हितू, रिश्तेदार।
२७९२—नाती	...	दौहित्र, दोहतरा, कन्या का पुत्र।
२७९३—नाथ	...	स्वामी, प्रभु, मालिक,—साधु विशेष, एक प्रकार के योगी।
२७९४—नाद	...	शब्द, आवाज़, गुंजार,—गान, गीत।
२७९५—नाना	...	अनेक, भाँति भाँति, कई, बहुत,—मातामह, मा का बाप।
२७९६—नानाकार	...	अनेक आकार के, अनेक रूप के, बहुत चाल के।

नं० शब्द		अर्थ
२७९७—नाभि	...	धुन्नी, ढोंढ़ी, नाफ़,—एक राजा का नाम।
२७९८—नाम	...	संज्ञा, पदवी, यश, ख्याति, जस, कीर्त्ति।
२७९९—नामी	...	नामवाला, नामधारी, प्रसिद्ध, मशहूर, यशस्वी।
२८००—नामनि	...	नामों कर के, नामों से, नामों को।
२८०१—नायक	...	स्वामी, सरदार, अधिपति, अफ़सर,—माला का सुमेरु।
२८०२—नायास	...	झुकाता है,-झुकाइये, तू नवाइओ,—तैने डाला।
२८०३—नाये	...	झुकाये, नवाये, प्रणाम किया,—डालने से, फेंकने से।
२८०४—नाये।	...	झुकाया, नवाया, नाया,-डाला, फेंका, गिराया।
२८०५—नारकी	...	नरकवासी, पापी, नरकाधिकारी, नरक में जाने योग्य।
२८०६—नारद	...	प्रसिद्ध देवऋषि।
२८०७—नारा	...	रक्तसूत्र, कुसुंभ सूत्र, मौली,—चिक्कार, बड़े ज़ोर से रोने का शब्द,
	...	नाला,—वर्षा के जल बहने का मार्ग।
२८०८—नाराच	...	बाण, सर, सायक, तीर,—एक छन्द का नाम।
२८०९—नारायन(नारायण)		भगवान् विष्णु का एक नाम।
२८१०—नारि	...	स्त्री, लुगाई, अबला, तीमत, बनिता, औरत।
२८११—नारी	...	स्त्री, लुगाई, अबला,--नाड़ी, रग, नस।
२८१२—नारै	...	नाले, बरसाती जल के बहने के मार्ग।
२८१३—नाल	...	नलकी, पुपुली, डांडी, भोगली,--साथ, घोड़े के खुर वा जूते में लगाने का लोहा।
२८१४—नावत	....	डालता है, झुकाता है,-डालतेही, झुकातेही।
२८१५—नावो	...	नवाओ, झुकाओ,--नाव भी, नौका भी।
२८१६—नावरि	...	छोटी नौका,--नाव घुमाना।
२८१७—नास	...	नाश, बिगाड़, हानि, बरबादी, नुक़सान, मरण,--सुंघनी।
२८१८—नासा	...	नाक, नासिका,—नष्ट किया, नसाया, बिगाड़ा, बरबाद किया, नाशकिया, मारडाला।
२८१९—नासिका	...	नाक, घ्राणेन्द्रिय, नाशा, सूंघने की इन्द्रिय।
२८२०—नाह	...	नाथ, पति, मालिक, स्वामी।
२८२१—नाहर	...	शेर, बाघ, व्याघ्र, सिंह,--नार, मोटा रस्सा जिससे मोट खींचते हैं।
२८२२—नाहरू	...	शेर, बाघ, व्याघ्र, नाहर,--चाम का टुकड़ा,—एक रोग का नाम,—नार मोट खींचने का मोटा रस्सा।
२८२३—नाहीं	...	नहीं, मत, न।
२८२४—निकट	...	समीप, नगीच, धौरे, पास, नियरे।
२८२५—निकर	...	समूह, झुंड, राशि, ढेर।
२८२६—निकाई	...	भलाई, भलमनसी, सज्जनता, शोभा, सौंदर्य।
२८२७—निकाम	...	निकम्मा, बुरा, बेकाम, कामना-रहित, इच्छा-शून्य।
२८२८—निकाय	...	झुंड, समूह, निकर, ढेर, राशि।
२८२९—निकृष्ट	...	ख़राब, बुरा, गयागुज़रा, तुच्छ।

नं० शब्द		अर्थ
२८३०—निकेत	...	वासस्थान, गृह, मकान, धाम, घर ।
२८३१—निकेतन	...	घरों में, घरघर ।
२८३२—निकेवल	...	अकेला, एकही, सिर्फ़, द्वितीय-रहित, अद्वितीय, एक मात्र,--निष्केवल, शारांश, मात्र, एकाकी, बिना मेल का, ख़ालिस ।
२८३३—निकंद	...	नाश, बरबादी ।
२८३४—निकंदन	...	नाशक, नाश करनेवाला ।
२८३५—निगदित	...	कथित, कहा हुआ, वर्णित ।
२८३६—निगम	...	पवित्र लेख, वेद ।
१८३७—निग्रह	...	रोष, क्रोध, गुस्सा, दंड, सज़ा, त्याग ।
२८३८—निगूढ़	...	अति गुप्त, बहुत छिपाहुआ ।
२८३९—निघटत	...	घटता है, अति कम होता है, बहुत कम होता है ।
२८४०—निचाई	...	नीचता, क्षुद्रता, नीचपन, छोटाई, ओछापन, हलकापन ।
२८४१—निचोर	...	निचोड़, रस, सार, तत्त्व, निदान, अन्त्य, नतीजा ।
२८४२—निछावर	...	न्यौछावर, उतारा, वाराफेरा, सदक़ा ।
२८४३—नज	...	अपनी, अपना, आत्मीय, आपका,--निश्चित, ठीकठीक, ख़ास, अपना ।
२८४४—निजगति	...	अपनी गति, अपनी चाल, अपनी पहुँच, अपनी सामर्थ्य,–सारूप्य मोक्ष ।
२८४५—निजतंत्र	...	स्वतंत्र, स्वेच्छाचारी, स्वाधीन, आपइख़तियार, ख़ुदमुख़तार, मनमौजी, अपने मन का ।
२८४६—निज धर्म	...	स्वधर्म, अपना धर्म, इष्टधर्म, अपना कर्त्तव्य ।
२८४७—निजसुख	...	अपना सुख, आत्मानन्द, निजानन्द, स्वरूपानन्द, मुख्य सुख, सच्चा सुख ।
२८४८—निजसन्धि	...	अपना मेल, अपना जोड़, अपना छिद्र,--अवसर ।
२८४९—निजानन्द	...	स्वरूपानन्द, ब्रह्मानन्द, ज्ञानानन्द, मुख्यानन्द ।
२८५०—निठुर	...	कठोर, कड़ा, रूढ़ा, निष्ठुर, रूखा ।
२८५१—निठुराई	...	कड़ाई, कठोरता, निष्ठुरता, रुखाई ।
२८५२—नित(नित्य)	...	सदा, सर्वदा, हमेशा ।
२८५३—नित्या	...	जो सर्वदा स्थित रहे, अविनाशिनी, सदा की, निरन्तरा, हमेशावाली ।
१८५४—निति	...	नित्य, सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेशा ।
२८५५—नितंब	...	कटिपश्चात् भाग, चूतड़, चूतर ।
२८५६—निदर (निदरि)		निरादर करके, पीछे हटा कर, घुड़क के, मना करके, रोक कर, ज़बरदस्ती से, हठ से, बरज कर ।
२८५७—निदान	..	अन्त्य, अन्त्य कारण, आदिकारण, मूल कारण, निचोड़, आख़िर, नतीजा ।
२८५८—निधन	...	नाश, मौत, मरण, मृत्यु ।
२८५९—निधरक	...	बेधड़क, बेडर, बेख़ौफ़, निर्भय, निशंक ।
८६०—निधान	...	ख़ज़ाना, खान, वह स्थान जहाँ धन गड़ा हो, वह स्थान जहाँ कोई चीज़ बहुतायत से मिले ।
२८६१—निधि	...	बहुत धन, ख़ज़ाना, आधार, संख्या ९, नौ निधि (प्रसिद्ध) ।
२८६२—निपट	...	अति, बहुत, बिलकुल, बहुतायत से, पूरापूरा ।

नं० शब्द		अर्थ
२८६३—निपात	...	नाश, खसन, ढहन, गिरन, मरण ।
२८६४—निपाता	...	नाश, खसन, ढहन,--गिराया, गिरा दिया, नाश किया, मार डाला ।
२८६५—निपुन(निपुण)	...	चतुर, नागर, पूर्ण, ज्ञाता, कामिल ।
२८६६—निपुनाई	...	चतुरता, चतुराई, निपुणता, पूर्णता, कमाल ।
२८६७—निःपापा	...	निःपाप, पाप-रहित, बिना पाप का, पवित्र, शुद्ध ।
२८६८—निफल	...	विफल, निष्फल, परिणाम-शून्य, निष्प्रयोजन, व्यर्थ ।
२८६९—निबहे	...	साथ किये, संग दिये,--साथ देने से ।
८७०—निबाह (निर्वाह)		पूरा साथ, आदि से अन्त तक का साथ ।
२८७१—निबाही	...	पूरी की, न तोड़ी, अटूट की, निरन्तर की, पूरी तरह करता ही गया ।
२८७२—निबाहू	...	निबाह, पूरा साथ ।
२८७३—निबिड़	...	सघन, घना, घन, गझिन, अविरल ।
२८७४—निहुकि	...	झुक कर, निहुर कर, दबक कर, छोड़ कर ।
२८७५—निवृत्ति	...	संसार का त्याग, वैराग्य, त्याग ।
२८७६—निबेरी	...	चुकाई, निपटादी, पूरी करदी, तय की ।
२८७७—निबेही	...	निबाही, निबाह दी ।
२८७८—निव	...	नीव, नेव, नेह, जड़, मूल, आधार ।
२८७९—निबंध	...	संग्रह, प्रबन्ध,—एक प्रकार का रोग ।
२८८०—निभ	...	तुल्य, सदृश, ऐसा, समान, मुआफ़िक ।
२८८१—निमज्जित	...	नहाया हुआ, डूबा हुआ, निमग्न ।
२८८२—निमंजन	...	स्नान, नहान,डुबकी, चुभकी, ग़ोता ।
२८८३—निमि	...	एक राजा का नाम (जो आँख की पलक के गिरने, खोलने, और बन्द करने के अधिष्ठाता हैं) ।
२८८४—निमित्त	...	हेतु, कारण, सबब, व्याज, बहाना ।
२८८५—निमिष निमेष	...	काल विशेष, पलक के गिरने भर का समय, जितनी देर में एक बार पलक गिरे ।
२८८६—नियम	...	नेम, प्रतिबन्ध, अटकाव, योग का एक अंग ।
२८८७—नियराई	...	समीप आन पहुँची, निकट आकर ।
२८८८—नियोग नियोगा	...	आज्ञा, हुक्म ।
२८८९—निरखत	...	देखतेही, देखता है, देखकर, देखते देखते, सामने, समक्ष ।
२८९०—निरखि	...	देखकर, अवलोकन करके, निरीक्षण कर, देखि ।
५८९१—निर्गुन (निर्गुण)		गुणहीन, मूर्ख,—तीनों गुणों से परे, ब्रह्म ।
२८९२—निर्जोश(निर्जोष)		निश्चय ।
२८९३—निर्झर	...	झरना, स्रोत, सोता, चश्मा ।
२८९४—निरत	...	लगा हुआ, नियुक्त, आसक्त, तत्पर, लीन, अति प्रीतियुक्त, अनुरक्त लिप्त, मशगूल ।
२८९५—निर्दय	...	दया-रहित, निर्दई, क्रूर ।
२८९६—निर्दंभ	...	अहंकार-रहित, पाषंडरहित ।

नं० शब्द		अर्थ
२८९७—निर्द्वंद	...	द्वंद्व-रहित, अकेला, बेखटके ।
२८९८—निर्नय (निर्णय)		निश्चय, सफ़ाई, फरियाव, स्वच्छता ।
२८९९—निर्बहि	...	निबाह कर, साथ दे, साथ दे कर ।
२९००—निर्बहई	...	निबाहे, निबाह करे, साथ देवे ।
२९०१—निर्बहा	...	निवहा, निभा, निभ गया, पूरा उतर गया ।
२९०२—निर्बाह	...	निवाह, समाई, गुज़रान, गुज़र ।
२९०३—निर्भर	...	पूर्ण, पूरा, अतिशय, आश्रय पर समाप्त, दारमदार ।
२९०४—निर्मम	...	ममता-रहित, अहंकार-रहित ।
२९०५—निर्मयउ	...	बनाया, निर्माण किया, रचा ।
२९०६—निर्मल	...	स्वच्छ, मल-रहित, शुद्ध, साफ़ ।
२९०७—निर्मित	...	निर्माण किया हुआ, बनाया हुआ, रचा हुआ ।
२९०८—निर्मूल	...	मूल-रहित, नष्ट, बेजड़, बे बुनियाद ।
२९०९—निर्लेप	...	बे लगाव, बे लाग, सबसे अलग ।
२९१०—निरवधि	...	अवधि-रहित, बेहद, निःसीम, बेमर्याद ।
२९११—निर्बान(निर्वाण)		मुक्ति, मोक्ष, परम पद ।
२९१२—निर्विकल्प	...	कल्पना-रहित ।
२९१३—निर्विकार	...	विकार-रहित, निर्दोष ।
२९१४—निरस	...	फीका, स्वाद-रहित, रस-रहित, शुष्क, बेलज़्ज़त ।
२९१५—निराकार	...	आकार-रहित, शून्य, सुना, ब्रह्म, आकाश ।
२९१६—निराचार	...	आचार-रहित, कर्तव्याकर्तव्य के विचार बिना ।
२९१७—निरादर	...	अनादर, असत्कार, बे इज़्ज़ती ।
२९१८—निरामय	...	रोग-रहित, नीरोग, आरोग्य, अच्छा भला, चंगा भला ।
२९१९—निरामिष	...	बिना मांस, बिन मांस का भोजन, मांस न खानेवाला ।
२९२०—निरीश	...	स्वामि-रहित, बिना मालिक का ।
२९२१—निरुपधि(निरुपाधि)		उपाधि-रहित, बेगिलगिस, बे ऐब, दोष-रहित ।
२९२२—निरूपन (निरूपण)		वर्णन, विस्तारपूर्वक वर्णन ।
२९२३—निरूपहिं	...	वर्णन करते हैं ।
२९२४—निरुआरई	...	खोलता है, छुड़ाता है, सुलझाता है, सुरझाता है, अलग अलग करता है, निबेरा करता है, मना करता है, बरजता है ।
२९२५—निरुवारे	...	छुड़ाये, अलग किये, बरजे, मना किये, खोले, सुलझाये,—सुलझाने से, छुड़ाने से, रोकने से, बरजने से ।
२९२६—निरंकुश	...	स्वतंत्र, निर्भय, निडर, निःशंक, बिना दबाव का ।
२९२७—निरंजन	...	अविद्यारहित, मायाशून्य, रागरहित ।
२९२८—निरंतर	...	सर्वदा, लगातार, बराबर, हमेशा, बे नागे ।
२९२९—निरंबु	...	जल-रहित, शुष्क, सूखा, बिन पानी का ।
२९३०—निलज	...	निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया ।

नं० शब्द		अर्थ
२९३१—निवारक	...	दूर करनेवाला, रोकनेवाला, मना करनेवाला, हटानेवाला, बरजनेवाला ।
२९३२—निवारण	...	मनाही, हटक रोक ।
२९३३—निवारि	...	रोककर, बरजकर, मनेकर, हटककर ।
२९३४—निवास	...	रहने का स्थान, वास-स्थान, घर ।
२९३५—निवेदित	...	अर्पित, नैवेद्य किया हुआ, निवेदन किया हुआ, अर्पण किया हुआ, दिया-हुआ, दान किया हुआ ।
२९३६—निशागत	...	रात में आया हुआ ।
२९३७—निशाचर	...	राक्षस, दैत्य, रात्रि में व्यवहार करनेवाले ।
२९३८—निशि	...	रात, रात्रि, रजनी, निशि, निशा, यामिनी ।
२९३९—निशित	...	तीखा, चोखा, तीक्ष्ण, तेज़ ।
२९४०—निशेध (निषेध)		नहीं, निराकरण, नकार ।
२९४१—निशंकू	...	निःशंक, निर्भय, निडर, बे हिचक ।
२९४२—निषेध	...	रोक, रुकाव, मनाही, बाधा ।
२९४३—निषंग	...	तरकस, तूण, तूनीर, भाथा ।
२९४४—निस्तार	...	छुट्टी, फ़रागत ।
२९४५—निसरत	...	निकलता है, निकलते हुए, निकलते ही ।
२९४६—निसाना	...	ध्वजा, झंडा, निशान,—नगाड़ा, दुंदुभी, डंका ।
२९४७—निसेनी	...	सीढ़ी, निःश्रेणी, खिड़की, ज़ीना ।
२९४८—निसेस(निःशेष)		शेष-रहित, पूरेपूरे, पूर्ण, बिना बाक़ी ।
२९४९—निसोत	...	निराला, केवल, अकेला, सबसे अलग, छटाहुआ, सिर्फ़, निरा, बेमेल, ख़ालिस, शुद्ध,—बिना सोते का,—एक ओषधि का नाम,—जिसे तुर्बुद भी कहते हैं ।
२९५०—निहार	...	देखकर, देख,—कुहिरा, हिम, पाला ।
२९५१—निहारा	...	देखा, अवलोकन किया,—ओस, पाला, कुहिरा ।
२९५२—निहोर	...	विनती करके, उपकार करके, प्रार्थना करके, निहोरा करके, उलहना दे कर ।
२९५३—निहोरा	...	विनती, उपकार, प्रार्थना, एहसान, उलाहना, उरहना ।
२९५४—निःपाप		पापरहित, निष्पाप, निर्दोष, निरपराध ।
२९५५—नीक / नीका	...	अच्छा, भला, सुंदर, ख़ूबसूरत ।
२९५६—नीकी	...	अच्छी, भली, सुंदर सी, सुघर ।
२९५७—नीके	...	भलीभाँति, अच्छी तरह से ।
२९५८—नीच	...	अधम, छोटा, निकम्मा, निकृष्ट, कमीना, नीचा ।
२९५९—नीड़	...	घोंसला, खोंता, पक्षियों का घर ।
२९६०—नीत / नीति	...	नय, न्याय, इन्साफ़ ।

नं० शब्द		अर्थ
२९६१—नीरज	...	कँवल, कमल, जल से उत्पन्न,—रजोगुण-रहित।
२९६२—नीरद	...	जलद, जल का देनेवाला, मेघ, बादल।
२९६३—नीरधर	...	जल को धारण करनेवाला, मेघ, बादल।
२९६४—नीरनिधि	...	जल का खज़ाना, जलराशि, समुद्र।
२९६५—नील	...	नीला, श्याम रंग, आकाश के रंगवाला, नीलम मणि के रंग का,—एक बानर का नाम।
२९६६—नीलकंठ	...	महादेवजी, नीले कंठवाला, मोर, मयूर,—एक पक्षी का नाम।
२९६७—नीलोत्पल	...	नील कमल, नीले पत्तों का कमल।
२९६८—नूतन	...	नया, नवीन, नवल, ताज़ा।
२९६९—नीलोपल	...	नीला पत्थर, नील मणि, नीलम।
२९७०—नूपुर	...	घुंघरू, पैजनी, पाज़ेब।
२९७१—नृत्य	...	नाच।
२९७२—नृप	...	नरपति, नृपति, राजा।
२९७३—नृपाल	...	मनुष्यों का रक्षक, नृपति, नृप, नरपाल, राजा।
२९७४—नेई	...	नेव, जड़, निउ।
२९७५—नेऊ	...	थोड़ासा, ज़रासा, कुछ, किंचित्,—नेव, जड़।
२९७६—नेग	...	बन्धान, दस्तूर, विवाहादि उत्सव में नाऊ-भाट-पुरोहितादि के देनेका बन्धान।
२९७७—नेगी	...	नेग लेनेवाले (नाऊ-भाट,-ढाढी, पुरोहित आदि)।
२९७८—नेति	...	न इति, अन्तर्हित, अनन्त, नहीं इतना, अन्त्य-रहित, सीमारहित, बेहद्द।
२९७९—नेपथ्य	...	नाटक का सजाघर, ज़नानख़ाना, शृंगारघर।
२९८०—नेम	...	शौच-संतोषादि नियम, प्रतिज्ञा, योग का एक अंग।
२९८१—नेरे	...	नगीच, समीप, नज़दीक, नियरे, पास।
२९८२—नेव	...	निउ, जड़, मूल, बुनियाद।
२९८३—नेवत	...	निमंत्रण देकर, नेवता देकर, बोलौवा देकर।
२९८४—नेवता	...	निमंत्रण, बोलौवा, सद्दा, बुलावा।
२९८५—नेवाजी	...	शरण में ली, कृपा की, मेहरबानी की,—कृपा करनेवाला, दयालु, कृपा, दया।
२९८६—नेवाज़ू	...	नवाज़, दयावान, कृपालु, मेहरबान।
२९८७—नेह, नेहा, नेहु	...	प्यार, प्रीति, मोह, मुहब्बत, स्नेह।
२९८८—नेहरुआ	...	नहरुआ रोग।
२९८९—नैनी	...	नेत्रवाली, आँखवाला,—एक बस्ती का नाम।
२९९०—नैवेद्य	...	निवेदन करने की वस्तु, देवता के भोजनार्थ अर्पण करने की वस्तु, भोग लगाने की वस्तु।
२९९१—नोइ	...	दुहते समय गौ के पिछले पैर बाँधकर।

नं० शब्द		अर्थ
२९९२—नोई	...	दुहते समय गाय के पैर बाँधने की रस्सी।
२९९३—नौमि	...	मैं स्तुति करता हूँ, मैं प्रणाम करता हूँ, मैं नवता हूँ, मैं झुकता हूँ, मैं नम्र होता हूँ।
२९९४—नौमी	...	नवम तिथि, ९।
२९९५—नंदन	...	आनन्ददायक, आनन्द देनेवाला,—लड़का, पुत्र, सन्तान।
२९९६—नंदिग्राम	...	अयोध्यापुरी में एक ग्राम का नाम।
२९९७—नंदिनी	...	आनंद देनेवाली, लड़की, कन्यापुत्री,—श्रीगंगा जी का एक नाम।
२९९८—नंदीमुख(नांदीमुख)		आभ्युदयिक श्राद्ध, एक प्रकार का श्राद्ध जो प्रत्येक उत्सव के आदि में में किया जाता है।
२९९९—नाँघउ	...	लाँघो, नाँघ जाओ, डाँक जाओ, उल्लंघन करो, फाँद जाओ।
३०००—नाँघत	...	लाँघता है, डाँघता है,—उल्लंघन करते ही, फाँदतेही।
३००१—निंदक	...	निन्दा करनेवाला, बुराई करनेवाला, अपवाद करनेवाला।
३००२—निंदा	...	बुराई, अपवाद, गाली।
३००३—नींद	...	निद्रा।
प		
३००४—पकवान	...	पक्वान्न, पका हुआ अन्न, पकाया हुआ अन्न, घृतपक्व मिठाई, नमकीन आदि।
३००५—पक्षी	...	पक्षधारी, परवाले जीव, पंछी, परिन्द।
३००६—पखाउज	...	एक प्रकार का बाजा, मृदंग, पखावज।
३००७—पखान	..	पाषाण, उपल, पत्थर।
३००८—पखारि	...	प्रक्षालन कर, धोकर, साफ़ करके, शुद्ध करके।
३००९—पग / पगु	...	पद, चरण, पाँव, पैर।
३०१०—पगे	...	लपेटे, मग्न, लिपटे हुए, डूबे हुए।
३०११—पचवै	...	पचावै, पचा डालै, हज़म करै, सुखाय दे, समाय दे, जज़्ब करे।
३०१२—पचारि (प्रचारि)		ललकार कर।
३०१३—पचासक	...	पचास एक, अनुमान पचास के, पचास के लगभग।
३०१४—पचि	...	पच कर, हज़म होके, जज़्ब होकर, शुष्क होकर, समाय कर, घुस कर, लवलीन होकर, भलीभाँति लगकर।
३०१५—पचीसा	...	पचीस संख्या, २५।
३०१६—पछ (पक्ष)	...	पाख, पच्छ, पखवारा, दो सप्ताह, पंद्रह दिन,—दल, तरफ़, ओर, सिफ़ारिश, संग, साथ, पक्षपात।
३०१७—पछताना	...	पश्चात्ताप करना, पछतावा करना, पीछे से किसी बात पर दुःख करना।
३०१८—पछपात	...	पक्षपात, सिफ़ारिश, किसी तरफ़ पर ज़ोर, किसी ओर का साथ।
३०१९—पछारहु	...	पछाड़ो, पटको, गिराओ, पतन करो।
३०२०—पछारे	...	पछाड़े, पटके, गिराये, पतन किये।

नं० शब्द		अर्थ
३०२१—पछिताई	...	पछतावा करके, पश्चात्ताप करके, पीछे दुखी होके,—पछताई, पीछे दुखी हुई, पश्चात्ताप करती भई।
३०२२—पछितात	...	पछताता है, पश्चात्ताप करता है, पछतावा करता है, पछतावा करतेही।
३०२३—पछिताना	...	पश्चात्ताप करना, पछतावा करना, पीछे से दुखी होना,—पछताया, दुःखित हुआ।
३०२४—पछिताव	...	पछतावा, पश्चात्ताप, दुःख,—पछताना, पश्चात्ताप करना।
३०२५—पछिले	...	पिछले, पहले के, पूर्व के, भूतकाल के, गुज़रे हुए।
३०२६—पट	...	वस्त्र, कपड़ा, रेशमी कपड़ा, काषाय,—किवाड़, पल्ला,—ओट, आड़।
३०२७—पटकि	...	पछाड़ कर, पछारके, पात करके, गिराकर।
३०२८—पटकेउ	...	पटक दिया, पछाड़ दिया, गिरादिया, पात किया।
३०२९—पटतर	...	उपमा, बरोबरी, समता, उदाहरण, मिसाल।
३०३०—पटल	...	परदा, ढपना, ढकना, सरपोश, किवाड़, द्वार।
३०३१—पटली	...	पटड़ी, पटरी,—रेशम की डोर,—पंक्ति, श्रेणी।
३०३२—पटु	...	चतुर, होशियार, चालाक,—सुंदर।
३०३३—पटोर	...	रेशमी कपड़े,—रेशमी डोरा,—पटुवा, रेशम में गहना गूंथनेवाला।
३०३४—पठइन्हि	...	भेजा, पठाया, पठवा, पहुँचाया।
३०३५—पठए	...	भेजे, पठाये, पहुँचाये,—भेजे हुए, पठाये हुए।
३०३६—पठवा	...	भेजा, पठाया,—भेजा हुआ, पठाया हुआ।
३०३७—पठाई	...	भेजदी, पठायदी, पठैदी।
३०३८—पठावा	...	भेजदिया, भेजा, पठाया, पठवा,—भेजा हुआ।
३०३९—पढ़हिं	...	पढ़ते हैं, पाठ करते हैं, बाँचते हैं, घोकते हैं, उधरनी करते हैं।
३०४०—पढ़ै	...	पाठकरे, बाँचै, घोकै, उधरनी करै।
३०४१—पतति	...	गिरता है, खसकता है, सरकता है, खसता है।
३०४२—पतन्ति	...	गिरते हैं, खसते हैं, सरकते हैं, खसकते हैं।
३०४३—पत्र	...	चिट्ठी,—पत्ता, पर्ण, पत्तर, पत्रा, पन्ना, वरक़।
३०४४—पत्रिका	...	चिट्ठी, चीठी, पत्री, पाँती।
३०४५—पताका	...	ध्वजा, छोटी झंडी।
३०४६—पताल	...	पाताल, अधोलोक, सप्त पाताल (तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल)
३०४७—पतिआन	...	पतियाया, माना, मानगया, विश्वास किया, यक़ीन किया।
३०४८—पति	...	राजा, स्वामी, भर्त्ता, ख़सम,—प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, लज्जा, लाज।
३०४९—पतित	...	पापी, दोषी, खोटा,—गिराहुआ।
३०५०—पति देवता	...	पतिरूपी देवता, भर्त्ताही देवता, पति में ही सब देवताओं का भाव मानना।
३०५१—पतिनिहि	...	पत्नी को, स्त्री को, भार्या को।
३०५२—पतिलोक	...	पति का निवासस्थान, हिमाचल, भर्त्ता का लोक, गौतम मुनि का आश्रम।

नं० शब्द		अर्थ
३०५३—पतिव्रता	...	पति का व्रत करनेवाली, पतिही में सर्वस्व माननेवाली, पति के सिवा अन्य पर दृष्टि न करनेवाली, पति के सिवा संसार में किसी को पुरुष-भाव से न देखनेवाली।
३०५४—पतोह	...	पुत्रवधू, तुह, स्नुषा, बेटे की पत्नी, लड़के की भार्या।
३०५५—पतंग	...	सूर्य,—क्षुद्रजन्तु, पतिंगे,—गुड्डी, कनकौवा, चंग, गेंद,—लाल रंग।
३०५६—पथ	...	मार्ग, पंथ, सड़क, राह, रास्ता।
३०५७—पथ्य	...	रोगियों के अनुकूल भक्ष्य पदार्थ, रोगियों के खाने योग्य वस्तु, उपयुक्त वस्तु, गुणकारी भोजन।
३०५८—पथिक	...	बटोही, यात्री, राहगीर, राही, मुसाफ़िर।
३०५९—पद	...	चरण, पैर, पाँव—श्लोकार्द्ध,—अधिकार,—भजन, गीत, कविता का भाग।
३०६०—पदचर	...	पैदल, प्यादे, पैरों से चलनेवाले, पैदल चलनेवाला।
३०६१—पदचारी	...	पैरों से चलनेवाले, पैदल चलने वाले, प्यादे, पैदल।
३०६२—पदज	...	पैर से उत्पन्न, पादंगुली, पैरों की अंगुली।
३०६३—पदत्राण	...	पैर का रक्षक, पैर को बचानेवाला, जोड़ा, जूता, पनहीं, पगरखूं।
३०६४—पदपीढ़ा	...	कठनहर, पादुका, खड़ाऊँ।
३०६५—पद्म	...	कँवल, कमल, राजीव, जलज, संख्या विशेष,–१००००००००००००००।
३०६६—पदवी	...	उपाधि, अलकाब, दरजा, प्रतिष्ठा।
३०६७—पदाति	...	पैदल, प्यादे, पदचर, पैदल चलनेवाली सेना।
३०६८—पदादपि	...	पाँव से भी, पैरों से भी, चरण से भी।
३०६९—पदारथ	...	पदार्थ, वस्तु, चीज़,–किसी शब्द वा कविता के अर्थ,–भोजन की वस्तु।
३०७०—पदिक	...	जड़ाऊ चौकी, उर्वसी, जुगनी, जुगनूं, चरन, हृदय पर लटका कर पहनने का एक भूषण।
३०७१—पदुम (पद्म)	...	कमल, कँवल, पंकज,—संख्या विशेष, १००००००००००००००।
३०७२—पदुमराग (पद्मराग)		पद्मराग मणि, लाल रंग का मणि, लाल माणिक्य, मानिक।
३०७३—पन (प्रण)	...	प्रतिज्ञा,—अवस्था।
३०७४—पनच	...	प्रत्यंचा, कमान का चिल्ला।
३०७५—पन्नग	...	सर्प, साँप, कीरा, नाग।
३०७६—पन्नगारि	...	सर्प का शत्रु, गरुड़, मोर, गिद्ध, नेवला।
३०७७—पनव (पणव)	...	ढोल, दुंदुभी, नगारा, डंका।
३०७८—पनस	...	कटहर, कठल।
३०७९—पनही	...	उपानह, पादत्राण, जोड़ा, जूता, पापोश।
३०८०—पनारे	...	नाले, नल,—मोरी,—धारा, प्रवाह।
३०८१—पनिघट	...	पानी भरने का घाट वा स्थान, जलाशय जहाँ सभी पानी भरने जाया करें।
३०८२—पानि(पाणि)	...	हस्त, हाथ, कर, दस्त।
३०८३—पनी(प्रणी)	...	प्रण करनेवाला, प्रतिज्ञा करनेवाला,—दृढ़-प्रतिज्ञ।

नं० शब्द		अर्थ
३०८४—पय	...	जल, पानी, नीर,—दूध, दुग्ध, छीर, क्षीर।
३०८५—पयद	...	जल वा दूध का देनेवाला,—बादल,—थन, स्तन।
३०८६—पयनिधि	...	क्षीर सागर, समुद्र, छीर सागर, दूध का समुद्र।
३०८७—पयादहि	...	पैदलही, पैरों से चल कर ही।
३०८८—पयोधि	...	समुद्र, सागर।
३०८९—पयोनिधि	...	क्षीर सागर, दूध का समुद्र।
३०९०—पर	...	और, परे, उपरान्त, शत्रु, पराया, तत्पर, शिरोमणि, दूसरा।
३०९१—प्रकार	...	तरह, रीति, भाँति, क्रम, युक्ति।
३०९२—प्रकाश	...	उंजेला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, दीप्ति, फैलाव, प्रसिद्धि।
३०९३—प्रकाशक	...	प्रकाश करनेवाला, फैलानेवाला, प्रसिद्ध करनेवाला, उंजेला करनेवाला।
३०९४—प्रकाश्य	...	उँजेले योग्य, प्रकाश के योग्य, प्रकट करने योग्य।
३०९५—प्रकृति	...	स्वभाव, गुण, माया, ईश्वर की शक्ति।
३०९६—प्रकृष्ट	...	भला, श्रेष्ठ, उत्तम।
३०९७—प्रगट	...	प्रत्यक्ष, स्पष्ट, प्रसिद्ध, खुला हुआ, ज़ाहिर।
३०९८—प्रगटत	...	खुलता है, स्पष्ट होता है, प्रसिद्ध होता है, ज़ाहिर होता है।
३०९९—प्रगल्भ	...	अहंकारी, दम्भयुक्त, उपस्थित बुद्धि वाला, शास्त्र-विजयी।
३१००—प्रघोर	...	अत्यन्त, अत्यधिक, बहुत ज़्यादा।
३१०१—प्रचार	...	चलन, व्यवहार, रीति,—विस्तार, फैलाव।
३१०२—प्रचारा	...	फैलाया, प्रचार किया, चलाया, ललकारा,—चलन।
३१०३—प्रचारी	...	चलाई, फैलाई,—ललकार कर।
३१०४—प्रचंड	...	उद्दंड, उत्कृष्ट, बहुत बढ़कर, बड़ा तेज़।
३१०५—परछिद्र	...	पराया छेद, दूसरों का दोष, औरों का ऐब।
३१०६—प्रजा	...	सन्तान, औलाद, रैयत, नगरवासी।
३१०७—प्रजारना	...	जलाना, भस्म करना, फूँक देना, दाह करना।
३१०८—प्रजारी	...	जला कर, फूँक कर, भस्म करके, दग्ध करके।
३१०९—प्रजासन (प्रजाशन)		प्रजा का भोजन, साधारण आहार।
३११०—प्रजेस(प्रजेश)	...	प्रजापति, प्रजाओं का स्वामी, दक्ष प्रजापति।
३१११—प्रण	...	पन, प्रतिज्ञा, कौल, प्रमाणित वाणी।
३११२—प्रणत	...	दीन, नम्र, झुका हुआ, आजिज़।
३११३—प्रणय	...	प्रेम, नति, झुकन।
३११४—प्रणवौं	...	प्रणाम करता हूँ, झुकता हूँ, नम्र होता हूँ, नमस्कार करता हूँ।
३११५—प्रणाम	...	नमस्कार, दंडवत्, सिर झुकाना, नम्र होना।
३११६—परत	...	पड़ते, गिरते, गिरते ही, गिरता है।
३११७—परत्र	...	परलोक।
३११८—प्रताप	...	तेज, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, इक़बाल।
३११९—प्रति	...	पास, सामने, विरुद्ध, वैसाही, ज्यों का त्यों, सदृश, को।

नं० शब्द		अर्थ
३१२०—प्रतिउपकार	...	प्रत्युपकार, उपकार का बदला, नेकी का बदला, एहसान का बदला ।
३१२१—प्रतिकूला	...	विमुख, बहिर्मुख, विरुद्ध, मुक़ाबिल, दूसरा किनारा, प्रत्येक किनारा, उस पार,—विमुख हुआ ।
३१२२—प्रतिछाँहीं	...	प्रतिछाया, परछाहीं, प्रतिबिम्ब, छाया, अक्स ।
३१२३—प्रत्यूह	...	विघ्न ।
३१२४—प्रतिपच्छी	...	प्रतिपक्षी, दूसरी तरफ़ का, विपक्षी, शत्रु, वैरी के पक्ष का, शत्रु का साथी ।
३१२५—प्रतिपाद्य	...	वर्णन के योग्य, बयान के लायक़ ।
३१२६—प्रतिभट	...	प्रत्येक वीर,—समान वीर, बराबर का योद्धा, मुक़ाबिले का लड़नेवाला ।
३१२७—प्रतिमा	...	मूर्त्ति, पुतली, तसवीर, ज्यों की त्यों मूर्ति ।
३१२८—प्रतिमूरति (प्रतिमूर्त्ति)		जैसी की तैसी मूर्त्ति, दूसरी मूर्ति, परछाहीं, तसवीर, अनुहार, मूर्त्ति की नक़ल, शबीह ।
३१२९—परतिहुं	...	पड़ते भी, गिरते हुए भी, गिरते गिरते भी, मरते हुए भी ।
३१३०—परतीत (प्रतीति)		विश्वास, निश्चय, यक़ीन, एतबार ।
३१३१—प्रथम	...	पहला, पहले, पेश्तर, मुख्य, आगे, आदि में, शुरू में ।
३१३२—प्रथम गति	...	पहली गति, उत्तम गति, दान ।
३१३३—प्रद	...	दायक, दाता, दानी, देनेवाला ।
३१३४—परदक्षिणा	...	प्रदक्षिणा, फेरी, भाँवरी ।
३१३५—प्रदेश	...	भूमि का एक बड़ा खंड, परदेश, विदेश, पराया देश, अन्य देश ।
३१३६—प्रदोष	...	निशामुख, सायंकाल, गोधूलि समय, संध्या, दिन की समाप्ति, रात्रि का आरम्भ, दिन और रात के बीच की संधि ।
३१३७—परधान (प्रधान)		मंत्री,—मुख्य, श्रेष्ठ ।
३१३८—परधाम	...	साकेतपुर, गोलोक, वैकुण्ठ इत्यादि ।
३१३९—प्रनवउँ	...	प्रणाम करता हूँ ।
३१४०—परन / परना } (पर्ण)	...	पत्ता, पत्र, दल ।
३१४१—प्रपंच	...	खेल, धोखा, संसार, बखेड़ा, विस्तार, झूठ, छल, कपट, विवाद ।
३१४२—प्रबल	...	बलवान्, सहज़ोर, बलिष्ठ, मज़बूत ।
३१४३—परब (पर्व)	...	गाँठ, सन्धि, जोड़, (अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, चतुर्दशी, संक्रान्ति, ये ५ पर्व), सूक्ष्म कारण, क्षण, उत्सव, प्रस्ताव, अध्याय, परिच्छेद,—सुयोग ।
३१४४—प्रबर	...	अतिश्रेष्ठ,—गोत्र-विषयक ५ तथा ३ प्रवर ।
३१४५—प्रबाल	...	मूंगा, विद्रुम ।
३१४६—प्रबोध	...	ज्ञान, उपदेश, पूर्ण बोध, पूर्ण ज्ञान, भली भाँति की जानकारी ।
३१४७—प्रबोधक	...	ज्ञानदाता, उपदेशक, गुरु, जनावनेवाला ।
३१४८—प्रबंध	...	काव्यरचना,—उपाय,—इन्तिज़ाम, बन्दोबस्त ।
३१४९—प्रभा	...	प्रकाश, उंजेला, चमक ।
३१५०—प्रभाऊ (प्रभाव)		प्रभाव, तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।

नं० शब्द		अर्थ
३१५१—प्रभात	...	प्रातःकाल, सबेरा, भिनसार, तड़का ।
३१५२—प्रभु	...	स्वामी, मालिक, धनी, नाथ, पति, पालक, ईश्वर, विष्णु ।
३१५३—प्रभुत्व	...	स्वामित्व,—धन, सम्पत्ति ।
३१५४—प्रभुता	...	बड़प्पन, ईश्वरता, महिमा, बड़ाई,—धन, सम्पत्ति ।
३१५५—प्रभंजन	...	पवन, वायु, अनिल, हवा ।
३१५६—परम	...	प्रधान, मुख्य, भला, सबसे बढ़कर ।
३१५७—प्रमदा	...	स्त्री, युवती, लुगाई, मेहरारू, औरत ।
३१५८—परमा	...	शोभा, अति शोभा, बहुत शोभा ।
३१५९—परमारथ (परमार्थ)	...	तत्त्व वस्तु, यथार्थ विषय, सार वस्तु, धर्म ।
३१६०—प्रमाद प्रमादू	...	असावधानता, उन्मत्त दशा, उन्माद, अहंकार ।
३१६१—प्रमादि	...	असावधान हो के वा करके, उन्मत्त हो वा करके, अहंकारयुक्त हो वा करके ।
३१६२—प्रमाण परमान	...	यथार्थ,—उदाहरण, नियम, निश्चय का हेतु, नित्य, मर्यादा, साक्षी, लेख्य, शास्त्र ।
३१६३—प्रमुदित	...	प्रसन्न, आनन्दित, ख़ुश ।
३१६४—प्रमोद	...	प्रसन्नता, आनन्द, ख़ुशी ।
३१६५—परलोक	...	ऊर्द्ध्व लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठादि ।
३१६६—परस	...	छूकर, स्पर्श करके,—परोसकर ।
३१६७—परसन	...	प्रसन्न,—प्रश्न,—स्पर्श,—मत छू ।
३१६८—परसपर परस्पर	...	आपस में, एक दूसरे के साथ, बाहम ।
३१६९—परसा	...	छुआ, स्पर्श किया,—फरसा, कुठार,—परोस दिया ।
३१७०—परसि	...	छू कर, स्पर्श करके ।
३१७१—परसु (परशु)	...	फरसा, कुठार, गड़ाँसा, एक शस्त्र का नाम ।
३१७२—परसुधर	...	परशुराम, फरसे को धारण करनेवाला ।
३१७३—परसेउ	...	छुआ, स्पर्श किया, परसा ।
३१७४—प्रसंग	...	साथ, से, संग से, चर्चा, ज़िक्र, प्रस्ताव, मेल, बात, कथा, संबन्ध, संसर्ग ।
३१७५—परहिं	...	पड़ते हैं, गिरते हैं ।
३१७६—प्रयाग	...	एक नगर का नाम, तीर्थराज, प्रयागराज ।
३१७७—प्रयान्ति	...	प्राप्त होते हैं, निश्चय करके जाते हैं ।
३१७८—प्रयास	...	परिश्रम, मेहनत, थकावट ।
३१७९—प्रलय	...	सृष्टिका नाश, नाश, मृत्यु ।
३१८०—प्रलाप	...	बकवाद, व्यर्थवचन, अर्थरहित बातचीत ।

नं० शब्द		अर्थ
३१८१—प्रलंब		विशाल, बड़ा, अति लम्बा ।
३१८२—प्रवर्षण	...	एक पर्वत का नाम,—अत्यन्त वर्षा ।
३१८३—प्रवाना	...	प्रमाण ।
३१८४—प्रवाह	...	बहाव, धारा, तरखा, तोड़ ।
३१८५—प्रविश	...	पैठार करके, पैठ के, घुस के, पहुँच कर, रसाई करके ।
३१८६—प्रवीण	...	चतुर, चालाक, निपुण, उस्ताद, बुद्धिमान्, सयाना, होशियार ।
३१८७—प्रवेश	...	पैठ, बैठार, पैठाव, रसाई, पहुँच ।
३१८८—प्रश्न	...	पूछना, सवाल ।
३१८९—प्रशंसक	...	प्रशंसा करनेवाला, रास गानेवाला, बड़ाई करनेवाला, गुणगायक, तारीफ़ करनेवाला, भाट, बंदीजन ।
३१९०—प्रशंसा	...	यश, कीर्ति, गुणानुवाद, बड़ाई, तारीफ़ ।
३१९१—प्रस्थिति	...	कीर्त्ति, यश, नामवरी, मरण के पीछे स्थित रहनेवाली वस्तु ।
३१९२—प्रसन्न	...	हर्षित, हर्षयुक्त, सुखी, आनंदित, ख़ुश,—स्वच्छ, निर्मल ।
३१९३—प्रसव	...	उत्पत्ति, जन्म ।
३१९४—प्रसाद	...	दया, कृपा, प्रसन्नतापूर्वक दी हुई वस्तु,—उच्छिष्ट, जूठन, उतारन ।
३१९५—परसि	...	छू कर, स्पर्श करके, लगके ।
३१९६—प्रसिद्ध	...	प्रख्यात, उजागर, मशहूर, ख्यात, विख्यात ।
३१९७—प्रसीद	...	प्रसन्न हो, कृपा करो, प्रसाद दीजिए ।
३१९८—प्रसूती	...	जननी, माता, उत्पन्न करनेवाली ।
३१९९—प्रसून	...	फूल, पुष्प, गुल ।
३२००—प्रह्लाद	...	प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु का पुत्र, नृसिंह भगवान् का परम भक्त, नृसिंहावतार का हेतु ।
३२०१—प्रहर्ष	...	अत्यन्त हर्ष, विशेषानन्द ।
३२०२—प्रहार	...	मार, मारना, मार कर ।
३२०३—परहीं	...	पड़ते हैं, पड़जाते हैं ।
३२०४—परहेले	...	त्यागे ।
३२०५—प्राकृत	...	नीच, अधम, नीचा, क्षुद्र, सामान्य, साधारण, भाषा, विशेष, प्रकृतिजन्य, स्वभाव से उत्पन्न ।
३२०६—प्राची	...	पूर्व दिशा, पूरब दिसा ।
३२०७—प्राण	...	श्वास, वायु, जीव, जीवन ।
३२०८—प्राणी	...	प्राणधारी, जानदार, जानवर, प्राण को धारण करनेवाला ।
३२०९—परखेसि	...	आसरा देखियो, अगोरियो, राह देखते रहना, मार्ग जोहियो ।
३२१०—पर्णशाला	...	पत्तों का बनाया हुआ घर, पर्णकुटी ।
३२११—पर्वत	...	पहाड़, गिरि, भूधर, गिरि, अद्रि, अचल ।
३२१२—प्रात	...	सबेरा, तड़का, भोर, विनही, भिनसार ।
३२१३—प्रातकृत्य	...	सन्ध्या वन्दनादि, प्रातःकाल के कर्तव्य कर्म,—सबेरे करने के काम ।
३२१४—प्रावृट प्राविट }	...	वर्षा ऋतु, पावस, बरसात ।

नं० शब्द		अर्थ
३२१५—परा	...	अत्युत्कृष्ट, सबसे परे, सबसे बड़ा, सर्वोपरि, सबके ऊपर ।
३२१६—पराई	...	अन्य की, दूसरे की, गैर की,—भागी, दौड़ गई, चली गई,—भाग कर, दौड़ कर ।
३२१७—पराक्रम	...	पुरुषार्थ, उद्यम, बल, ताक़त ।
३२१८—परागा पराग	...	पुष्परज, फूलों की रज, फूलों की धूल, फूलों की गर्द ।
३२१९—पराने	...	भागे, दौड़े, चलदिये,—भागने से, चले जाने से, दौड़ जाने से ।
३२२०—पराभौ (पराभव)		निरादर, प्रलय, नाश ।
३२२१—परायन (परायण)		तत्पर, लगा हुआ, दत्तचित्त,—दूसरों से, दूसरों ने, अन्य लोगों करके ।
३२२२—पराव	...	पड़ाव, ठहरने का स्थान, मुसाफ़िरों के टिकने की जगह, सेना के ठहरने की जगह ।
३२२३—परावन	...	भाग, भागड़, भगौवल, दौड़ ।
३२२४—परावर	...	ब्रह्मादि पूर्वज, मनु इत्यादि ।
३२२५—परास	...	पलास, ढाक, टेसु, किंशुक ।
३२२६—पराहिं	...	भागते हैं, भाग जाते हैं, चले जाते हैं, दौड़ जाते हैं ।
३२२७—परावहिं	...	भागते हैं, चले जा रहे हैं, दौड़े जाते हैं ।
३२२८—परि	...	पड़कर, गिरकर,—अति,—चारों ओर,—सम्पूर्ण रूप से ।
३२२९—परिकर	...	कटि, कमर, नौकरचाकर, अमात्य, मंत्री इत्यादि ।
३२३०—परिखा	...	खाई, क़िले के चारों ओर की नहर ।
३२३१—परिखेहु	...	अगोरना, आसरा देखना, राह ताकते रहना, मग जोहते रहना, ठहरे रहना ।
३२३२—परिघ	...	बेंवड़ा,—मूसलाकार शस्त्र विशेष ।
३२३३—परिचरजा परिचर्या		सेवा, उपासना, शुश्रूषा ।
३२३४—परिचारक	...	सेवक, दास, सेवा करनेवाला, किंकर, गुलाम ।
३२३५—परिचारिका	...	दासी, सेवकिन, किंकरी, लौंडी ।
३२३६—परिचारे	...	प्रचारे, ललकारे, बुलाये ।
३२३७—परिच्छिन्न	...	अव्यापक, घेरा हुआ, कटा हुआ, अलग अलग विभक्त, हिस्सों में बँटा हुआ ।
३२३८—परिछन	...	एक पुर्वियों में विवाह की रीति जो बरात द्वार पर लगने के समय स्त्रियाँ मूसल और लोढ़ा इत्यादि लेकर वर के ऊपर घुमाती हैं ।
३२३९—परिछाहीं	...	परछाहीं, प्रतिबिम्ब, छाया, परछावाँ ।
३२४०—परिजन	...	सम्बन्धी, नातेदार, कुटुम्ब के लोग, रिश्तेदार ।
३२४१—परित्याग	...	भलीभाँति त्याग, किसी वस्तु या मनुष्य को भलीभाँति छोड़देना ।
३२४२—परित्राता	...	रक्षक, सब तरह से बचानेवाला, अच्छी तरह रक्षा करनेवाला ।
३२४३—परिताप	...	संताप, दुःख, क्लेश, आँच, जलन, कुढ़न ।
३२४४—परितापी	...	दुःखद, दुखदायी, दुख देनेवाला, कुढ़ानेवाला ।
३२४५—परितोष	...	संतोष, दिलभरी, ख़ातिरजमा, प्रसन्नता ।
३२४६—परिधान	...	पहिराव, पहरावा, पोशाक, पहिरने के वस्त्र, ओढ़ने के वस्त्र ।

नं०	शब्द		अर्थ
३२४७	परिनाम(परिणाम)		अवस्था, अन्त्य, नतीजा, फल ।
३२४८	परिपाका	...	भलीभाँति पका हुआ, अन्त्य का फल, परिणाम ।
३२४९	परिपाटी	...	परम्परा की रीति, क्रम, अभ्यास ।
३२५०	परिपूरन	...	संपूर्ण, पूरापूरा, भरपूर, भराहुआ, लबालब ।
३२५१	परिपूरित	...	भरा हुआ, भरापूरा, लबालब ।
३२५२	परिमित	...	प्रमाणित, नपा तुला, अन्दाज़ किया हुआ, यथेष्ट ।
३२५३	प्रिय	...	प्यारा, स्नेही, अज़ीज़ ।
३२५४	प्रियतम	...	अत्यन्त प्यारा, सबसे अधिक प्रिय,—पति, प्रीतम, भर्त्ता ।
३२५५	प्रियबादिनि	...	मीठा बोलनेवाली, प्यारी प्यारी बात कहनेवाली ।
३२५६	परिवारू	...	परिवार, कुटुम्ब, कुनबा, भाईबन्द ।
३२५७	परिहरु	...	छोड़कर, त्यागकर ।
३२५८	परिहरहीं	...	छोड़ देते हैं, त्याग देते हैं ।
३२५९	परिहरि	...	छोड़कर, त्यागकर ।
३२६०	परिहास	...	हँसी, ठट्ठा, खेल, कौतुक, मसख़री,—लोकापवाद, निन्दा ।
३२६१	परी	...	पड़ी, गिरि, गिरपड़ी ।
३२६२	परीछा	...	परीक्षा, परिख, पहिचान, अजमाइश, इमतिहान ।
३२६३	प्रीता, प्रीती, प्रीति	...	प्यार, प्रेम, स्नेह, मुहब्बत ।
३२६४	परुष	...	कठोर, कड़ा, टेढ़ा, व्यंग, ताना, मेहना ।
३२६५	परूषाक्षर	...	टेढ़े अक्षर, कठोर शब्द, व्यंग वचन, मेहने ताने की बातचीत ।
३२६६	परे	...	परलोक में, पीछे, आगे, दूर, अलग,—पड़े, गिरे, गिर पड़े ।
३२६७	परेउ	...	पड़ा, गिरा, गिरपड़ा, गिरगया ।
३२६८	परेखेउ	...	राह देखते रहना, मग जोहते रहियो, मार्ग प्रतीक्षा करते रहना ।
३२६९	प्रेत	...	भूत, पिचाश, मुरदा, मृतक, दश गात्रादि सपिंडन श्राद्ध के पूर्व का शरीर ।
३२७०	प्रेतनिवास	...	प्रेतों के रहने का स्थान, श्मशान, क़बरिस्तान ।
३२७१	प्रेम	...	प्यार, प्रीति, स्नेह, लाड़, दुलार ।
३२७२	प्रेरक	...	आज्ञा करनेवाला, प्रेरणा करनेवाला, हुक्म देनेवाला ।
३२७३	प्रेरित	...	आज्ञा किया हुआ, प्रेरणा किया हुआ, भेजा हुआ ।
३२७४	प्रेरे	...	पठाये, पठये, प्रेरणा किये, रवाना किये, भेजे ।
३२७५	परै	...	पड़े, गिरे,—दूसरे को, अन्य को, उस तरफ़ को, दूर, परे ।
३२७६	प्रोक्त	...	कहा हुआ, भलीभाँति वर्णित ।
३२७७	प्रौढ़	...	बड़ा, मोटा, प्रवीण, निपुण, युवा, यौवन और वृद्धावस्था के मध्य की अवस्था ।
३२७८	प्रौढ़ि	...	अभिमान की बोलचाल, प्रगल्भता, सामर्थ्य, उत्साह ।
३२७९	परंतु	...	उपरान्त, लेकिन, मगर ।
३२८०	पल	...	काल विशेष, एक घड़ी का साठवाँ अंश, जितना देर में आँख की पलक

नं० शब्द		अर्थ
	...	गिरती है, २४ सेकेंड।
३२८१—पलक	...	नेत्र-पट, आँख का ढकना,—एक पल, पलक मारते भर।
३२८२—पलटि	...	फिर कर, लौट कर, उलट कर, पीछे फिर के।
३२८३—प्लव	...	नौका, तरणी, पोत।
३२८४—पल्लव	...	पत्ता, पत्र, नया पत्ता, वृक्ष के नवीन दल, ताज़े पत्ते।
३२८५—पल्लवित	...	रोमांचित,—ताज़े पत्तों से भरा, अंकुरित, पत्तों से लदा, हरा भरा।
३२८६—पलिहहिँ	...	पालेंगे, पोषेंगे।
३२८७—पलुहे	...	पाले हुए, पोषे हुए, परचे हुए।
३२८८—पलोटत	...	चरण-सेवा करता है, दबाता है।
३२८९—पवन	...	वायु, बयार, हवा, बतास।
३२९०—पवनसुत	...	हनुमान्, महावीर, केशरी-किशोर,—भीमसेन,—वायु के पुत्र।
३२९१—पवारि	...	डार कर, फेंक कर, उछाल कर, चलाय कर।
३२९२—पवारे	...	डारे, फेंके, चलाये, उछाले, फेंक दिये।
३२९३—पवि	...	वज्र।
३२९४—पवित्र	...	शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल, पाक, साफ़।
३२९५—पश्यामि	...	मैं देखता हूँ।
३२९६—पश्यंति	...	देखते हैं, जानते हैं।
३२९७—पखवारा	...	एक पक्ष, पाख भर, पंद्रह दिन, पच्छ।
३२९८—पषानी	...	पाषाण, पत्थर, उपल, पाथर।
३२९९—पषारे	...	प्रक्षालन किये, धोये।
३३००—पसाउ / पसाऊ	...	प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा, दया, पसेव।
३३०१—पसेव	...	पसीजन, पसीना, स्वेद, प्रस्वेद।
३३०२—पहर	...	काल विशेष, प्रहर, ३ घंटे, ७॥ घड़ी।
३३०३—पहार	...	अचल, पहाड़, पर्वत, गिरि, भूधर।
३३०४—पहिचान	...	जान पहिचान, अनुज्ञान, बूझ, चिन्हार, चिन्हानी, चिह्न।
३३०५—पहिचाने	...	जाने हुए, जाने, चीन्हे, परीक्षा किये।
३३०६—पहिर	...	पहिन कर, धारण करके।
३३०७—पहिरावने	...	पहिराव, पोशाक, कपड़े, पहिनने के वस्त्र।
३३०८—पहिरहिँ	...	पहिनते हैं, धारण करते हैं।
३३०९—पहुनई	...	आतिथ्य, मेहमानी, मिजमानी, मेहमानदारी, अतिथिसत्कार, दावत।
३३१०—पहँ	...	पास, नगीच, समीप, नियरे, नज़दीक।
३३११—पाइ	...	पायकर, प्राप्त कर, लाय करके, लेकर।
३३१२—पाई	...	प्राप्त की, मिली, प्राप्त हुई,—पा करके, प्राप्त करके।
३३१३—पाइक	...	प्यादा, दूत, पैदल, पदचर,—मल्ल, पहलवान।
३३१४—पाक	...	रसोई, पक्व, पका हुआ,—एक असुर का नाम,—साफ़, पवित्र।

नं० शब्द		अर्थ
३३१५—पाकत	...	पकते हुए, पकते ही, पकावते ही ।
३३१६—पाकरि	...	पाकर, एक वृक्ष का नाम,—पायकर, प्राप्त करके ।
३३१७—पाकरिपु	...	इन्द्र, पाक नामक राक्षस का शत्रु ।
३३१८—पाकरी	...	पकड़ी, पकड़ाई ।
३३१९—पाकी	...	पक गई, परिपक्व हो गई, पक्की, मज़बूत, पकीहुई, तयार ।
३३२०—पाख	...	पक्ष, पच्छ, अर्द्ध मास, दो सप्ताह, १५ दिन,—पंख, पर, डैना,—सहाय, बल, तरफ़, ओर, अंग, पार्श्व, पाँजर, दल, टोली, तड़, शरीरार्द्ध ।
३३२१—पाखरी	...	पत्ती, छोटे छोटे दल, पंखड़ी, पंखुरी,—जड़ी-बूटी, पौधा, रूखड़ी ।
३३२२—पागी	...	लपेटी हुई, सनीहुई, पगीहुई, लिप्त ।
३३२३—पागे	...	सने, लपेटे, साने हुए, पगे हुए, मग्न, डूबे हुए, डबोये, लपेटे हुए, लिप्त ।
३३२४—पाट	...	रेशम, पटुआ,—नदी वा समुद्र के वार पार का विस्तार ।
३३२५—पाटमहिषी	...	पटरानी, विवाहिता स्त्री, पाणिगृहीता पत्नी ।
३३२६—पाटल	...	वृक्ष विशेष,—गुलाबी रंग, सफ़ेद और लाल मिला हुआ रंग,—गुलाब ।
३३२७—पाटे	...	भर दिये, पाट दिये, समथल किये, लाद दिये, बिछा दिये ।
३३२८—पाटंबर	...	रेशमी कपड़े, पट्टवस्त्र, काषाय वस्त्र ।
३३२९—पाठ	...	संथा, सबक़, पढ़न, पढ़न्त, पढ़ाई ।
३३३०—पाठक	...	पढ़नेवाला, विद्यागुरु, अध्यापक ।
३३३१—पाठीन	...	बढ़िया मछली, मत्स्य विशेष, पहिना मछल, बड़ी मछली, मोटी मछली ।
३३३२—पात	...	पत्ता, पत्र, पर्ण ।
३३३३—पातक	...	पाप, अघ, दुष्कर्म, अज़ाब, अपराध,—गिरानेवाला ।
३३३४—पात्र	...	बरतन, बासन,—योग्य, उपयुक्त, लायक़ ।
३३३५—पाती	...	चिट्ठी, पत्री, पांती, पंक्ति, श्रेणी ।
३३३६—पाथ	...	जल, नीर, वारि, पय, पानी ।
३३३७—पाथोज	...	कमल, जलज, जल से उत्पन्न ।
३३३८—पाथोद	...	मेघ, बादर, बादल, जल को देनेवाला ।
३३३९—पाथोधि	...	जलराशि, समुद्र ।
३३४०—पाद	...	चरण, पैर, पाँव,—श्लोक का चतुर्थांश, चौथाई ।
३३४१—पादप	...	वृक्ष, तरु, पेड़ ।
३३४२—पान	...	पाणि, हस्त, हाथ, कर,—नागवेल, तांबूल, पीना, पीने योग्य वस्तु, पत्ता ।
३३४३—पानि (पाणि)	...	कर, हाथ, हस्त, दस्त ।
३३४४—पाप	...	अधर्म, पातक, अघ, किल्विष ।
३३४५—पापवंत	...	पापी, अघी, पापवाला, दुष्कर्मी, पातकी ।
३३४६—पापिउ	...	पापी भी, पातकी भी, अघी भी, दुष्कर्मी भी ।
३३४७—पापिन	...	पापिनी, पाप करनेवाली, अपराधिनी,—पापियों ने,—अनेक पापी ।
३३४८—पापिष्ठ	...	महा पापी, जिसे पापही इष्ट हो, पापरूप, पातक-मूर्ति ।
३३४९—पामर	...	नीच, दुराचारी, दुष्ट ।
३३५०—पायक	...	दूत, चर, पदचर, पैदल, मल्ल, पहलवान ।

नं० शब्द		अर्थ
३३५१—पायस	...	तस्मै, खीर, दूध और चावल का पाक ।
३३५२—पायहु	...	पाया, प्राप्त किया, पाये भी, प्राप्त किये भी, पाने पर भी ।
३३५३—पाया	...	पावा, प्राप्तकिया, लिया, लाभ किया ।
३३५४—पार	...	दूसरी ओर, नदी आदि का दूसरा तट, अलग, परे ।
३३५५—पारथिव (पार्थिव)		मिट्टी का बना, मृत्तिकारचित ।
३३५६—पारमन	...	मन से दूर, मन के पार, मन से अलग, मन से परे, मन से बाहर ।
३३५७—पारवती (पार्वती)		पर्वत की कन्या, उमा, भवानी, महादेवजी की भार्या ।
३३५८—पारस	...	एक पत्थर का नाम जिसके स्पर्शसे लोहा भी सोना हो जाता है,—पारस देश, ईरान ।
३३५९—पारहि	...	पार करते हैं, पूरा करते हैं, बनाते हैं,—पार को, दूसरी ओर को ।
३३६०—पारा	...	पार किया, पूरा किया, बनाया,—पार,—गिरा दिया,—पारद, शिव-वीर्य, पारा ।
३३६१—पारावत	...	कपोत, कबूतर ।
३३६२—पारिख	...	परख, पहिचान, परीक्षा, शिनाख़्त ।
३३६३—पारी	...	डारी, फेंकी, गिराई, बनाई, पार की, पूरी की ।
३३६४—पारे	...	फेंके, फेंकदिये, गिराये, बनाये, पार किये, पूरे किये ।
३३६५—पालक	...	पालनेवाला, पालन करनेवाला, पोषक, पोषनेवाला ।
३३६६—पालकी	...	डोली, चौपाला, एक सवारी, नरयान ।
३३६७—पालत	...	पालता है, पालन करता है, पोसता है, जिलाता है ।
३३६८—पालन	...	भरण-पोषण ।
३३६९—पालने	...	पोसने, जिलाने,—हिंडोले में, झूले में, झूलने में ।
३३७०—पालब	...	पालना, पोसना, जिलाना ।
३३७१—पालबी	...	पालना, पालिएगा, पालन करिएगा ।
३३७२—पाला	...	पोसा, पालन किया, जिलाया ।
३३७३—पालि	...	पालकर, पोसकर, जिलाकर ।
३३७४—पालियहि	...	पालते हैं, पोसते हैं, जिलाते हैं,—पालना चाहिए, पोसना चाहिए ।
३३७५—पाली	...	पालन की, निबाही, पूरी की ।
३३७६—पाले	...	पालन करे, पोसै, निबाहै, पूरा करे,—पाले में, हद में, कब्ज़े में, वश में ।
३३७७—पालै	...	पालन करे, पोसे, निबाहे, पूरा करे ।
३३७८—पाव	...	पावे, प्राप्त करे ।
३३७९—पावक	...	अग्नि, आगि, आग, आँच, अगिन ।
३३८०—पावन	...	पवित्र, शुचि, शुद्ध, साफ़, स्वच्छ,—पवित्र करनेवाला ।
३३८१—पावनी	...	पवित्र करनेवाली, शुद्ध करनेवाली ।
३३८२—पावस	...	वर्षा ऋतु, प्रावृट्, बरसात ।
३३८३—पावहि	...	पावे, प्राप्त करे, लाभ करे, पाता है, प्राप्त करता है ।
३३८४—पावा	...	पाया, प्राप्त किया, लाभ उठाया,—खट्वाङ्ग, खटिया का पाया ।
३३८५—पाश	...	फन्दा, फाँस, फाँसी, फंसरी ।

नं० शब्द		अर्थ
३३८६—पाषाण	...	पत्थर, पाहन, उपल, पाथर ।
३३८७—पाषंड	...	छल, कपट, पखंड, विडंबना
३३८८—पास	...	समीप, नगीच, नियरे,—फाँस, फाँसा, फंदा ।
३३८९—पासा	...	करवट, तरफ़, बाज़ू, ओर, समीप, नगीच, नियरे, चौपड़ खेलने का पासा,—फंदा, फाँसी, पाश,—चांदी की कामी वा गुल्ली ।
३३९०—पासी	...	एक नीच जाति, सुअर चराने वाली जाति,—फाँसी,—पासही, समीपही ।
३३९१—पाहन	...	पाषाण, उपल, पत्थर, पाथर ।
३३९२—पाहरू	...	पहरुआ, पहरेदार, चौकीदार, पहरा देनेवाला, रक्षक ।
३३९३—पाहि	...	रक्षाकरो, बचाओ, शरण दो, पनाह दो ।
३३९४—पाहीं	...	पास, नगीच, समीप, नियरे, निकट से, पास से ।
३३९५—पाहुन	...	अतिथि, मेहमान ।
३३९६—पांति	...	पंक्ति, पाँती, श्रेणी, पङ्क्त ।
३३९७—पांवड़े	...	पाँव के तले का बिछावन ।
३३९८—पांवर	...	पामर, नीच, मूढ़, पापी, गँवार, उजड्ड ।
३३९९—पांवरी	...	पादुका, कठनहर, खड़ाऊँ ।
३४००—पिआरा	...	प्रिय, प्यारा, स्नेही ।
३४०१—पिआवा	...	पिलाया, पान कराया, पिला दिया ।
३४०२—पिक	...	कोइल, कोकिल, कलकंठ ।
३४०३—पिटारी	...	पिटरिया, पच्छी, तृण-निर्मित डिब्बा ।
३४०४—पित्ता	...	पित्ता,—सफ़रा ।
३४०५—पितर	...	पितृ, पुरुषा, पूर्वपुरुष, पूर्वज ।
३४०६—पिता पितु	...	बाप, जनक, जन्मदाता ।
३४०७—पिनाक	...	शिवजी का धनुष, वह धनुष जो श्रीरामचन्द्र ने स्वयंवर में तोड़ा ।
३४०८—पिपीलिका	...	चिउंटी, चेंटी, चींटी ।
३४०९ पियर	...	पीत, पीला, हल्दी का रंग ।
३४१०—पियहि	...	पति को, प्रिय को, प्यारे को ।
३४११—पियारा	....	प्रिय, प्यारा, स्नेही ।
३४१२—पियासे	...	प्यासे, तृषित, पिपासित ।
३४१३—पिराने	...	थके, दुखाने, दर्द करते, थक गये ।
३४१४—पिरीते	...	प्रीतम, प्रियतम, प्रीतियुक्त, प्यारे, प्रिय, स्नेही, अनुरागी, अनुरक्त ।
३४१५—पिरोजा	...	जंगाली रंग का एक सामान्य मणि ।
३४१६—पिशाच	...	प्रेत, भूत, पिचास, देव, जिन ।
३४१७—पिशुन	...	पिसुन, चुगलखोर, चुगली करनेवाला,—पिस्सू का बहुवचन, अनेक पिस्सू (यह एक परदार घुन का सा कीट है जो मच्छर की नाईं काटता है)।
३४१८—पिंजर	...	पीठ की हड्डी, मांस-रहित शरीर के हाड़,—पिंजरा ।
३४१९—पी	...	पान करके,—पिओ, पान करो,—पिय, पति ।
३४२०—पीछे	...	पश्चात्, पाछे, पृष्ठ-भाग में, अनन्तर, बाद, फिर, उपरान्त ।

नं०	शब्द		अर्थ
३४२१	पीटहि	...	मारते हैं, ठठाते हैं, धुनते हैं ।
३४२२	पीठ	...	पृष्ठ, आसन, पीढ़ा ।
३४२३	पीड़ित	...	दुःखित, दुःखी, पीड़ायुक्त ।
३४२४	पीढ़न	...	पीढ़ें पर, पीढ़ें को, पीढ़े, पटरे, पटड़ों को, पटरों पर ।
३४२५	पीत	...	पीला, हल्दी का सा रंग ।
३४२६	पीन	...	पुष्ट, मोटा, गुदगर, भरा हुआ ।
३४२७	पीपर	...	एक वृक्ष, अश्वत्थ, पीपल,—पराया पति ।
३४२८	पीयूष	...	अमृत, सुधा ।
३४२९	पीर	...	पीड़ा, दर्द, दुःख,--बुड्ढा, बूढ़ा ।
३४३०	पीवर	...	पुष्ट, मोटा, चरबीवाला, चरबी से भरा, बलिष्ठ, ताक़तवर ।
३४३१	पींजरा	...	पिंजरा, पिंजड़ा, पशु-पक्षियों के रखने का जँगलेदार बना हुआ घर ।
३४३२	पुकार	...	गुहार ।
३४३३	पुकारा	...	बुलाया, गुहराया,—गुहार ।
३४३४	पुच्छ	...	लांगूल, पूंछ, दुम ।
३४३५	पुट	...	दोना, डिब्बा, अंगुली, किसी ओषधि में कोई जल वा रस डालके घोट कर सुखाना ।
३४३६	पुटि (पुटी)	...	कौपीन, आच्छादन, दोनिया, डिबिया ।
३४३७	पुन्य (पुण्य)	...	पवित्र, शुचि, शुद्ध, पाक, उज्ज्वल,—पवित्र कर्म, सुकृत, धर्म,--पावन ।
३४३८	पुनि	...	फिर, पुनः, बहुरि ।
३४३९	पुनीत	...	पवित्र, शुद्ध, शुचि, पावन, पाक ।
३४४०	पुर	...	नगर, पुरा, ग्राम, गाँव,—एक दैत्य का नाम ।
३४४१	पुरइनि	...	कोहे, नलिनि, कमोदनि, नीलोफर ।
३४४२	पुरउब	...	पूरा करना, पुरावना, पूर्ण करदेना,—पूरा करूँगा, पुराऊँगा ।
३४४३	पुरट	...	सोना, सुवर्ण, हाटक, कंचन ।
३४४४	पुरवहु	...	पूरा करो, पुराय दो, पुजा दो ।
३४४५	पुरंदर	...	सहस्राक्ष, सुरेश, मघवा, इन्द्र ।
३४४६	पुराई	...	पूरी हुई, पूरी की,—पूर्ण करके ।
३४४७	पुराकृत	...	पूर्वकृत, पहले का किया हुआ ।
३४४८	पुरातन	...	कालीन, बहुत काल का प्राचीन, पुराना ।
३४४९	पुरान (पुराण)	...	ऐतिहासिक पुस्तक,—पुराना, प्राचीन ।
३४५०	पुराना	...	प्राचीन, कालीन,—पुराण, प्राचीन कथाओं का पुस्तक ।
३४५१	पुरारी	...	शिव, शंकर, पुर के शत्रु, त्रिपुरासुर के शत्रु, महादेवजी ।
३४५२	पुरुष	...	मनुष्य, मर्द, आदमी, नर,—परमेश्वर,—पुरुषा ।
३४५३	पुरुषारथ	...	पराक्रम, हिम्मत, साहस ।
३४५४	पुरोडास	...	यज्ञभाग, यज्ञ का हवि ।
३४५५	पुरोधा	...	पुरोहित ।
३४५६	पुलक, पुलकावली	...	रोमांच, रोओं का खड़ा हो जाना ।

नं० शब्द		अर्थ
३४५७—पुलकित	...	रोमांचित, गद्गद् ।
३४५८—पुलस्ति	....	एक ऋषि, पुलस्त्य मुनि ।
३४५९—पुष्ट	...	तैयार, मोटा, भराहुआ, बलवान्, बलिष्ठ, मज़बूत ।
३४६०—पुष्प	...	फूल, प्रसून, गुल ।
३४६१—पुष्पक	...	एक विमान का नाम, जिसपर परिकर सहित श्रीरामचन्द्र सवार हो लंका से अयोध्या पधारे ।
३४६२—पुस्तक	...	पोथी, किताब ।
३४६३—पुहुप	...	पुष्प, फूल, प्रसून कुसुम, गुल ।
३४६४—पुहुमि	...	पृथ्वी, भूमि, धरनी, ज़मीन ।
३४६५—पुंगफल	...	सुपारी, कसैली ।
३४६६—पुंगव	...	प्रधान, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध, बड़ा ।
३४६७—पुंज	...	ढेर, समूह, राशि ।
३४६८—पूग	...	सुपारी,—पूरा हुआ,—समूह, ढेर ।
३४६९—पूछ	...	चाह, दरकार,—प्रश्न,—प्रश्न करके, पूछ कर ।
३४७०—पूछत	...	पूछता है, प्रश्न करता है,—पूछते ही ।
३४७१—पूज	...	पूजा करके, सत्कार करके,—पूज्य, पूजन के योग्य,—पूराहुआ ।
३४७२—पूजक	...	पूजा करनेवाला, सत्कार करनेवाला, पूजनेवाला, आदर करनेवाला ।
३४७३—पूजत	...	पूजन करता है, पूजन करते ही,—पूरा होता है, पूरा होते ही ।
३४७४—पूजन	...	पूजा, अर्चा, आदर, सत्कार, प्रतिष्ठा, अर्चन, सेवा ।
३४७५—पूजनीय / पूज्य	...	पूजा के योग्य, सेवा-योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा, आदर के लायक़, प्रतिष्ठा-योग्य ।
३४७६—पूजिअहि	...	पूजते हैं, पूजे जाते हैं, पूजित होते हैं, पूजन किये जाते हैं, पूजना चाहिए, पूरी हो जायगी ।
३४७७—पूजिहि	...	पूरी होगी, पूर्ण होगी, या होगा, सिद्ध होगा, मिलेगा वा मिलेगी ।
३४७८—पूजी	...	पूरी हुई, भरपूर हुई, प्राप्त हुई, मिली, पाई गई,—संगृहीत धन, जमा, संचित धन,—घोड़े के मुख पर पहिराने का आभूषण ।
३४७९—पूत	...	बेटा, लड़का, पुत्र, संतान,—पवित्र, शुद्ध, साफ़, सुथरा, साफ़ किया हुआ, पवित्र किया हुआ ।
३४८०—पूतरी	...	पुतली, मूर्ति, काष्ठ वा किसी अन्य वस्तु से निर्मित प्रतिमा,—आँख की पुतली, आँख की तरई ।
३४८१—पूप	....	मालपूआ, पूआ, पूड़ा, मीठा चिलड़ा ।
३४८२—पूय	...	पीप, मवाद ।
३४८३—पूर	...	पूरा, पूर्ण, अखंडित, समूचा, सम्पूर्ण ।
३४८४—पूरण (पूर्ण)	...	पूरा, समूचा,—भराहुआ, लबालब ।
३४८५—पूरब (पूर्व)	...	प्राची दिशा, सूर्य के उदय होनेवाली दिशा,—पहला, पहले, पहले का ।
३४८६—पूरि	...	भरकर, पूरा करके, पूर्ण करके ।

नं० शब्द		अर्थ
३४८७—पूरी	...	समूची, साबूत, सबकी सब, संपूर्ण,—भर दी, पूर्ण कर दी,—एक खाने की वस्तु, सुहारी, लुचुई।
३४८८—पूरूष	...	पुरुष, पुरुषा, बड़े लोग, जेठे लोग।
३४८९—पूषन	...	सूर्य,—पोषण करनेवाला।
३४९०—पृथक्	...	अलग, भिन्न, जुदा, अलहदा।
३४९१—पृथुराज	...	सूर्यवंश का पाँचवाँ राजा, बड़ा राजा, मोटा राजा, अति पराक्रमी राजा, वेनु का पुत्र।
३४९२—पृथ्वी	...	भूमि, धरा, धरनी, धरती, ज़मीन।
३४९३—पृष्ठ	...	पीठ,—पुस्तक के पत्र का एक ओर, सफ़हा।
३४९४—पेखे	...	देखे, अवलोकन किये।
३४९५—पेखिय	...	देखिए, अवलोकन कीजिए,—देखना चाहिए,—दिखाई देता है, देख पड़ता है।
३४९६—पेड़	...	पादप, वृक्ष, तरु, रूख।
३४९७—पिन्हाई	...	पहिनाई, पहिराई।
३४९८—पेलहि	...	त्याग करते हैं, टालते हैं, छोड़ते हैं, हटाते हैं, मिटाते हैं, नहीं मानते, तिरस्कार करते हैं।
३४९९—पेलिहहिं	...	त्याग करेंगे, टाल देंगे, छोड़ देंगे, हटा देंगे, मिटा देंगे, न मानेंगे, तिरस्कार करेंगे।
३५००—पेली	...	त्यागी, त्याग दी, छोड़ दी, हटा दी, न मानी, तिरस्कार की,—त्याग कर, मिटा कर।
३५०१—पेषन	...	प्रेक्षण, निरीक्षण, देखना,—तमाशा।
३५०२—पेषिय	...	देखें, देखो, देखिए, देखना चाहिए।
३५०३—पै	...	पर, ऊपर,—दोष, ऐब,—दूध,—पानी,—निश्चय, अवश्य।
३५०४—पैठे	...	धसे, घुसे, प्रवेश किया, समाये,—धसने से, घुसने से, समाने से, प्रवेश करने से।
३५०५—पैठत	...	प्रवेश करते ही,—धसते धसते,—घुसता है।
३५०६—पैड़ी	...	पगडंडी, चलने का छोटा मार्ग,—सीढ़ी, निःश्रेणी, निसेनी, ज़ीना,—पैरी,—नीच जाति, स्त्रियों के पैर का एक भूषण।
४५०७—पैन	...	तीक्ष्ण, चोखा, धारदार, नोकीला, तेज़।
३५०८—पैरत	...	पैरतेही, तैरतेही, तिरतेही,—तैरता है, पौंड़ता है, तिरता है।
३५०९—पैरि	...	पैरकर, तैरकर, पौंड़कर।
३५१०—पैसार	...	पैठार, पैंठ, प्रवेश।
३५११—पैहहिं	...	पावेंगे, प्राप्त करेंगे।
३५१२—पोच	...	बुरे, नष्ट, नीच, मन्द, अधम, अज्ञानी, अशुचि, दुःखित।
३५१३—पोची	...	बुरी, नीच, अधमा।
३५१४—पोत	...	समुद्रयान, बड़ी नाव, जहाज़,—बालक,—एक प्रकार की गुरिया, मनका, दाना,—कर, दंड, मालगुज़ारी, किश्त।

नं० शब्द		अर्थ
३५१५—पोतक	...	बच्चा, बालक, जनमतुआ लड़का ।
३५१६—पोषक	...	पालक, रक्षक, पालनेवाला, पोसनेवाला, सहायक ।
३५१७—पोषत	...	पुष्ट करता है, पोषण करता है, पोसता है,—पोसतेही, पोषते हुए,—पुख़्ता, ठस, मज़बूत ।
३५१८—पोषे	...	पोसे, पाले, पोसने से, पालने से, पोसने में ।
३५१९—पोसो(पोषो)	...	पालो, पालन करो,—पोषा हुआ, पालाहुआ, पोषण किया हुआ ।
३५२०—पोहियहि	...	पिरोइए, गूंथिए, पोहना चाहिए, परोवना उचित है ।
३५२१—पौढ़ाए	...	सुलाये, सुताये, शयन कराये ।
३५२२—पौरुष	...	पुरुषार्थ, बल, हिम्मत, साहस, ताक़त ।
३५२३—पंक	...	जल, पानी,, कीच ,चहला, कीचड़ ।
३५२४—पंकज	...	जल से उत्पन्न, कमल ।
३५२५—पंकनिधि	...	जलराशि, समुद्र ।
३५२६—पंकरुह		चहले में उत्पन्न होनेवाला, कमल ।
३५२७—पंख	...	पर, पक्ष, डैना ।
३५२८—पंगु	...	लुंज, बिना हाथ पैर का, लूला, अपाहज़ ।
३५२९—पंच	...	पाँच, ५,—न्यायकर्त्ता ।
३५३०—पंचकवलि	...	पाँच ग्रास, पाँच कवर, अथवा----पंचक नक्षत्रों का बलि, पंचक की शांति का उतारा ।
३५३१—पंचदस	...	पन्द्रह, दस और पाँच, पंचदश, १५ ।
३५३२—पंचम	...	पाँचवाँ,—पंचम स्वर ।
३५३३—पंचानन	...	पाँच मुँहवाला, पंचमुख,—शिव, महादेव,—सिंह ।
३५३४—पंचसबद	...	पाँच प्रकार के शब्द, पाँच बाजों की ध्वनि, पाँच मनुष्यों की वाणी, पंचों की आज्ञा ।
३५३५—पंजर	...	शरीर की ठठरी, मांस-रहित शरीर, शरीर की हड्डियां का ढाँचा,—पिंजरा ।
३५३६—पंडित	...	पूर्ण पठित, विद्वान्, पढ़ा-लिखा ।
३५३७—पंथ	...	राह, रास्ता, मार्ग, मत, परिपाटी, रीति ।
३५३८—पंपासर	...	एक तीर्थ का नाम, एक सरोवर का नाम ।
फ		
३५३९—फटिक	...	पाषाण विशेष, स्फटिक, बिल्लौर ।
३५४०—फटी	...	फट गई, चिरगई, दो टूक हो गई, लकीर पड़ गई ।
३५४१—फन	...	फण, नाग का मुंह, नाग जाति के सर्प का मस्तक ।
३५४२—फनि	...	सर्प, नाग, अहि, साँप, कीरा ।
३५४३—फनिक	...	सर्प, साँप, फनवाला सर्प, नाग,—साँप का, सर्प का, कोई सर्प, एक सर्प ।
३५४४—फनी	...	सर्प, नाग, साँप, कीरा, अहि ।
३५४५—फनीश	...	सर्पराज, नागेश, नागों में श्रेष्ठ, शेषनाग, वासुकी इत्यादि ।
३५४६—फरकइ	...	फड़कता है, फ़ड़फड़ाता है, थिरकता है, थर्राता है ।
३५४७—फरकि	...	फड़कर, थर्राकर, थरथराकर, फरफराकर ।

नं० शब्द		अर्थ
३५४८—फरसा	...	परशु, कुठार, गँडासा।
३५४९—फराक	...	चौड़ा, ढीला, मोकला, कुशादा।
३५५०—फल	...	परिणाम, नतीजा, कार्यसिद्धि, लाभ, प्रयोजन,—मेवा,—सन्तान, वंश, बाण के आगे का लोहा, फर, फार, किसी शस्त्र का अग्रभाग।
३५५१—फलत	...	फलता है, फलतेही।
३५५२—फलित	...	फलाहुआ, फल-समेत, फलयुक्त, फलवाला,—ज्योतिष का एक अंग।
३५५३—फलै	...	फल दे, फलयुक्त हो, फल लावे, फल उत्पन्न करे।
३५५४—फहरत	...	फहराता है, उड़ता है, लपलपाता है, लपकता है, लहराता है,—रोमांचित होता है।
३५५५—फहराई	...	उड़ी, लहराई, लपलपाई, थहराई, थर्राई, फरफराई, रोमांचित हुई, फहरायकर।
३५५६—फहरात	...	उड़ता है, फरफराता है, लहराता है, थरथराता है।
३५५७—फाटक	...	मुख्य द्वार, बड़ा दरवाज़ा, पौर, बाहरी द्वार।
३५५८—फाटी	...	फटगई, दो टूक होगई, खिल गई, चिर गई।
३५५९—फाबी	...	शोभायमान भई, भली लगी, सजी, खुली, सुंदर लगी।
३५६०—फिर	...	पुनि, बहुरि, पुन, पीछे, बाद, पश्चात्।
३५६१—फिरत	...	लौटते हुए, पीछे आते हुए, घूमते हुए, घूमते ही, लौटते ही, घूमता है। ... चक्र खाता है, परिक्रमा करता है।
३५६२—फिराए	...	लौटाये, घुमाये, वापस किये, उलटे फेरे।
३५६३—फिरे	...	लौटे, घूमे, उलटे, फिरे, वापस आये, लौट आये।
३५६४—फीका	...	निःस्वाद, बे सवाद, स्वाद-रहित, रस-रहित।
३५६५—फुर	...	सत्य, साँच, सच, ठीक, यथार्थ।
३५६६—फुरि / फुरी	...	सूझ कर वा सूझी, उपजी, ध्यान में आई।
३५६७—फुलवाई	...	फुलवाड़ी, पुष्प-वाटिका, फूलों का बगीचा।
३५६८—फुलाई	...	वायु से भर कर तान दी, सुजाई, सूजन चढ़ाई।
३५६९—फुलाउब	...	वायु भर कर तानना, सुजाना, सूजन चढ़ाना, फुलावना।
३५७०—फुरकत	...	फुड़कते हैं, चबाकर थूकते हैं,—फरफराते हैं, काँपते हैं, कँपाते हैं, ... थरथराते हैं।
३५७१—फूटि	...	टूटि, टूट कर, नष्ट हो कर, टुकड़े हो कर।
३५७२—फूल	...	पुष्प, प्रसून, कुसुम, गुल, फूला, खिला, खुल गया।
३५७३—फूलत	...	फूलता है, खिलता है, पुष्पित होता है, विकसित होता है,—पुष्पित ... होते ही, विकसित होते ही।
३५७४—फूले	...	पुष्पित हुए, विकसे, खिले, प्रसन्न हुए, प्रफुल्लित हुए।
३५७५—फेन	...	झाग, फेचकुर, उफान, उबाल, बुदबुद।
३५७६—फेरु	...	फेर, चक्र, घुमाव।
३५७७—फैल	...	फैला, विस्तृत हुआ, फैलगया, प्रसार,—छल, कपट।
३५७८—फोड़ा	...	व्रण, स्फोटक,—तोड़ा, तोड़ दिया, नष्ट किया, टुकड़े कर दिया।

नं० शब्द		अर्थ
३५७९—फोरा	...	फोड़ दिया, तोड़ डाला, टुकड़े टुकड़े करदिया ।
३५८०—फोरि	...	तोड़ कर, टुकड़े करके, चूर करके, नष्ट करके, भेदन करके ।
३५८१—फोरै	...	तोड़े, फोड़े, अलग करे, भेद करे, चूर करदे, नष्ट करे ।
३५८२—फौज	...	सेना, दल ।
३५८३—फंद	...	फंदा, छल, कपट, फाँस, फाँसी ।
३५८४—फूंकी	...	फूँक कर, मुँह से वायु छोड़ कर,—जला कर,—भस्म करके ।
ब + व	...	
३५८५—बक	...	बकुला, बगुला, बगला, एक पक्षी का नाम ।
३५८६—बकत(वक्ता)	...	बकवादी, बकनेवाला, बोलनेवाला, कहनेवाला, वर्णन करनेवाला, व्यास, कथा बाँचनेवाला ।
३५८७—बकसीस	...	इनाम, दान, पारितोषिक, प्रसाद, प्रसन्नतापूर्वक दान ।
३५८८—वक्र	...	टेढ़ा, बाँका, कुटिल, प्रतिकूल ।
३५८९—बकुल	...	मौलसिरी का वृक्ष, मौलसिरी का पेड़,—बगुला पक्षी ।
३५९०—बखाने	...	वर्णन किये, बयान किये, कहे, व्याख्यान किये ।
३५९१—बखानत	...	वर्णन करता है, कहता है,—बयान करते ही, कहते ही ।
३५९२—बगमेल	...	इकट्ठे होके चलना, बगुलों की नाईं पाँति बाँध कर चलना ।
३५९३—बगरे	...	फैले, बिखरे, छितरा गये, छींट गये ।
३५९४—बगुर	...	फंदा, जाल, पाश, फाँसी, फँसाने की वस्तु ।
३५९५—बच	...	वचन, बात, बोली, कहन, शब्द,—एक ओषधि का नाम ।
३५९६—वचन	...	शब्द, वाक्य, बोली, बात, वाणी, कहन, क़ौल, करार, प्रण, प्रतिज्ञा, शर्त ।
३५९७—वचांसि	...	बातें,—बातों से, वचनों करके ।
३५९८—बच्छल / बछल		(वत्सल) दयायुक्त, दयालु, कृपालु,—हृदय ।
३५९९—बजनिया	...	बाजेवाले, बाजा बजानेवाले ।
३६००—वज्र	...	इन्द्रायुध, पवि, कुलिश,—हीरा,—कठोर ।
३६०१—बजाज	...	कपड़ा बेचनेवाला ।
३६०२—बजार	...	चौक, जिस मार्ग में विविध भाँति की वस्तु बेचनेवालों की दूकानें हों ।
३६०३—बट	...	बट वृक्ष, बड़ का पेड़,—अक्षय वट ।
३६०४—बटाऊ	...	बटोही, राहगीर, मुसाफ़िर,—बाँट लेनेवाला, हिस्सेदार, शरीक ।
३६०५—बटु / बटुक	...	बालक, कुँवार लड़का, अविवाहित बालक, ब्रह्मचारी, जो स्त्री-संग न करे,—ब्राह्मण ।
३६०६—बटोर	...	समेट, इकट्ठा कर, संगृहीत कर, संग्रह कर ।
३६०७—बटोही	...	पथिक, मुसाफ़िर, राही, राहगीर, मार्ग चलनेवाला ।
३६०८—बड़	...	बड़ा, उत्कृष्ट, दीर्घ, ज्येष्ठ ।
३६०९—बड़प्पन	...	बड़ाई, श्रेष्ठता, प्रधानता, बड़ापन ।
३६१०—बड़वानल	...	समुद्र की अग्नि ।
३६११—बड़ाई	...	प्रशंसा, यश, जस, बड़प्पन, प्रतिष्ठा ।

नं० शब्द		अर्थ
३६१२—बड़े	...	प्रबल, उच्च, प्रशस्त, पुरुषा, पूर्वज।
३६१३—बढ़ई	...	बढ़ता है, अधिक होता है,—काष्ठ का काम बनानेवाला।
३६१४—बढ़ही	...	बढ़ता है, अधिक होता है।
३६१५—बढ़ावा	...	बढ़ाया, अधिक किया,—उत्साह, उछाह।
३६१६—बत	...	बात, बोली, वार्त्ता, वचन,—नाईं, तरह।
३६१७—बतकही	...	बातचीत, बोलचाल, बतरावन।
३६१८—बत्स	...	बछवा, बच्छ, बच्छा, पुत्र, बेटा।
३६१९—बताई	...	बतला कर, समझा कर, कह के, दिखाय के,—दिखाई, बतलाई, बताय दी।
३६२०—बताना	...	समझाना, बतलाना, सुझाना, दिखाना, कहना।
३६२१—बतास } बतासा }	...	वायु, हवा, बयार, वात, पवन,—एक प्रकार की शर्करा-निर्मित मिठाई।
३६२२—बतिया	...	छोटा, कोमल फल, नरम फल, अधकच्चा फल,—बातचीत।
३६२३—बद	...	कह, कहिए, कहो—कहता है,—बुरा, खोटा, ख़राब।
३६२४—बदति	...	कहता है, वर्णन करता है, बयान करता है,—कहती है।
३६२५—बद्य	...	कहने योग्य, बयान करने योग्य, वर्णन के योग्य।
३६२६—बदइ	...	बैर, बेर, बैर का फल, बैर का वृक्ष।
३६२७—बदरी	...	बदली, मेघमाला,—बैर का, बैर वृक्ष का।
३६२८—बदलै	...	बदले, पलटे, बदला करे, एक वस्तु देकर दूसरी ले।
३६२९—बदाम	...	एक मेवा, बादाम,—हम लोग कहते हैं।
३६३०—बदामि	...	मैं कहताहूँ, मैं वर्णन करताहूँ, मैं बयान करताहूँ।
३६३१—बदि	...	कहकर, बयान करके, वर्णन करके,—प्रतिज्ञा करके, शर्त लगाकर।
३६३२—बध	...	मारण, मृत्यु।
३६३३—बधब	...	मारना, वध करना।
३६३४—बधावा	...	बधाई, मुबारक़बाद।
३६३५—बधिक	...	व्याधा, वध करनेवाला, चिड़ीमार, चिड़िया फँसाने तथा मारनेवाला।
३६३६—बधिर	...	बहिरा, कान से न सुननेवाला।
३६३७—बधू	...	बहू, पुत्र की स्त्री, नई व्याही स्त्री, जवान स्त्री, स्त्री।
३६३८—बधूटी	...	स्त्री, नवीन स्त्री, युवती, दुलहिन, कमसिन औरत, नव विवाहित स्त्री, बहूटी।
३६३९—बधेउ	...	मारा, मारडाला, वध किया।
३६४०—बधौ	...	मारौं, मारूँ, वध करूँ, मार डालौं।
३६४१—बन	...	जंगल, कानन, अटवी,—जल, पानी, नीर, वारि।
३६४२—बनचर	...	जंगली, वन में घूमनेवाले, वनवासी,—जलजन्तु, जल के जीव, जलचर, बानर।
३६४३—बनज	...	जल से उत्पन्न वस्तु मात्र, कमल, कोईं, जोंक इत्यादि,—वन से उत्पन्न, फल, पुष्प, जीव-जन्तु आदि।
३६४४—बननिधि	...	जलराशि, समुद्र।

नं० शब्द		अर्थ
३६४५—वनमाला	...	पुष्प और पत्रों से बनी माला, पैरों तक लम्बी फूलों की माला, तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात, सरोरुह इन पाँचों की बनी माला ।
३६४६—बना	...	सँवारा हुआ, बनाया हुआ,—सुधर गया, बन गया,—दुलहा, बनरा, बन्ना ।
३६४७—बनाई	...	सुधारी, सँवारी, रची ।
३६४८—बनाव	...	सुधार, सँवार, दुरुस्ती ।
३६४९—बनावा	...	सुधारा, सँवारा, बनाया, दुरुस्त किया,—सुधार, बनाव, दुरुस्ती ।
३६५०—बनिक	...	वणिक्, बनिया, वैश्य, व्यापारी, पँसारी, परचुनिया, सौदा बेचनेवाला,—बनाव ।
३६५१—बनिता	...	स्त्री, योषित्, लुगाई, बैयर, औरत ।
३६५२—बनी	...	सुन्दर, बनाई हुई, सजी हुई,—दुलहिन, बनरी, बधूटी, विवाहोपस्थित-कन्या ।
३६५३—बनै	...	सुधरै, सँवरै,—बनपड़ै, हो सकै,—दूलह को, बनरे को,—वेश धारण करै ।
३६५४—बपु / बपुष	...	देह, शरीर, तन, बदन ।
३६५५—बबुर	...	एक काँटेदार वृक्ष, बबूल का वृक्ष ।
३६५६—बबूरहि	...	बबूल के वृक्ष को ।
३६५७—वमत	...	छाँटता है, वमन करता है, रद करता है, कै करता है, उगलता है, उवान्त करता है, छाँड़ता है,—वमन करतेही, उगलतेही ।
३६५८—वमन	...	छाँट, छाँड़, उवान्त, क़ै, रद, उगाल ।
३६५९—बय	...	उम्र, आयु, अवस्था,—दो, उभय ।
३६६०—बयउ	...	बोआ, बीजा, जमाया, लगाया ।
३६६१—व्यग्र	...	उचाट, उच्चाट, अस्थिर, चंचल, बेठिकाने, अव्यवस्थित ।
३६६२—व्यंजन	...	भोजन के प्रकार,—स्वर छोड़कर शेष अक्षर ।
३६६३—बयनी	...	शब्दवाली, वाणीवाला, बोलनेवाला ।
३६६४—व्यभिचारी	...	परस्त्रीगामी, तमाशबीन, छिनरा, दुराचारी, स्त्री-लम्पट ।
३६६५—बयर	...	वैर, शत्रुता, विरोध, दुश्मनी,—एक फल वा वृक्ष, बेर, बैर ।
३६६६—व्यर्थ	...	निकम्मा, बुरा, निष्प्रयोजन, निरर्थक, बेमतलब, बे फ़ायदा ।
३६६७—व्यलीक	...	अनुचित, बेक़ायदा ।
३६६८—व्यवहरिया	...	व्यवहार करनेवाला, हिसाबी, बनिया, मुनीम, महाजन ।
३६६९—व्यवहार	...	बनिज, व्यापार, पेशा, रोज़गार ।
३६७०—व्यसन	...	आदत, अभ्यास, बान, टेव, लत, शौक़ ।
३६७१—व्यसनी	...	लतिहा, लतियल, अभ्यासी ।
३६७२—व्याकुल	...	व्यग्र, घबराया हुआ, बेसुध, बेचैन, विकल ।
३६७३—व्याघ्र	...	बाघ, शेर ।
३६७४—व्याज	...	मिस, बहाना, हीला,—सूद, नफ़ा ।
३६७५—व्याध	...	पशुघाती, अहेरी, शिकारी, बहेलिया, चिड़ीमार ।
३६७६—व्याधि	...	रोग, पीड़ा, दुःख, संताप, बीमारी ।

नं० शब्द		अर्थ
३६७७—व्याधू	...	व्याधि, रोग, दुःख।
३६७८—व्यापक	...	सर्वत्र रहनेवाला, घटघटवासी, सर्वत्रव्यापी, सर्वान्तर्वासी।
३६७९—व्यापकता	...	समाव, पठाव,—समता, स्थिति।
३६८०—बयार	...	अनिल, वायु, वात, हवा।
३६८१—व्याल	...	सर्प, साँप, अहि, कीरा, नाग।
३६८२—व्याली	...	सर्पिणी, अहिनी, साँपिन, नागिन,—सर्प को धारण करनेवाले महादेव।
३६८३—व्यास	...	वक्ता, कथा बाँचनेवाला,—द्वैपायन, पाराशर मुनि के पुत्र,—फैलाव, प्रसार, चौड़ाई, विस्तार।
३६८४—व्याह	...	विवाह, शादी।
३६८५—बये	...	बोये, बीजे,—बोने से, बीजने से।
३६८६—व्योम	...	अकास, आकाश, अंबर, गगन, आसमान।
३६८७—व्यंग	...	ताना, मेहना, टेढ़ी बोली, श्लेष वाक्य।
३६८८—व्यंजन	...	स्वर छोड़ कर शेष अक्षर,—भोजन के प्रकार।
३६८९—बर	...	आसीस, बरदान, चाही हुई वस्तु,—पति, स्वामी, दुलहा, दूलह,—सुन्दर, श्रेष्ठ, सबसे अच्छा।
३६९०—बरई	...	बटता है, उमेठता है, ऐंठता है, मुरेरता है।
३६९१—वर्ग	...	जाति, समूह, झुंड,—चौड़ाई लम्बाई में बराबर।
३६९२—वर्जित	...	रोका हुआ, निषेध किया हुआ, मना किया हुआ।
३६९३—बरजै	...	रोके, हटके, निषेध करे, मना करे।
३६९४—बरजोरा	...	बरजोर, ज़बर, ज़बरदस्त,—बरबस, ज़बरदस्ती से।
३६९५—बरजौं	...	मैं मना करता हूँ, मैं रोकता हूँ, मैं हटकता हूँ, मैं निषेध करता हूँ।
३६९६—व्रजंति	...	जाते हैं, पहुँचते हैं, प्राप्त होते हैं।
३६९७—वर्णसङ्कर	...	मिश्रित वर्ण, मिलीहुई जाति, दो जाति से उत्पन्न।
३६९८—वरणाश्रम	...	वर्ण और आश्रम, जाति और पन्थ।
३६९९—वरणी (बरनी)		वर्णन करी, बयान की।
३७००—व्रत	...	वरत, उपवास,—प्रतिज्ञा, प्रण।
३७०१—बरति	...	बलती है, सुलगती है, जलती है,—बटती है, उमेठती है।
३७०२—व्रती	...	व्रत करनेवाला, उपवास करनेवाला, प्रतिज्ञा करनेवाला, प्रण करनेवाला।
३७०३—बरद	...	वर देनेवाला, वरदाता, अभीष्ट देनेवाला,—बैल, बरधा, साँड़।
३७०४—बरदान	...	इनाम, उपहार, प्रसाद, आशीर्वाद।
३७०५—बरन (वर्ण)	...	अक्षर, रङ्ग, जाति, नहीं तो, बल्कि, वर्णन करके, बयान करके।
३७०६—बरनत	...	वर्णन करता है, कहता है, बयान करता है,—कहतेही।
३७०७—बरनि	...	वर्णन करके, कहके, बखान करके।
३७०८—बरनी	...	वर्णन करी, कही, बखानी।
३७०९—बरनै	...	कहै, वर्णन करे, बखाने।
३७१०—वरबरनी	...	सुन्दर वर्णवाली, अच्छे रङ्ग की, गौराङ्गी, ख़ुशरंग।
३७११—वर्म्म	...	कवच, बख़्तर।

नं० शब्द		अर्थ
३७१२—बरबस	...	बरजोरी से, ज़ोरावरी से, बलात्कार से, ज़बरदस्ती से।
३७१३—बररे	...	बर्रे, भिड़, हड्डा।
३७१४—बर्बर	...	बड़बड़, वृथा वाद, चिड़चिड़ाहट, भुनभुनाहट।
३७१५—बरष (वर्ष)	...	बरस, साल, अब्द, संवत्, १२ महीने।
३७१६—बरषहिं	...	बरसें, बरसते हैं।
३७१७—बर्षा	...	बरसात, पावस, प्रावृट्।
३७१८—बर्षासन	...	वर्ष भर का भोजन, वर्ष भर पर भोजन करनेवाला।
३७१९—ब्रह्म	...	परमेश्वर, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी, परमात्मा, आदिपुरुष, वेद, तत्त्व, तप, ब्रह्मा, ब्राह्मण।
३७२०—ब्रह्मगिरा	...	ब्रह्मोक्त वाणी, आकाश-वाणी।
३७२१—ब्रह्मचर्य	...	यज्ञोपवीत के पीछे वेद-ज्ञानार्थ सर्व भोग वर्जित प्रथमाश्रम, ब्रह्मचारी के धर्म, विवाह के पूर्व विद्याभ्यास के अर्थ गुरुकुल-वास की प्रथमावस्था।
३७२२—ब्रह्मदत्त	...	ब्रह्मा का दिया हुआ, संज्ञा विशेष, एक नाम का भेद।
३७२३—ब्रह्मधाम	...	ब्रह्मा के रहने का स्थान, ब्रह्मलोक, सत्यलोक।
३७२४—ब्रह्मन्य	...	ब्राह्मण को मानने वाला, विष्णु।
३७२५—ब्रह्मवान	...	ब्रह्मा का बाण, एक अस्त्र।
३७२६—ब्रह्मभवन	...	ब्रह्मा का घर, सत्यलोक, ब्रह्मलोक।
३७२७—ब्रह्मसर	...	ब्रह्मा का बाण, ब्रह्मास्त्र।
३७२८—ब्रह्मा	...	परमेष्ठी, चतुर्मुख, सृष्टिकर्त्ता, स्वयंभू, सृजनहार।
३७२९—ब्रह्मानन्द	...	स्वरूपानन्द, ब्रह्म का सुख, परमात्मा का आनंद, विषयों का भूलजाना।
३७३०—ब्रह्मास्त्र	...	ब्रह्मा का दिया अस्त्र, ब्रह्मा का अस्त्र, ब्रह्मसर।
३७३१—ब्रह्मांड	...	जगत्, भूगोल, भूमंडल, सब सृष्टि,—शिर का मध्य भाग।
३७३२—बरहि	...	बर्हि, मोर, मयूर, शिखी, केकी।
३७३३—बरहिं	...	अच्छे को, श्रेष्ठ को,—स्वीकार करते हैं,—दूलह को, दुलहे को,—वरे, स्वीकार करे, विवाह करते हैं।
३७३४—बराई	...	छाँटी, चुनी, अलगाई, बचाई,—छाँटकर, चुनकर, बिरायकर, बचाकर, छोड़कर, अलग से।
३७३५—बराए	...	छाँटे, चुने, छोड़े, बचाये, अलगकिये, अलगाये,—छाँटने से, बचाने से।
३७३६—बरात	...	वरयात्रा, बरियात, बारात।
३७३७—बराती	...	बरात के साथ चलनेवाले, वरयात्रा के निमंत्रित लोग।
३७३८—बरायें	...	बचाने से, छोड़ने से, अलग करने से, अलगाने से।
३७३९—बरासन्	...	श्रेष्ठ आसन, अच्छा बिछौना, उत्तम बिछावन, बर के बैठने का आसन, दुलहे के बैठने का स्थान।
३७४०—बराह	...	शूकर, सुअर, बाराह, कोल।
३७४१—बरि	...	बट कर, उमेठ कर,—बचकर, अलग से,—विवाह करके,—स्वीकार करके
३७४२—बरिआरा	...	बड़ा, बढ़कर, उत्कृष्ट, ज़बरदस्त,—बटेहुए।
३७४३—बरियाई	...	जोरावरी, ज़बर्दस्ती, बलात्कार से।

नं० शब्द		अर्थ
३७४४—बरियार	...	बली, ज़ोरावर, बलवान्, बलिष्ठ, तेजस्वी, अधिक बड़ा, बढ़ कर।
३७४५—बरियाता	...	वरयात्रा, बरात, बारात।
३७४६—बरियाँ	...	वेला, समय,—बाग़ में, वारी में, बगीचे में, क्यारी में।
३७४७—बरिबंड	...	बलवान्, बली, तेजस्वी।
३७४८—बरिस	...	वर्ष, बरस, अब्द, संवत्, साल।
३७४९—ब्रीड़ा	...	लज्जा, शर्म, संकोच, हया।
३७५०—बरीसा	...	वर्ष, बरस, बरिस, साल, संवत्, अब्द, संवत्सर।
३७५१—बरू	...	बलुक, बल्कि, किन्तु, चाहे।
३७५२—बरूण	...	एक देवता का नाम, जल के स्वामी, जल के अधिष्ठाता देवता।
३७५३—बरूथ	...	झुंड, यूथ, गोल, मंडली, समूह।
३७५४—बरे	...	बड़े,—व्याह करे,—स्वीकार करे,—बचे, अलग हो।
३७५५—बरेषी	...	मँगनी, सगाई, कुड़माई, किसी वरकन्या का विवाहार्थ निश्चय ठहराना।
३७५६—बरोरू	...	सुंदर जंघावाली स्त्री।
३७५७—बल	...	सेना, फौज,—ज़ोर, ताक़त, सामर्थ्य,—भरोसा, सहारा।
३७५८—बल्कल	...	बोकला, वृक्ष की छाल, (भोज पत्रादि) मुनियों के बल्कल वस्त्र।
३७५९—बलकावा	...	झुकाया, उमेठा।
३७६०—बल्लभ	...	प्यारा, प्रिय,—अधिकारी।
३७६१—बलवान् } बलवंत }	...	बलिष्ठ, बली, ज़ोरावर, ताक़तदार।
३७६२—बलहा	...	बल को नाश करनेवाला, बलघ्न, ताक़त को तोड़नेवाला।
३७६३—बलाक	...	वक, बकुला, बकुल, बगुला।
३७६४—बलाहक	...	मेघ, बादर, बादल, वारिद, जलद।
३७६५—बलि	...	बखरा, हिस्सा, पूजा, बलिदान, निछावर,—एक राजा का नाम।
३७६६—बलित	...	वेष्टित, घेरा हुआ, लिपटा हुआ, लपेटा हुआ।
३७६७—बली	...	बलवान्, बलवन्त, ज़ोरावर, ताक़तदार,—भाग,—एक राजा का नाम
३७६८—बलीमुख	...	बानर, बन्दर, शाखामृग।
३७६९—बल्ली	...	लता, बेल, बँवर,—माँझीका डाँड़ा।
३७७०—बलु	...	बल, ताक़त,—सुलग उठ, बर जा, भभक जा।
३७७१—बस	...	वश, आधीन, क़ाबू, वश्य, इख़्तियार,—बहुत, पूरा, बहुतेरा,—चुप, इतनाही।
३७७२—बसई	...	रहता है, निवास करता है।
३७७३—बसत	...	रहतेहुए, बसतेहुए,—बसतेहैं, रहतेहैं,—रहतेही, बसतेही।
३७७४—बसति	...	रहती है वा रहता है, निवास करता है वा करती है।
३७७५—वस्तु	...	पदार्थ, द्रव्य, चीज़, जिन्स।
३७७६—बसन	...	वस्त्र, कपड़ा, लुग्गा।
३७७७—बसवर्ती	...	आधीन, वशीभूत, आज्ञानुकूल चलनेवाला, फरमाँबर्दार।
३७७८—बससि	...	तू बसता है, तू रहता है।

नं० शब्द		अर्थ
३७७९—बसह	...	वृषभ, बैल, नन्दी, शिव का वाहन, बरधा।
३७८०—बसहु	...	रहौ, बसौ, निवास करो,—रहते हो, निवास करते हो।
३७८१—बसा	...	रहा, बसा, निवास किया।
३७८२—बसाई	....	बस चलता है,—आबाद की,—बस जाने से, गंधयुक्त होने से।
३७८३—बसीठी	...	दूत, हरकारा, एलची, पैग़ामवर, चर, चार।
३७८४—बसुधा	...	पृथ्वी, भूमि, धरा, धरनी, धरती, ज़मीन।
३७८५—बसूला	...	बसूला, लकड़ी छीलने का औज़ार, बढ़ई का औज़ार।
३७८६—बसेरा	...	बासा, रहने की जगह, बस्ती, आबादी, पखेरुओं के घोंसले में जाने का समय।
३७८७—बसंत	...	माधव, एक ऋतु का नाम, ऋतुराज, मौसिम बहार,—बसते हैं।
३७८८—बह	...	बहता है, चलता है, बहैं, चलैं,—वह, तौन।
३७८९—बहना	...	उठाना, लेजाना, चले जाना,—प्रवाहित होना।
३७९०—बहरावा	...	महटियाया, बहलाया, अनसुना करदिया।
३७९१—बहिनी	...	बहिन, भगिनी,—बहने वाली, प्रवाह वाली नदी।
३७९२—बहु	...	बहुत, अधिक, अति, ज़्यादा।
३७९३—बहुकालीन	...	बहुत काल का, बहुत दिनों का, चिरकालिक, अत्यन्त पुराना, अतिवृद्ध।
३७९४—बहुतेक	...	बहुतेरे, अनेकों, कितनेही।
३७९५—बहुधा	...	प्रायः, अकसर, विशेष करके, बहुत प्रकार से, बहुत बेर, अनेक बार।
३७९६—बहुबादू	...	बहुतसा झगड़, अधिक बकवाद, ज़्यादा हुज्जत।
३७९७—बहुरना	...	फिरना, लौटना, जाकर फिर आना, गई वस्तु का फिर से मिलना।
३७९८—बहुरहिँ	....	फिरते हैं, लौटते हैं, फिर से आते हैं।
३७९९—बहुरि	...	फिर, पुनः, और, पुनि।
३८००—बहे	...	प्रवाहित हुए, बहनिकले।
३८०१—बहोर, बहोरी	...	फिर, दोहरैया, पुनः,—फेरनेवाला, लौटानेवाला,—फेरी।
३८०२—बाउ	...	वाह, धन्य,—वायु, हवा।
३८०३—बाउर	...	बौरहा, बौड़म, पागल, विक्षिप्त।
३८०४—बाऊ	...	वायु, पवन, अनिल, हवा।
३८०५—बाएँ	...	वाम, प्रतिकूल, टेढ़े, कुटिल, दुष्ट, उलटे।
३८०६—बाक	...	वाणी, वचन, बोली, बात, शब्द, जो मुँह से निकले।
३८०७—बाग़	...	वाणी, वचन, बोली, शब्द,—लगाम,—बगीचा,—टहलता है, फिरता है, घूमा, फिरा, टहला।
३८०८—बागहिँ	...	घूमते हैं, फिरते हैं, टहलते हैं, डोलते हैं, हवा खाते हैं।
३८०९—बागीश	...	ब्रह्मवाणी, आकाश-वाणी,—वाणी का अधिष्ठाता, हयग्रीव भगवान्।
३८१०—बागुर	...	जाल, फंदा, फाँस, पाश, फाँसी, फँसाने की वस्तु।
३८११—बाघ	...	व्याघ्र, शेर, मृगराज।
३८१२—बाचाल	...	बोलनेवाला, बातूनिया, बकवादी, विशेष बोलनेवाला, बक्की, पंडित, बोलार।

नं० शब्द		अर्थ
३८१३—बाज	...	बजा, बजगया,—एक पक्षी का नाम, श्येन, शिकारी पक्षी ।
३८१४—बाजने	...	बाजे, बजनेवाले, शब्द करनेवाले ।
३८१५—बाजहिँ	...	बजते हैं, शब्द करते हैं ।
३८१६—बाजा	...	बजा, बजगया,—बजाने की वस्तु, बजनेवाली वस्तु ।
३८१७—बाजारू	...	बजार, चलने फिरने के मार्ग, क्रय-विक्रय के स्थान ।
३८१८—बाजि	...	बजकर, शब्द करके,—घोड़ा, अश्व, तुरंग ।
३८१९—बाजिमेध	...	अश्वमेध, एक यज्ञ जो घोड़े से होता है ।
३८२०—बाट	...	पथ, राह, पंथ, रास्ता, मार्ग ।
३८२१—बाट परै	...	वास्ता पड़ने से, मौक़ा मिलने पर, आवश्यकता पर, राह पड़ने पर, साथ होने पर, समय पड़ने पर ।
३८२२—बाटिका	...	बारी, फुलवारी, बगीचा, बगैचा ।
३८२३—बाढ़	...	चढ़ाव, बढ़ाव, चढ़न, वृद्धि, उन्नति,—बन्दूक आदि का क्रमशः शब्द होना ।
३८२४—बाढ़इ	...	बढ़ता है, वृद्ध होता है, फैलता है,—हर्षित होता है, प्रसन्न होता है,—काष्ठ का काम बनानेवाला ।
३८२५—बाढ़ी	...	बढ़ी, वृद्धि को प्राप्त हुई, अधिक हुई, सयानी हुई ।
३८२६—बाण	...	शर, तीर, नाराच, बान ।
३८२७—बाणी	...	सरस्वती,—बोली, बात, वचन, जो शब्द मुँह से निकले ।
३८२८—बात	...	वचन, बोली, बाणी,—वायु, पवन, समीर, हवा,—बाई ।
३८२९—बाती	...	वार्त्ता, बातचीत,—वर्तिका, बत्ती, बटी हुई वस्तु ।
३८३०—बातुल	...	बाई चढ़ा हुआ, पागल, बावला, बदहवास, बौरहा, सिड़ा, सौदाई ।
३८३१—बात्सल्य	...	पुत्रस्नेह, बेटे का प्रेम, मुहब्बत, पिसरी ।
३८३२—बादले	...	स्वर्ण-खचित चमकती हुई तारें ।
३८३३—बादहिँ	...	व्यर्थ को, बे मतलब, वृथा,—झगड़ा करते हैं, बराते हैं, हुज्जत करते हैं ।
३८३४—बादि	...	व्यर्थ, वृथा, निष्प्रयोजन, बे फ़ायदे, बे वास्ते,—बोलकर, झगड़ कर, हुज्जत करके, तकरार करके ।
३८३५—बादिनि	...	बोलनेवाली, झगड़ालू, हुज्जतिन, बकवादिन ।
३८३६—बादी	...	बोलनेवाला, कहनेवाला, झगड़नेवाला, झगड़ालू, हुज्जती, विवाद करनेवाला, उत्तर देनेवाला ।
३८३७—बाधक	...	रोकनेवाला, मना करनेवाला, बाधा करनेवाला, अटकानेवाला, विघ्न करनेवाला, दुःखद ।
३८३८—बाधा	...	विघ्न, रोक, दुःख, अटक, उपद्रव, उत्पात ।
३८३९—बाधी	...	विघ्नकर्त्ता, उत्पाती, अड़ियल, उपद्रवी,—बढ़ाई, अधिक करी ।
३८४०—बान	...	बाणासुर दैत्य, स्वभाव, आदत, अभ्यास, प्रतिज्ञा,—तीर, बाण ।
३८४१—बानर	...	मर्कट, शाखा मृग, कपि, बन्दर ।
३८४२—बाना	...	प्रतिज्ञा, प्रण, विरद, स्वभाव, आदत, अभ्यास,—तीर, बाण,—एक शस्त्र ... का नाम ।

नं० शब्द		अर्थ
३८४३—बानि	...	रपट, अभ्यास, आदत ।
३८४४—बानी	...	वाणी, सरस्वती, गिरा, बोली, वचन, बात, बोलचाल ।
३८४५—बानू	...	अभ्यास, रपट, आदत ।
३८४६—बानैत	...	वीर,—बाना फेंकनेवाला, पटेबाज़,—बाना धारण करनेवाला, प्राण-धारी ।
३८४७—वापिका / वापी	...	बावली, एक प्रकार के जलाशय का नाम ।
३८४८—बापुरी	...	तुच्छ, निपूती, निगोड़ी, अकेली, एकाकी, जिसके कोई न हो ।
३८४९—बापू	...	बाप, पितृ, पिता, जनक ।
३८५०—बाम	...	स्त्री,—बायाँ, विरोधी, प्रतिकूल, उलटा ।
३८५१—बामदेव	...	शिव, महादेव,—एक मुनि का नाम ।
३८५२—बाम्हन	...	ब्राह्मण, विप्र, द्विज, भूदेव, भूमिदेव ।
३८५३—बाय	...	पसार कर, फैलाकर,—है,—वायु, बाई, वात ।
३८५४—बायन	...	बयना, भाजी, नेवता ।
३८५५—बायस	...	काक, कौवा ।
३८५६—बार	...	दिन, रोज़,—दफ़े, बेर,—बोझ, भार,—देर, अबेर, समय, काल,—केश, बाल,—द्वार, दरवाज़ा,—बालकर, जलाकर ।
३८५७—बारक	...	एक बेर, एक बार, एक दफ़े, कभी,—द्वार का, दरवाज़े का ।
३८५८—बारण / बारन	...	हाथी, हस्ती, गज,—दूर करना, मनाही, निषेध, रोक, बाज़ रखना,—देरी नहीं, शीघ्र, जल्दी ।
३८५९—बारै	...	दूर करे, हटावे, मना करे,—उतारा करै, नेछावर करै,—रोको, मना करो, हटको ।
३८६०—बाराबाट / बारहबाट	...	तहस नहस, बरबाद, मोहादि १२ मार्ग, छितर बितर, नष्ट, ख़्वार ख़स्ता ।
३८६१—बारहि / बारही	...	लड़कपन से, बचपन से,—मना करते हैं, रोकते हैं,—वारा फेरा करते हैं, नेछावर करते हैं, उतारा करते हैं ।
३८६२—बारि	...	जल, पानी, नीर,—नेछावर करके,—दूर कर के, मना करके, रोक कर ।
३८६३—बारिचर	...	जल के जीव, जलजन्तु, पानी में रहनेवाले जानवर ।
३८६४—बारिचरकेतू	...	मीनकेतु, कामदेव, अनंग ।
३८६५—बारिज	...	कमल, कँवल, जल से उत्पन्न सब वस्तु ।
३८६६—बारिद	...	मेघ, बादर, बादल, बलाहक, जल का देनेवाला, नीरद ।
३८६७—बारिदनाद	...	मेघनाद, इन्द्रजीत, रावण का ज्येष्ठ पुत्र, बादल के समान गर्जनेवाला ।
३८६८—बारिधर	...	जल को धारण करनेवाला, बादल, मेघ, नीरधर ।
३८६९—बारिधि	...	समुद्र ।
३८७०—बारिस	...	अधिकारी, उत्तराधिकारी ।
३८७१—बारिसि	...	बारैगी,—निछावर करियो, निछावर किया,—बार दिया, जला दिया ।
३८७२—बारी	...	जल, पानी, नीर,—फुलवारी,—बालिका, लड़की, छोरी,—निछावर करी,—रोकी, मना की ।

नं० शब्द		अर्थ
३८७३—वारीश	...	जल का स्वामी, जलधि, समुद्र ।
३८७४—वारुनी (वारुणी)		मद्य विशेष,—पश्चिम दिशा,—योग विशेष,—दूर्बा ।
३८७५—बारु / बार	...	बार, दिन, रोज़, समय, अवसर, दफ़ा, बेर, देर, विलंब,—दरवाज़ा, द्वार ।
३८७६—बारे	...	लड़के, बालक,—बार दिये, जला दिये,—किसी प्रकार से ।
३८७७—बाल	...	बालक, बच्चा, लड़का,—केश, बार ।
३८७८—बालक	...	बच्चा, लड़का ।
३८७९—बालमीकि	...	एक मुनि का नाम, रामायण के कर्त्ता ।
३८८०—बाला	...	स्त्री, युवा स्त्री, तरुणी ।
३८८१—बालिक	...	एक बानर का नाम, सुग्रीव का ज्येष्ठ भ्राता, किष्किन्धा का राजा, तारा का पति ।
३८८२—बालू	..	रेणु, रेती, सिकता, रेत ।
३८८३—बावन	...	भगवान् का एक नाम, त्रिविक्रम भगवान्,—अंक विशेष, ५२, दो ऊपर पचास,—नाटा, बव्वना ।
३८८४—बावरी	...	बैकल, बौरही, पगली, सिड़िन ।
३८८५—बास	...	निवासस्थान,—गंधि,—महक, बू ।
३८८६—बासन	...	बरतन, भाँडे, पात्र,—रहन, निवास,—नहीं निवास,—गन्धहीन ।
३८८७—बासना	...	इच्छा, चाह, अभिलाषा ।
३८८८—बासर	...	दिन, बार, रोज़, दिवस ।
३८८९—बासव	...	इन्द्र, शक्र, सहस्राक्ष, हज़ार आँखवाला ।
३८९०—बासा	..	घर, निवासस्थान, रहने का स्थान,—सुवासित किया, गंधमय किया ।
३८९१—बासी	...	निवासी, वास करनेवाला, रहनेवाला,—रात की रक्खी वस्तु, एक दिन पूर्व की रक्खी हुई वस्तु, पूर्व की बची वस्तु ।
३८९२—बाहु	...	बाँह, भुजा ।
३८९३—बाहन	...	यान, सवारी, असवारी ।
३८९४—बाहिज	...	बाहरी, बाहर से, बाह्य, बाहर का, बाहर वाला ।
३८९५—बाहिनी	...	सेना,—बहने वाली, बहाने वाली,—नदी ।
३८९६—बिकट	...	भयानक, अड़बड़, टेढ़ा मेढ़ा, ऊँचा नीचा, डरावना, भयंकर, भयानक, दुखदायी ।
३८९७—बिकटासी	...	भयंकर मुखवाली ।
३८९८—बिक्रम	...	पराक्रम, पौरुष, पुरुषार्थ, बल, ज़ोर, ताक़त, प्रभाव ।
३८९९—बिकरारा	...	विकराल, भयंकर, कठिन, डरावन, टेढ़ा, दुखदायी ।
३९००—बिकल	...	बेकल, व्याकुल, घबराया हुआ, बेचैन, पीड़ित, स्वास्थ्य-रहित ।
३९०१—बिकस	...	प्रफुल्लित होकर, प्रसन्न होकर,—प्रसन्नता, विकाश, प्राफुल्य ।
३९०२—बिकसे	...	फूले, खिले, प्रफुल्लित हुए, प्रसन्न हुए ।
३९०३—बिकाय	...	बिककर,—बिकता है, विक्रय होता है, बय होता है ।
३९०४—बिकार	...	दोष, ऐब, अवगुण, ईर्ष्यादि मन के विकार, जन्मादि संसार के दोष,

नं० शब्द		अर्थ
	...	मैल, मल ।
३९०५—विख्यात	...	प्रसिद्ध, ख्यात, विदित, उजागर, मशहूर, ज़ाहिर ।
३९०६—विखाना(विषाण)		सींघ, शृङ्ग ।
३९०७—विखंडन	...	तोड़ना, भंजन करना,—तोड़नेवाला, भंजन करनेवाला ।
३९०८—विगत	...	रहित, हीन, गयागुज़रा, समाप्त, हो चुका, अभाव, गया हुआ ।
३९०९—विग्रह	...	विरोध, झगड़ा, लड़ाई,—शरीर, देह,—हठ ।
३९१०—बिगरहिं	...	बिगड़ते हैं, बिगड़ जाते हैं, ख़राब होते हैं, नष्ट होते हैं ।
३९११—बिगोए	...	नाश किये, ग़ुम किये, भलीभाँति गुप्त करदिये ।
३९१२—बिगोवा	...	नष्ट किया, ग़ुम किया, अच्छी तरह छिपा दिया ।
३९१३—विघटन	...	तोड़ना,—बनवाना ।
३९१४—विघ्न	...	असगुन, अंडस, रोक, अटकाव ।
३९१५—बिच	...	बीच, मध्य, में ।
३९१६—विचक्षण	...	चतुर, आश्चर्य, विलक्षण, अद्भुत ।
३९१७—बिचरहिं	...	फिरते हैं, चलते हैं, विचरते हैं, घूमते हैं, टहलते हैं ।
३९१८—बिचरहु	...	फिरो, घूमो, टहलो, विचरो ।
३९१९—बिचरन्त	...	घूमते हैं, टहलते हैं ।
३९२०—विचल	...	चलायमान, चंचल, हिलने डोलनेवाला ।
३९२१—बिचलत	...	हिलते हैं, चलते हैं, चलायमान होते हैं, अपनी प्रतिज्ञा छोड़ते हैं ।
३९२२—विचार	...	सोच, ध्यान, ख़्याल, समझ, बूझ, निर्णय,—सोचकर, समझकर ।
३९२३—विचारा	...	सोचा, ध्यान किया, निर्णय किया, समझा, बूझा ।
३९२४—विचित्र	...	भाँति भाँति का, अद्भुत, अनोखा, आश्चर्ययुक्त, विलक्षण, रंगबिरंग ।
३९२५—विचेतन	...	अचेतन, अज्ञान, बेहोश, बेसुद्ध ।
३९२६—बिछुरत	...	बिछुरतेही, अलग होतेही, जुदा होतेही, बिछुरने से, अलग होने से ।
३९२७—बिछोहे	...	छोड़ दिये, छुड़ा दिये, अलग किये, जुदा किये,—जुदाई से, वियोग से ।
३९२८—विजय	...	जय, जीत, फ़तह ।
३९२९—विजयी	...	जय करनेवाला, जीतनेवाला, जय प्राप्त करनेवाला, फ़तहयाब ।
३९३०—विज्ञान	...	शास्त्रज्ञान, पूरी जानकारी, शिल्प विद्या ।
३९३१—विज्ञानविहान	...	ज्ञान का उदयकाल, ज्ञान का सवेरा,—ज्ञान की विस्मृति, ज्ञानहानि ।
३९३२—विज्ञानी	...	ज्ञानवान्, सुबोध, पंडित ।
३९३३—विटप	...	वृक्ष, तरु, पादप, पेड़, दरख़्त ।
३९३४—विटपी	...	वटवृक्ष ।
३९३५—बिडरी	...	विशेष डरगई,—छितराई, छितराकर, फैल, फैलकर, फैली हुई ।
३९३६—बिडारी	...	भगाके, गिराकर, फेंककर, छितराकर,—भगाई, फेंकदी, गिरादी ।
३९३७—विडंब	...	ठगी, छल, झूठे वचन, मिथ्यावाद ।
३९३८—विडंबना	...	मिथ्यावाद, झूठ झगड़ा, निष्प्रयोजन वार्त्ता, झूठा व्यवहार ।
३९३९—बिढ़ई	...	कमाकर, पैदा करके, सामर्थ्य ।
३९४०—वित्त / वित	...	धन, सामर्थ्य, मक़दूर, जिसके द्वारा सुख-प्राप्ति हो ।

नं० शब्द		अर्थ
३९४१—वितान	...	चँदोवा, मंडप, फैलाव, विस्तार, शामियाना ।
३९४२—बिथकहिं	...	आश्चर्य होते हैं, चकित होते हैं ।
३९४३—बिथकि	...	लीन-वृत्ति होके, तन्मय होकर, चकित होकर, आश्चर्ययुक्त होके ।
३९४४—बिथुरे	...	फैले हुए, बिखरे, छितराये हुए, छिटके हुए ।
३९४५—विद	...	ज्ञाता, जाननेवाला ।
३९४६—विदग्ध	...	रसिक, पंडित, चतुर ।
३९४७—विद्यमान	...	प्रकट, प्रत्यक्ष, सामने, सम्मुख, प्रस्तुत, उपस्थित, वर्त्तमान, मौजूद ।
३९४८—विद्या	...	ज्ञान, शिक्षा, १४ प्रकार की विद्या ।
३९४९—बिदरत	...	फटते हैं, फट जाते हैं, विदीर्ण होते हैं ।
३९५०—विद्रुम	...	मूंगा, प्रवाल ।
३९५१—बिदरेउ	...	विदीर्ण हुआ, फटगया, तड़क गया, चिरगया ।
३९५२—बिदा	...	विसर्जन, रवानगी, बरख़ास्त ।
३९५३—विदारण	...	फाड़ना, चीरना ।
३९५४—बिदारहिं	...	फाड़ते हैं, चीरते हैं ।
३९५५—बिदारसि	...	तू फाड़ता है, तू चीरता है ।
३९५६—बिदारे	...	फाड़े, चीरे, फाड़ डाले, फाड़ने से,—चीरने से ।
३९५७—विदित	...	ख्यात, विख्यात, प्रकाशित, प्रसिद्ध, विस्तृत ।
३९५८—बिदिसि(विदिशि)		दिशा का कोण, दो दिशाओं की संधि ।
३९५९—बिदुष	...	पंडित, विद्वान्, तत्त्ववेत्ता ।
३९६०—बिदुषन	...	पंडितगण, विद्वान् लोग, तत्त्व के जाननेवाले ।
३९६१—बिदुषहिं	...	निन्दा करते हैं, विशेष कर दोष लगाते हैं ।
३९६२—बिदुषि	...	निन्दा करके, गाली देकर, दोष लगाकर, दूषित कर ।
३९६३—विदुषी	...	पंडिता, विदुषी स्त्री ।
३९६४—विदूषक	...	भाँड़, मसख़रा, हँसानेवाला, निन्दा करनेवाला, नक़ल करनेवाला ।
३९६५—विदेह	...	ब्रह्मज्ञानी, वेदान्ती, जिसके शरीर में ममता न हो, देह के सुख-दुख को समान जाननेवाला ।
३९६६—बिधवन	...	विधवाओं ने वा को, राँडों ने वा को ।
३९६७—बिधवपन	...	वैधव्य, रँड़ापा ।
३९६८—विधवा	...	राँड़, रंडा, रंडिया, मृतभर्त्ता, जिसका पति मर गया हो ।
३९६९—विधात्री	...	ब्रह्माणी, ब्रह्मा की पत्नी,—बनानेवाली, निर्माण करनेवाली,—सरस्वती
३९७०—विधाता	...	ब्रह्मा, विधि, सृष्टिकर्त्ता, सृजनहार ।
३९७१—विधान	...	विधि, पूर्ण विधि, पूरी रीति, शास्त्रोक्त विधि ।
३९७२—विधि	...	ब्रह्मा, विधाता, कर्म, भाग्य, विधिना, रीति, चाल, तरह, चलन, प्रकार ।
३९७३—विधिअंड	...	ब्रह्माण्ड, जगत्, संसार, दुनिया ।
३९७४—विधिना	...	दैव, विधाता, ब्रह्मा, कर्मरेख ।
३९७५—विधिवत	...	यथाविधि, यथाविधान, विधिपूर्वक, रीति के अनुकूल, शास्त्र-विहित, मुनासिब, वाजबी तौर पर ।

नं० शब्द		अर्थ
३९७६—विधु	...	इन्दु, शशि, चाँद, चन्द्रमा।
३९७७—विधुंतुद	...	राहु।
३९७८—विधुवदनी	...	चंद्रमुखी, चन्द्रमा से मुँहवाली।
३९७९—विध्वंस	...	नाश,—नाश करके, नष्टकर, उजाड़ कर।
३९८०—विन / बिनु	...	बिना, निषेध, नहीं, बग़ैर।
३९८१—बिनवउँ	...	मैं विनती करता हूँ।
३९८२—बिनता	...	गरुड़जी की माता का नाम, दक्ष की कन्या, कश्यप मुनि की स्त्री, पक्षियों की जननी।
३९८३—बिनती	...	प्रार्थना, विनय, स्तुति, नम्रता।
३९८४—विनय	...	विनती, प्रार्थना, स्तुति, नम्रता।
३९८५—विनयी	...	विनती करनेवाला, स्तुति करनेवाला, अति नम्र।
३९८६—बिनवा	...	विनय की, विनती करने लगा, नम्र हुआ, झुका, आजिज़ हुआ।
३९८७—बिनवों	...	मैं विनती करता हूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ, मैं शुश्रषा करता हूँ।
३९८८—बिनसा	...	नष्ट हुआ, बिगड़ गया, ख़राब हो गया, नाश को प्राप्त हुआ।
३९८९—बिनसे	...	नष्ट होने से, बिगड़ने से, नाश को प्राप्त होने से।
३९९०—बिना / बिन	...	छोड़ कर, रहित, बिदून, सिवा।
३९९१—विनायक	...	विघ्नहरण, विघ्नों के स्वामी, श्रीगणेशजी।
३९९२—विनिश्चित	...	भलीभाँति निश्चित, अतिदृढ़, पक्का, अच्छी तरह निश्चय किया हुआ, सन्देह-रहित।
३९९३—विनिंदक	...	प्रायः निन्दा करनेवाला, अकसर गाली देनेवाला।
३९९४—विनीत	...	नम्र, झुका हुआ, मुअद्दब, आजिज़, नम्रीभूत, अति नीतिवान्।
३९९५—बिनु	...	बिन, बिना, बग़ैर, न, रहित, बिदून, सिवा, छुट्टा।
३९९६—विनोद	...	क्रीड़ा, खेल, खेलवाड़।
३९९७—विपत	...	आपत्ति, उपद्रव।
३९९८—विप्र	...	द्विज, भूसुर, भूदेव, ब्राह्मण।
३९९९—विपरीत	...	उलटा, प्रतिकूल, बरअक्स, विरुद्ध।
४०००—विपिन	...	वन, जंगल, कानन, अरण्य।
४००१—विपुल	...	बहुत, विस्तार, अधिक, ढेरसा, अनेक।
४००२—विपुलाई	...	अधिकता, बहुतायत, ज़्यादती।
४००३—विवर	...	बिल, छिद्र, छेद, छेक, गुफ़ा, खोंड़रा, मांद।
४००४—विवर्द्ध	...	बहुत, बढ़ती, अधिक, विशेष बढ़ा हुआ।
४००५—विवरन	...	विवर्ण, बेरंग, कुरंग, दूसरा रंग, बदला हुआ रंग, बुरा रंग, जुदा, अलग।
४००६—बिवस	...	विकल, व्याकुल, वशीभूत, वश में आया हुआ, लाचार, ज़बरदस्ती से।
४००७—बिबाकी	...	नाश, निःशेष, चुकती, अन्त्य।
४००८—विवाद	...	हुज्जत, झगड़ा, बकवाद।

नं० शब्द		अर्थ
४००९—विविक्त	...	एकान्त, निर्जन स्थान,—त्यागी, वैरागी ।
४०१०—विविध	...	अनेक भाँति, तरह तरह, भाँति भाँति, कई रकम ।
४०११—विबुध	...	देवता,—पंडित ।
४०१२—विबुधवन	...	नन्दनवन, देवताओं का वन, स्वर्ग का बग़ीचा ।
४०१३—विबुधवैद	...	देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार ।
४०१४—विवेक	...	विचार, ज्ञान, भले बुरे की समझ ।
४०१५—विवेकी	...	ज्ञानी, विचारवान्, अपने हित अनहित को समझनेवाला ।
४०१६—विभक्त	...	भाग किया हुआ, बँटा हुआ, तक़सीम किया हुआ ।
४०१७—विभव	...	संपदा, धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य,—पालन,—मोक्ष, मुक्ति, महत्त्व ।
४०१८—विभंजन	...	तोड़नेवाला, नाश करनेवाला ।
४०१९—विभाग	...	भाग, टुकड़ा, बाँट, हिस्सा, अंश, बखरा, खंड, प्रकरण ।
४०२०—विभाती	...	प्रकाशित होती है, मालूम देती है, चमकती है ।
४०२१—विभिचार	...	परस्त्री-गमन, तमाशबीनी, वेश्या-प्रसंग, छिनरापन, छिनाला ।
४०२२—विभिचारी	...	परस्त्रीगामी, तमाशबीन, वेश्यागामी, छिनरा ।
४०२३—विभीषन	...	रावण का छोटा भाई ।
४०२४—विभु	...	प्रभु, सर्वव्यापी, समर्थ, परमेश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।
४०२५—विभूती	...	सम्पदा, सम्पत्ति, चमत्कार, ऐश्वर्य,—भस्म, राखी, खाक ।
४०२६—विभूषन	...	अलंकार, आभूषण, गहना, शोभा ।
४०२७—विभेद	...	दुर्भाव, शत्रु-मित्र-भाव, जुदाई, भिन्नता ।
४०२८—विभो	...	हे विभु, हे व्यापक, संबोधन शब्द ।
४०२९—विमद	...	मदरहित, निरभिमान, निरहंकार, बिना घमंड ।
४०३०—विमल	...	मलबिना, उज्ज्वल, निर्मल, साफ़, फरचा, शुद्ध ।
४०३१—विमात्र	...	सौतेला भाई, विमाता का पुत्र, सौतेली माँ का बेटा, मैभामहतारी का लड़का, माता की सवत का बेटा ।
४०३२—विमाता	...	दूसरा माँ, सौतेली माँ, मैभामतारी, पिता की अपनी माँ के सिवा दूसरी पत्नी ।
४०३३—विमान	...	आकाशमार्ग में चलनेवाली सवारी, वायुमंडल में घूमने योग्य सवारी ।
४०३४—विमुख	...	बहिर्मुख, विरोधी, प्रतिकूल ।
४०३५—विमूढ़	...	महामूर्ख, भारी उजड्ड, नीचतर, बड़ा बेवकूफ़ ।
४०३६—विमोह	...	विशेष मोह, अत्यन्त अज्ञान, मूर्खता ।
४०३७—बियानी	...	जनी, बियाई, पुत्र उत्पन्न किया, संतान उत्पन्न किया ।
४०३८—वियोग	...	बिछोड़ा, जुदाई, बिछोह ।
४०३९—वियोगी	...	बिछुड़ा हुआ, जुदा, अलगी, छुटा हुआ ।
४०४०—विरक्त	...	उदास, त्यागी, निष्काम, वैरागी, विरागी, निस्पृह ।
४०४१—विरचि	...	रचकर, बनाकर ।
४०४२—विरची	...	बनाई, रची, तैयार की ।
४०४३—विरज	...	रजोगुण-रहित, सात्विकी,—विगतरज, धूलि से बचा हुआ, निर्मल, साफ़,

नं० शब्द		अर्थ
		फरचा, उज्ज्वल, बेमैल, जो वीर्य से उत्पन्न न हो, अयोनिजात, अज,—शान्त।
४०४४—विरत	...	विगतरति, प्रीति-रहित, संसार से छूटा हुआ, वैरागी, मुमुक्षु, जिसे संसार में प्रीति न हो, उदासीन।
४०४५—विरति	...	उदासीनता, त्याग, वैराग्य, बिना प्रीति, निर्मोही,—विशेष प्रीति, अतिप्रीति।
४०४६—विरथ	...	रथरहित, विगतरथ, बिना रथ, पैदल, पापियादा।
४०४७—विरद	...	यश, स्तुति, प्रशंसा, प्रतिज्ञा, बाना, प्रण,—बिना दाँत का, दन्तरहित, बूढ़ा।
४०४८—विरल	...	छितराया हुआ, अलग अलग, जुदा जुदा, फैला हुआ।
४०४९—विरला	...	कोई, कश्चित्, कोई एक, कोई कोई, एकाध।
४०५०—विरव	...	बिरवा, बीरो, पैाधा, छोटा पेड़, गुल्म,—शब्द-रहित, सुनसान, जहाँ हैारा न हो।
४०५१—विरस	...	विगतरस, रस-रहित, दुःस्वाद, फीका, बेलज़्ज़त, नीरस।
४०५२—बिरहवंत	...	वियोगी, वियोग-प्राप्त, छूटा हुआ, बिछुरा हुआ।
४०५३—बिरहाकुल	...	वियोग से व्याकुल, विछोह से घबराया हुआ, जुदाई से बेचैन।
४०५४—बिरहागी	...	वियोगाग्नि, जुदाई की आग, बिछोड़े की कुढ़न।
४०५५—बिरहित	...	वियोग-प्राप्त, वियोगी, विरही, जुदा, विशेष करके रहित, भलीभाँति छूटा हुआ, वियोग-ग्रस्त, बिछुरा हुआ।
४०५६—बिरहिन	...	वियोगिन, छूटी हुई, बिछुरी भई।
४०५७—बिरही	...	वियोगी, छूटा हुआ, बिछुड़ा भया।
४०५८—विराग	...	वैराग्य, विरक्ति, त्याग।
४०५९—विरागी	...	विरक्त, वैरागी, त्यागी।
४०६०—विराजत	...	विराजता है, सोहता है, शोभा पाता है, शोभायमान है, बैठा है।
४०६१—विराजा	..	शोभायमान हुआ, शोभित हुआ, स्थित हुआ, बैठा।
४०६२—विराजित	...	शोभायमान, विराजमान, स्थित, बैठा हुआ।
४०६३—विराजे	...	बैठे, शोभित हुए, स्थित हुए, शोभायमान हुए।
४०६४—बिराट	...	विश्वरूप, ईश्वर का सर्वसृष्टिमय रूप, बड़ा।
४०६५—विराध	...	एक राक्षस का नाम।
४०६६—विरुज	...	नीरोग, रोग-रहित, आरोग्य, बिना रोग का।
४०६७—विरुद्ध	...	प्रतिकूल, विरोधी, वैरी, वैर-युक्त।
४०६८—विरुदावली	...	यशसमूह, कीर्त्तिश्रेणी, प्रणों की पंक्ति, बानों की पाँति, प्रतिज्ञाओं की शृंखला।
४०६९—विरूदैत	...	प्रतिज्ञावाला, प्रणधारी, बाना रखनेवाला, वीरताभिमानी।
४०७०—विरूदैता	...	प्रणों पर दृढ़ता, प्रतिज्ञाभिमान।
४०७१—विरंचि	...	ब्रह्मा, विधि, विधाता।
४०७२—विलक्षण	...	विचित्र, अद्भुत, आश्चर्य के योग्य।
४०७३—विलख	...	दुःखपीड़ित होके, रोकर, दुःख से व्याकुल हो, दुःखान्ध हो, उदास हो, सुस्त हो,—उदासीनता, व्याकुलता, पीड़ा की चेष्टा,—भलीभाँति देखकर।
४०७४—बिलग	...	अलग, भिन्न, जुदा, जुदाई, अनुचित, न्यारा, बुरा, आन, अन्य, दूसरा,

नं० शब्द		अर्थ
		और कुछ ।
४०७५—विलगाती	...	अलग होती, जुदा हो जाती, अलग करती, जुदा करती ।
४०७६—बिलगाए	...	अलग किये, जुदा किये, छाँट दिये, चुन दिये ।
४०७७—बिलगाहीं	...	अलग होते हैं, जुदा करते हैं, छाँट देते हैं ।
४०७८—विलप	...	विलापकर, रोकर, आँसू बहाकर, चिल्लाकर, रोके, गुणवर्णयुक्त रोके ।
४०७९—विलपति	...	रोती है, विलाप करती है, चिल्लाती है ।
४०८०—विलंब	...	देर, अबेर, अतिकाल ।
४०८१—विलसत	...	विलास करता है, क्रीड़ा करता है, खेलता है, रमण करता है, दिल्लगी करता है ।
४०८२—विलाप	...	रोदन, बावैला, दुःखार्त्त रोदन, व्याकुलतायुक्त रोदन, अति दुःख की रुआई ।
४०८३—विलासिनी		प्रसन्न मनवाली, विलास करनेवाली, क्रीड़ा करनेवाली ।
४०८४—विलाहीं	...	नष्ट होजाते हैं, मिट जाते हैं, नाश को प्राप्त होजाते हैं, बरबाद होजाते हैं ।
४०८५—विलोए	...	मथन किये, मथे,—मथन करने से ।
४०८६—बिलोकि	...	देखकर, अवलोकन करके ।
४०८७—विलोचन	...	दोनो आँखें, दोनों नेत्र, दोनों नयन ।
४०८८—विवेक	...	ज्ञान, सत्यासत्य विचार, भले बुरे का ज्ञान, योग्यायोग्य का विचार, समझ ।
४०८९—विस्व(विश्व)	...	जग, जगत्, संसार, दुनिया ।
४०९०—विश्वरूप	...	विष्णु, सर्वव्यापी, विराट् भगवान, जिसके रूप में सब संसार देखपड़े,—एक ऋषि का नाम ।
४०९१—विश्वामित्र	...	एक ऋषि का नाम, कौशिक, राजा गाधि के पुत्र ।
४०९२—विश्वासू(विश्वास)		प्रतीति, एतबार, यक़ीन ।
४०९३—विश्राम	...	ठहराव, आराम, सुस्ताव, परिश्रम-रहित बैठक ।
४०९४—विश्वेश	...	संसार का स्वामी, ईश्वर ।
४०९५—विशाख	...	वैशाख, एक महीने का नाम ।
४०९६—विशाल	...	आयत, चौड़ा, बड़ा, फैलाहुआ ।
४०९७—विशिख	...	शर, बाण, तीर ।
४०९८—विशुद्ध	...	अति पवित्र, निर्मल, शुद्ध, साफ़, उज्वल ।
४०९९—विशेष	...	अति, ज़्यादा, सिवा,—क़िस्म, भेद ।
४१००—विशोक	...	विगत-शोक, शोकरहित, आनन्दित,—अत्यन्त शोक, शोकाक्रान्त ।
४१०१—विष्टा	...	मल, गोबर, गुह, मैला, लीद, बीठ, ग़लीज़, फ़ुज़ला ।
४१०२—विष्णु	...	ईश्वर, नारायण, भगवान् ।
४१०३—विषम	...	टेढ़ा, अड़बंगा, क्लेशद, कठिन, असम, बेबराबर, भयंकर ।
४१०४—विषमता	...	असमानता, बेजोड़, दुःसहता, रागद्वेष, टेढ़ापन ।
४१०५—विषय	...	काम-क्रोधादि, संभोग, क्रीड़ा, आसक्ति, (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध,) संबंध, बाब, बारा ।
४१०६—विषयक	...	संबंध में, बाब में, बारे का, विषय का ।
४१०७—विषयी	...	विषयों को भोगनेवाला, संसारी, व्यभिचारी ।
४१०८—विषाद	...	शोक, दुःख, ताप, उदासी, क्लेश ।

नं० शब्द		अर्थ
४१०९—विस्तर	...	विस्तार, फैलाव,—बिस्तरा, बिछौना, बिछावन।
४११०—विस्तार	...	फैलाव, चौड़ाई।
४१११—बिसद (विशद)		स्वच्छ, निर्मल, श्वेत रंगवाला, शुद्ध, साफ़।
४११२—बिसम (विषम)		ऊँचानीचा, टेढ़ामेढ़ा।
४११३—बिस्मय	...	अचरज, आश्चर्य, अचंभा, तअ़ज्जुब।
४११४—बिस्मित	...	आश्चर्ययुक्त, भयचक, विस्मय को प्राप्त।
४११५—बिसरत	...	भूलतेही, विस्मरण होतेही,— भूल जाता है, बिसार देता है, बिसर जाता है।
४११६—बिसरा	...	भूल गया, बिसर गया, स्मरण न रहा, विस्मृत होगया, याद न रहा।
४११७—बिसराई	...	भुलाई, भुलायकर, बिसारकर, भुलादी।
४११८—बिसरेउ	...	भूल गया, बिसर गया, याद न रक्खा।
४११९—बिसारद (विशारद)		चतुर, पंडित, चालाक, प्रवीण, निपुण, ज्ञाता, जाननेवाला।
४१२०—बिसारा	...	भुलादिया, भुलवा दिया, बिसार दिया, याद न रक्खा।
४१२१—बिसूरति	...	चिन्ता करती है, सुसुक कर रोती है, सिसकती है, बुसुकती है।
४१२२—बिहग	...	विहंग, पक्षी, चिड़िया, पखेरू, पंछी, परिन्द।
४१२३—बिहरत	...	क्रीड़ा करता है, खेलता है, विहार करता है, टहलता है, सैर करता है, फटता है, विदीर्ण होता है,—फटतेही,—क्रीड़ा करते हुए, फटते हुए।
४१२४—बिहरू	...	फटजा, फट जाय, फटै।
४१२५—बिह्वल	...	व्याकुल, घबराया हुआ, मग्न, बेचैन।
४१२६—बिहाई	...	छोड़कर, त्यागकर, भुलाय कर, भूलकर।
४१२७—बिहान	...	भोर, प्रातःकाल, सबेरा, तड़का,—बीत गया, हो चुका, भूल गया,—कलह, काल्हि, भविष्य दिन।
४१२८—बिहानी	...	बीत गई, पूरी भई, समाप्त हुई, विगत हुई, भूल गई।
४१२९—बिहाने	...	भूले, भूल गये,—भूलने से,— कलह के सबेरे ही।
४१३०—बिहार	...	क्रीड़ा, खेल, आनन्द, खुशी, ऐश।
४१३१—बिहारी	...	विहार करनेवाला, क्रीड़ा करनेवाला, खेलवाड़ी, ऐयाश, ऐश करनेवाला,—विहार देश में रहनेवाला, विहार-निवासी।
४१३२—बिहाला	...	बेहाल, व्याकुल, बेचैन, घबराया हुआ।
४१३३—बिहित	...	वर्णित, कहा हुआ, बयान किया हुआ।
४१३४—बिहीन	...	बिना, रहित, भलीभाँति रहित, अतिनीच।
४१३५—बिहंग	...	पक्षी, चिड़िया, पखेरू, परिंद।
४१३६—बिहँसा	...	विशेष हँसा, ज़ोर से हँसा, हँसने लगा।
४१३७—बिहँसि	...	हँस कर, प्रसन्नतापूर्वक।
४१३८—बीच	...	भीतर, अंदर, में, माँझ, मध्य, अन्तर।
४१३९—बीचि	...	लहर, तरंग, मौज।
४१४०—बीज	...	वीर्य, तुख़्म, बिया।
४१४१—बीति	...	बीतकर, गुज़रकर।

नं० शब्द		अर्थ
४१४२—बीते	...	गुज़र गये, हो चुके, बीत गये, पूरे हो गये, गुज़रे।
४१४३—बीथी	...	गली, खोरि, सांकरी गैल, संकुचित मार्ग, तंग रास्ता।
४१४४—बीन	...	चुनकर, साफ़ करके, अलग अलग करके,—चुन, साफ़ कर, अलग अलग करो,—एक बाजे का नाम, वीणा।
४१४५—बीर	...	भाई, भ्राता,—सखी, सहेली, सहचरी,—वीरतायुक्त, शूर।
४१४६—बीरभद्र	...	शिवजी के गण का नाम (इनको सती का शरीर त्याग करने पर दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए जटा पटक कर उत्पन्न किया था)
४१४७—बीरासन	...	शूर-वीरों के बैठने की रीति, वीरों की बैठक, वीरों की बैठान।
४१४८—बीस		विंशति, एक कोड़ी, २०।
४१४९—बीहड़	...	कठिन, ऊँचा खाला, दुःखद, टेढ़ामेढ़ा, अड़बड़, ऊटपटांग, अति कठिनता से निबहने योग्य मार्ग।
४१५०—बुझाई	...	बुताय दी, शान्त कर दी,—बुताय कर,—समझाई, समझा कर, जनाय कर,—मालूम पड़ता है, जान पड़ता है,—समझ पड़े, जानाजाय।
४१५१—बुढ़ाई		बुढ़ापा, वृद्धावस्था, जरावस्था, बूढ़ापन,—बूढ़ा हो जाय।
४१५२—बुताई	...	बुझाई, बुताय दी, शांत कर दी, ठंढी कर दी, बुझाय कर, ठंढा करके।
४१५३—बुध	...	बुद्धिमान्, पंडित, चतुर,—बुधवार,—चंद्रमा का पुत्र,—बुधावतार।
४१५४—बुधि (बुद्धि)	...	मति, समझ, अक़ल, विचार।
४१५५—बूझ	...	समझ, ज्ञान, पहिचान, बुद्धि, अक़ल,—समझ कर, जान कर, पूछ कर।
४१५६—बूझिय		जानिए, पूछिए, समझिए, समझना चाहिए, जानना चाहिए।
४१५७—बूड़	...	डूब गया, मग्न हो गया, गर्क़ हो गया।
४१५८—बूड़त	...	डूबते ही, डूबता है, डूबते हुए।
४१५९—बूढ़	...	बूढ़ा, बुडढा, बड़ा, वृद्ध, बुज़ुर्ग।
४१६०—बूता	...	पुरुषार्थ, बल, समाई, हौंसला, हिम्मत, ज़ोर, ताक़त।
४१६१—वृक	...	भेड़िया, बीघ, हुंडार।
४१६२—वृत्ति	...	जीविका, रोज़ी।
४१६३—वृत्तान्त	...	समाचार, हाल, अहवाल।
४१६४—वृथा	...	व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बे मतलब, बे फ़ायदे, नाहक़।
४१६५—वृद्ध	...	बड़ा, बूढ़ा, बुड्ढा, बुढ़वा, ज़ईफ़, बुज़ुर्ग।
४१६६—वृद्धि	...	बढ़ती, बाढ़, आधिक्य, ज़्यादती।
४१६७—वृन्दारका	...	सुर, देवता।
४१६८—वृषकेतु	...	वृषध्वज, बैल की ध्वजावाला, श्रीमहादेवजी।
४१६९—वृष्टि	...	वर्षा, मेह, बारिश।
४१७०—वृष	...	बिच्छू,—बैल, बरद, बरधा, गोरू।
४१७१—वृषभ	...	बैल, साँड़, बरदा, बरधा, गोरू, बसह, नन्दी।
४१७२—वृषली	...	शूद्रा, शूद्राणी, दासी।
४१७३—वेग	...	झोंक, तेज़ी, फुरती, शीघ्रता।
४१७४—बेचारा	...	विवश, ग़रीब, लाचार, असमर्थ, अशक्त।

नं० शब्द		अर्थ
४१७५—बेटा	...	पुत्र, लड़का, सन्तान, सन्तति, आपत्ति।
४१७६—बेत	...	बेंत, नरकट की नाईं एक वृक्ष।
४१७७—बेद	...	चतुर्वेद (ऋग्, साम, यजु, अथर्व), श्रुति, ज्ञान, जानना,—संख्या, ४।
४१७८—बेदसिरा	...	एक मुनि का नाम।
४१७९—बेदिका } बेदी }	...	कर्मकाण्ड के विषय में यज्ञादि कर्म के लिए रेणु-निर्मित एक छोटा सा चौतरा, स्थंडिल।
४१८०—बेध	...	छिद्र, छेद, सूराख़,—एक में दूसरे का प्रवेश।
४१८१—बेधि	...	छेद कर, बेध कर, छिद्र करके।
४१८२—बेधे	...	छेदे, छिद्र किये, छेद करे।
४१८३—बेन	...	एक राजा का नाम, – बाँस की एक जाति, बीन, बंसी, आकाश-छड़ी।
४१८४—बेनी (बेणी)	...	त्रिवेणी, प्रयाग तीर्थ, चोटी, स्त्रियों के गूंथे हुए केश।
४१८५—बेनु (बेणु)	...	बंसी, बाँसुरी, बाँस,—एक प्रसिद्ध राजा का नाम।
४१८६—बेर	...	देर, अबेर, अबसेर, अरसा,—समय, जून, वक्त,—बैर, बदरी-फल, बैर का वृक्ष।
४१८७—बेरा } बेला }	...	समय, काल, जून, वक्त।
४१८८—बेरे	...	बेड़े, नौका विशेष, जल में तैर कर पार होने का एक यान, नाव, गड़नैल।
४१८९—बेष	...	रूप, स्वरूप, बाना, भेस., अलंकारादि-रचित शोभा, डौल, चाल, तरह।
४१९०—बेसर	...	ख़च्चर,—नथिया, नासिका का एक भूषण, नथुनी, नाक में पहिनने का ... एक छोटा सा भूषण।
४१९१—बेसाहि	...	बीते, सिर पड़े, भोगना पड़े।
४१९२—बेहड़	...	ऊँचानीचा, अड़बड़, ऊटपटांग, टेढ़ामेंढ़ा।
४१९३—बेहाल	...	बेचैन, व्याकुल, घबराया हुआ।
४१९४—बेह	...	बेध, छिद्र. छेद, छेक, सूराख़।
४१९५—बैकुंठ	...	विष्णु का धाम, नारायण का धाम।
४१९६—बैठ	...	बैठा, बैठगया, स्थित हुआ,—बैठो, बैठ जा, स्थित हो।
४१९७—बैठार	...	बैठक, बैठन, स्थिति,—पैठार, पैठाव, पहुँच।
४१९८—बैतरनी	...	यमलोक की नदी।
४१९९—बैताल	...	भूत, प्रेत, पिशाच।
४२००—बैद्य	...	वैद्य, चिकित्सक, गदहा, रोग को नाश करनेवाला।
४२०१—बैदिक	...	वेद का, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला, वेद के मार्ग पर चलनेवाला, वेद-मार्ग को जाननेवाला, वेदाभ्यासी।
४२०२—बैदेही	...	विदेह की कन्या, जानकी, सीता।
४२०३—बैन (बयन)	...	बात, वार्त्ता, वचन, बोली, बात-चीत।
४२०४—बैनतेय	...	विनता के पुत्र, पक्षिराज, गरुड़।
४२०५—बैना	...	वाणी, वचन, बोली,—भाजी, वायन, कोई वस्तु जो उत्सवों में बिरादरी में बाँटी जाय।

नं० शब्द		अर्थ
४२०६—वैभव	...	ऐश्वर्य, धन, समृद्धि ।
४२०७—वैर	...	शत्रुता, विरोध,—बैर का फल, बदरी-फल ।
४२०८—वैराग्य	...	अरुचि, वैराग, संसार से चित्त का फिर जाना ।
४२०९—वैरी	...	शत्रु, अरि, दुश्मन, द्वेषी, रिपु ।
४२१०—वैष्णव	...	विष्णु-भक्त, विष्णु का उपासक ।
४२११—वैखानस	...	वानप्रस्थ, तृतीय आश्रम पर चलनेवाला ।
४२१२—बैस	...	वय, वयस, अवस्था, आयु, उम्र,—वैश्य, बनिया,—बैठ, तिष्ठ ।
४२१३—बैसा	...	बैठा, विश्राम किया, ठहरा, स्थित हुआ, निश्चय को पाया, क़रार पाया ।
४२१४—बोए	...	बीजे, लगाये, जमाये ।
४२१५—बोध	...	समझ, बुद्धि, ज्ञान ।
४२१६—बोरहिं		डुबोते हैं, बोरते हैं, निमग्न करते हैं ।
४२१७—बोरा	...	डुबोआ, डुबो दिया, गर्क़ किया, निमग्न किया, बुड़ाय दिया ।
४२१८—बोरि	...	डुबो कर, बुड़ाय कर ।
४२१९—बोल	...	शब्द, वचन, वाणी, आवाज़,—बोल कर, बात करके,—बोला, बतियाय।
४२२०—बोला	...	बतियाया, बात की, शब्द किया ।
४२२१—बोलि	...	बोल कर, बात करके ।
४२२२—बोले	...	बतियाये, बातचीत की ।
४२२३—बोहित	...	जहाज़, तरणी, नौका, नाव, जलयान ।
४२२४—बौर	...	बवँर, बौंड़, मंजरी, बाल ।
४२२५—बौराई	...	पगलाई, दीवानी हुई, उन्मत्त हुई, पागल भई,—मंजरित भई, बौरयुक्त भई।
४२२६—बौराह	...	बौड़ाह, पागल, पगला, सनकी, सौदाई ।
४२२७—बौरी	...	पगली, बौरही, सौदाइन ।
४२२८—बंक, बंका	...	टेढ़ा, बाँका, कपटी, कुटिल, छली ।
४२२९—बंगा	...	लुच्चा, टेढ़ा, टेढ़ा प्रकृतिवाला, बद मिजाज़, व्यर्थ का क्रोधी, हवा से लड़नेवाला ।
४२३०—बंचक	...	ठग, धोखेबाज़, फ़रेबी, विश्वास-घाती ।
४२३१—बंचकता	...	ठगी, धोखेबाज़ी, फ़रेब, विश्वासघात ।
४२३२—बंचत	...	ठगता है, विश्वासघात करता है, फ़रेब करता है ।
४२३३—बँचाई	...	बचाकर, अवशेष रखकर,—शेष रक्खी, संभाली, ओट की, आड़ की ।
४२३४—बँचावन	...	बचाव, रोक,—रोकना, बचाना,—आड़, ओट ।
४२३५—बंदेउ	...	प्रणाम किया ।
४२३६—बंदेऊं	...	मैंने प्रणाम किया ।
४२३७—बंदन	...	झुकना, प्रणाम, स्तुति ।
४२३८—बंदनवार	...	तोरण, द्वार पर बाँधने का पत्र-निर्मित मंगल द्रव्य ।
४२३९—बंदनीय	...	प्रणाम करने के योग्य, सराहनीय, स्तुति के योग्य ।
४२४०—बंद्य	...	प्रणाम-योग्य, सराहनीय, स्तुति के योग्य ।

नं० शब्द		अर्थ
४२४१—बंदर	...	बानर, कपि, मर्कट ।
४२४२—बंदि	...	प्रणाम करके ।
४२४३—बंदिय	...	प्रणाम करना चाहिए, सराहना चाहिए, स्तुति करनी चाहिए ।
४२४४—बंदी	...	भाट, वंश-प्रशंसक ।
४२४५—बंदीखाना, बंदीगृह	...	कारागृह, कारागार, क़ैदख़ाना ।
४२४६—बंदे	...	बन्दन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ ।
४२४७—बन्दौं	...	मैं प्रणाम करता हूँ, मैं वन्दना करता हूँ ।
४२४८—बन्ध	...	प्रबन्ध, बन्धान, रोक, बन्धन, प्रतिबन्ध ।
४२४९—बन्धन	...	प्रबन्ध, रोक, बाँधने की वस्तु, रस्सी ।
४२५०—बन्ध्या	...	बाँझ, जिस स्त्री के पुत्र न हो, जो स्त्री गर्भ धारण न करे ।
४२५१—बन्धु	...	भाई, सम्बन्धी, नातेदार, आपत्तिकाल में सहाय करनेवाला ।
४२५२—बन्धुजीव	...	गुलदुपहरिया, एक लाल फूल, एक प्रकार का रक्त पुष्प ।
४२५३—बंस	...	वंश, कुल,—बाँस ।
४२५४—बंसी	...	बाँसुरी, वेणु,—मछली फँसाने वा मारने की लग्घी ।
४२५५—बाँक	...	एक शास्त्र का नाम, एक तरह की टेढ़ी छुरी,—एक हाथ में पहिनने का भूषण,—घुमाव, ख़म ।
४२५६—बाँका	...	टेढ़ा, तिरछा, घूमा हुआ,—कपटी, कुटिल, छली,—लड़ाका, बिगड़ैल, क्रूर, अति शीघ्र रूठ जानेवाला,—छबीली, टेढ़ी छविवाला, सुन्दर, मोहनी छविवाला ।
४२५७—बाँकी	...	छबीली, सुन्दरी, टेढ़ छविवाली, मानिनी, बिगड़ैल, टेढ़ी, क्रूरा, कुटिला, वक्रा, लड़ाकी ।
४२५८—बाँकुरा एकवचन, बाँकुरे बहुवचन		टेढ़ा, कुटिल, वक्र, तुर्शरू, बिगड़ैल, शीघ्रही तिउरी बदलनेवाला,—वक्र,—छबियुक्त ।
४२५९—बाँचा	...	बचाया, बचालिया,—पढ़ा, पढ़लिया,—बचा गया, तरह दे गया,—शेष रहा ।
४२६०—बाँची	...	बची, बच गई, शेष रही,—पढ़ी, पढ़ली,—बचकर, अलग से,—बचाय कर, पढ़कर ।
४२६१—बाँचु	...	पढ़,—बचाव, बच, अलग रह, संबन्ध न रख, स्पर्श न कर ।
४२६२—बाँझ	...	बन्ध्या, गर्भ न धारण करनेवाली स्त्री, वह स्त्री जिस के कभी संतान न हो ।
४२६३—बाँटौ	...	बाँट लो, भाग कर लो, विभाग करो, हिस्सा करो,—भाग भी, बखरा भी, हिस्सा भी ।
४२६४—बाँधी	...	बन्धन से कसी, लपेटी,—बाँध कर, कसकर, लपेट कर ।
४२६५—बाँस	...	कीचक, रेणु, बंस, एक वृक्ष का नाम ।
४२६६—बाँह	...	भुज, भुजा, बाहु, डँड़ ।
४२६७—बिन्दु	...	बिन्दी, बेंदी, स्त्रियों का तिलक,—बून्द, बुन्दा,—नुक़ता, अनुस्वार ।
४२६८—बिन्ध्य	...	एक पर्वत का नाम, विन्ध्याचल ।
४२६९—बुन्द	...	बून्द, कण, आर्द्र वस्तु का कण ।

नं० शब्द		अर्थ
४२७०—वृंद	...	समूह, झुण्ड, दल, गोल, गरोह ।
४२७१—वृंदारका	...	सुर, देवता ।
भ		
४२७२—भई	...	हुई, होगई,—भाई, भैया, भ्राता ।
४२७३—भक्त	...	भगत, प्रेमी, अनुरागी, सेवक, भक्ति करनेवाला, अनुरक्त, उपासक,—विभक्त, बँटा हुआ ।
४२७४—भक्तवत्सल	...	भक्त पर अनुग्रह करनेवाला, सेवक, सुखद ।
४२७५—भक्ति	...	आराधना, उपासना, प्रीति, विश्वास, नवधा भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पगसेवा, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन) ।
४२७६—भक्ष	...	भोजन, आहार, खाने की वस्तु, भख,—खा, खाओ,—खाकर ।
४२७७—भक्षक	...	खानेवाला, भोजन करनेवाला, जेंवनेवाला ।
४२७८—भग	...	ऐश्वर्य, शोभा, सौंदर्य,—इच्छा, चाह,—योनि ।
४२७९—भगत	...	भक्त, प्रेमी, अनुरागी, सेवक, उपासक, उपासना करनेवाला ।
४२८०—भगति	...	भक्ति, सेवा, पूजा, उपासना, आराधना, प्रेम, अनुराग, प्रीति ।
४२८१—भगवान् } भगवंत }	...	षडैश्वर्य युक्त, जिसमें छत्रों ऐश्वर्य हों, ईश्वर, परमात्मा ।
४२८२—भगिनि	...	बहिन, भैन, स्नुषा ।
४२८३—भच्छन	...	भक्षण, खाना, आहार, भोजन ।
४२८४—भच्छहिं	...	खाते हैं, भोजन करते हैं, जेंवते हैं, आहार करते हैं ।
४२८५—भजई	...	सुमिरे, सेवे, रटे, स्मरण करे, याद करे,—भागे, दौड़े, परावे ।
४२८६—भजन	...	सर्वदा स्मरण, निरंतर रटन, हमेशा की याद, जप, गान,—गीत, गाने का छन्द,—भागड़, दौड़, दौड़ाई, परावन ।
४२८७—भजहिं	...	सुमिरते हैं, याद करते हैं, रटते हैं, गान करते हैं,—भागते हैं, दौड़ते हैं, पराते हैं ।
४२८८—भजहु	...	सुमिरो, रटो, भजो, गान करो, जपो,—भागो, दौड़ो, पराय जाओ ।
४२८९—भजामहे	...	हम लोग भजते हैं ।
४२९०—भजामि	...	मैं भजता हूँ, मैं सुमिरता हूँ, मैं रटन करता हूँ, मैं गान करता हूँ ।
४२९१—भजि	...	भजन करके, सुमिर के, भज के, रट के,—भाग कर, पराय कर ।
४२९२—भजिय	...	स्मरण करिए, स्मरण करना चाहिए,—भागिए, भागना चाहिए ।
४२९३—भजी	...	सुमिरन करो,—भागी, दौड़ी, पराई ।
४२९४—भजे	...	सुमिरन करने से, भजन करने से,—भागे, दौड़े, पराये ।
४२९५—भट	...	वीर, योधा, लड़ाका, बहादुर, शूर, मल्ल, पहलवान ।
४२९६—भटभेरे	...	धक्कमधक्का, धक्केबाज़ी, कुश्ती, लड़ाई ।
४२९७—भड़िहाई	...	चोरी, दगाबाज़ी, भड़ियापन,—बरतचटोरीपन ।
४२९८—भणित	...	वर्णित, कहा हुआ, बयान किया हुआ ।
४२९९—भद्र	...	कल्याण, भला, उत्तम, मंगल, शुभ ।
४३००—भदेश	...	भद्दा, कुरूप, बेढंगम ।

नं० शब्द		अर्थ
४३०१—भनई	...	कहता है, वर्णन करता है, बयान करता है ।
४३०२—भनित	...	भणित, वर्णित, कहा हुआ, बनाया हुआ, रचित ।
४३०३—भनी	...	कही, वर्णन की, बयान की, बात बनाई, कविता बनाई,—कहकर, वर्णन करके ।
४३०४—भनु	...	कह, कहु, वर्णन कर, बना, रच, रचना कर ।
४३०५—भने	...	कहे, वर्णन करे, रचे, रचना करे ।
४३०६—भनंता	...	कहते हैं, कथन करते हैं,—कथित ।
४३०७—भभरा	...	घबराया, रोमांचित हुआ, गद्गद हुआ, उद्विग्न हुआ ।
४३०८—भय	...	डर, ख़ौफ़, सहम ।
४३०९—भयाकुल	...	भयभीत, डर से घबराया हुआ, डर से व्याकुल ।
४३१०—भयानक } भयावन }	...	भयंकर, डरावना, ख़ौफ़नाक,—काव्य के नौ रसों में से एक भयानक रस ।
४३११—भयावहीं	...	डराते हैं,—भयभीत होते हैं ।
४३१२—भयंकर	...	डरावन, भय को उत्पन्न करनेवाला ।
४३१३—भर	...	पूर्ण कर,—पालन-पोषण कर,—नीचों की एक जाति ।
४३१४—भरऊँ	...	भरता हूँ, पूरा करता हूँ, देना देता हूँ, ऋण चुकाता हूँ, दण्ड देता हूँ,—पालन करता हूँ ।
४३१५—भरत	...	भरता है, पूर्ण करता है,—दशरथ जी के पुत्र का नाम, श्रीरामचन्द्र के अनुज ।
४३१६—भर्त्ता } (भरतार) }	...	पति, ख़ाविन्द, प्रभु, स्वामी, पालन करनेवाला ।
४३१७—भरद्वाज	...	एक ऋषि का नाम ।
४३१८—भरन	...	पालन-पोषण, धारण ।
४३१९—भरनी	...	भरनेवाली, पालन-पोषण करनेवाली, पूर्ण करनेवाली,—एक नक्षत्र का नाम, जिस नक्षत्र में वृष्टि होने से सर्प मरते हैं ।
४३२०—भ्रम	...	धोखा, वहम, शक, संदेह, शंका, भूल, चूक, संशय, अनिश्चय ।
४३२१—भरव	...	भरना, पूर्ण करना,—भरूँगा, भरेंगे, पूर्ण करेंगे ।
४३२२—भरहिं	...	भरते हैं, पूर्ण करते हैं, पूरा करते हैं, देते हैं, चुकाते हैं ।
४३२३—भरा	...	पूर्ण किया, भर दिया, पालन-पोषण किया, धारण किया, बोझ दिया, लादा ।
४३२४—भ्राजा	...	सुहाया, शोभित हुआ, शोभायमान हुआ, भला लगने लगा ।
४३२५—भ्रात	...	भ्राता, भाई, वीर, भैया, सहोदर ।
४३२६—भरि	...	भरकर, पूरा करके, पूर्ण करके, पालन करके ।
४३२७—भरिता	...	भरनेवाली, पूर्ण करनेवाली, पालन करनेवाली ।
४३२८—भरी	...	पूर्ण, परिपूर्ण, बोझी भई, लदी हुई,—पूर्ण करी, भर दी, लाद दी ।
४३२९—भ्रू	...	भौं, भृकुटि, अब्रू ।
४३३०—भरोस	...	आश्रय, भरोसा, सहारा, आशा, आस, विश्वास, उम्मीद ।

नं० शब्द		अर्थ
४३३१—भरोसे	...	आसरे से, आशा में, आश्रय से, सहारे से, उम्मीद में ।
४३३२—भल	...	अच्छा, भला, उत्तम, श्रेष्ठ ।
४३३३—भला	...	अच्छा, प्यारा, प्रिय, उत्तम, श्रेष्ठ ।
४३३४—भलाई	...	भलमनसी, नेकी, सज्जनता ।
४३३५—भली	...	अच्छी, सुन्दर, प्रिय, श्रेष्ठ, उत्तम ।
४३३६—भव	...	संसार,—कल्याण,—जन्म,—महादेवजी ।
४३३७—भवतव्यता	...	होनहार, भावी, होनी ।
४३३८—भवद्	...	तुम्हारा, आपका ।
४३३९—भवदंघ्रि	...	आपके चरण, तुम्हारे पाँव ।
४३४०—भवन	...	घर, स्थान, गृह, वास ।
४३४१—भवमोचन	...	संसार से छुड़ानेवाला, जन्म-मरण से छुड़ानेवाला ।
४३४२—भवानी	...	महादेवजी की स्त्री, पार्वती, शिवा, भवपत्नी, रुद्राणी, उमा ।
४३४३—भवाम्बुनाथ	...	संसार-सागर, भवसागर, संसार-समुद्र,—संसार रूपी जल का-स्वामी, संसार-सागर का स्वामी, ईश्वर ।
४३४४—भा	...	भाया, हुआ,—उजास, चमक, प्रकाश ।
४३४५—भाई	...	भ्राता, भैया, सहोदर, सजाति, बिरादरी, संगी, साथी, मित्र,—सुहाई, प्रिय लगी, अच्छी लगी, मनभाई, पसन्द आई, सुन्दर लगी ।
४३४६—भाउ	...	भाव, भावना, प्रेम,—जन्म,—निर्ख़, दर, भाव ।
४३४७—भाग (भाग्य)	...	प्रारब्ध, क़िस्मत, नसीब, खंड, हिस्सा, टुकड़ा,—भाग गया, चला गया ।
४३४८—भागा	...	दौड़ा, भाग गया, चलागया ।
४३४९—भागीरथ	...	एक राजा का नाम जो गंगाजी को मृत्युलोक में लाये ।
४३५०—भागौं	...	भागूँ, दौड़ूँ, दौड़ जाऊँ, चला जाऊँ, शीघ्र चला जाऊँ ।
४३५१—भाजन	...	पात्र, बरतन, बासन ।
४३५२—भाजि	...	भागकर, दौड़कर,—बाँटकर, बखरा करके, तोड़कर ।
४३५३—भाट	...	प्रशंसा करनेवाला, वंश-प्रशंसक, कवि, बंदीजन ।
४३५४—भात	...	पका हुआ चावल, ओदन ।
४३५५—भाति	...	मालूम देता है, भासता है, प्रतीत होता है, भ्रम होता है ।
४३५६—भाती	...	प्रकाशित होती है, चमकती है, प्रतीत होती है,—प्रिय, दिलपसन्द, कमनीय, प्रियानुरागी, पसन्द आती, अच्छी लगती ।
४३५७—भाथा	...	तूण, तूणीर, तरकस, तीर रखने का चोंगा ।
४३५८—भाथी	...	धौंकनी, अग्नि प्रज्वालन करने का यंत्र, लोहारादिकों की भट्ठी सुलगाने का चर्मनिर्मित यंत्र ।
४३५९—भानु	...	तरणी, सविता, सूर्य, आफ़ताब, सूरज, रवि ।
४३६०—भामा	...	स्त्री, लुगाई, कोपयुक्त स्त्री, क्रोधित स्त्री, तरुणी, औरत ।
४३६१—भामिनी	...	स्त्री, लुगाई, तरुणी, कुपित स्त्री ।
४३६२—भाय	...	भाई, भ्राता,—भाव,—प्रीति ।
४३६३—भायप	...	भाईवाली, भाईपन, भाईचारा, अपनाइत ।

नं० शब्द		अर्थ
४३६४—भाये	...	प्रिय लगे, सुंदर लगे, अच्छे लगे ।
४३६५—भायेँ	...	अनुमान में, समझ में, जान में ।
४३६६—भार	...	बोझ, बोझा, वज़न,—भाड़, भरसाई ।
४३६७—भारती	...	वाणी, सरस्वती, गिरा, शारदा,—भरतखंड की वस्तु ।
४३६८—भारी	...	गरू, बोझल, वज़नी,—बड़ी ।
४३६९—भारे	...	भारी, बोझ वाले, वज़नदार, गरू, बोझल,—बड़े बड़े ।
४३७०—भाल	...	माथा, मस्तक, पेशानी ।
४३७१—भालु	...	रीछ, ऋक्ष, रिच्छ, एक नख और बालोंवाला पशु ।
४३७२—भाव	...	जी की बात, हृदय का आशय, दशा, अवस्था, मतलब, मन की तरंग,—कविता के भाव,—कुंडली के १२ घर,—भावे, अच्छा लगे, प्रिय लगे, रुचे ।
४३७३—भावती	...	प्रिय, प्यारी, मनभावनी, पसन्दीदा, सुंदरी, रूपवती ।
४३७४—भावना	...	सोहावन, अच्छा लगनेवाला, पसंदीदा, दिलपसन्द, मनभावन,—श्रद्धा, रुचि,—औषध विषय में पुट ।
४३७५—भावनी	...	प्यारी, प्रिया, भानेवाली, अच्छी लगनेवाली ।
४३७६—भावा	...	प्रिय लगा, अच्छा लगा, सुहाया, पसन्द आया, सुन्दर लगा ।
४३७७—भावी	...	होनहार, होनी, भवितव्यता, होतव्यता ।
४३७८—भावै	...	प्रिय लगे, अच्छा लगे, सुहावे, पसन्द आवे, सुंदर लगे ।
४३७९—भाष	...	कहा, वर्णन किया, बयान किया ।
४३८०—भाषा	...	बोली, वाणी, ज़बान,—बोला, कहा, वर्णन किया ।
४३८१—भास	...	मालूम दिया, प्रतीत हुआ, जान पड़ा, अनुभव हुआ ।
४३८२—भित्ति	...	भीति, दीवार ।
४३८३—भिन्न	...	अलग, जुदा, पृथक्, बँटा हुआ, फूटा हुआ, विभक्त,—एक प्रकार का गणित ।
४३८४—भिनुसार	...	सबेरा, तड़का, प्रातःकाल, भोर ।
४३८५—भिरत	...	लड़ते हैं, भिड़ते हैं, जुटते हैं, युद्ध करते हैं, द्वंद-युद्ध करते हैं ।
४३८६—भिरेउ	...	लड़ा, भिड़ा, जुट गया, द्वंद-युद्ध किया ।
४३८७—भिल्ल	...	एक वन की जाति, भील, बहेलिया, व्याधा, डाकुओं की जाति ।
४३८८—भिषारि	...	भिक्षुक, भिखमगा, फ़क़ीर, मंगन, मगता, कंगला, कंगाल ।
४३८९—भीख	...	भिक्षा, याचकता, याचन ।
४३९०—भीत	...	भित्ति, दीवार,—डरा हुआ ।
४३९१—भीतर	...	अन्दर, में, बीच में ।
४३९२—भीती	...	दीवार, दिवाल, भीत,—डर, भय ।
४३९३—भीम	...	बहुत बड़ा, अतिभारी,—भयंकर, डरावन, डरावना, ख़ौफ़नाक ।
४३९४—भीर, भीरा, भीरि	...	बोझ, भीड़,—समीप, नगीच, भिड़ा हुआ, सटा हुआ,—डरपोंक ।
४३९५—भीरू	...	डरपोंकना, डराकू, डरपोंक, भयभीत, डरा हुआ ।

नं० शब्द	अर्थ
४३९६—भुआल ...	भूपाल, राजा, नृप, पृथ्वीपति ।
४३९७—भुअंग	भुजंग, व्याल, सर्प, साँप, कीरा, चक्षुश्रवा, अहि ।
४३९८—भुज ...	बाहु, भुजा, बाँह ।
४३९९—भुजग } भुजंग } ...	सर्प, व्याल, साँप, कीरा ।
४४००—भुजदंड ...	भुजा, बाहु, बाँह,—डँड़ ।
४४०१—भुजा ...	बाँह, भुज, भुजा ।
४४०२—भुव ...	भूमि, पृथ्वी, धरती, धरनी,—भुवन ।
४४०३—भुवन ...	चतुर्दश लोक, चौदहों लोक, तीनों लोक, ब्रह्माण्ड ।
४४०४—भुवनेश्वर ...	चौदहों भुवनों का स्वामी, ईश्वर, भगवान्, परमेश्वर, शिव, महादेव ।
४४०५—भुवपाल ...	राजा, पृथ्वी का पालन करनेवाला, भूपति ।
४४०६—भुवि ...	भूमि, पृथ्वी, धरा, धरनी, धरती, ज़मीन, भूमि पर, पृथ्वी में ।
४४०७—भुलाऊ ...	भुलाव,—भूलनेवाला,—भूल जा, भुलाय दे ।
४४०८—भुसुंडि ...	एक प्रकार का शस्त्र, एक तरह की शक्ति,—तोप,—मुख, मुँह ।
४४०९—भूख ...	क्षुधा, भोजन की इच्छा, छुधा, खाने की चाह ।
४४१०—भूखा ...	क्षुधित, छुधित, क्षुधार्त्त, भोजन की इच्छा करनेवाला ।
४४११—भूजब ...	भूनना,—भूँजूँगा, भूनूँगा ।
४४१२—भूत ...	जीव,—प्रेत, पिशाच,—भया हुआ, हो चुका, व्यतीत, बीता हुआ, पाँचों तत्त्व ।
४४१३—भूतल ...	पृथ्वीतल, धरातल, धरती, ज़मीन की सतह ।
४४१४—भूति ...	ऐश्वर्य, विभूति, संपत्ति,—भस्म, राख ।
४४१५—भूधर ...	पर्वत, पहाड़, धराधर, अचल ।
४४१६—भूप-भूपति } भूपाल } ...	राजा, भूपाल, पृथ्वी-पति ।
४४१७—भूमि ...	धरा, धरती, पृथ्वी, ज़मीन ।
४४१८—भूमिनाग ...	दिग्गज,—शेषनाग,—पृथ्वी भर के हाथी वा सर्पजाति ।
४४१९—भूर्जतरु ...	भोजपत्र, एक पेड़ का छिलका ।
४४२०—भूरि ...	बहुत, अधिक, ढेर ।
४४२१—भूल ...	चूक, ग़लती, विस्मृति,—अपराध, क़ुसूर ।
४४२२—भूलि ...	भूल कर, चूक कर, ग़लती से ।
४४२३—भूली ...	चूकी, अपराध किया,—चूक कर, ग़लती से ।
४४२४—भूलेहु ...	भूल कर भी, चूके भी, ग़लती से भी ।
४४२५—भूष ...	भूषित करता है, शृंगारित करता है, सजता है, सजाता है ।
४४२६—भूषन ...	अलंकार, गहना, आभरण, आभूषण ।
४४२७—भूषित ...	अलंकृत, शोभित, सुसज्जित, सजा हुआ, शृंगारित ।
४४२८—भूसुर ...	भूदेव, महीसुर, ब्राह्मण, पृथ्वी पर के देवता ।
४४२९—भृकुटि ...	भौं, भौंह, भ्रू, अब्रू ।

नं० शब्द		अर्थ
४४३०—भृगु	...	एक महर्षि का नाम।
४४३१—भृगुनाथ, भृगुपति	...	भृगुकुल में श्रेष्ठ, भृगुवंश के स्वामी, परशुराम।
४४३२—भेई	...	भेदी, मर्मज्ञ, भेदिया, भेद का जाननेवाला, राज़जो।
४४३३—भेऊ	...	भेव, भेद, मंत्र, राज़, गुप्त वार्त्ता,—फूट, फुटमत।
४४३४—भेक	...	मंडूक, मेंढ़क, मेंढुका, डड्डु, भेंक, वेंग।
४४३५—भेद	...	छिपी बात, गुप्त वार्त्ता, मंत्र, सलाह, जुदाई, अन्तर, विच्छेद, अनमेल, बीच, फ़र्क़,—फुटमत, फूट।
४४३६—भेरी	...	नगाड़ा, दुंदुभी, मुनादी, डिमडिमी, डुगडुगिया,—नरसिंह, तुरही।
४४३७—भेव	...	भेद, मर्म, राज़, सलाह, मंत्र, भिन्नता, जुदाई, फूट।
४४३८—भेष	...	वेश, रूप, स्वांग, नक़ल।
४४३९—भेषज	...	औषध, दवाई, दवा।
४४४०—भैया	...	भ्रातृ, भ्राता, भाई।
४४४१—भैंसा	...	भैंस, महिष, एक चतुष्पद पशु।
४४४२—भोग	...	विलास, सुख,—देवता का नैवेद्य,—जो कुछ भुगतना पड़े, सुख-दुःखादि जो सहना ही पड़े।
४४४३—भोगावती(भोगवती)		सर्पों की नगरी,—गंगा की उस धारा का नाम जो पाताल में है।
४४४४—भोजन	...	आहार, खाना, खाने की वस्तु, भक्ष्य।
४४४५—भोजनखानी	...	रसोई का घर, जहाँ सब प्रकार के भोज प्राप्त हों।
४४४६—भोर	...	प्रातःकाल, भिनुसार, विहान, प्रभात, सबेरा,—भूल, धोखा, संदेह।
४४४७—भोरा	...	भोला, सीधा-सादा, निष्कपट, निश्छल, मूर्ख,—धोखे से, भूल से, संदेह से, ग़लती से।
४४४८—भोरी	...	भोली, सीधी, निश्छला इत्यादि।
४४४९—भौतिक	...	शारीरिक, जीवों करके, भूतों के द्वारा।
४४५०—भौम	...	मंगल, भूमि का पुत्र, नव ग्रहों में से एक ग्रह।
४४५१—भंग	...	नाश,—नष्ट, बिगड़ा हुआ, टूटा हुआ,—वक्रता, टेढ़ाई,—टूटना,—भांग, विजया।
४४५२—भंजन	...	तोड़नेवाला, नाशक, नष्टकर्त्ता, नाशन।
४४५३—भंजि	...	नाश करके, तोड़ कर, मोड़ के, झुकाय कर।
४४५४—भंजी	...	तोड़ी, भंग की, भांगी, नष्ट की, भांजी, मोड़ी।
४४५५—भंडारू		भोज की वस्तु रखने का स्थान, अन्नादि भरने का स्थान।
४४५६—भांड़	...	विदूषक, नक़ल करनेवाला, वाहियात बकनेवाला, अश्लीलवादी, हँसानेवाला, मसखरा, मजलिसरोशन,—भांड, बरतन, पात्र, मटका।
४४५७—भाँड़े	...	बरतन में, पात्र में, कुंडे में, मटके में, भांड में।
४४५८—भाँति	...	तरह, रीति, चाल, जाति, क़िस्म।
४४५९—भाँवरी	...	फेरी, परिक्रमा, प्रदक्षिणा,—घुमाव, घुमेर, घुमरी,—पशुओं के रोम का घुमाव आदि लक्षण।

नं० शब्द		अर्थ
४४६०—भिंदिपाल	...	युद्ध करने का शस्त्र, एक प्रकार का लड़ाई का हथियार।
४४६१—भृंग	...	भ्रमर, भौंर, भँवर, भौंरा, एक गुंजार करनेवाला श्याम-वर्ण का पतंगा।
४४६२—भृंगी	...	महादेवजी के एक गण का नाम।
४४६३—भौंहँ	...	भ्रू, भौं, भृकुटि, अबरू।
म		
४४६४—मइके	...	माता के घर, नैहर, पीहर, पेके।
४४६५—मइत्री	...	मैत्री, मित्रता, दोस्ती, प्यार, हित, प्रेम, मुहब्बत।
४४६६—मकर	...	दसवीं राशि का नाम,—मत्स्य, मगर,—माघ महीना,—फरेब, मकला-पन, मगरापन।
४४६७—मकरी	...	मगर की मादिया, मगरी,—मीन,—जाल लगानेवाली मकड़ी,—एक रोग, का नाम, मचली, फ़रेबिन, धोखेबाज़िन।
४४६८—मकरंद	...	पुष्प-रस, फूलों का रस।
४४६९—मकु	...	बल्कि, किन्तु।
४४७०—मख	...	यज्ञ, जाग।
४४७१—मग	...	मगगह, मागह,—मार्ग, रास्ता, राह, पथ, पंथ।
४४७२—मगन	...	मग्न, डूबा हुआ, ग़र्क़, लवलीन, प्रसन्न, ख़ुश, तृप्त,—बेसुध।
४४७३—मगह	...	एक देश का नाम, मगध देश,—अंतर्वेद से बाहर की भूमि।
४४७४—मगु	...	मार्ग, मग, पथ, पंथ, राह, रास्ता।
४४७५—मघवा	...	देवराज, वासव, शचीपति, देवेन्द्र, इन्द्र, सहस्राक्ष।
४४७६—मचलाई	...	छैलाई, छैलगई, मचल पड़ो,—मचल कर, छैला कर, फैल कर।
४४७७—मज्जन	...	नहान, अन्हान, स्नान।
४४७८—मज्जहिं	...	नहाते हैं, अन्हाते हैं, स्नान करते हैं।
४४७९—मज्जा	...	चर्बी, मेध,—नहाया, स्नान किया।
४४८०—मझारि, मझारी	...	मध्य, बीच, अन्तर, अन्दर, भीतर, में।
४४८१—मत	...	सम्मति, राय, सलाह, समझ, धर्म, मज़हब।
४४८२—मत्त	...	उन्मत्त, मतवाला, दिवाना, पागल, बेसुध, मद्यपान किया हुआ, अहंकारी।
४४८३—मतवारे	...	मत्त, उन्मत्त, नशे में चूर, मद्यपान किये हुए, शराबी, दीवाने, बौरहे, पागल।
४४८४—मत्सर	...	ईर्ष्या, ईर्षा, डाह, दाह, जलन, कुढ़न, पराये सुख में हृदय का ताप।
४४८५—मति	...	बुद्धि, समझ, ज्ञान, इच्छा, चाह, सलाह, सम्मति, स्मृति, धारणा-शक्ति।
४४८६—मते	...	भार्य, हिसाब से, लेखे, सलाह से, समझ से।
४४८७—मथ	...	मथन कर, फेंट,—मथन करके, फेंट कर, बिलोय कर।
४४८८—मथत	...	मथन करता है, फेटता है, घचोलता है,—मथन करते ही,—मथन करते करते।
४४८९—मथन	...	मंथन, बिलोवन, फेंटन, घचोलन।

नं० शब्द		अर्थ
४४९०—मथानी	...	बिलोवनी, मथन करने की काष्ठ निर्म्मित वस्तु।
४४९१—मथि	...	मथन करके, बिलोय कर, फेंट के, घचोल कर।
४४९२—मथै	...	मंथन करे, मथन करे, बिलोवे, फेंटे।
४४९३—मद	...	अहंकार, अभिमान, शेख़ी,—मद्य, मदिरा, शराब।
४४९४—मदन	...	रतिपति, अनंग, पंचबाण, कामदेव।
४४९५—मध्य	...	बीच, भीतर, अन्दर, में।
४४९६—मध्यगति	...	बिचला मेल, बीच की चाल न धीरे न दौड़कर, बीचो बीच की पहुँच, प्रवेश।
४४९७—मध्यदिवस	...	मध्याह्न, दिन का बीच, दुपहर, दो पहर।
४४९८—मध्यम	...	बिचला, बिचोल, बिचवई, बिचला मेल,—उदासीन, घटिया, नीच, बुरा, निकृष्ट।
४४९९—मध्याह्न	...	दिन का बीच, मध्य दिवस, दो पहर।
४५००—मधु	...	चैत्र मास, चैत का महीना,—वसन्त ऋतु,—शहद, जल, मीठा,—एक दैत्य का नाम।
४५०१—मधुकर	...	भँवर, भौंरा, भ्रमर, अलि, मधुप।
४५०२—मधुप	...	मधुपान करनेवाला, भौंरा, भ्रमर, भँवर, पुष्प-रस पीनेवाला, फूलों का रस पीनेवाला।
४५०३—मधुपर्क	...	कांस्य-पात्र में दधि, मधु और घृत मिलाकर जो यज्ञ में पान किया जाता है।
४५०४—मधुर	...	मीठा, प्रिय, प्यारा।
४५०५—मन	...	हृदय, हिरदा, चित्त, आत्मा, दिल।
४५०६—मनजात	...	मन से उत्पन्न, मनोज, कामदेव, मनोभव,—चिन्ता।
४५०७—मनुजात	...	मनु से उत्पन्न, मनुष्य, आदमी।
४५०८—मनमथ	...	मन का मथन करनेवाला, पंचबाण, अनंग, कामदेव।
४५०९—मनमारे	...	उदास, सुस्त, दुःखित, चिन्तायुक्त फ़िक्रमन्द,—उदासी के साथ।
४५१०—मनसहिं	...	मन में, मन से, इच्छा को, मनोरथ को।
४५११—मनसा	...	इच्छा, मनोरथ, सलाह, राय, सम्मति, मन करके, मन के द्वारा।
४५१२—मनसि	...	मन से, मन करके, हृदय से, दिल से, मानसिक।
४५१३—मनसिज	...	कामदेव, मनोज, मनोभव, मन से उत्पन्न।
४५१४—मनाग	...	थोड़ासा, अल्प किंचित्, कुछ, मन करके।
४५१५—मनागपि	...	थोड़ा भी, कुछ भी, मन से भी, मानसिक भी।
४५१६—मनावन	...	मनावना, राज़ी करना, प्रसन्न करना।
४५१७—मनि (मणि)	...	बहुमूल्य पत्थर, जवाहिर (हीरा, पन्ना, मानिक आदि),—माला के दाने,—सर्प का मणि।
४५१८—मनियारा	...	मणिधर, मणिवाला, जौहरी, मणिवाला सर्प।
४५१९—मनु	...	मनु, मानो—वैवस्वतादि १४ मनु जिनमें से सृष्टि का क्रम हुआ, ब्रह्मा के पुत्र, मनुष्यों के आदि पुरुष, धर्म शास्त्र के प्रणेता,—जैसे।

नं०	शब्द	अर्थ
४५२०	मनुज	मनुष्य, मनु से उत्पन्न, आदमी।
४५२१	मनुजाद	मनुष्यों को खानेवाले, राक्षस, दैत्य।
४५२२	मनुसाई	भलमनसी, आदमीपन, आदमीयत,—पुरुषार्थ, मर्दी, पराक्रम।
४५२३	मनोगत	मन में प्रविष्ट, मन में धसा हुआ, निश्चित, दृढ़।
४५२४	मनोज } मनोभव }	मन से उत्पन्न, मनोज, मनसिज, कंदर्प, कामदेव।
४५२५	मनोमल	मन का विकार, मन की मैल, मानसिक बुराई, भीतर का खोटापन।
४५२६	मनोरथ	इच्छा, अभिलाषा, कामना, चाह।
४५२७	मनोरम	सुन्दर, दिलचस्प, कमनीय, चाहने योग्य, दिलपसन्द, मनमाना, जिसमें मन रम जाय।
४५२८	मनोहर	मन-हरन, मन को हर लेनेवाला, मन को छीन लेनेवाला, प्यारा, प्रिय, मनोहारा।
४५२९	मम	मेरा, अपना,—ममता।
४५३०	ममता	अपनापन, अपनायत,—मोह, माया,—मुहब्बत, प्यार।
४५३१	मय	एक मायावी दैत्य का नाम,—जब यह किसी शब्द के साथ आता है तब इसके अर्थ मिला हुआ, बना हुआ, तदाकार, तद्रूप, रत, इत्यादि होते हैं।
४५३२	मयन	कामदेव, पंचबाण, मन्मथ, मनोज, मनसिज।
४५३३	मयना	हिमालय की स्त्री का नाम, पार्वती की माता,— सारी, सिरोही।
४५३४	मयूष	सुधा, अमृत, पियूष,—किरण।
४५३५	मयंक	इन्दु, विधु, चन्द्र, चन्द्रमा।
४५३६	मयन्द	एक बानर का नाम।
४५३७	मरइ	मरै, मरता है, मरजाय।
४५३८	मरकत	नीलम, नीला, नील मणि।
४५३९	मरजाद	मर्यादा, हद्द, रीति, क़ायदा।
४५४०	मरण	मरण, मृत्यु, मौत, मीच।
४५४१	मरणशील	मरनेवाला, मरने योग्य, मरने के लायक़, मरने के स्वभाववाला।
४५४२	मरत	मरता है, मरतेही।
४५४३	मर्दन	मलना, मसलना, नाश करना, मलनेवाला, नाश करनेवाला, मसल डालनेवाला।
४५४४	मर्दा	मर्द, मरद, पुरुष,—मला, मल डाला, मसल डाला, मर्दन किया, नाश किया, पीस दिया।
४५४५	मर्म	मरम, भेद,—शरीर के वह अवयव जिन पर क्लेश पड़ने से मर जावे।
४५४६	मर्मी	भेदी, भेदिया, भेद का जाननेवाला, गुप्त विषयों को जाननेवाला, राज़दाँ।
४५४७	मरा	मर गया, नष्ट होगया, नाश को प्राप्त हुआ,—मरा हुआ, मृतक।
४५४८	मरायन्हि	मरवाय डाला।
४५४९	मारायल	जो सदा मार खाता रहे, मारख़ोरा, लतख़ोर।

नं० शब्द		अर्थ
४५५०—मराये	...	मरवाये, मार खिलवाये, नाश करवाये,—मार खिलाने से, नष्ट कराने से।
४५५१—मराल	...	हंस, राजहंस।
४५५२—मरु	...	एक देश का नाम, निर्जल देश, मरुस्थल, मारवाड़, रेगिस्तान, ऊसर,—मर जा, मर।
४५५३—मरुत	...	अनिल, वाई, वायु, हवा।
४५५४—मरोरि	...	उमेठ कर, मरोड़ के, ऐंठन देकर, मुरेर कर।
४५५५—मल	...	मैल, तलछट, गाध,—विष्ठा, गुह, मैला,—पाप, अपराध।
४५५६—मलय	...	सफ़ेद चंदन,—सुगन्धि,—सुगन्धित,—चन्दनगन्धि।
४५५७—मल्ल	...	पहलवान, लड़ाका, लड़नेवाला, योधा।
४५५८—मलाकर	...	मल की खानि, मैल का ढेर, मैले के समूह का स्थान।
४५५९—मलान	...	मैल, मैलापन, उदासी,—मैला, उदास,—घृणा, घिन, अरुचि।
४५६०—मलिन, मलीन	...	मैला, अशुद्ध, अपवित्र, बुरा, उदास।
४५६१—मष्ट	...	मौन, चुप, ख़ामोश, बस।
४५६२—मसक	...	मच्छर,—चिलार,—पानी भरने की चर्म-निर्मित थैली।
४५६३—मसदंस	...	मच्छरों के डंक, मच्छरों के काटे हुए चिह्न, मच्छरों के डंस,—मच्छर और डंस।
४५६४—मसखरी	...	मसख़रापन, दिल्लगी, हँसी, चुलबुलाहट, खिलखिलापन, हास्य की वार्त्ता।
४५६५—मसान	...	श्मशान, मरघट, मुरदा जलाने का स्थान।
४५६६—मसि	...	स्याही, कारिख, करिखा, रोशनाई।
४५६७—महत	...	बड़ा, श्रेष्ठ, महान, बहुत बड़ा।
४५६८—महतारी	...	मतारी, माई, माता, मातृ, जननी, माय।
४५६९—महति	...	बड़ी, श्रेष्ठा।
४५७०—महा	...	बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत।
४५७१—महागद	...	महा रोग, कठिन रोग, बड़ा भारी रोग, असाध्य रोग।
४५७२—महाजन	...	बड़े लोग, अच्छे लोग, श्रेष्ठ लोग,—धनी, धनवान्।
४५७३—महातम	...	माहात्म्य, बड़ाई, सराहना, प्रशंसा।
४५७४—महान	...	बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम।
४५७५—महामोह	...	अज्ञान, अत्यन्त अज्ञान, भारी मूर्खता।
४५७६—महि	...	पृथ्वी, भूमि, धरती, धरनी, ज़मीन।
४५७७—महिदेव	...	भूसुर, महीसुर, भूदेव, विप्र, द्विज, ब्राह्मण।
४५७८—महिपाल	...	भूपाल, पृथ्वी को पालन करनेवाला, भूपति, नृप, राजा।
४५७९—महिमा	...	माहात्म्य, बड़ाई, तारीफ़, प्रशंसा, सराहना।
४५८०—महिष	...	भैंस, भैंसा।
४५८१—महिषेस	...	भैंसे के स्वामी, यमराज,—महिषासुर।

नं० शब्द		अर्थ
४५८२—महिषी	...	महारानी, पटरानी, बड़ी रानी, विवाहिता स्त्री, पत्नी, भार्या, जोरू,—भैंस।
४५८३—मही	...	पृथ्वी, धरती, भूमि, ज़मीन।
४५८४—महीप	...	भूपति, पृथ्वीपति, राजा, ज़मींदार।
४५८५—महीपति / महीश्वर	...	भूपति, पृथ्वीपति, नृप, राजा।
४५८६—महीसुर	...	भूसुर, भूमिदेव, महिदेव, विप्र, ब्राह्मण।
४५८७—महेश	...	महादेवजी, शिवजी, शंकर।
४५८८—महोत्सव	...	महोच्छव, बड़ा भारी उत्साह, बड़ा उछाह, अत्यंत मंगल।
४५८९—महोष	...	एक प्रकार का पक्षी।
४५९०—माई	...	माता, मातृ, जननी,—एक ओषधि का नाम।
४५९१—माख	...	माष, उरिद, उरदी,—बड़ी जाति की मक्षिका,—रोष, क्रोध, गुस्सा, अनख।
४५९२—माखी	...	मक्खी, माछी, मक्षिका,—रुष्ट हुई, क्रोधित भई, खुनसाई, अनखाई, रिसियाई।
४५९३—मागध	...	वंश-प्रशंसक, भाट,—मगध देश का रहनेवाला।
४५९४—माघ	...	एक महीने का नाम (जिसमें सूर्य मकर राशि पर रहते हैं),—एक काव्य के ग्रंथ का नाम।
४५९५—माची	...	होने लगी, प्रारंभ हुई, जारी हुई, मची,—बहल गाड़ी के आगे का स्थान जो असबाब रखने के लिए रस्सी के जाल का बना रहता है।
४५९६—माजा	...	मांजा, वर्षा के नये जल का फेन,—साफ़ किया, मला, शुद्ध किया।
४५९७—माझ	...	मध्य, बीच, में,—एक छंद का नाम, मंजु छंद।
४५९८—मात	...	माँ, माय, माता, मातृ, जननी, माई, मैया, मतारी, महतारी।
४५९९—मात्र	...	केवल, सिर्फ़, एकही, इतनाही, उतनाही, परिमाण, वहीभर, यहीभर, सिवा इसके और कुछ नहीं।
४६००—मातलि	...	इन्द्र के सारथी का नाम।
४६०१—मातहि	...	माँ को, माता को, माय को,—मत्त को, उन्मत्त को, मतवाले को।
४६०२—माता	...	माँ, माता, जननी,—मत्त, उन्मत्त, पागल।
४६०३—माती	...	मतवाली, दीवानी, नशे में चूर, छकी हुई, बौरही, पगली।
४६०४—मातु	...	माता, माँ, माय, जननी, मातृ, मैया, माई, महतारी।
४६०५—माते	...	हे मैया, हे मा, हे माता,—मतवाले, बौरये, उन्मत्त।
४६०६—माथ / माथा	...	मस्तक, भाल, मत्था, पेशानी।
४६०७—माधव	...	लक्ष्मी के पति, नारायण,—वसंत ऋतु।
४६०८—माधुरी	...	मिठाई, मिठास, माधुर्य, रूप का लावण्य।
४६०९—मान	...	सम्मान, प्रतिष्ठा, सत्कार, आदर,—अहंकार, अभिमान, शेखी, रूठन।
४६१०—मान्य	...	मानने योग्य, सत्कार-योग्य, प्रतिष्ठा के योग्य, आदर-योग्य।

नं० शब्द		अर्थ
४६११—मान्यता	...	पूजा, प्रतिष्ठा, सत्कार, सम्मान, मान ।
४६१२—मानस	...	तालाब, सरोवर, मानसरोवर,—मन,—मन करके ।
४६१३—मानसमूल	...	मानसरोवर से निकली हुई, सरयू नदी ।
४६१४—मानसि	...	मान लीजियो, मान लेना, तू मानता है ।
४६१५—मानसिक	...	मन करके, मन से, मन के द्वारा, ध्यान से, हृदय से ।
४६१६—माना	...	मान लिया, स्वीकार किया, अंगीकार किया, कुबूल किया ।
४६१७—मानि	...	मानकर, स्वीकार करके, कुबूल करके ।
४६१८—मानिक	...	माणिक्य, लाल मणि, पद्मराग मणि, मानक, मानिक, लाल, रक्तवर्ण का एक अमूल्य मणि ।
४६१९—मानी	...	मान ली, स्वीकार कर ली,—माननेवाला,—अभिमानी, अहंकारी, अपने को लगानेवाला ।
४६२०—मानु	...	मान ले, स्वीकार कर, कबूल कर, अंगीकार करले, तिरस्कार न कर ।
४६२१—मानुष	...	मनुष्य, मनु के सन्तान, आदमी ।
४६२२—मानो	...	जैसे, यथा, जिस तरह, नाईं ।
४६२३—मानौं	...	मैं मानता हूँ, मैं स्वीकार करता हूँ,—मान लूँ, स्वीकार कर लूँ ।
४६२४—मापा	...	नाप, प्रमाणित किया, सीमा-बद्ध किया ।
४६२५—मापी	...	नापी, सीमित की, प्रमाणित की ।
४६२६—माम्	...	मुझको, मेरेको, मेरे तईं ।
४६२७—माय	...	माता, माँ, जननी,—अँटे, समाय, अमाय, अँट सके ।
४६२८—माया	...	ईश्वर की शक्ति,—इन्द्रजाल, कुहुक,—मोह, कृपा, दया, प्यार, नेह, क्षोभ, छल, कपट,—संपदा, धन-दौलत,—दम्भ ।
४६२९—मायाच्छन	...	माया से घिरा हुआ, माया से ढँका हुआ ।
४६३०—मायापति	...	श्रीरामचन्द्र, ईश्वर, भगवान्, परमात्मा ।
४६३१—मायावी	...	माया करनेवाला, कपटी, फरेबी, जालिया ।
४६३२—मायिक	...	माया का बना, झूठ, मिथ्या, कपट, छल ।
४६३३—मायी	...	माया करनेवाला, माया का स्वामी, इन्द्रजाली, कुहुक ।
४६३४—मार	...	कन्दर्प, अनंग, मीनकेतु, कामदेव,—मार दे, मारी,—मारकर ।
४६३५—मारग(मार्ग)	...	मग, पथ, पंथ, रास्ता, राह ।
४६३६—मार्गण	...	बाण, शर, तीर ।
४६३७—मारव	... ...	मत बजा, शब्द न कर,—मालवा देश, सजल देश, जिस देश में जल अधिक हो ।
४६३८—मारा	...	कामदेव, मार,—मारदिया, मार डाला, नष्ट किया ।
४६३९—मरीच	...	एक राक्षस का नाम, विश्वामित्र के यज्ञ को विध्वंस करनेवाला और स्वर्ण का मृग बनकर राम के बाण से मरनेवाला,—किरण, मयूष ।
४६४०—मारु	...	मार, नाश कर, मार दे, मार डाल ।
४६४१—मारुत	...	अनिल, वात, वायु, हवा, पवन, बतास ।
४६४२—मारुति	...	हनुमान्‌जी, मरुत के पुत्र, वायु-तनय ।

नं० शब्द		अर्थ
४६४३—मारेसि	...	मारा, नष्ट किया, मार दिया ।
४६४४—माल	...	माला, दाम, हार, समूह, राजी, श्रेणी, पंक्ति, पाँती,—धन-दौलत, जमा ।
४६४५—माल्यवंत	...	रावण के मंत्री का नाम ।
४६४६—मालव	...	एक देश का नाम, मालवा देश, सजल देश (जिस देश में जल की अधिकता है), मालवा देश के रहनेवाले ।
४६४७—माला	...	माल, हार, पंक्ति, पांती, राजी, ढेर, समूह ।
४६४८—माली	...	मालाधारी, माला को धारण करनेवाला ।
४६४९—माषी	...	क्रोधित हुई, रुष्ट हुई, झुंझलाई,—माछी, मक्खी ।
४६५०—मास	...	मांस, गोश्त,—महीना, मास ।
४६५१—मासा	...	मास, महीना,—मांस, गोश्त,—मासा, एक प्रकार की तोल, तोले का द्वादशांश ।
४६५२—माहुर	...	हलाहल, गरल, विष, ज़हर ।
४६५३—मिटई / मिटहि	...	मिट जाता है, नष्ट हो जाता है ।
४६५४—मित	...	मर्यादा, बन्धेज, बन्धान, नाप, सीमा, हद्द, अन्त, नतीजा, थोड़ासा, प्रमाणयुक्त ।
४६५५—मित्र	...	मीत, दोस्त, प्रिय, साथी, संगी, प्रिय, बन्धु ।
४६५६—मिताई	...	मित्रता, दोस्ती, संग, साथ ।
४६५७—मिति	...	मर्यादा, बन्धेज, नाप, सीमा, हद्द, अन्त, नतीजा ।
४६५८—मिथ्या	...	झूठ, अनृत, असत्य, फरेब, लगो ।
४६५९—मिथिला	...	राजा जनक की नगरी, जनकपुर, तिरहुत ।
४६६०—मिथिलेश	...	मिथिला के राजा, राजा जनक ।
४६६१—मिल	...	मिलकर,—मिल ले,—मिल जा ।
४६६२—मिलई	...	मिलता है, मिल जाता है, एक होजाता है, समान हो जाता है, बराबर हो जाता है ।
४६६३—मिलत	...	मिलता है, मिलतेही ।
४६६४—मिलन	...	मेल, संयोग ।
४६६५—मिलनी	...	मिलन, मिलाप, संयोग,—मिलनेवाली, मेल करनेवाली, मिल जानेवाली ।
४६६६—मिला	...	मिल गया, संयुक्त हुआ ।
४६६७—मिलाप	...	मेल, संयोग, संग ।
४६६८—मिलि	...	मिलकर, इकट्ठे होकर, जमा होकर ।
४६६९—मिलित	...	मिला हुआ, संयुक्त, युक्त, सहित, साथ ।
४६७०—मिले	...	मिल गये, प्राप्त हुए, पाये गये ।
४६७१—मिस- / मिसि / मिसु	...	व्याज, बहाना, हीला, सबब ।
४६७२—मीच (मीचु)	...	मौत, मृत्यु, कज़ा, मार डालनेवाला ।

नं० शब्द		अर्थ
४६७३—मींजत	...	मलता है, मसलता है।
४६७४—मीठी	...	मिष्ट, मधुर।
४६७५—मीत	...	मित्र, दोस्त, सुजन, सुहृद्, सखा।
४६७६—मीन	...	मछली, मछरी, झख,—भगवान् का एक मत्स्यावतार, मत्स्य।
४६७७—मीला	...	मेल, मिला,—मिलाप, मिल गया,—मिल कर।
४६७८—मुइ	.	मर कर, मरने पर, मुये पर,—मरने से।
४६७९—मुक्त	...	छूटा हुआ, खुला हुआ, स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी, मनोनुगामी,— जन्म-मरण-रहित।
४६८०—मुक्ति	...	मोक्ष, गति, परम पद।
४६८१—मुकुट	...	किरीट, राजा वा देवताओं के सिर पर धारण करने की वस्तु।
४६८२—मुकुत	...	मुक्त, छूटा हुआ, खुला हुआ, स्वच्छन्द, मनोनुगामी।
४६८३—मुकुता } मुकुताहल	...	मुक्ता, मोती।
४६८४—मुकुर	...	दर्पण, शीशा, आईना, आरसी।
४६८५—मुकुंद	...	मुक्ति का देनेवाला, मुक्तिदाता, भगवान्, ईश्वर।
४६८६—मुख	...	मुँह, आस्य, वदन।
४६८७—मुख्य	...	श्रेष्ठ, अग्र-गण्य, अगुवा, सर्वोत्तम, नामी, अफ़सर।
४६८८—मुखर	...	शब्द, आवाज़, झनकार,—वाचाल, बकवादी, अधिक बोलनेवाला।
४६८९—मुखागर	...	मुखाग्र, मुँह ज़बानी, ज़बानी, कंठाग्र, कंठ, याद।
४६९०—मुखिया	...	अगुवा, अग्रगण्य, श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, नामी।
४६९१—मुठभेर	...	समीप की भेंट, अति निकट से मिलाप, सभी से मेल होना, आमने-सामने से दो दलों का मिलाप, नज़दीक की मुलाक़ात।
४६९२—मुठिका	...	मुष्टिका, मुक्की।
४६९३—मुड़ाए	...	मुड़ाने से, क्षौर कराने से,—धोखा खाये, ठगे गये, संन्यासी भये।
४६९४—मुद	...	आनंद, ख़ुशी, हर्ष, प्रसन्नता, सुख।
४६९५—मुद्गर	...	मुग्दर, व्यायाम करने की एक वस्तु, एक प्रकार का शस्त्र।
४६९६—मुद्रिका	...	मुँदरी, अँगूठी, छल्ला, हाथ की अँगुली में पहिनने का भूषण।
४६९७—मुदित	...	प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, सुखी, ख़ुश।
४६९८—मुदिता	...	प्रसन्न स्त्री,—प्रसन्नता।
४६९९—मुधा	...	अनृत, झूठ, मिथ्या, वृथा, व्यर्थ।
४७००—मुनि	...	मौनशील, मननशील, ऋषि, तपस्वी, भजनानन्दी।
४७०१—मुनिपट	...	मुनियों के वस्त्र, बल्कल वसन, बोकले के वस्त्र, वृक्ष की छाल के वस्त्र।
४७०२—मुनिराज	...	मुनि-श्रेष्ठ, मुनियों में प्रधान,—वशिष्ठ मुनि।
४७०३—मुनिवर	...	मुनि-वर्य, मुनि-प्रधान, मुनियों में श्रेष्ठ, बड़े बड़े प्रसिद्ध मुनि।
४७०४—मुनिंदा	...	मुनीन्द्र, मुनियों में इन्द्रवत्, मुनिराज, मुनि-श्रेष्ठ।
४७०५—मुयहु	...	मरे पर भी, मरने पर भी, मृतक को भी, मुरदे को भी।
४७०६—मुरा	...	मुड़ा, फिरा, लौटा, घूमा, पलटा।

नं० शब्द		अर्थ
४७०७—मुरि	...	मुड़ कर, फिर कर, लौट कर, घूम कर, पलट कर ।
४७०८—मुर्च्छा	...	मूर्च्छा, बेहोशी, अचेतनता, चेतना-रहित अवस्था ।
४७०९—मुरुछि	...	मूर्छा खाकर, बदहवास होकर, अचेत हो कर ।
४७१०—मुरुछित	...	मूर्च्छित, मूर्च्छा खाया हुआ, बदहवास, अचैतन, चेतना-रहित ।
४७११—मुरे	...	फिरे, लौटे, घूमे, पलटे, बहुरे, वापस आये ।
४७१२—मुष्टि	...	मुट्ठी, मुष्टिका, मुठिका, मुक्की ।
४७१३—मुसुकाई	...	मुसकाय कर, मंद हास्य करके, धीरे से हँस कर, अल्प हँस कर ।
४७१४—मुसुकाने	...	मुस्कराये, अल्प हँसे, साधारण हँसे, मंद हँसे, धीरे से हँसे ।
४७१५—मूक	...	जो बोल न सके, वाचा शक्ति-रहित, गूंगा ।
४७१६—मूढ़	...	मूर्ख, उजड्ड, बेवक़ूफ़, बेशऊर, बेहूदा, नीच ।
४७१७—मूर (मूरि)	...	जड़ी, बूटी, मूल, जड़, सोर ।
४७१८—मूरख	...	मूख, बेवक़ूफ़, बेपढ़ा, निरक्षर, निर्बुद्धि, बेशऊर, बे अक़्ल ।
४७१९—मूरत	...	मूर्त्ति, प्रतिमा, पुतली, चित्र, तसवीर ।
४७२०—मूरतवंत	...	मूर्त्तिमान, प्रतिमावाला, ज्यों का त्यों, जिसकी पुतली वा तसवीर ठीक ठीक बनी हुई हो ।
४७२१—मूल	...	जड़, कारण, सोर, हेतु, निमित्त,—असल, मूल धन, जमा, पूंजी ।
४७२२—मूलक	...	मूली, मूल का, जड़ का, जड़-संबंधी, दंड, लकड़ी, शाखा, कमल-नाल, मृणाल ।
४७२३—मूषक	...	मूस, मूसा, चूहा ।
४७२४—मृग	...	हिरन, एक चतुष्पद जीव जिस की नाभि से कस्तूरी निकलती है, चतुष्पद पशु मात्र ।
४७२५—मृगजल	...	मृग-तृष्णा का जल,—(वैशाख-ज्येष्ठ में मृग प्यासा हो कर पृथ्वी पर धूप को जल मान कर दौड़ता दौड़ता मर जाता है यही, मृग-तृष्णा है) ।
४७२६—मृगपति	...	मृग-राज, सिंह, शेर, बाघ, मृगों का राजा, पशुओं का राजा ।
४७२७—मृगमद	...	मृगों का मद, मृग-नाभि, कस्तूरी मुश्क, मिश्क ।
४७२८—मृगया	...	शिकार, आखेट, अहेर ।
४७२९—मृगराज	...	सिंह, मृगों का पति, पशुओं का राजा, बाघ, शेर ।
४७३०—मृगाधीश	...	मृगों का स्वामी, मृगराज, सिंह ।
४७३१—मृगी	...	मृगपत्नी, मृग की स्त्री, हिरनी, हरिनी, रोग विशेष ।
४७३२—मृणाल	...	कमलनाल, कमल की डाँड़ी, कमल की जड़ ।
४७३३—मृतक	...	मुरदा, मराहुआ, शव, प्राणबिना, निर्जीव ।
४७३४—मृत्यु	...	मौत, मीचु, काल ।
४७३५—मृदु / मृदुल	...	कोमल, सरस, नरम, मुलायम ।
४७३६—मृदुलाई	...	कोमलता, सरसता, नर्मी, मुलायमत ।
४७३७—मृदंग		एक बाजा, पखावज ।
४७३८—मृषा	...	झूठ, मिथ्या, अनृत, वृथा, व्यर्थ, बेफ़ायदे ।

नं० शब्द		अर्थ
४७३९—मेकल	...	एक ऋषि का नाम, एक पर्वत का नाम जहाँसे नर्मदा नदी निकली है।
४७४०—मेकलसुता	...	मेकल की कन्या, नर्मदा नदी।
४७४१—मेखल मेखला	...	कटिसूत्र, किंकिणी, करधनी, तागड़ी, तड़ागी।
४७४२—मेघ	...	जीमूत, बादल, जलद, अभ्र।
४७४३—मेघडम्बर	...	एक प्रकार का बृहच्छत्र, बड़ा भारी छाता, डेरा, तम्बू, शामियाना।
४७४४—मेघनाद	...	इन्द्रजीत, रावण का ज्येष्ठ पुत्र, बादल के समान गर्जनेवाला।
४७४५—मेचक	...	स्याम, काला, अत्यन्त काला।
४७४६—मेटि	...	मिटा कर, मिटाय कर, नष्ट करके, बरबाद करके।
४७४७—मेडकनी	...	मेण्डुकी, मेघी, मेंडकी।
४७४८—मेदनी	...	पृथ्वी, भूमि, धरती, धरनी, ज़मीन।
४७४९—मेधा	...	बुद्धि, समझ, अक्ल़।
४७५०—मेरु		सुमेरु पर्वत।
४७५१—मेल	...	मिलाप, योग, संयोग, मिलाव, मिलन।
४७५२—मेला	...	मिलाया, डाला, फेंका,—किसी उत्सव के लिए जन-समुदाय, भीड़भाड़।
४७५३—मेली	...	मिलाई, डालदी, डाली, फेंकी, पहिराई, पहिनायदी,—डालकर, पहिराय कर।
४७५४—मेवा	...	फल, समर।
४७५५—मेष	...	मेढ़ा, भेंड़, ज्योतिष में प्रथम राशि का नाम।
४७५६—मैथिली	...	मिथिला देश की कन्या, जानकी, सीता, रामप्रिया।
४७५७—मैना	...	हिमाचल की स्त्री, पार्वती की माता।
४७५८—मैनाक	...	एक पर्वत का नाम।
४७५९—मैया	...	माता, मातृ, माय, माई, मतारी, महतारी।
४७६०—मैला	...	अस्वच्छ, अशुद्ध, गदला, धुन्धला, बुरा, दुःखित, दुखी, चिन्तायुक्त, गन्दा, अपवित्र, विष्ठा, बीट, पुरीष।
४७६१—मो	...	मेरा, मुझ।
४७६२—मोई	...	मोही, मोह को प्राप्त, बेहोश, मरी हुई,—अल्प भिंगोई, कुछ आर्द्र करी भई, आर्द्र करके, मोय कर।
४७६३—मोक्ष	...	मुक्ति, गति, निर्वाण,—छुट्टी, रिहाई।
४७६४—मोचन	...	छुड़ानेवाला, मुक्त करनेवाला, उद्धार करनेवाला, छुटकारा करनेवाला।
४७६५—मोट	...	मोटा, गुदगर, स्थूल, पृथुल,—खेत में पानी सींचने की पखाल।
४७६६—मोद	...	हर्ष, खु़शी, प्रसन्नता, आह्लाद।
४७६७—मोदक	..	लड्डू, लडुवा,—प्रसन्न करनेवाला, हर्ष-दायक, प्रसन्नता प्रकाश करनेवाला।
४७६८—मोर(मोरा)	...	मेरा, अपना,—मयूर, शिखी, केकी।
४७६९—मोरपच्छ	...	मोरपक्ष, मोर के पंख, मयूर के पर, मोरपंख।
४७७०—मोरहुति	...	मेरी तरफ़ से,—मेरेवाली,—मेरी पारी, मेरी बेर,—मेरी सी,—मेरी थी।

नं० शब्द		अर्थ
४७७१—मोल	...	मूल्य, मौल्य, दाम कीमत ।
४७७२—मोसन	...	मुझसे, मेरेसे, मेरे साथ ।
४७७३—मोह	...	अज्ञान, अविद्या, माया,—मूर्च्छा, बेहोशी,—प्यार, दया, लाड़, दुलार, स्नेह ।
४७७४—मोहमय	...	झूठा, महामूर्ख, अज्ञानपूर्ण, मायाच्छादित, स्नेहमय ।
४७७५—मोहा	...	मूर्च्छा, अज्ञान,—मोहित किया, ठगलिया, भुलवाया, छला, बेसुध किया ।
४७७६—मोंहि	...	मुझको, मेरेतईं,—मोहित करके, बहकाकर, छलकर, बेसुध करके ।
४७७७—मोहू	...	मोह, अज्ञान,—मुझे भी, मुझको भी, मेरेको भी ।
४७७८—मौलि	...	माथा, सिर, भाल, मस्तक ।
४७७९—मंगता / मंगन	...	माँगनेवाला, भिक्षु, भिखारी, भिखमंगा, याचक ।
४७८०—मंगल	...	शुभ, भला, हितकर, कल्याण ।
४७८१—मंगलद्रव्य	...	मंगल-सूचक वस्तु (पुष्प, पल्लव, कुंकुम, कलश, इत्यादि) ।
४७८२—मंगलमय	...	आनन्दमय, आनंदयुक्त, आनन्द-पूर्ण, कल्याण-पूर्ण ।
४७८३—मंच	...	मचान, मांची, मेज़, ऊँची बैठने की ठहर ।
४७८४—मंजन(मज्जन)	...	स्नान, प्रक्षालन, नहान, धोवन ।
४७८५—मंजीर	...	पायजेब, शब्द करनेवाला पैर का आभूषण, नूपुर ।
४७८६—मंजु	...	सुन्दर, सुहावन, प्रिय, मनोहर ।
४७८७—मंजुल	...	सुंदर, सुहावना, प्यारा, रंजक, मनहरन ।
४७८८—मंजूषा	...	संदूक, बकस, आलमारी ।
४७८९—मंडन	...	भूषण, गहना, पहिरने की वस्तु, शृंगार ।
४७९०—मंडप	...	वेदी, तोरणादि से सँवारा हुआ उत्सवस्थल ।
४७९१—मंडल	...	घेरा, गोलचौतरा, हाता,—समूह, गोलाकार होकर मनुष्यों का खड़ा होना ।
४७९२—मंडली	...	समूह, दल, टोली, जमाअत ।
४७९३—मंडलीक	...	राजा, मंडली का सरदार, मंडली बनानेवाला, मंडलेश्वर ।
४७९४—मंडित	...	शोभित, भूषित, पहिराया, ओढ़ाया हुआ, सुसज्जित, बनाया हुआ, सजाया हुआ, सजा हुआ ।
४७९५—मंत्र	...	गुरु का उपदेश, जपोद्देश्य वाक्य,—सलाह, उपदेश, वेद का अंश, दीक्षा, भेद की बात, गुप्त वार्त्ता ।
४७९६—मंत्रराज	...	राम तारक मंत्र, रामषडाक्षर मंत्र, राम-नाम-मंत्र ।
४७९७—मंत्री	...	मंत्रवेत्ता, मंत्र जाननेवाला, उपदेशक, सलाहकार, अमात्य, वज़ीर ।
४७९८—मंद	...	नीच, धीरें, अभागा, मूर्ख, मलिन, बुरा,—एक वार का नाम, शनि, शनिश्चर,—अधम ।
४७९९—मंदर	...	मन्दराचल, एक पर्वत का नाम ।
४८००—मन्दा	...	नीच, अधम, मूर्ख, मलिन, बुरा, अभागा, शनि, शनिश्चर ।
४८०१—मन्दाकिनी	...	श्रीगंगा जी के उस धारा का नाम जो स्वर्ग म बहती है ।
४८०२—मन्दिर	...	देवस्थान, देवालय, गृह, मकान, घर ।
४८०३—मन्दोदरि	...	रावण की स्त्री, पंचकन्या में से एक ।
४८०४—माँगउँ	...	मैं माँगता हूँ, मैं याचना करता हूँ ।

नं० शब्द		अर्थ
४८०५—माँगने	...	याचक गण, भिखारी,—याचना के लिए, भिक्षार्थ।
४८०६—माँगा	...	याचना की, भिक्षा की, जाँचा, जाचा।
४८०७—माँजा	...	एक प्रकार के रोग का नाम।
४८०८—माँझ	...	मध्य, बीच, अंदर, में।
४८०९—मांडवी	...	श्रीलक्ष्मण जी की स्त्री का नाम।
४८१०—मांस	...	मांस, सालन, गोश्त।
४८११—माँहीं	...	भीतर, अन्दर, में।
४८१२—मुंड	...	मूड़, सिर, सीस, कपार।
४८१३—मुंडित	...	क्षौरकृत, मूंडा भया।
४८१४—मुँह	...	आस्य, वदन, मुख।
४८१५—मुँहभर	...	मुख-पूर्ण, समस्त मुख, समूचा मुँह, पूर्ण मुख।
४८१६—मूँदे	...	बंद किये, ढाँप दिये, तोप दिये, छिपा दिये।
य		
४८१७—यक्ष	...	देवजाति विशेष, कुवेर के अनुचर।
४८१८—यक्षराज	...	कुवेर, यक्षों के राजा।
४८१९—यज्ञ	...	यज्ञ, जाग, होम, हवन।
४८२०—यज्ञपुरुष	...	श्रीमन्नारायण।
४८२१—यज्ञोपवीत	...	यज्ञसूत्र, जनेऊ, बरुवा।
४८२२—यत्	...	जितना, जहाँतक, जो, जिसका,—जीता हुआ, भुक्त।
४८२३—यतन (यत्न)	...	उपाय, उद्योग, प्रयत्न, तदबीर, बन्दोबस्त।
४८२४—यथा	..	जैसे, ज्यों, जिस प्रकार से, जिस तरह।
४८२५—यदपि	...	यद्यपि, यदि भी, गोकि, चाहे, अगरचे।
४८२६—यदा	....	जब, जिस समय, जिस वक्त्।
४८२७—यदि	...	अगर, चाहे, जो, गो।
४८२८—यदु	...	एक चन्द्रवंशी प्रसिद्ध राजा का नाम।
४८२९—यम	...	यमराज, जम, कृतान्त,—योग का एक अंग, संयम।
४८३०—यमदग्नि	...	एक मुनि का नाम, परशुराम के पिता।
४८३१—यमुना	...	एक नदी का नाम, जमना, यमराज की बहिन, श्रीकृष्णचन्द्र की पटरानी, सूर्य की कन्या, कालिन्दी।
४८३२—यवन	...	एक म्लेच्छ जाति, मुसलमान।
४८३३—यश	...	कीर्त्ति, नेकनामी, भलाई, नामवरी।
४८३४—यह	...	वर्त्तमान वस्तु, सामने की चीज़, इंगित वस्तु।
४८३५—याग	...	यज्ञ, जज्ञ, होम, हवन।
४८३६—याचक	...	जाचक, भिक्षुक, भिखारी, मंगन, मंगता।
४८३७—याज्ञवल्क्य	...	एक महर्षि का नाम।
४८३८—यातना	...	जातना, सांसत, दंड, कठोर दंड।
४८३९—यातुधान	...	राक्षस, निशाचर, दैत्य।

नं० शब्द		अर्थ
४८४०—यान	...	वाहन, सवारी, असवारी ।
४८४१—याम	...	प्रहर, पहर ७½ घड़ी, ३ घंटा, रात दिन का आठवाँ हिस्सा।
४८४२—यामिनी	...	रात्रि, निशि, निशा, रजनी, रात ।
४८४३—यावक	...	अलक्तक, जावक, अलता, महावर ।
४८४४—यावत	...	जबतक, जबताईं, जितनी देरतक, जहाँतक ।
४८४५—युक्त	...	सहित, संयुक्त, साथ ।
४८४६—युग	...	दो, जोड़ा, जुग,—काल विशेष, सत्ययुगादि ४ युग ।
४८४७—युगल	...	दोनों, जोड़ी की जोड़ी।
४८४८—युवती	...	युवा स्त्री, कामिनी, जवान औरत, स्त्री, तरुणी ।
४८४९—युवराज	...	राजकुमार, राज्याधिकारी ।
४८५०—युवा	...	तरुण, जवान ।
४८५१—यूहा, यूथ	...	दल, समूह, झुंड ।
४८५२—यूथप	...	दलपति, यूथपति, सेनापति, सरदार, अफ़सर ।
४८५३—ये	...	जे, जो, जो लोग ।
४८५४—येन	...	जिसने, जिस करके, जिससे, जिसके द्वारा ।
४८५५—योग	...	संयमनियमादि अष्टांग योग,—तप, भगवदाराधन, ग्रहों का मेल-मिलाप, मेल, संबन्ध, जोड़,—समाधि ।
४८५६—योगी	...	योग करनेवाला, ऋषि, मुनि, योग के साधक, सिद्ध।
४८५७—योजन	...	चार कोस, आठ मील,—मिलाव, जोड़न, सांटा, घालमेल, दो या अधिक वस्तुओं को एक में मिलाना।
४८५८—योतषी	...	ज्योतिषी, गणक, ज्योतिष विद्या को जाननेवाला ।
४८५९—योधा	...	योद्धा, लड़ाका, युद्ध करनेवाला, बहादुर, शूर-वीर, मल्ल ।
४८६०—योनि	...	भग, प्राणियों के उदर से निकलने का मार्ग,—प्राणियों की जाति (जैसे-मनुष्य, पशु, पक्षी, इत्यादि) ।
४८६१—योसि	...	जो तू है।
४८६२—यौवन	...	जोवन, जवानी, तरुणाई, शबाब ।
४८६३—यं	...	जिसको ।
४८६४—यंत्र	...	कल, चक्र, तंत्रविषयक यंत्र, ताला ।
४८६५—यंत्रित	...	कल में दबा हुआ, पीड़ित, बन्द किया हुआ, ताले में बन्द ।
४८६६—यंत्री	...	यंत्र का स्वामी, यंत्र का बनानेवाला, यंत्र का साध्य देवता ।
र		
४८६७—रखवारी	...	रक्षा, राखी, निगहबानी, चौकसी, हिफ़ाज़त ।
४८६८—रखवारे	...	रक्षक, राखे, निगहबान, मुहाफ़िज़ ।
४८६९—रघु	...	सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध राजा का नाम जिनके वंश में श्रीरामावतार हुआ।
४८७०—रघुनाथ, रघुनायक	...	रघुकुल के स्वामी, श्रीरामचन्द्र ।
४८७१—रघुपति	...	रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र ।

नं० शब्द		अर्थ
४८७२—रघुबर	...	रघुकुल में श्रेष्ठ, श्रीरामचन्द्र ।
४८७३—रघुराज	...	रघुकुलाधिपति, श्रीरामचन्द्र।
४८७४—रच्छक	...	रक्षक, रक्षा करनेवाला, रखवारा, राखा, निगहबान, चौकीदार।
४८७५—रच्छहिं	...	रक्षा करते हैं, रखवाली करते हैं, निगहबानी करते हैं, चौकी देते हैं।
४८७६—रच्छा	...	रक्षा, राखी, रखवाली, निगहबानी, चौकीदारी।
४८७७—रचत	...	बनाता है, निर्माण करता है, रचना करता है।
४८७८—रचना	...	बनाव, बनावट, निर्माण, गढ़न, गढ़ंत।
४८७९—रचहि	...	बनाते हैं, रचते हैं, निर्माण करते हैं, गढ़ते हैं।
४८८०—रचित	...	रचा हुआ, बनाया भया, निर्मित, निर्माण किया हुआ, गढ़ा हुआ।
४८८१—रचु	...	रच, बनाउ, बनाओ, गढ़, निर्माण कर।
४८८२—रज	...	रेणु, रेत, गर्दा, धूल,—स्त्रियों का पुष्प, रजस्वला का रक्त, ऋतुकाल का रक्त,—रजोगुण।
४८८३—रजक	...	धोबी, कपड़ा धोनेवाला।
४८८४—रजत	....	रौप्य, रूपा, चाँदी।
४८८५—रजधानी	...	राजधानी, राजा के रहने का स्थान, राजा के रहने का पुर वा ग्राम, अपने राज्य मात्र में जहाँ राजा सर्वदा रहे।
४८८६—रजनी	...	रात, रात्रि, निशि, निशा, तमी, शर्वरी, यामिनी।
४८८७—रजनीचर	...	रात्रि में चलने-फिरने-खाने-वाले, निशाचर, रात में घूमनेवाले, असुर, राक्षस।
४८८८—रजनीमुख	...	संध्या-काल, सायंकाल, प्रदोषकाल, दिन की समाप्ति और रात के आरंभ की सन्धि।
४८८९—रजाई	...	आज्ञा, आयसु, रज़ा, हुक्म, छुट्टी, मोहलत।
४८९०—रजायसु	...	राजाज्ञा, राजा की आज्ञा, राजा का हुक्म,—आज्ञा।
४८९१—रज्जु	...	रस्सी, डोरी, जेवरी, रसरी, लेजु, लेजुर, लेजुरी।
४८९२—रट	...	रटन, धुन, धुन बाँध कर बोलना, किसी बात का निरन्तर कहे जाना।
४८९३—रटन	...	रट, निरन्तर कहना, निरंतर की कहन, घोकन, धुन, एक ही बात को बेर बेर कहना।
४८९४—रटहिं	...	रटते हैं, घोकते हैं, याद करते हैं, धुन बाँधते हैं।
४८९५—रण	...	युद्ध, लड़ाई, जूझन, जुझाव, समर, जंग।
४८९६—रत	...	निरत, तत्पर, मगन, मग्न, डूबा हुआ, लगा हुआ, दत्तचित्त, मशग़ूल।
४८९७—रतन	...	रत्न, जवाहिर, बहुमूल्य, पाषाण, बेशक़ीमत पत्थर।
४८९८—रतनारे	...	लाल लाल, लाल रंग के, अरुनारे, लाली लिये, सुर्ख़ीमायल।
४८९९—रति	...	प्रीति, स्नेह, प्यार, अनुराग, आसक्ति,—कामदेव की स्त्री का नाम,—मैथुन, क्रीड़ा।
४९००—रथ	...	चार पहियों का यान, घोड़ों की गाड़ी, राजा वा धनिकों की सवारी।
४९०१—रथक्रांत	...	अफ़्रिका देश।
४९०२—रथांग	...	पहिया, गाड़ी का चक्का,—चक्र, एक शस्त्र,—चकवा-चकवी पक्षी।

नं० शब्द		अर्थ
४९०३—रथी	...	रथ का स्वामी, रथ पर चढ़नेवाला, रथयुक्त, रथारूढ़।
४९०४—रद	...	दाँत, दन्त,—निकम्मा, निष्प्रयोजन, बर्त्ती हुई वस्तु, उच्छिष्ट,—उगार, उगाल, वाँत, छांट, क़ै, छांडन, उगलन।
४९०५—रदन	...	दाँतोंवाला, दाँतों करके,—फेंकने योग्य, रद करने योग्य, त्यागने योग्य, रद का बहुवचन।
४९०६—रदपट	...	दाँतों का परदा, दाँतों की आड़, अधरोष्ठ, होंठ, ओष्ठ, ओंठ।
४९०७—रनिवास	...	अन्तःपुर, महल, रानियों के रहने का स्थान।
४९०८—रवि	...	भानु, सविता, दिवाकर, दिनकर, सूर्य, सूरज, आफ़ताब।
४९०९—रवितनुजा, रविनंदिनि	...	सूर्य की कन्या, कालिंदी, यमुना।
४९१०—रविमणि	...	सूर्यकान्ता मणि, सूरजमुखी शीशा, आग झरनेवाला काँच, आतशी शीशा।
४९११—रमेश	...	रमापति, लक्ष्मीपति, नारायण, विष्णु भगवान्।
४९१२—रमन, रमण	...	रमनेवाला, विहार करनेवाला, यति,—व्यापक,—क्रीड़ा, विहार, खेल, मनबहलाव।
४९१३—रमणी	...	रमण करनेवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी, जोरू।
४९१४—रमा	...	मा, लक्ष्मी।
४९१५—रमाविलास	....	लक्ष्मी का विलास, धन, रुपया-पैसा, दौलत।
४९१६—रम्य	...	सुंदर, रमणीक, रमण-योग्य, मनोहर, दिलचस्प।
४९१७—रय	...	वेग, जल्दी, शीघ्रता, तेज़ी।
४९१८—रये	.	रँगे, रँगे हुए, रमे, तन्मय, गड़ागप, बेसुध,—मथे, बिलोये।
४९१९—रव	...	बोल, शब्द, गुंजार, आवाज़।
४९२०—रवि	...	भानु, तरणि, सविता, दिनकर, सूर्य, सूरज।
४९२१—रविकर	...	सूर्य की किरण।
४९२२—रस	...	विषय, सार, बल, प्रेम, शृंगार के नव रस, भोजन के छः रस।
४९२३—रसना	...	वाणी, जिह्वा, जीहा, ज़बान।
४९२४—रसा	...	पृथ्वी, भूमि, धरा, धरती, धरनी, ज़मीन।
४९२५—रसातल	...	धरातल, पृथ्वी-तल,—सात पातालों में से छठवाँ पाताल।
४९२६—रसाल	...	मीठा,—आम का पेड़ वा फल,—रसालय, रसवाला, सरस।
४९२७—रसिक	...	रसास्वादी, रसील, रस-ज्ञाता, लंपट, शौकीन, ऐयाश, मौजी, प्रेमी।
४९२८—रह	...	रहु, रह जा, ठहर जा, था, रहा,—रास्ता, मार्ग।
४९२९—रहन, रहनि	...	बात, कहन, सलाह, राय, कहावत, कहनावत।
४९३०—रहस्य	...	गुप्त तत्त्व, गुप्त वार्त्ता, मंत्र, भेद, मर्म, सलाह, राज़।
४९३१—रहसि	...	हर्ष-युक्त,—एकांत, निर्जन, अकेला स्थान।
४९३२—रहा	...	था,—शेष, बाक़ी, बचा हुआ, बचा।
४९३३—रहित	...	हीन, शून्य, बिना, छोड़ कर, ख़ाली, वर्जित, त्यक्त, पृथक्, भिन्न।

नं०	शब्द		अर्थ
४९३४	—रहो	...	थी,—शेष, बाक़ी, बची, बची हुई ।
४९३५	—रहे	...	थे,—बचे, बचे हुए, अवशेष ।
४९३६	—राई	...	एक प्रकार का अन्न, आसुरी, छोटी सरसों, राय, राव, राजा ।
४९३७	—राउ / राऊ	...	राव, राजा, नृप, प्रधान ।
४९३८	—राउत	...	सरदार, नायक, स्वामी, अफ़सर, राज-भवन, राज-मंदिर, राज-स्थान, राजा का घर ।
४९३९	—राउर	...	आपका, तुम्हारा ।
४९४०	—राका	...	रात, रात्रि, निशि, पौर्णिमा की रात ।
४९४१	—राकेस (राकेश)		पूर्ण चन्द्र, पूर्णमासी का चाँद, पौर्णिमा की रात्रि का स्वामी ।
४९४२	—राखहु	...	रख लो, बचा लो, रक्षा करो, सँभालो ।
४९४३	—राखा	...	रक्खा, स्थापन किया, बचाया,—रक्षक, रखवाला ।
४९४४	—राखी	...	रक्खी, बचाई, स्थापित की,—रक्षित की,—रक्षा, रखवाली,—भस्म, क्षार, छार ।
४९४५	—राग	...	अनुराग, प्रीति, प्रेम,—गान, गीत, तान,—गान के अधिष्ठाता ।
४९४६	—राच्छस	...	राक्षस, यातुधान, निशिचर, दैत्य ।
४९४७	—राचा	...	रचा, रचाया, रचना किया, मनसूबा किया,—लगा, तत्पर हुआ, लग गया, लगा भया ।
४९४८	—राज	...	स्वाधीनता,—स्वाधीन पृथिवी, स्वाधीन नगर, बादशाहत ।
४९४९	—राजत	...	सोहता है, विराजमान है, बैठा है, शोभा पाता है, शोभायमान है,—भला लगता है ।
४९५०	—राजधानी	...	राजा के निवास का नगर, दारुस्सलतनत ।
४९५१	—राजनय / राज-नीति	...	राजाओं की नीति, राजाओं के विचार, राजाओं के सिद्धान्त ।
४९५२	—राज मराल	...	राज-हंस ।
४९५३	—राजा	...	राज करनेवाला, प्रजापालक, देशाधिपति ।
४९५४	—राजित	...	बैठा हुआ, शोभायमान, विराजित ।
४९५५	—राजी	...	पंक्ति, प्रसंग, श्रेणी,—विराजी, बैठी, शोभित हुई, विराजमान भई ।
४९५६	—राजीव	...	कमल, पद्म, सरोज, कँवल ।
४९५७	—राजे	...	राजा का बहुवचन,—शोभित हुए, विराजे, बैठे ।
४९५८	—राजेंद्र	...	प्रधान राजा, श्रेष्ठ राजा, महाराजा, कई राजाओं का राजा, राजाओं का शासन-कर्त्ता, राजाओं में इन्द्रवत् ।
४९५९	—राता	...	लाल रंग वाला,—रंगा हुआ, रत, प्रीतियुक्त,—रत हुआ, प्रीतियुक्त हुआ ।
४९६०	—राति / राती	...	लाल रंग की,—रम गई, रत हो गई, लग गई, तत्पर हुई,—रात, रात्रि, निशि, रजनी,—रंगीहुई, तत्पर, तन्मय ।
४९६१	—रानी	...	राजा की पत्नी, राजा की स्त्री, राजा की जोरू ।
४९६२	—राम	...	जिसमें योगी रमते हैं,—परशुराम,—संकर्षण, बलदेवजी,—दशरथसुत, श्रीरामचन्द्र,—सर्वव्यापी, सबमें रमण करनेवाला,—सुंदर, मनोहर ।

नं० शब्द		अर्थ
४९६३—रामतीर्थ	...	श्रीरामचन्द्र का चरणामृत,—रामसरोवर, रामकुंड,—रामबाण।
४९६४—रामानुज	...	राम के छोटे भाई लक्ष्मणादि,—श्रीकृष्णचन्द्र,—एक प्रसिद्ध आचार्य।
४९६५—रामायण	...	राम का घर, रामकथा, राम-चरित, राम का इतिहास।
४९६६—रामायुध	...	राम के शस्त्र, धनुषबाण, तीरकमान, तीरकमठा।
४९६७—रामेश्वर	...	राम के स्वामी, महादेवजी,—सेतुबंध रामेश्वर, रामस्थापित लिंग।
४९६८—राय	...	श्रेष्ठ, राना,—भाट,—सलाह, मशविरा।
४९६९—रायमुनि	...	मुनिश्रेष्ठ,—सदिया, लाल नामक पक्षी की मदिया।
४९७०—रार } रारी }	...	हुज्जत, टंटा, झगड़ा, लड़ाई, द्वेष, वैर, लाग।
४९७१—रावण	...	श्रीरामचन्द्र का शत्रु, दशकंठ, लंकापति।
४९७२—रावरी	...	तुम्हारी, आपकी।
४९७३—रावरो	...	तुम्हारा, आपका।
४९७४—रासभ	...	गर्दभ, गधा, खर, खोता, चिपोंग।
४९७५—रासि (राशि)	...	ढेर, समूह, देरी,—ज्योतिष विषय में मेषादि १२ राशियाँ।
४९७६—राहु	...	नवग्रह में अष्टम ग्रह, विधुन्तुद।
४९७७—रिच्छेस (ऋक्षेश)		रीछों का स्वामी, ऋक्षराज, रीछों में श्रेष्ठ, रीछों का अफ़सर, जाम्बवान्।
४९७८—रिझाई	...	प्रसन्न करी, ख़ुशकरी, राज़ी करी,—रिझाय कर, राज़ी करके, ख़ुश करके।
४९७९—रिण (ऋण)	...	कर्ज़, दैन, देना, उधार।
४९८०—रितु (ऋतु)	...	वसन्तादि ६ ऋतु, स्त्री के रजवती होने पर गर्भाधान का समय, मौसिम।
४९८१—रितुराज (ऋतुराज)		वसन्त ऋतु, मौसिम-बहार, माधव।
४९८२—रिपु	...	अरि, शत्रु, वैरी, दुश्मन।
४९८३—रिपुदमन } रिपुसूदन }	...	शत्रुओं को मारने वा नाश करनेवाले, शत्रुघ्न, श्रीरामचन्द्र के कनिष्ठ भ्राता का नाम।
४९८४—रिष्ट	...	हृष्ट, हर्षित, प्रसन्न, ख़ुश, ताज़ा।
४९८५—रिषि (ऋषि)	...	सूक्ष्मदर्शी, मुनि, तपस्वी।
४९८६—रिषिनायक (ऋषिनायक)	...	ऋषियों में श्रेष्ठ, मुनि-प्रधान, अत्रि ऋषि।
४९८७—रिस	...	क्रोध, रोष, ग़ुस्सा, ख़फ़गी, खीझ।
४९८८—रिसाता	...	खीझ, खिझ, रोष, क्रोध।
४९८९—रिसाना	...	क्रोधित हुआ, खिजलाया, क्रुद्ध हुआ, खिझाया, खिजलाया, ग़ुस्से हुआ, ख़फ़ा हुआ।
४९९०—रिसौहैं	...	क्रोधयुक्त, रिसपूर्ण, खिजलाया हुआ, ग़ुस्से से भरा।
४९९१—रीखमूक (ऋष्यमूक)		एक पर्वत का नाम।
४९९२—रीझत	...	प्रसन्न होते ही,—राज़ी होते हैं, ख़ुश होने से।
४९९३—रीझै	...	प्रसन्न हो, ख़ुश होवे, राज़ी होवे।
४९९४—रीति	...	चाल, प्रकार, प्रचार, रस्म, क़ायदा, लोक-व्यवहार।

नं० शब्द		अर्थ
४९९५—रीती	...	चाल, चलन, रस्म-रिवाज,—रिक्त, ख़ाली, सूनी ।
४९९६—रीते	....	ख़ाली, निरर्थक, निःसार, तत्त्वरहित, जिस में कुछ न हो ।
४९९७—रुख	...	सम्मुख,—क्रोध वा दयाभावयुक्त दृष्टि,—तरफ़, इच्छा, मरज़ी, भाव, मन की झुकन जो मुखाकृति से जानी जाती है ।
४९९८—रुचि	...	प्रवृत्ति, इच्छा, अभिलाषा, स्पृहा, चाह, चोंप, शौक़ ।
४९९९—रुचिर	...	सुन्दर, मनोहर, रुचिकर, दिलपसन्द ।
५०००—रुचिराई	...	सौंदर्य, सुन्दरता, मनोहरता ।
५००१—रुज	...	रोग, व्याधि, बीमारी ।
५००२—रुदन	...	रोदन, रोवन, रोना, अश्रुपात ।
५००३—रुद्र	...	शिवजी का एक नाम,—रोता हुआ,—भयानक ।
५००४—रुधिर	...	रक्त, लहू, लोहू, असृक्, ख़ून ।
५००५—रुह	...	उत्पन्न, पैदा, जनित, जात ।
५००६—रूख	...	वृक्ष, तरु, पौधा, पेड़ ।
५००७—रूप	...	आकार, डौल, सूरत, शक्ल, शोभा, स्वरूप, सुंदरता,—रीति, ढब, प्रकार, भाँति, चाल, तरह,—मूर्ति ।
५००८—रूपी	...	रूपवाला, समान रूपवाला ।
५००९—रूरी	...	सुंदरी, अतिसुंदर, मनोहरा ।
५०१०—रूखे	...	रूक्ष, रूखे, खुरखुरे, खुदबुदे, नहीं चिकने,—तेज़ मिज़ाज, खड़तल, कोरे, बेमुलाहजे ।
५०११—रेख	...	रेखा, लकीर, चिह्न, चिन्हानी, लीक, ख़त ।
५०१२—रेता	...	रेत, बालू, रेणु, रेती, सिकता,—वीर्य,—वीर्यवान् ।
५०१३—रेनु (रेणु)	...	रेती, रेत, बालू, सिकता, धूल, धूर, गर्द, गर्दा, मिट्टी, रज ।
५०१४—रेसू	...	ईर्ष्या, दाह, डाह, कुढ़न ।
५०१५—रोई	...	रो दी, रो पड़ी, रुदन करने लगी ।
५०१६—रोकहिं	...	रोकते हैं, मना करते हैं, बाधा करते हैं, अटकाते हैं, नहीं करने देते, अवरोध करते हैं ।
५०१७—रोग	...	व्याधि, रुज, दुःख, बीमारी ।
५०१८—रोचन	...	गोरोचन, गंध विशेष जो पीत वर्ण गौ के मस्तक से निकलता है,—हरदी, रुचिकर, मनोहर,—दिल-पसन्द ।
५०१९—रोदन	...	रुदन, रोना, अश्रुपात, आँसू बहाना ।
५०२०—रोदित	...	रोया हुआ, अश्रुपात किया हुआ, रोता हुआ ।
५०२१—रोप	...	बो दे, जमा दे, लगा दे ।
५०२२—रोपहु	...	बोओ, लगाओ, जमाओ ।
५०२३—रोम	...	रोआँ, रोंगटा, लोम ।
५०२४—रोमपाट	...	ऊन-वस्त्र, ऊन का कपड़ा (लोई, कंबल, दुशाला इत्यादि) ।
५०२५—रोमावलि	...	रोमराजी, रोओं की श्रेणी, लोम-पंक्ति ।
५०२६—रोवनि	...	रोदनि, रोअन ।

नं० शब्द		अर्थ
५०२७—रोवा	...	रो उठा, रोने लगा, आँसू गिराये, अश्रुपात किया ।
५०२८—रोष	...	क्रोध, रिस, कोप, गुस्सा ।
५०२९—रोहिनि	...	रोहिणी, एक नक्षत्र का नाम, चन्द्रमा की एक स्त्री का नाम,—श्रीबलदेव जी की माता का नाम ।
५०३०—रोहु	...	रोंक, रुकाव,—मत्स्य जाति, एक जाति की मछली ।
५०३१—रौताई	...	सरदारी, अफ़सरी, रजाई, राजापन ।
५०३२—रौरव	...	यमपुरी के एक घोर नरक का नाम ।
५०३३—रौरेहिँ	...	आपहि को, तुम्हाराही, तुम्हीं को ।
५०३४—रंक	...	दरिद्री, दीन, कंगाल, ग़रीब, कँगला ।
५०३५—रंगभूमि	...	धनुष यज्ञ की भूमि,—युद्ध की भूमि,—उत्सव का स्थान, नाट्य-शाला, युद्ध-क्षेत्र ।
५०३६—रंगा	...	रंग, वर्ण ।
५०३७—रंच	...	किंचित्, थोड़ासा, अल्प ।
५०३८—रंजन	...	हर्षदायक, प्रहर्षण, मनोहर, सुंदर, दिलपसन्द,—भाया ।
५०३९—रंतिदेव	...	एक राजा का नाम ।
५०४०—रंध्र	..	छिद्र, छेद, छेंक, सुलाक, सूराख़ ।
५०४१—रंभा	...	केला, कदली,—एक अप्सरा का नाम ।
५०४२—राँचा	...	लगा, रमा, तत्पर, लवलीन, लिप्त, लट्टू, फ़रेफ़ता,—रचा, बनाया,—
	...	रचा भया, रचित, बनाया हुआ ।
५०४३—राँधा	...	रींधा, पकाया, उबाला, बनाया, पाक किया ।
५०४४—रुंड	...	धड़, कबन्ध, सिरहीन शरीर ।
५०४५—रूँधहु	...	घेरो, घेर लो, फँसाओ, बँझाओ, चारों ओर से मार्ग रोंक दो ।
५०४६—रेंगाई	...	धीरे धीरे चलाई,—रेंगा कर, चला कर, सरका कर,—खसकाई, घुसकाई ।

ल

५०४७—लच्छ (लक्ष)	...	निशाना, ताक,—जो देखा जासके, जो जाना जासके, जो देखपड़े,
	...	दृष्टिगोचर, देखने योग्य,—लाख, १००००० ।
५०४८—लक्षण	...	लच्छन, चाल-चलन,—पशुओं की भाँवरी, निशानी, अनुमान ।
५०४९—लक्ष्मण	...	लछिमन, लषन, श्रीरामचन्द्र के छोटे भाई ।
५०५०—लक्षि	...	लक्ष्मी, धन, संपत्ति ।
५०५१—लकुट	...	लाठी, लकड़ी, छड़ी ।
५०५२—लखहिँ	...	देखते हैं, ताकते हैं, निरखते हैं ।
५०५३—लखाऊ	...	लक्ष्य, निशाना,—चिह्न,—दिखा दे,—देखा देखी, जानपहिचान ।
५०५४—लखाये	...	देखपड़े,—दिखाने से ।
५०५५—लखि	...	देख कर, ताक कर, निरख कर ।
५०५६—लग्न	...	नियत समय, मुहूर्त्त का समय, सायत का वक्त ।
५०५७—लगन	...	लाग, तन्मयता, मन की किसी ओर पूरी झुकन, लग्न, मुहूर्त्त ।

नं० शब्द		अर्थ
५०५८—लगावा	...	लगा दिया, संयुक्त किया, मिलाया, साथ किया, संग दिया ।
५०५९—लगि	....	हेतु, वास्ते, लिए, मतलब से,—लग कर, छू कर,—तक ।
५०६०—लघु	...	छोटा, थोड़ा, हलका, नीच, ह्रस्व,—शीघ्र, उतावल,—सुंदर,—काव्य में
	...	एक मात्रा के अक्षर ।
५०६१—लघुता	...	छोटाई, हलकई, घटियई, हलकापन, छोटापन, नीचता ।
५०६२—लघुतापस	...	छोटे तपस्वी,—श्रीलक्ष्मणजी ।
५०६३—लच्छय	...	लक्षय, लखे, देखे, अवलोकय ।
५०६४—लच्छा	...	लक्ष्य, निशाना,—चिह्न,—लाख, १०००००,—झुम्पा, उलझन,—युक्त वस्तु, लड़ियों का समूह ।
५०६५—लच्छि	....	लक्ष्मी, धन, दौलत ।
५०६६—लजानी	...	लजाई, सकुचाई, शर्माई, लज्जायुक्त हुई, लज्जा को प्राप्त हुई ।
५०६७—लटकनि	...	झुकन, शोभा-संयुक्त झुकन, अदा ।
५०६८—लटत	...	लटता है, लटका जाता है, मुरझाया जाता है, दुर्बल हुआ जाता है,
	...	दुबलाता है, घटा जाता है, अशक्त होता है, झुका जाता है, झूमता है ।
५०६९—लड़ाई	...	युद्ध, जूझ, जूझन, विरोध, झगड़ा, वैमनस्य ।
५०७०—लता	...	बल्ली, बेल, लतर ।
५०७१—लपट	...	गमक, महक, गन्धि,—लिपटन, लुपेट, लपेट,—लपक, लाट, शोला, ज्वाला ।
५०७२—लपटाई / लपटानी	...	लिपट गई, लग गई, चफन गई, चिपक गई, लपटाय गई,—लिपट कर, लिपटी भई ।
५०७३—लपेटे	...	लुपेटे, तोपे, चारों ओर से ढँक दिये, वेष्टित किये ।
५०७४—लबार	...	झूठा, मिथ्यावादी, गप्पी, बकवादी, व्यर्थ-वादी ।
५०७५—लय	....	लौ, चित्तवृत्ति,—तन्मय, एक जी,—नाश,—संगीत में स्वर-प्रवाह ।
५०७६—लयऊ	...	ले लिया, ग्रहण किया,—आरम्भ किया ।
५०७७—लयलीन	...	लौलीन, एकाग्र मन, तन्मय, तत्पर, गड़ागप, निमग्न, बेसुध ।
५०७८—लरकाहीं	...	लड़कों के,—लड़कपन से,—लटकाते हैं,—लुढ़काते हैं ।
५०७९—लरकिनी	...	लड़कियाँ, बालिकायें ।
५०८०—लरहिँ	...	लड़ते हैं ।
५०८१—लरि	...	लड़कर ।
५०८२—लरिका	...	लड़का, बालक ।
५०८३—लरिकाई	...	लड़कपन, बचपन, बालकपन ।
५०८४—ललकि	...	हुमच के, ललक कर, हुब के साथ, उत्साह-पूर्वक ।
५०८५—ललना	...	स्त्री, युवती, सुंदरी,—पति-प्रीतमा ।
५०८६—ललाट	...	माथा, मस्तक, भाल, पेशानी ।
५०८७—ललाम	...	श्रेष्ठ, सुन्दर, प्रिय,—शोभा ।
५०८८—ललित	...	सुंदर, दर्शनीय,—एक सबेरे गाने की रागिनी का नाम ।
५०८९—लव	...	अंश, अल्प काल, अति सूक्ष्म काल,—गोपुच्छ के रोम,—श्रीरामचन्द्र के
	...	छोटे पुत्र का नाम ।

नं० शब्द		अर्थ
५०९०—लवण	...	नून, नोन, लौन, नमक, खार, क्षार, छार ।
५०९१—लवणसिंधु	...	क्षीर-समुद्र, खारी समुद्र ।
५०९२—लवलेश	...	अल्प लेश, थोड़ा भी संबन्ध, संसर्ग मात्र ।
५०९३—लवा	...	एक छोटी सी चिड़िया का नाम ।
५०९४—लवाई	...	नई बिआई भई गौ,—लवायक, गौ के पीछे के पैर-बाँध ।
५०९५—लषन	...	श्रीलक्ष्मण, रामानुज ।
५०९६—लसई	...	शोभती है, शोभा देती है, शोभा पाती है ।
५०९७—लह	...	पाया, प्राप्त किया, लिया ।
५०९८—लहइ	...	पावे, प्राप्त करे, लेवे, ग्रहण करे,—पाता है, लेता है, प्राप्त करता है ।
५०९९—लहकौरि	...	ललकार कर, उमंग से,—सिठनी, व्याह की गारी ।
५१००—लहत	....	पाते हैं, प्राप्त करते हैं, लेते हैं ।
५१०१—लहब	...	पाना, लेना,—पाऊँगा, लूँगा, प्राप्त करूँगा ।
५१०२—लहलहात	...	चमचमाता हुआ, झलझलाता, लपलपाता, लहराता,—हराभरा,—तीव्रतर ।
५१०३—लहहिं	...	लाभ करते हैं, लाभ उठाते हैं, पाते हैं, प्राप्त करते हैं ।
५१०४—लहिये	...	लाभ करिए, प्राप्त करिए लीजिए ।
५१०५—लाइ	...	ला कर, लाय कर, ले आकर,—लगा कर, लगा के ।
५१०६—लाई	...	ले आई,—लगाई ।
५१०७—लाउब	...	लगाना, लगा लेना, लगा लेवे, लगाय ले,—मान लेना,—लगा लूँगा, लगाऊँगा, मान लूँगा ।
५१०८—लाख	...	लाह, लाक्षा,—सौ हज़ार, शत सहस्र, लक्ष, १००००० ।
५१०९—लाग	...	लगाव, संबंध, लगन, वैर, द्वेष, द्रोह,—लग गया, लगा,—लिए, वास्ते ।
५११०—लागत	...	लगता है, लग जाता है,—लगते,—लगतेही,—ख़र्च, व्यय, लगान, दाम, मोल, तसर्रुफ़ ।
५१११—लागा	...	लगा, लग गया,—प्रारम्भ किया, प्रस्तुत हुआ, मुस्तैद हुआ ।
५११२—लागिहि	...	लगेगी, लगेगा ।
५११३—लागी	...	लगी, लग गई,—लिए, वास्ते, निमित्त, अर्थ ।
५११४—लाघव	...	शीघ्र, झटपट, साधारण में, सुगमता से, सहज में, बिन प्रयास,—छोटा, हलका, तुच्छ ।
५११५—लाज	...	लज्जा, सकुच, संकोच, शर्म ।
५११६—लाजवंत	...	लज्जावान्, लाजवाला, संकोची, शर्मालू, शर्मिन्दा, लज्जित ।
५११७—लाजहिं	...	लजाते हैं, लजवाते हैं, शर्मिन्दा करते हैं, शर्मिंदे होते हैं ।
५११८—लाजा	...	लज्जा, शर्म, संकोच,—लावा, लाई, फुला, भूने अनाज का फूल ।
५११९—लाटी	...	लट गई, उतर गई, दुर्बल हुई, दुबली हो गई, खसक गई, झुक गई, लटक गई, सुस्त हुई, मुरझा गई, वृद्धा भई ।
५१२०—लात	...	पैर, पग, पाद, पद, पाँव, चरण ।

नं० शब्द		अर्थ
५१२१—लाभ	...	फ़ायदा, नफ़ा, प्राप्ति, मिलगत, बचत, फल।
५१२२—लायक	...	योग्य, उचित, उपयुक्त।
५१२३—लाल	...	रक्त वर्ण, सु-रंग, सुर्ख़,—बेटा, लड़का, सन्तान, औलाद,—मणि, जवाहिर, माणिक्य, मानिक, पद्मराग।
५१२४—लालच	...	लोभ।
५१२५—लालची	...	लोभी, लोलुप।
५१२६—लालसा	...	इच्छा, चाह।
५१२७—लाला	...	लाल, रक्तवर्ण, सु-रंग, सुर्ख़,—लड़का, पुत्र, बेटा,—रत्न, मणि,—कायस्थ और महाजनों में प्रतिष्ठित पद।
५१२८—लाली	...	सुर्ख़ी, ललाई, अरुणाई,—लड़की, बेटी, पुत्री, कन्या,—दुलारी।
५१२९—लावक	...	लवा, एक पक्षी,—लगानेवाला।
५१३०—लावण्य	...	सौंदर्य, सुंदरता, लुनाई, नमकीनी, रूपमाधुरी,—शोभा, बनाव।
५१३१—लावा	...	लगाया, जमाया, बोआ, बीजा।
५१३२—लाहू	...	लाभ, लाहा, प्राप्ति, नफ़ा, लब्धि, फ़ायदा।
५१३३—लिखि	...	लिख कर।
५१३४—लिखित	...	लिखा हुआ, अंकित।
५१३५—लिखिय	...	लिखते हैं, लिखे जाते हैं, लिख लीजिए, लिख लेना चाहिए।
५१३६—लिय	...	लिया, पाया, लेकर।
५१३७—लिये	...	वास्ते, हेतु, निमित्त, अर्थ, कारण से।
५१३८—लिलार	...	ललाट, भाल, माथा, मस्तक, पेशानी।
५१३९—लीक / लीका	...	लीक, लकीर, रेखा, ख़त,—मर्यादा, परिपाटी, रीति।
५१४०—लीजिअ	...	लो, ले लीजिए, ले लेना चाहिए।
५१४१—लीन	...	लिया, ले लिया, प्राप्त किया,—तत्पर, मग्न, तन्मय, लवलीन, डूबा हुआ, निमग्न।
५१४२—लीन्ह	...	लिया, ले लिया, प्राप्त किया।
५१४३—लीलहि	...	लीला से, बिन प्रयास, खेल में, सुगमता से, बिना श्रम, साधारणतः,—लीला को, खेल को, क्रीड़ार्थ,—लील जाते हैं, निगल जाते हैं।
५१४४—लीला	...	क्रीड़ा, खेल, कौतुक, खेलवाड़, रचना, तमाशा।
५१४५—लुकाई	...	छिपी, छिपगई, अदृष्ट हुई, ओट में हो गई,—छिपा कर, लुका कर, ओट में करके।
५१४६—लुठत	...	लोटता है, लुढ़कता है, छटपटाता है, लोटनिया लेता है।
५१४७—लुनाई	...	लावण्य, सुंदरता, लोनाई, नमकीनी, रूपमाधुरी,—कृषि-कर्म में अनाज को भूसी से अलग करके प्राप्त करना।
५१४८—लुनिय	...	निकालते हैं, प्राप्त करते हैं, पाते हैं।
५१४९—लुप्त वा लुप्ता	...	ग़ायब, अदृष्ट, छिपा हुआ, नज़र से बाहर।
५१५०—लुब्ध	...	मिला हुआ, लब्ध, बचा हुआ, नफ़े की वस्तु,—लोभी, लालची।

नं० शब्द		अर्थ
५१५१—लुब्धक	...	लोभी, लालची, लोलुप, लोभ दिखानेवाला, ठग, लालच देकर धोखा देनेवाला ।
५१५२—लूक	...	आकाश का टूटा हुआ तारा, उल्का, लुक,—ज्वाला, लपक, लपट ।
५१५३—लूटन	...	लूट, उचक्कापन, छीनझपट ।
५१५४—लेखई	...	माने, समझे, हिसाब करे, लेखा करे, गिने, शुमार करे, गिनती करे, अनुमान करे,—लेखा करता है, शुमार करता है, समझता है, मानता है ।
५१५५—लेखनी	...	लिखनी, क़लम ।
५१५६—लेखहिँ	...	लेखा करते हैं, समझते हैं, मानते हैं,—लेखे को, हिसाब को ।
५१५७—लेखा	...	लेख, लिखित, लिखा हुआ,—हिसाब-किताब,—माना, समझा, अनुमान किया ।
५१५८—लेखिय	...	लेखा करिए, गिनिए, शुमार करिए, मानिए, समझिए।
५१५९—लेखे	...	हिसाब से, लेखे में, गिनती में, हिसाब में, समझ में, जान में ।
५१६०—लेत	...	लेता है, स्वीकार करता है, कबूल करता है,—लेतेही, स्वीकार करतेही ।
५१६१—लेब	...	लेना, लेलेना, लूँगा, लेलूँगा ।
५१६२—लेश	...	थोड़ासा, अत्यल्प, स्पर्शमात्र, संसर्गमात्र, यत्किंचित्, नाम को ।
५१६३—लेसै	...	लगाय दे, चपकाय दे, जोड़ दे, मिलाय दे ।
५१६४—लेहि	...	लेते हैं, लेलेते हैं, प्राप्त करते हैं ।
५१६५—लोई	...	लोग, जन-समुदाय,—ऊन-वस्त्र,—रोटी बनाने के लिए आटे का पेड़ा ।
५१६६—लोक	...	लोग, मनुष्य,—भुवन, सृष्टि के विभाग (स्वर्ग, मृत्यु, पातालादि) ।
५१६७—लोकप } लोकपात }	...	लोक-पाल (इन्द्र, वरुणादि)
५१६८—लोग	...	मनुष्य, जन-समुदाय, जन, आदमी ।
५१६९—लोगाई	...	स्त्री, मेहरारू, लुगाई, बैयर, तीमत, औरत ।
५१७०—लोचन	...	नेत्र, नयन, चक्षु, आँख ।
५१७१—लोन	...	लवण, नोन, नमक, नून, रामरस ।
५१७२—लोना	...	सुंदर, सलोना, ख़ूबसूरत, नमकीन, रूपवान्, प्यारा, मनोहर, सुखद, दर्शनीय ।
५१७३—लोनाई	...	सुन्दरता, सौंदर्य, लावण्य, नमकीनी, ख़ूबसूरती ।
५१७४—लोपेउ	...	लोप हो गया, छिपगया, ग़ायब होगया, अदृष्ट होगया,—छिपा दिया, लुका दिया, लोप कर दिया, ग़ायब कर दिया ।
५१७५—लोभ	...	लालच, हिरस, लोलुपता ।
५१७६—लोभा	...	लोभाया, ललचाया, लोभ दिखाया,—लोभ, लालच, हिरस ।
५१७७—लोभी	...	लालची, लोलुप, हिरसी ।
५१७८—लोमस	...	एक महर्षि का नाम ।
५१७९—लोल	...	चंचल, चपल, चुलबुला, चिलबिला ।
५१८०—लोलुप	...	अति लालची, नाहीदा, लम्पट, असंतुष्ट, ललचाया हुआ ।
५१८१—लोयन	...	आँखें, चख, चक्षु, नयन, नेत्र,—आँख करके, नेत्रद्वारा ।

नं० शब्द		अर्थ
५१८२—लोवा	...	लवा पक्षी,—लोमड़ी ।
५१८३—लोह	...	लोहा, अय, आहन ।
५१८४—लैाकिक	...	सांसारिक, संसारी, दुनियवी, इस लोक का ।
५१८५—लैान	...	लवण, नमक, नोन, नून, रामरस ।
५१८६—लंकिनी	...	एक राक्षसी का नाम ।
५१८७—लंकेश	...	रावण, लंकापति ।
५१८८—लंगूर	...	एक जाति के बानर जिनका मुख काला और पूंछ लंबी होती है,—दुम, पोंछ, पूंछ, पुच्छ, पिच्छ, लांगूल ।
५१८९—लंपट	...	लिप्त, तन्मय, एक ओर पूर्णतया लगा हुआ, किसी विषय में अंध ।
५१९०—लाँघे	...	नाँघे, डाँके, फाँदे, डाँक गये, पार होगये, उलाँघ गये ।
श		
५१९१—श्री	...	शोभा,—लक्ष्मी, विष्णु-पत्नी,—सम्पदा, धन, दौलत,—सुंदरता,—प्रताप,—बड़ाई का विशेषण ।
५१९२—शंकर	...	शिव, महादेव,—कल्याणकर्त्ता, भला करनेवाला ।
ष		
५१९३—षट	...	छः, ६ ।
५१९४—षष्ठवा षष्ठम	...	छठवाँ, छठा ।
स		
५१९५—स	...	सहित, साथ, संयुक्त, संग, युक्त ।
५१९६—सई	...	एक नदी का नाम,—सिफ़ारिश, पक्ष,—कोशिश, उद्योग ।
५१९७—सक (शक)	...	संदेह, शुबहा,—सामर्थ्य, मक़दूर ।
५१९८—सक्ति (शक्ति)	...	भगवती, देवी,—सामर्थ्य, बल, पुरुषार्थ, ताक़त,—स्त्री,—बरछी, भाला, एक प्रकार का शस्त्र ।
५१९९—सक्र (शक्र)	...	सहस्राक्ष, सुरपति, देव-राज, इन्द्र ।
५२००—सक्रारि (शक्रारि)		इन्द्र का वैरी, इन्द्रजीत, मेघनाद, रावण का जेठा बेटा ।
५२०१—सकरुण	...	करुणायुक्त, दीनतासहित, दयासंयुक्त ।
५२०२—सकल	...	सब, समस्त, सारा, संपूर्ण,—कलासहित, विद्यायुक्त, सावयव,—टुकड़ा, भाग, हिस्सा ।
५२०३—सकसि	...	तू सकता है, तेरी सामर्थ्य है ।
५२०४—सकहि	...	सामर्थ्य रखता है, सकता है, शक्तिमान् है ।
५२०५—सकाना	...	डराना, डरा, संकुचित हुआ, शंका को प्राप्त हुआ, शरमाया, सकुचाया, लजाया ।
५२०६—सकिल	...	बटुर कर, दबक कर, दब कर, संड़स कर, फँस कर, इकट्ठा हो कर, एकत्र हो कर, सिमिट कर ।
५२०७—सकुच	...	संकोच, लाज, शर्म, डर ।
५२०८—सकुचानी	...	लज्जित हुई, शर्माई, लजानी, डरी ।
५२०९—सकुनाधम	...	बुरे सगुन, खोटे सगुन, असगुन ।
५२१०—सकुनि	...	एक कुरु-वंश के क्षत्रिय का नाम,—एक पक्षी का नाम ।
५२११—सकृत	...	एक बेर, एक मर्तबे, एक दफे,—एक केवल, कोई ।

नं० शब्द		अर्थ
५२१२—सकेल	...	समेट के, बटोर के, एकत्र कर के, कस कर, दबा कर ।
५२१३—सकोच	...	संकोच, लाज, शर्म, डर, भय, सहम, दबाव, खिँचाव ।
५२१४—सकोची	...	दबी, डरी, सहमी, लजाई,—दबाई, बटोरी, डराई, दबा कर, समेट कर, बटोर कर ।
५२१५—सकौं	...	शक्ति रखता हूँ, सकता हूँ, सामर्थ्यवान् हूँ ।
५२१६—सखर	...	खराई-सहित, दोष-रहित, चोखा, खरा, साफ़, शुद्ध,—खर नामक राक्षस के सहित ।
५२१७—सखहिं	...	सखा को, मित्र को, यार को, दोस्त को, साथी को ।
५२१८—सखा	...	साथी, संगी, मित्र, दोस्त, यार ।
५२१९—सखिन	...	सखियों को, सहेलियों को, सहचरियों को ।
५२२०—सगर	...	विषयुक्त, ज़हर मिला हुआ, ज़हरीला,—एक प्रसिद्ध राजा का नाम ।
५२२१—सगर्भ	...	तात्पर्ययुक्त, साभिप्राय,—मानयुक्त, अभिमानी,—पेटवाला, बात को पचानेवाला,—गर्भ धारण करनेवाली स्त्री ।
५२२२—सगरे	...	सब, समस्त, संपूर्ण, सकल, सबके सब, सभी, बिलकुल ।
५२२३—सगलानि	...	ग्लानि के साथ, निरादर से, घृणायुक्त, घिन से, अनादर से ।
५२२४—सगाई	...	नाता, अपनायत,—बरेखी, विवाह-संबंध ।
५२२५—सगुन	...	शकुन, शुभ लक्षण जो कार्यारम्भ में देखे और विचारे जाते हैं ।
५२२६—सगुनिअन्ह	...	सगुनिये, सगुन विचारनेवाले, ज्योतिषी ।
५२२७—सघन	...	अविरल, घने, गझिन, बहुत, एकसे एक सटे हुए ।
५२२८—सच	...	सत्य, ठीक, यथावत्, जैसे का तैसा, ज्यों का त्यों, यथार्थ, वाजबी ।
५२२९—सच्चिदानन्द	...	सत् चित् आनन्द, सर्वदा सत्य-चैतन्य-आनन्द-रूप, ब्रह्म, परमात्मा ।
५२३०—सचान	...	एक शिकारी पक्षी, बाज़ ।
५२३१—सचिव	...	प्रधान, मंत्री, वज़ीर, अमात्य ।
५२३२—सची	...	इन्द्राणी, इन्द्र की स्त्री का नाम ।
५२३३—सचु	...	सुख, आनन्द, आराम, सुबीता ।
५२३४—सचुपाई	...	चुप के साथ, चुपचाप, गुपचुप, गुप्तभाव से,—चुप हुई, चुप होगई ।
५२३५—सचेता	...	सचेत, सावधान, चेतनायुक्त, चैतन्य, चौकन्ना, होशियार, होश में, चालाक, मुस्तैद, आलस्य-रहित ।
५२३६—सजग	...	सावधान, ख़बरदार, होशियार, चौकन्ना ।
५२३७—सज्जन	...	भले लोग, सत्पुरुष, साधु जन ।
५२३८—सजन	...	प्रीतम, पति,—जन-सहित,—हितू, संबन्धी, नातेदार, साथी, संगी, सखा ।
५२३९—सजनी	...	हितकारिणी, सखी, सहचरी, सहेली ।
५२४०—सजाई	...	सज़ा, दंड, प्रतिफल,—सज कर, रचना कर के, सुभूषित कर, बना कर, शृङ्गारित कर, यथास्थान रख कर ।
५२४१—सजीव	...	जीव-सहित, प्राणयुक्त, जीवित, जीता हुआ ।
५२४२—सजीवन	...	जिलानेवाला, जिला देनेवाला, जीवप्रद, प्राणद, जीवित रखनेवाला ।

नं० शब्द		अर्थ
५२४३—सटुकि	...	पतली छड़ी से मार कर,—धीरे से भाग कर, दबक के भाग कर।
५२४४—सठ (शठ)	...	मूर्ख, बेवक़ूफ़, उजड्ड, दुष्ट, दुर्जन, ठग, छली, कपटी ।
५२४५—सड़सी	...	फँसी, दब गई, कस गई, अँड़स गई, विबस भई,—जंबूरी, सुनार और लुहारों का एक औज़ार जिससे तपी हुई वस्तु थाँभ कर पीटते हैं,—दाल-भात का बटुआ उतारने की वस्तु।
५२४६—सत्	...	सच्चा, सत्य, अच्छा, भला,—ज़ोर, बल,—सार, हीर, रस,—सतोगुण।
५२४७—सत (शत)	...	सौ, १०० ।
५२४८—सतत	...	सन्तत, सदा, सर्वदा, नित्य, हमेशा ।
५२४९—सतपंच	...	सात-पाँच, बारह,—पाँच सौ, ५००,—सच्चे पंच, पक्षपात-रहित, पंच लोग,—आगा-पीछा, भ्रम ।
५२५०—सत्य	...	सच, ठीक, सही, यथार्थ, साँच, निश्चय, वाजबी ।
५२५१—सत्यलोक	...	ब्रह्मलोक, ब्रह्मा का लोक ।
५२५२—सत्यसंध	...	अत्यंत सच्चा, जो कभी झूठ न बोले ।
५२५३—सतरूपा	...	मनु की स्त्री का नाम, स्वायम्भू मनु की पत्नी ।
५२५४—सत्रु (शत्रु)	...	वैरी, रिपु, अरि, दुश्मन ।
५२५५—सत्रुसूदन	...	शत्रुघ्न, श्रीरामचन्द्र के लघु भ्राता ।
५२५६—सत्व	...	सत्ता, सामर्थ्य ।
५२५७—सतानंद (शतानंद)		राजा जनक के पुरोहित का नाम ।
५२५८—सतावन	...	सप्त पंचाशत्, सत्तावन, सात ऊपर पचास, ५७,—सताना, दुख देना, पीड़ा पहुँचाना।
५२५९—सतासी	...	सप्ताशीति, सत्तासी, सात ऊपर अस्सी, ८७।
५२६०—सतिभाये	...	सूधे भाव से, सरल भाव से, शुद्ध भाव से, स्वाभाविक, सच्चे दिल से।
५२६१—सती	...	पतिव्रता स्त्री,—दक्ष की कन्या, शिवजी की पत्नी का नाम जो यज्ञ में जल मरीं ।
५२६२—स्थिति	...	ठहराव, टिकाव, टिकान,—पालन, रक्षण।
५२६३—सद	...	श्रेष्ठ, सच्चा, यथार्थ, ठीक ठीक,—मीठा, स्वादिष्ट,—बैठने वाला।
५२६४—सदन	...	घर, मकान, स्थान, गृह, जगह ।
५२६५—सदय	...	दयायुक्त, दयावान, मेहरबान, दयालु, दया के साथ ।
५२६६—सद्य	...	तुरन्त, तत्काल, उसी दम, तत्क्षण, फ़ौरन ।
५२६७—सदा	...	नित्य, सर्वदा, हमेशा ।
५२६८—सदाचार	...	श्रेष्ठ आचरण, सुलक्षण, भले चालचलन,—श्रेष्ठ आचरणवाला, सुचाली, सुमार्गी ।
५२६९—सदैव	...	सदा ही, नित्य ही, निरन्तर ।
५२७०—सन	...	से, साथ,—एक पेड़ की छाल जिसे सड़ा कर रस्सी बनाते हैं,—संवत्सर, साल ।
५२७१—सनकादि	...	सनक १, सनन्दन २, सनातन ३, सनत्कुमार ४, ये चारो बालस्वरूप महर्षि।
५२७२—सनकारे	...	इशारा किये, सनकिया दिये, सैन से बताये, सनकार दिये ।

नं०	शब्द		अर्थ
५२७३	—सन्निपात	...	एक शीत-प्रधान रोग का नाम।
५२७४	—सन्बन्ध (सम्बन्ध)		संयोग, नातेदारी, संसर्ग, मेल-मिलाप, इलाक़ा।
५२७५	—सनमान	...	आदर, मान, बड़ाई, सत्कार, मर्यादा।
५२७६	—सन्मुख	...	सामने, मुकाबिल,—अनुकूल।
५२७७	—सन्यासी	...	जती, दंडी, त्यागी, विरक्त, यती।
५२७८	—सनाथ	...	स्वामियुक्त, स्वामि-सहित,—कृतार्थ।
५२७९	—सनाला	...	नाल-सहित, डाँड़ी-सहित।
५२८०	—सनाह	...	कवच बख़्तर सहित, युद्ध के लिए सन्नद्ध,—पति के साथ, पति-सहित।
५२८१	—सनेह (स्नेह)	...	प्यार, प्रीति, नेह, छोह, प्रेम,—तेल, घृत, स्निग्ध पदार्थ।
५२८२	—सनेही (स्नेही)	...	प्रेमी, प्यारा, प्रिय, मुहब्बती।
५२८३	—सपक्ष / सपच्छ	...	पंखयुक्त, परदार, पक्षी,—मदद के साथ, सिफ़ारिश समेत, सहाय-सहित,—दल-सहित।
५२८४	—सप्त	...	सात, ७।
५२८५	—सप्तावर्ण	...	सात आवर्ण, सात परदे, सात परत।
५२८६	—सपथ (शपथ)	...	आन, सौंह, सौं, सौगन्द, किरिया, क़सम।
५२८७	—सपदि	...	जल्दी, तुरन्त, चटपट, झट, शीघ्रही।
५२८८	—सपन (स्वप्न)	...	सुपन, सपना, ख़्वाब।
५२८९	—सपर्व	...	गाँठों के साथ, गँठीला, ग्रंथियुक्त,—पर्वयुक्त, नक्षत्रादियोग-युक्त।
५२९०	—सपेला	...	साँप का बच्चा, पोआ,—सपेरा, साँपों से खेलनेवाला, गारुड़ी,
		...	महुअर खेलनेवाला, साँप का मंत्र जाननेवाला।
५२९१	—सफरी	...	एक प्रकार की मछली।
५२९२	—स्फुरत	...	फुरता है, सूझता है, हृदय से उठता है, अनुभव होता है, याद पड़ता है।
५२९३	—सब	...	सर्व, सारा, समस्त, पूरा, समूचा, संपूर्ण।
५२९४	—सब्द (शब्द)	...	ध्वनि, आवाज़, वाणी, बात, गुंजार।
५२९५	—सबर	...	बरयुक्त, बर के सहित, आशीर्वादयुक्त,—दूलह के सहित, पतियुक्त,—तोष, सन्तोष,—शबर, भील, एक जंगली जाति।
५२९६	—सबहि	...	सबको, सभोकों, सभी को, संपूर्ण को।
५२९७	—सभय	...	भयभीत, डरयुक्त, डरा हुआ।
५२९८	—सभा	...	समाज, दरबार।
५२९९	—सभासद	...	सभा का अधिकारी, सभा का पात्र, सभा में बैठनेवाला।
५३००	—सभीत	...	डरा हुआ, डर के साथ, भययुक्त, भयभीत।
५३०१	—सम	...	समान, बराबर, तुल्य, सदृश, जैसा।
५३०२	—समझत	...	समझता है,—समझते ही,—समझने में।
५३०३	—समझहिँ	...	समझते हैं।
५३०४	—समझायसि		समझाना, समझाइयो, तू समझाइयो।
५३०५	—समझाये	...	समझाइयो,—समझाने से।
५३०६	—समता	...	समानता, बराबरी, तुल्यता, तुलना, उपमा।

नं० शब्द		अर्थ
५३०७—समदर्शी	...	बराबर देखनेवाला, राग-द्वेष-रहित।
५३०८—समदि	...	पूजा कर के।
५३०९—समधी	...	समान बुद्धिवाला, बराबर-बुद्धि, जिसमें समान बुद्धि रहे, एक बराबर समझने योग्य,—कुड़म, बर-कन्या दोनों पक्ष के लोग आपस में कुड़म वा समधी कहे जाते हैं।
५३१०—समन(शमन)	...	शान्त करनेवाला, ठंडा करनेवाला, नाशक, नाश करनेवाला,—यमराज।
५३११—सम्मत	...	अनमत, स्वीकृत, राय के मुआफ़िक़।
५३१२—सम्यक	...	भलीभाँति, अच्छी तरह, पूर्णतया, सुरीति, यथायोग्य।
५३१३—समय	...	काल, वक्त,—साइत, अच्छे वा बुरे दिन।
५३१४—समर	...	रण, युद्ध, लड़ाई, जंग।
५३१५—समरथ (समर्थ)	...	शक्तिमान्, सामर्थ्यवान्, योग्य, लायक़।
५३१६—समर्प	...	सौंप, अर्पण कर, सिपुर्द कर दे।
५३१७—स्मरामहे	...	हम लोग स्मरण करते हैं, हम याद करते हैं।
५३१८—समररस	...	वीररस, रण का आनन्द, लड़ाई का सुख।
५३१९—समस्त	...	सब, कुल, सर्व, संपूर्ण, बिलकुल, तमाम।
५३२०—समा	...	समय, काल, औसर, मौक़ा, वक्त।
५३२१—समाई	...	समा गई, घुस गई, प्रवेश कर गई,—सहन, बर्दाश्त, सामर्थ्य, शक्ति, ताक़त।
५३२२—समागत	...	सभा, जन-समाज, भलीभाँति आये हुए।
५३२३—समागम	...	मेल, भेंट, मुलाक़ात।
५३२४—समाचार	...	हाल, हवाल, अहवाल।
५३२५—समाज	...	सभा, साथ, झुंड, जन-समूह, मंडली, मजलिस, दरबार।
५३२६—समात	...	अँटत, अमात, पूरा होता है।
५३२७—समाधान	...	भलीभाँति आधान, निवृत्ति, छुटकारा।
५३२८—समाधि	...	सुख, स्थिरता, ध्यानमग्नावस्था।
५३२९—समान	...	बराबर, तुलय, एकसा, सदृश, एकही,—पंचप्राण में से एक वायु का का नाम,—प्रवेश कर गया, समाय गया, धँस गया, अँट गया, अमाय गया, घुस गया।
५३३०—समाना	...	समान, बराबर, तुल्य,—समाय गया, अँट गया, अँटना, एक प्रकार के वायु का नाम।
५३३१—समाष	...	रोषयुक्त, क्रोधयुक्त, झुँझलाया हुआ।
५३३२—समास	...	संक्षेप, थोड़ा, छोटा, खफ़ीफ़, ख़ुलासा, मुख़तसर।
५३३३—समिध	...	ईन्धन, लकड़ी, हवन वा यज्ञ में जलाने की लकड़ी।
५३३४—समिति / समीती	...	सभा, मिताई, मित्रता।
५३३५—समीप	...	निकट, पास, नेरे, नियरे, धौरे, नज़दीक।

नं० शब्द		अर्थ
५३३६—समीर	...	वायु, अनिल, बयार, पवन, हवा ।
५३३७—समीहा	...	इच्छा, बांछा, पूर्ण इच्छा ।
४३३८—समुझाई	...	समझा कर, जनाय कर, बुझाय कर,—समझा दी, जनाय दी ।
५३३९—समुझि	...	समझ कर, जान कर, बूझ कर ।
५३४०—समुद्र	...	जलध, वारिधि, सिन्धु, समुद्र ।
५३४१—समुदाई	...	समुदाय, ढेर, समूह, राशि,—इकट्ठा कर के, बटोर कर ।
५३४२—समुहानी	...	सम्मुख हुई, सामने आई, मिली ।
५३४३—समूले	...	मूल से, जड़ से, जड़सहित ।
५३४४—समूह	...	ढेर, दल, राशि, अम्बार ।
५३४५—समेट	...	बटोर, जमा कर, इकट्ठा कर ।
५३४६—समेत	...	सहित, संयुक्त, साथ, युक्त, पूर्वक, मय ।
५३४७—सय	...	सौ, शत, १०० ।
५३४८—सयन(शयन)	...	सोना, निद्रा, नीन्द,—सोनेवाला, शयन करनेवाला,—शय्या, बिस्तरा,—भाव, कटाक्ष, इशारा ।
५३४९—सयाने	....	बड़े, स्याने, वृद्ध, बुज़ुर्ग,—चतुर, चालाक, समझदार, बुद्धिमान् ।
५३५०—स्याम	...	काला, काले रंग का ।
५३५१—स्यामकरण	...	काले कान वाले घोड़े, यज्ञ के घोड़े, ऐसे घोड़े जिनके सब शरीर और कान काले हों ।
५३५२—स्यामल	...	काला, काले रंग का, स्यामता लिये, साँवला ।
५३५३—स्यामा	...	युवती, सोलह वर्ष की स्त्री,—एक पक्षि विशेष, एक तरह की चिड़िया,—काले रंगवाली ।
५३५४—स्यामता	...	कालिमा, स्याही, करियई, कालापन ।
५३५५—स्यंदन	...	रथ, असवारी, सवारी, यान ।
५३५६—सर	...	सरोवर, तालाब, जलाशय,—बाण, तीर ।
५३५७—स्रक, स्रग्	...	माला, पुष्पमाल ।
५३५८—सरग (स्वर्ग)		देवलोक, इन्द्रपुरी ।
५३५९—सरजू (सरयू)	...	एक नदी का नाम जो अयोध्या में प्रवाहित है ।
५३६०—सरण(शरण)	...	रक्षा, पनाह,—रक्षक, पनाह देनेवाला ।
५३६१—सरणागत, शरणागत	...	शरण में आया हुआ, रक्षा चाहनेवाला ।
५३६२—सरद(शरद)	...	एक ऋतु का नाम, वह ऋतु जो आश्विन और कार्तिक में होती है ।
५३६३—स्रद्धा(श्रद्धा)	...	विश्वास, प्रतीति, भक्ति, विश्वास, इच्छा, चाह,—गुरु और शास्त्र के वाक्यों में प्रतीति ।
५३६४—सरप (सर्प)	...	साँप, कीरा, अहि, नाग,—चलो, खसको ।
५३६५—सरपि(सर्पि)	...	घृत, घी, घिउ,—चल कर, खसक कर, बढ़ कर ।
५३६६—सरवरि	...	बराबरी, समता,—ढिठाई, गुस्ताख़ी ।

नं० शब्द	अर्थ
५३६७—सरबरी (शर्वरी)	रात्रि, रात, निशि, निशा, रजनी, यामिनी ।
५३६८—सरभंगा (सर्भंग)	एक ऋषि का नाम ।
५३६९—स्रम (श्रम) ...	परिश्रम, मेहनत, क्लेश, थकावट ।
५३७०—स्रमबिंद (श्रमबिन्दु) ...	पसीना, स्वेद, प्रस्वेद ।
५३७१—स्रमित (श्रमित)	परिश्रम-युक्त, थका हुआ ।
५३७२—सरल ...	सीधा, सोझा, सच्चा, ईमानदार, निश्छल, निष्कपट, सीधा-सादा, शुद्ध, स्वच्छ ।
५३७३—सर्ब ...	सबके सब, सभी, संपूर्ण, सब,—शिव, विष्णु ।
५३७४—सर्बज्ञ ...	सब जाननेवाला, भीतर-बाहर का जानने वाला, अन्तर्यामी ।
५३७५—स्रवत ...	गिरता है, बहता है, चूता है, टपकता है, पसीजता है ।
५३७६—सर्बत्र ...	सब जगह, सब ठौर, सब स्थानों पर ।
५३७७—सरबस ...	सर्वस्व, सब कुछ, सभी, सब का सब, निःशेष, बिलकुल ।
५३७८—स्रवहिं ...	बहते हैं, टपकते हैं, चुआते हैं, चूते हैं, पसीजते हैं ।
५३७९—स्रवेउ ...	चुआ, बहा, टपका, पसीना ढरा ।
५३८०—स्रवै ...	बहे, चुवे, टपके, पसीजे, ढरे ।
५३८१—सर्बदा ...	सब दिन, सदा, हमेशा, हर वक्त ।
५३८२—सरस ...	रसीला, रसवाला, रसयुक्त, आर्द्र, गीला, तर ।
५३८३—सरसई ...	सरस्वती नदी,—भीन जाय,—पक जावे,—स्वाद-युक्त होवे ।
५३८४—सरसिज, सरसीरुह ...	वारिज, अम्भोज, सरोवर से उत्पन्न, पद्म, कमल ।
५३८५—स्राद्ध (श्राद्ध) ...	पितृ-कर्म, पितरों के लिए पिण्डप्रदानादि कर्म ।
५३८६—स्राप ...	श्राप, शाप, गाली, बददुआ ।
५३८७—सरासन (शरासन)	धन्वा, धनुष, कमान ।
५३८८—सरासुर (शरासुर)	बाणासुर दैत्य ।
५३८९—सराहि ...	बड़ाई करके, स्तुति करके, प्रशंसा करके, तारीफ़ करके ।
५३९०—सराहत ...	बड़ाई करता है, स्तुति करता है, प्रशंसा करता है, तारीफ़ करता है ।
५३९१—सराहन ...	प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, तारीफ़, सराहना ।
५३९२—सराहिय ...	प्रशंसा करनी चाहिए, स्तुति करनी चाहिए, तारीफ़ करनी चाहिए ।
५३९३—सरि ...	नदी, दरिया, सरित्,—बराबरी, होड़, समता,—समान, बराबर, जैसा ।
५३९४—सरित, सरिता ...	नदी, तरंगिणी, दरिया ।
५३९५—सरिवारी ...	नदी का जल ।
५३९६—सरिस ...	समान, बरोबर, जैसा, सदृश ।
५३९७—सरीखा ...	समान, बरोबर, वैसाही, मुआफ़िक़ ।
५३९८—स्रीखंड (श्रीखण्ड)	श्वेत चन्दन, मलयागिरिचंदन,—सिखरन, दधि-निर्मित सुगंधियुक्त भोजन-पदार्थ ।

नं० शब्द	अर्थ
५३९९—स्रीपति (श्रीपति)	रमापति, लक्ष्मीपति, नारायण, विष्णु भगवान् ।
५४००—स्रीफल (श्रीफल)	नारिकेल, नारियल, नरियर,—बेल, बिल्वफल,—शरीफ़ा, सीताफल ।
५४०१—स्रीमुख (श्रीमुख)	सुंदर मुख, शोभायुक्त मुख,—आप का मुख ।
५४०२—स्रीमंत (श्रीमन्त)	श्रीमान्, धनवान्, लक्ष्मीवान्, धनी, रुपये वाला ।
५४०३—सरीर(शरीर)...	देह, तनु, वपु, बदन, देह ।
५४०४—स्रीरंग(श्रीरंग)...	भगवान् विष्णु, नारायण, लक्ष्मीपति, रमापति ।
५४०५—स्रीवत्स (श्रीवत्स)	नारायण के वाम वक्षःस्थल के चिह्न का नाम ।
५४०६—सरुज ...	रोगयुक्त, माँदा, बीमार, रोगी ।
५४०७—स्रुति(श्रुति) ...	वेद,—कान,—गान-विद्या का एक अंग,—सुनना ।
५४०८—स्रुतिकीरति (श्रुतिकीर्ति)...	शत्रुघ्नजी की भार्या का नाम, शत्रुघ्नजी की बहू का नाम ।
५४०९—स्रुवा ...	हवन वा यज्ञ करने का काष्ठ-निर्मित एक कलछी के जैसा पात्र ।
५४१०—सरूष ...	क्रोधयुक्त, क्रोधी, ग़ुस्सेवर ।
५४११—स्रेनी (श्रेणी) ...	पंक्ति, राजी, कतार, लड़, सिलसिला ।
५४१२—स्रेय (श्रेय) ...	कल्याणमय, भला ।
५४१३—सरोज ...	सरोवर से उत्पन्न, पद्म, कमल, कँवल ।
५४१४—स्रोता(श्रोता)...	सुनने वाला, श्रवणकर्ता, सुनवैया ।
५४१५—सरोरुह ...	सरोवर से उत्पन्न, कमल, सरोज, पद्म ।
५४१६—सरैं ...	दंड, डंड,—सरसों,—कर सकता हूँ,—बराबरा कर सकता हूँ ।
५४१७—सलज्ज ...	लज्जायुक्त, लज्जित, शर्मिन्दा ।
५४१८—सलिल ...	तोय, नीर, वारि, जल, पानी, नीर ।
५४१९—सलोक ...	लोक-सहित,—यश, प्रशंसा, कीर्ति ।
५४२०—सलोने ...	सुन्दर, नमकीन, लावण्ययुक्त, रूपवान्, मनोहर, प्रिय ।
५४२१—सब (शव) ...	लोथ, लाश, निर्जीव देह, मृत शरीर, मुरदा, मृतक ।
५४२२—स्व ...	निज, अपना, आत्मीय ।
५४२३—स्वच्छता ...	सफ़ाई, शुद्धता, निर्मलता, उज्ज्वलता ।
५४२४—स्वच्छंद ...	स्वतन्त्र, ख़ुदमुख़्तार, स्वाधीन, अपने मन का, आप इख़्तियार, मनोनुगामी, निर्द्वन्द, निर्भय ।
५४२५—सवति ...	सवत, सौत, सपत्नि, सैातिन, पति की दूसरी स्त्री ।
५४२६—सवतीया ...	सवत, सपत्नि,—सब स्त्रियाँ, संपूर्ण स्त्रियाँ ।
५४२७—स्वतंत्र ...	स्वच्छन्द, स्वेच्छाचारी, स्वाधीन, अपने मन का, मनोनुगामी, ख़ुद-मुख़्तार ।
५४२८—सवद (शब्द)...	बोली, वाणी, आवाज़ ।
५४२९—स्वपच(श्वपच)	चांडाल, डोम, कुत्ते को पका कर खानेवाला ।
५४३०—स्ववस ...	स्वाधीन, निज बस, अपने बस का ।
५४३१—स्वबास ...	अपना घर, अपना स्थान ।
५४३२—स्वयं ...	आपही, ख़ुदही ।

नं० शब्द		अर्थ
५४३३—स्वयंबर	...	वह उत्सव जिसमें राजकुमार निमंत्रित हो क्रमशः श्रेणी में बैठाये जाते हैं और राजकन्या उनमें से किसी को अपने मनोनुसार जयमाल पहिरा कर वरती है उसी से उसका व्याह होता है ।
५४३४—स्वर्ग	...	देवलोक, इन्द्र की पुरी ।
५४३५—सवरी(शवरी)	...	भीलनी, एक रामानुरागिनी भीलिनी जिसने बैर खिलाये थे ।
५४३६—स्वल्प	...	थोड़ा सा, बहुत कम, ज़रा सा, किञ्चित् ।
५४३७—स्वसेव्य	...	अपने सेवा के योग्य, अपना स्वामी, स्वेष्ट, अपना इष्ट देवता ।
५४३८—स्वागत	...	कुशलागमन, शुभागमन ।
५४३९—स्वाती	...	एक नक्षत्र का नाम, जिसमें वृष्टि होने से सीप में मोती, बाँस में बंसलोचन उत्पन्न होता है और पपीहा इसी जल को पीता है ।
५४४०—स्वाद	...	लज्जत, ज़ायका, रस ।
५४४१—स्वान(श्वान)	...	कुत्ता, कुक्कर, कूकुर, ग्रामसिंह, सग ।
५४४२—स्वामिधर्म	....	प्रभुधर्म, मालिक का धर्म, पति का धर्म ।
५४४३—स्वामी	...	प्रभु, पति, मालिक, नाथ ।
५४४४—स्वायंभू मनु	...	ब्रह्मा के पुत्र आदि-पुरुष का नाम, १४ मनु में से एक, सतरूपा के पति ।
५४४५—स्वारथ	...	स्वार्थ, अपना अर्थ, अपना प्रयोजन, अपना मतलब, अपनी गरज़ ।
५४४६—स्वारथी	...	स्वार्थी, स्वार्थसाधक, मतलबी, खुदगरज़ ।
५४४७—स्वास(श्वास)	...	श्वास, साँस, दम, प्राण वायु ।
५४४८—सबीज	....	बीजाक्षर सहित, बियेसमेत, तत्त्वयुक्त, सारयुक्त ।
५४४९—स्वेद	...	पसेव, पसीना, श्रमवारि, प्रस्वेद, श्रम-जल ।
५४५०—सस(शश)	...	शशक, खरहा, ख़रगोश ।
५४५१—सस्त्र(शस्त्र)	...	औज़ार, हथियार ।
५४५२—सस्य(शस्य)	...	तृण, तिनका, घास, भूसा ।
५४५३—ससि(शशि)	...	रजनीकर, सुधाकर, इन्दु, चाँद, चन्द्र, चन्द्रमा, माह ।
५४५४—ससिरस(शशिरस)		सुधा, अमृत, चन्द्रमा का रस, पियूष ।
५४५५—ससुर	...	श्वसुर, पत्नी का पिता, पति का पिता ।
५४५६—ससंक	...	शंकायुक्त, भययुक्त, संदेहयुक्त, डर के साथ, बालचन्द्र, दुइज का चाँद ।
५४५७—सह	...	समेत, सहित, युक्त, साथ, संग,—सहन कर के, बरदाश्त कर के, गवारा कर के ।
५४५८—सहगामिनि	...	सती, पतिव्रता, पति के साथ जल जानेवाली,—साथ जानेवाली, संग चलनेवाली ।
५४५९—सहज	...	साधारण, सुगम, सरल, स्वाभाविक, स्वभावतः, स्वभाव से उत्पन्न, अपने आप, आप से आप, बिना बनावट ।
५४६०—सहत	...	सहता है, सहन करता है, बरदाश्त करता है,—मधु ।
५४६१—सहनाई	...	रोशनचौकी, नफ़ीरी, एक प्रकार का मुँह से बजाने का बाजा ।
५४६२—सहनी	...	दरोग़ा, अफ़सर, सेनापति, दलपति ।

नं० शब्द		अर्थ
५४६३—सहम	...	डर, भय,—डर कर, भय से,—अहंकार-युक्त ।
५४६४—सहरोष	...	क्रोधयुक्त, ग़ुस्से के साथ,—क्रोध सहन करता है, ग़ुस्सा मारता है, ग़ुस्सा बरदाश्त करता है,—क्रोध सह कर, प्रसन्नतापूर्वक ।
५४६५—सहवासिनि	...	साथ रहनेवाली, एक संग निवास करनेवाली, भार्या, पत्नी, गृहमेधिनी, घरवाली ।
५४६६—सहस(सहस्र)	...	हज़ार, दस सौ, दश शत, १००० ।
५४६७—सहसबाहु (सहस्रबाहु)	...	हज़ार भुजावाला, सहस्रार्जुन, एक राजा का नाम जिसने परशुराम जी के पिता को मार डाला था ।
५४६८—सहसमुख (सहस्रमुख)	...	हज़ार मुखवाला, शेषनाग ।
५४६९—सहसा	...	बिना विचारे, झटपट, जल्दी,—हठ, ज़िद, बेवक़ूफ़ी, मूर्खता ।
५४७०—सहसाखी	...	सहस्राक्ष, हज़ार आँखवाला, इन्द्र, सहसनयन, सहस्र-नेत्र, विष्णु ।
५४७१—सहसानन	...	हज़ार मुखवाला, शेषनाग ।
५४७२—सहसनयन	...	हज़ार आँखवाला, सहस्राक्ष, सहस नयन, इन्द्र, सहस्र नेत्र विष्णु ।
५४७३—सहससीस	...	हज़ार सिरवाला, विष्णु, शेषनाग ।
५४७४—सहानुज	...	छोटे भाई के सहित, छोटे भाई के साथ ।
५४७५—सहाय	...	साथ, संग, मदद,—मददगार, साथी, संगी, सहायक, पक्षपाती, रक्षक ।
५४७६—सहावै	...	सहन करावे, बरदाश्त करावे, भोगावे ।
५४७७—सहि	...	सहन करके, भोग कर, बरदाश्त करके ।
५४७८—सहित	...	समेत, युक्त, साथ, संग,—बंधयुक्त, मित्रसहित, कुटुम्ब के साथ ।
५४७९—सहिदानी	...	साक्षी, साखा, गवाही ।
५४८०—सही	...	निश्चय, ठीक ठीक, पक्का, मज़बूत, दृढ़,—हस्ताक्षर, दस्तख़त ।
५४८१—सहेली	...	सखी, वयस्या, आली, अली, सहचरी, सहेली, साथिन, संगिन ।
५४८२—सहै	...	सहन करे, बरदाश्त करे ।
५४८३—सहोदर	...	एक पेट का जन्मा, सगा भाई, एक माँ-बाप का ।
५४८४—साईं	...	स्वामी, प्रभु, मालिक, ईश्वर ।
५४८५—साउज	...	हरिन, हरिना, मृगादि वन-जन्तु ।
५४८६—साक(शाक)	...	साग, भाजी, तरकारी, सब्ज़ी ।
५४८७—साकबनिक	...	कुंजड़ा, साग बेचनेवाला, भाजी बेचनेवाला, मेवाफ़रोश, फल-विक्रेता ।
५४८८—साका	...	संवत्,—सुकृतद्वारा यश, कीर्ति, प्रशंसा, यादगार, स्मारक ।
५४८९—साखा (शाखा)		डार, शाख़, डाली, वृक्ष के स्कंध,—तर्कना, एक विषय पर अनेक विचार!
५४९०—साखामृग	...	बानर, कपि, मर्कट, बन्दर ।
५४९१—साखि (साक्षि)		देखने वाला, गवाह,—गवाही ।
५४९२—साखोच्चार	...	वेद की शाखा-युक्त वंशावली-वर्णन, विवाह के अंत में गोत्र-शाखा-प्रवरादि-युक्त वंश का बखान ।
५४९३—सागर	...	समुद्र, समुन्दर, उदधि, वारिधि, जलनिधि ।

नं० शब्द		अर्थ
५४९४—साज	...	सामग्री,—सजा कर, क्रमशः, रख कर,—सजाओ, आरास्ता करो,—सजो।
५४९५—साढ़ेसाती	...	शनि की साढ़े सात वर्ष की दशा।
५४९६—सात्विक	...	रोमांच, गद्गद्भाव।
५४९७—सातव	...	सातवाँ,—सातों।
५४९८—साता	...	सात, ७।
५४९९—साथ	...	संग, सहित, युक्त।
५५००—साथरी	...	चटाई, आसन, आसनी, कथरी, साधारण बिछावन।
५५०१—सादर	...	आदर-सहित, आदर-पूर्वक, सत्कारयुक्त, मानयुक्त, सम्मान-पूर्वक, ख़ातिर के साथ।
५५०२—साध	...	मिलाया, उपाय किया, यत्न किया,—मिल,—मिल कर, यत्न कर के,—रीस, शौक़।
५५०३—साधक	...	साधन करनेवाला, यत्न करनेवाला, अभ्यास करनेवाला, मंत्र जपनेवाला, तपस्वी।
५५०४—साधन	...	उपाय, यत्न, तद्बीर, कोशिश।
५५०५—साधमत	...	शिष्टाचार, अच्छा व्यवहार, सज्जनों का मत, भले लोगों का विचार, महात्माओं का सिद्धान्त।
५५०६—साध्य	...	साधनयोग्य, यत्न करने लायक़, तदबीर के लायक़।
५५०७—साधा	...	मिलाया, यत्न किया, उपाय किया।
५५०८—साधु	...	सज्जन, सन्त, सत्पुरुष, सीधे लोग, सच्चा, सरल, महात्मा लोग।
५५०९—सान	...	शान, शेख़ी, अहंकार,—धार लगाने का यंत्र, शस्त्रों को तेज़ करने का यंत्र।
५५१०—साना	...	मिलाया, सैांदा, सान दिया,—मिलाया हुआ, सैांदा हुआ।
५५११—सानुकूल	...	अनुकूल, अनुकूलता-युक्त, मनोनुसार, उपयुक्त, मन के मुताबिक़।
५५१२—सापत (शापत)		शाप देता है, सरापता है, कोसता है, गाली देता है।
५५१३—साम	...	शान्ति, समझावन, सलाह, शिक्षा।
५५१४—सामद	...	शान्ति-दाता, समझाने वाला, सलाह देनेवाला, शिक्षक।
५५१५—सामुझि	...	समझ, बुद्धि, मति, अक़्ल।
५५१६—सायक	...	नाराच, शर, बाण, तीर।
५५१७—सायुज (सायुज्य)		मोक्ष, ब्रह्म में लीन, तन्मय, ब्रह्ममय, निर्वाण।
५५१८—सार	...	तत्त्व, हीर, सत, सत्त्व, रस, जल, मूल, बल, अस्ल बात, ख़ुलासा,—लोहा,—साला, पत्नी का भ्राता।
५५१९—सारथि	...	सारथी, सूत, रथवान, रथवाहक, रथ चलानेवाला, गाड़ीवान, कोचवान।
५५२०—सारद (शारद)		सरस्वती, वाणी,—शरद ऋतु-सम्बन्धी।
५५२१—सारदी (शारदी)		सरस्वती-सम्बन्धी,—शरद ऋतु-सम्बन्धी।
५५२२—सारस	...	एक प्रकार का पक्षी जिस की लम्बी टाँगे, लम्बी गर्दन और मछली आहार है।

नं० शब्द		अर्थ
५५२३—सारा	...	तत्त्व, सार, सत्त्व, सत्, मूल वार्त्ता, ख़ुलासा,—साला, स्त्री का भाई,—पूरा किया, बनाया।
५५२४—सारिका	...	सिरोही, एक चिड़िया, मैना, सारो, सारी।
५५२५—सारिखे	...	समान, तुल्य, बरोबर, नाईं, ऐसे।
५५२६—सारी	...	सारो, सिरोही, मैना, सारिका,—साली, स्त्री की बहिन,—बनाई, पूरी की।
५५२७—सारु	...	सार, तत्त्व, ख़ुलासा, संक्षेप।
५५२८—सारे	...	सब, सभी, कुल, बिलकुल, संपूर्ण,—साले, स्त्री के भाई,—बनाये, पूर्ण किये।
५५२९—सारंग	...	धनुष, विष्णु का धनुष,—भ्रमर, मोर, सर्प, घट, इत्यादि यथा स्थान अनेक अर्थ होते हैं।
५५३०—साल	...	दुःख,—शोभा,—घर,—वर्ष,—धँसनेवाली वस्तु,—धँसा दिया।
५५३१—सालक	...	दुखदाई, कटुवादी, चुभानेवाला, धसानेवाला, हृदय को दुखानेवाला।
५५३२—साला	...	चुभाया, धसाया, प्रविष्ट किया, दुखाया, स्त्री का भाई, दुख दिया,—स्थान, घर, सारा।
५५३३—सालि(शालि)...		धान,—शोभायुक्त,—संयुत,—सालक,—साली, भार्या की बहिन।
५५३४—साली	...	सारी, पत्नी की बहिन,—धान,—संयुक्त,—सालक,—चुभोनेवाला।
५५३५—सावक (शावक)		बालक, बच्चा, मृगादि का बच्चा।
५५३६—सावकरन (श्यामकर्ण)...		काले कानवाले घोड़े, अश्वमेध यज्ञ के घोड़े जो सर्वाङ्ग श्वेत और उनके कान मात्र काले होते हैं।
५५३७—सावकास (सावकाश)...		काम से छुट्टी, सुबीता, छुट्टी, मौक़ा, अवसर, फ़ुरसत, गौं।
५५३८—सावन(श्रावण)		एक महीने का नाम, वर्षा ऋतु का एक महीना।
५५३९—साबर(शाबर)...		किरात का,—किरात के वेष में, शिवकृत मंत्रादि।
५५४०—सास्वतं (शाश्वतं)		अमर, देवता।
५५४१—सासु	...	श्वश्रु, पति की माता, पत्नी की माता।
५५४२—सासुर	...	ससुरार, ससुर का घर, पति वा पत्नी के माँ-बाप का घर।
५५४३—साहस	...	हिम्मत, हौसला।
५५४४—साहिनी	...	सेनापति, सेना का मालिक, अफ़सर, सेनाध्यक्ष, कपतान।
५५४५—सियन	...	सिलाई, सीवन।
५५४६—सियारा	...	सीनेवाला,—शृगाल, जम्बुक, गीदड़, उल्कामुख।
५५४७—सिकता	...	बालू, रेत, रेणु, रेती, थल।
५५४८—सिख	...	सीख, शिक्षा, सिखाव,—चोटी, शिखर, दिये की टेंव, अग्नि-ज्वाल, नोक, शिष्य, चेला।
५५४९—सिखा(शिखा)...		चोटी, वेणी, चुन्दी, चुरकी, चुटिया।
५५५०—सिखावन	...	शिक्षा, सलाह, उपदेश।

नं० शब्द		अर्थ
५५५१—सिखि (शिखि)		केकी, मयूर, मोर, शिखावाला, चोटीदार ।
५५५२—सित	...	श्वेत, सफ़ेद, उज्ज्वल, शुद्ध, साफ़, निर्मल, उजला,—उँजेला ।
५५५३—सिथिल (शिथिल)		ढीला, सुस्त, मट्ठर, खुला हुआ, मुक्त, अपाहज़, निकम्मा, असमर्थ, निर्बल ।
५५५४—सिद्ध	...	योगी, अष्टसिद्धि-प्राप्त, त्रिकालदर्शी, ज्ञानी,—तपस्वी, पूरा, समाप्त, पका हुआ, तैयार, बना हुआ, प्रसिद्ध, सफल, साबित किया हुआ,—ज्योतिष के एक योग का नाम ।
५५५५—सिद्धि	... ...	मनोरथ की पूर्णता, बाँछित फल की प्राप्ति, इच्छा का पूरा होना, अष्ट-सिद्धि की प्राप्ति ।
५५५६—सिद्धांत	...	स्थिर किया हुआ, निश्चित, ठहराया हुआ, निर्णीत, निर्णय किया हुआ ।
५५५७—सिधाये	...	गये, चले गये, जाते हुए, चल दिये ।
५५५८—सिधारी	...	गई, चली गई, जाती भई, चल दी ।
५५५९—सिधावा	...	गया, चला गया, सिधारा, चल दिया, चलता भया, जाता रहा, मर गया ।
५५६०—सिमिट	...	इकट्ठा होकर, बटुर कर, एकत्रित हो कर ।
५५६१—सिय	...	जानकी, मैथिली, जनकतनया, सीता, रामपत्नी ।
५५६२—सियरे	...	ठंढे, जूड़े, शीतल, सर्द ।
५५६३—सिर	...	शीर्ष, मस्तक, शिर, माथा ।
५५६४—सिरजा (सृजा)		बनाया, रचा, उत्पन्न किया, निर्माण किया ।
५५६५—सिराई	...	पूरी हुई, बन पड़ी, निबही, समाप्त भई,—ठंढी भई, जुड़ाई, जुड़ानी, सीरी भई ।
५५६६—सिरात	...	पूरा होता है, समाप्त होता है, निबहता है, बन पड़ता है, हो सकता है,—ठंढे होते हैं, जुड़ाते हैं, जूड़े होते हैं,—अँटता है, समाता है,—बीतता है ।
५५६७—सिरान	...	पूरा हुआ, समाप्त हुआ, बन पड़ा, निबह गया, हो सका, ठंढा भया, जुड़ाया, जुड़ाना, बीत गया, ओराय गया ।
५५६८—सिराने	...	पूरा होने पर, समाप्त होने पर, बन पड़े पर, निबहने से, हो सकने पर,—ठंढे होने पर, जुड़ाने पर, ठंढे भये, जुड़ाये, बीत गये ।
५५६९—सिरानी	...	पूरी भई, समाप्त भई, निपट गई, बन पड़ी, निबही, हो सकी, ठंढी भई, बीत गई ।
५५७०—सिरिस	...	एक वृक्ष का नाम ।
५५७१—सिरो	...	सिर भी, सीस भी, मस्तक भी ।
५५७२—सिरोमनि	...	सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सबसे ऊँचा, सबके ऊपर का,—सिर पर धारण करने का मणि, सिर पर पहिरने का भूषण ।
५५७३—सिला (शिला)	...	पत्थर, चट्टान, चौड़ा पत्थर, चिपटा पत्थर ।
५५७४—सिलीमुख (शिलीमुख)		भ्रमर, भौंरा,—बाण, शर, तीर ।
५५७५—सिलप (शिलप)	...	कारीगरी, राजगीरी, हुनर, दस्तकारी ।

नं०	शब्द		अर्थ
५५७६	सिव(शिव)	...	कल्याण,—महादेवजी ।
५५७७	सिवसैल (शिवशैल)	...	कैलाश पर्वत ।
५५७८	सिवा(शिवा)	...	पार्वती, शिव-पत्नी,—सिवा, अतिरिक्त ।
५५७९	सिवार	...	जल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का घास ।
५५८०	सिवि(शिवि)	...	एक राजा का नाम ।
५५८१	सिविका(शिविका)		पालकी, म्याना, डोली ।
५५८२	सिस्न(शिश्न)	...	मूत्रेन्द्रिय, उपस्थ, पुरुषेन्द्रिय, लिंग ।
५५८३	सिसिर(शिशिर)		एक ऋतु का नाम जो वसन्त से पूर्व होती है, पतझाड़, माघ-फागुन ।
५५८४	सिसु(शिशु)	...	लड़का, बच्चा, बालक ।
५५८५	सिहाऊ	...	संतोष, अभिलाष, दाह,—संतुष्ट हो, अभिलषित हो ।
५५८६	सिहात	...	संतुष्ट होता है, अभिलाषा करता है, दाह करता है ।
५५८७	सीकर	...	कणा, कण, फुही, पानी के सूक्ष्म बूँद, छींटा, कन, बूँद ।
५५८८	सीख	...	सिखावन, शिक्षा, उपदेश, सलाह, सम्मति ।
५५८९	सींच	...	तर किया, भिंगोया, आर्द्र किया, वृक्ष में जल दिया ।
५५९०	सीत (शीत)	...	जाड़ा, पाला, ठंड, शीतलता, सर्दी ।
५५९१	सीतल(शीतल)		ठंडा, सीरा, सर्द ।
५५९२	सीता	...	जानकी, वैदेही, जनक-कन्या,—हल के नीचे के लोहे का फल ।
५५९३	सीदहिँ	...	दुखी होते हैं, कम्पित होते हैं ।
५५९४	सीध	...	सीधा, सरल,—सामना, लक्ष्य, निशाना, मुक़ाबिला ।
५५९५	सीप	...	सिप्पी, सुतुही, सुक्ति, एक जलजन्तु जिसके उदर में मोती निकलता है ।
५५९६	सीम	...	सीमा, हद, प्रमाण, छोर, अन्त ।
५५९७	सीय	...	सीता, वैदेही, जानकी, जनक-नन्दिनी, राम-भार्या ।
५५९८	सील (शील)	...	स्वभाव, प्रकृति, संकोची-स्वभाव, मुलाहिज़ेदार अपना-मिज़ाज ।
५५९९	सीव	...	सीम, सीमा, हद, सिवान, मेड़, डँड़वारा, प्रमाण, छोर, अन्त ।
५६००	सीसा	...	सिर, सीस, मस्तक, शीर्ष,—दर्पण, आईना, काँच ।
५६०१	सु	...	सुन्दर, अच्छा, प्रिय ।
५६०२	सुअर	...	शूकर, वराह, कोल, क्रोड़ ।
५६०३	सुआर	...	सूपकार, रसोईदार, रसोइया, पाक बनानेवाला, बावरची ।
५६०४	सुआसिनि	...	सुहागिन, सौभाग्यवती, सावित्री, सधवा ।
५६०५	सुअंजन	...	अच्छा अंजन, सिद्धाञ्जन, नेत्र-विकार को नाश करनेवाला अंजन ।
५६०६	सुक(शुक)	...	सुग्गा, तोता,—शुकदेव मुनि,—रावण के एक दूत का नाम ।
५६०७	सुकर्कस	...	अति कठोर, लड़ाका, कटुवादी, अति चिड़चिड़ा, कठोर शब्द ।
५६०८	सुकुमार	...	सुकुवाँर, निर्बल, नाज़ुक, कमज़ोर, कोमल ।
५६०९	सुकृत	...	पुण्य, सुकर्म, भली करनी,—पुण्यवान् ।
५६१०	सुकृती	...	पुण्यवान्, पुण्यशील, धर्मात्मा, अच्छा कार्य्य करनेवाला ।

नं० शब्द		अर्थ
५६११—सुक (शुक्र)	...	शुक्राचार्य्य, दैत्यगुरु, उशना, कवि,—नक्षत्र विशेष,—ग्रह विशेष,—एक वार का नाम,—वीर्य ।
५६१२—सुक्र (शुक्ल)	...	सफ़ेद, श्वेत, उज्ज्वल, शुद्ध, उजला, गोरा ।
५६१३—सुकेत / सुकेतु	...	एक यक्ष का नाम, ताड़का के पिता का नाम,—सुन्दर ध्वजावाला ।
५६१४—सुकंठ	...	सुग्रीव,—अच्छी गर्दन वाला,—कोमलालापी, मधुरभाषी, ख़ुशगुलू,—बानरों के राजा का नाम, सुग्रीव बानर ।
५६१५—सुख	...	आनन्द, हर्ष, मोद, पुण्यफल, सुकृतफल, प्रसन्नता ।
५६१६—सुखकारी	...	सुखदायक, आनन्दजनक, हर्षकर, आनन्द देनेवाला, आरामदेह ।
५६१७—सुखद	...	सुखदायी, सुखदायक, आनंद देनेवाला, आरामदेह ।
५६१८—सुखमा	...	शोभा, सौंदर्य, सुन्दरता ।
५६१९—सुखाई	...	शुष्क हो गई, सूख गई,—शुष्क करदी, सुखा दी,—सुखा कर,—सूख जाता है ।
५६२०—सुखागर	...	सुखोत्पादक, सुख को लानेवाला, सुखद ।
५६२१—सुखानी	...	सूख गई, शुष्क हो गई, खश्क हो गई ।
५६२२—सुखासन	...	सुखपाल, एक प्रकार का पालकी-सदृश यान ।
५६२३—सुखी	...	सुखसंयुक्त, आनंदित, प्रसन्न, सुखिया ।
५६२४—सुखेन(सुषेण)	...	सुखपूर्वक, सुख से,—एक वैद्य का नाम ।
५६२५—सुगम	...	सहज, बेपरिश्रम, सहज में प्रवेश करने योग्य ।
५६२६—सुगाई	...	सुंदर गैया, कामधेनु,—उत्तम रीति से गाई ।
५६२७—सुग्रीव	...	बानर-राज का नाम, बालि के छोटे भाई का नाम ।
५६२८—सुगंध	...	सुन्दर गन्धि, सुवास, ख़ुशबू, गमक, महक ।
५६२९—सुघट्ट	...	अच्छा बना हुआ, सुरचित, सुघर, सुघराई से बना ।
५६३०—सुघटित	...	अच्छा बना हुआ, सुरचित, सुघराई से बनाया हुआ ।
५६३१—सुचाई	...	शुद्धता, सफ़ाई, पवित्रभाव, शुद्धि, सरलता,—स्मरण कराई, याद दिलाई, ध्यान दिलाई ।
५६३२—सुचि (शुचि)	...	शुद्ध, पवित्र, स्पष्ट, साफ़, उज्ज्वल ।
५६३३—सुचिंतन	...	भलीभाँति का विचार, यथेष्ट ग़ौर, अच्छी तरह स्मरण ।
५६३४—सुछंद (स्वच्छन्द)		स्वतंत्र, निर्भय, निडर, स्वेच्छाचारी, मनोनुगामी, अपने मन का ।
५६३५—सुजन	...	भले लोग, सज्जन, साधु, भले आदमी ।
५६३६—सुजस	...	सुन्दर यश, सुकीर्ति, नामवरी ।
५६३७—सुजान	...	ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, जानकार, भलीभाँति जानने वाला, सुज्ञान, सुबूझ ।
५३३८—सुटुकि	...	कोड़ा मार कर, चाबुक मार के, चाबुक चला कर,—अति शीघ्रता से गमन करके ।
५६३९—सुठि	...	अति, बहुत, अत्यन्त, भलीभाँति ।
५६४०—सुत	...	पुत्र, बेटा, लड़का ।
५६४१—सुता	...	दुहिता, कन्या, लड़की, बेटी ।

नं० शब्द		अर्थ
५६४२—सुतीछन (सुतीक्ष्ण)		एक ऋषि का नाम ।
५६४३—सुतीछी	...	अति चोखी, बड़ी तीखी, धारदार,—तीखे स्वभाव वाली, तेज़मिज़ाज ।
५६४४—सुतंत्र (स्वतंत्र)		स्वाधीन, स्वच्छन्द, अपने मन का ।
५६४५—सुद्ध (शुद्ध)	...	साफ़, स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्मल, श्वेत,—बिना मूल का, चूक-रहित ।
५६४६—सुदेस	...	सुन्दर, अच्छा, कमनीय,—अच्छा देश ।
५६४७—सुधरहि	...	सुधर जाते हैं, बन जाते हैं, सँभल जाते हैं ।
५६४८—सुधा	...	अमी, अमृत, पीयूष ।
५६४९—सुधाकर	...	अमृत की खान, चन्द्रमा, चाँद, इन्दु, विधु ।
५६५०—सुधारि	...	सुधार कर, बना कर, दुरुस्त करके, ठीक कर के ।
५६५१—सुधि	...	समाचार, ख़बर, हाल, अहवाल ।
५६५२—सुनत	...	सुनते ही, श्रवण करते ही,—सुनता है, श्रवण करता है ।
५६५३—सुनहिं	...	सुनते हैं, सुनें ।
५६५४—सुनयना	...	सुन्दर नेत्रवाली,—राजा जनक की पत्नी का नाम, जानकी की माता ।
५६५५—सुनहु	...	सुनो, श्रवण करो, सुनिए ।
५६५६—सुनाइ	...	सुना कर ।
५६५७—सुनाजू	...	सुन्दर अन्न, अच्छा अनाज़ ।
५६५८—सुनावा	...	सुनाया, श्रवण कराया ।
५६५९—सुनायसि	...	सुनाइयो, श्रवण कराइयो ।
५६६०—सुनासीर	...	इन्द्र ।
५६६१—सुनि	...	सुन कर, सुन के, श्रवण कर के ।
५६६२—सुनिहहिं	...	सुनेंगे, श्रवण करेंगे ।
५६६३—सुनु	...	सुन, श्रवण कर ।
५६६४—सुपास	...	सुख, आराम, सुविस्ता, सुबीता ।
५६६५—सुपेती	...	सुफ़ेदी, उज्ज्वलता, निर्मलता, सफ़ाई ।
५६६६—सुफल	...	सुन्दर फल, अच्छा फल, सुपरिणाम,—तीर्थ के पंडो का बिदा के समय का आशीर्वाद ।
५६६७—सुबस	...	स्ववश, स्वाधीन ।
५६६८—सुबाहु	...	एक राक्षस का नाम ।
५६६९—सुबेल	...	लंका के एक पर्वत-शिखर का नाम ।
५६७०—सुभ(शुभ)	...	मंगलप्रद, अच्छा, भला, कल्याणकारी, मंगल-दायक ।
५६७१—सुभग	...	सुन्दर, शोभायुक्त, मनोहर,—उत्तम ऐश्वर्य ।
५६७२—सुभगुण	...	ज्ञान-वैराग्यादि अच्छे गुण, सुलक्षण, सुचलन ।
५६७३—सुभट	...	वीर, शूर, सिपाही, लड़ाके, योद्धा ।
५६७४—सुभ्र (शुभ्र)	...	सफ़ेद, साफ़, उज्ज्वल, सुथरा ।
५६७५—सुभाऊ	...	स्वभाव, प्रकृति,—सुन्दर भाव,—मिज़ाज,—सहज में, साधारणतः ।
५६७६—सुभाय	...	साधारण ही, सहज ही ।

नं० शब्द		अर्थ
५६७७—सुभाव	...	स्वभाव, प्रकृति, मिज़ाज,—अच्छा भाव,—सहज ही, साधारण ही ।
५६७८—सुभुज	...	सुन्दर बाहुवाला,—सुबाहु नामक राक्षस ।
५६७९—सुमति	...	अच्छी बुद्धि, सुन्दर बुद्धि, भलमनसी,—सुन्दर बुद्धिवाला, भला-मानस ।
५६८०—सुमन	...	पुष्प, प्रसून, फूल, गुल, कुसुम, —सुन्दर मन, शुद्ध मन ।
५६८१—सुमित्रा	...	श्रीलक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता का नाम ।
५६८२—सुमिर	...	स्मरण करो,—स्मरण कर के ।
५६८३—सुमिरत	...	स्मरण करते ही, याद करते ही,—स्मरण करते हैं, याद करते हैं ।
५६८४—सुमुखि	...	सुन्दर मुखवाली ।
५६८५—सुमृति	...	स्मृति-ग्रंथ, धर्म-शास्त्र, मीमांसा ।
५६८६—सुमंत	...	राजा दशरथ के मंत्री का नाम ।
५६८७—सुमंत्र	...	अच्छी सलाह, भली राय, सुसम्मति ।
५६८८—सुर	...	अमर, देवता ।
५६८९—सुरगुरु	...	देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।
५६९०—सुरतरु	...	कल्पवृक्ष।
५६९१—सुरबीथी	...	देवमार्ग, देवताओं की गली ।
५६९२—सुरभि	...	गैया, कामधेनु,—सुगंधित,—वसन्त ।
५६९३—सुरसर	...	मानसरोवर ।
५६९४—सुरसरि	...	देवसरि, ब्रह्मद्रव, भागीरथी, गंगानदी ।
५६९५—सुरसा	...	सर्पों की माता का नाम ।
५६९६—सुरसेनप	...	कार्त्तिकेय, कार्त्तवीर्य, स्वामिकार्त्तिक, देवताओं के सेनापति ।
५६९७—सुरा	...	वारुणी, मदिरा, मद्य, शराब ।
५६९८—सुराई	...	शूरता, वीरता, बहादुरी ।
५६९९—सुराती	...	भली रात्रि, अच्छी रात,—देवशत्रु, राक्षस ।
५७००—सुरानीक	...	देवताओं की सेना,—अच्छी शराब, अच्छा मद्य।
५७०१—सुरारी	...	देवशत्रु, देवताओं के वैरी, राक्षस, दैत्य ।
५७०२—सुरासुर	...	देवता और राक्षस ।
५७०३—सुरुचि	...	अच्छी रुचि, भली चाह,—अच्छी रुचि को उत्पन्न करनेवाला ।
५७०४—सुरंगा	...	लाल, रक्तवर्ण,—अच्छा रंग,—सुचाल, भले चालचलन ।
५७०५—सुलगै	...	दहके, बरे, बले, धधके, भभके ।
५७०६—सुलच्छन	...	सुलक्षण, अच्छे लक्षण, सुचलन,—अच्छे चाल-चलन वाला, सुचाल ।
५७०७—सुलभ	...	सहज, सुगम, सहज ही मिलने योग्य, साधारण में प्राप्त होने योग्य ।
५७०८—सुबस	...	स्ववश, अपने बस का ।
५७०९—सुवास	...	सुगंधि, ख़ुशबू,—यश ।
५७१०—सुवासिनी	...	सावित्री, सौभाग्यवती, सुहागिन, सधवा ।
५७११—सुहाई	...	सुंदर, शोभायमान,—शोभित हुई ।
५७१२—सुहाग	...	सौभाग्य, सोहाग ।

नं० शब्द		अर्थ
५७१३—सुहावनी	...	शोभावाली, सुंदरी, प्रिय लगनेवाली, कमनीया ।
५७१४—सुहृद	....	मित्र, बाँधव, सुजन, भले लोग, हितकारी ।
५७१५—सूकर (शूकर)		क्रोड़, शूकर, बराह, सुअर ।
५७१६—सूकरखेत	...	वाराहक्षेत्र, वर्त्तमान में इसे सोरों कहते हैं ।
५७१७—सूख	...	सूख गया, शुष्क होकर,—सूखा, शुष्क, ख़ुश्क ।
५७१८—सूखत	...	सूखते हुए,—सूखते ही,—सूखता है ।
५७१९—सूच	...	जाना,—जानने योग्य वस्तु,—सूझ ।
५७२०—सूचक	...	जनावनेवाला, स्मारक, दिखानेवाला, याद करानेवाला, जतानेवाला, सोचाने वाला, याद दिलानेवाला ।
५७२१—सूचता	...	जनाता है, स्मरण कराता है, याद दिलाता है, दिखलाता है, जताता है ।
५७२२—सूझ	...	नज़र पड़ता है, दिखाई देता है, सूझता है, देख पड़ता है,—नज़र, दृष्टि ।
५७२३—सूझहिँ	...	देख पड़ते हैं, दिखाई देते हैं, सूझते हैं,—सूझे, देखपड़े ।
५७२४—सूत	...	रथवान, रथ-वाहक, सारथी,—पौराणिक, पुराण बाँचने वाली एक
	...	जाति,—डोरा ।
५७२५—सूत्र	...	सूत, डोरा, तार, तागा, धागा,—सीध, लक्ष्य, निशाना ।
५७२६—सूत्रधार	...	पुतरी नचानेवाला, कठपूतरी वाला, नाटक-कर्त्ताओं का अधिपति, बाज़ीगर, तमाशा करनेवाला ।
५७२७—सूद्र (शूद्र)	...	चतुर्थ वर्ण, चौथी जाति, नीच जाति ।
५७२८—सूध	...	सीधा, सूधा, साधुस्वभाव, सरल, सादा ।
५७२९—सून	...	शून्य, सुन्न, ख़ाली, अंतरिक्ष, पोल, सूना, अकेला, एकान्त, निर्जन ।
५७३०—सूनु	...	लड़का, पुत्र, बेटा ।
५७३१—सूने	...	निर्जनस्थान में, निराले में, अकेले में, एकान्त में ।
५७३२—सूप	...	दाल,—रसोई, पाक,—छाज, जिसमें अनाज पछोड़ा जाता है ।
५७३३—सूपकारक	...	रसोईदार, रसोइया, रसोई बनाने वाला, बावरची ।
५७३४—सूपोदन	...	दाल-भात ।
५७३५—सूपशास्त्र	...	पाकशास्त्र, रसोई बनाने की विधि का शास्त्र ।
५७३६—सूपनखा(शूर्पणखा)		सूप के समान नखोंवाली, रावण की बहिन ।
५७३७—सूल (शूल)	...	त्रिशूल, बरछी, कटारी आदि चुभाकर मारने वाले शस्त्र,—पीड़ा, दर्द, दुःख, खोंचा, पीड़ा की लहर ।
५७३८—सृगाल (शृगाल)		सियार, उल्कामुख, गीदड़ ।
५७३९—सृजत	...	बनाता है, रचता है, निर्माण करता है,—रचते ही, बनाते ही ।
५७४०—सृजि	...	रच कर, बना कर, निर्माण कर के, उत्पन्न, कर के ।
५७४१—से	...	समान, बराबर, मुआफ़िक़, मानिन्द, नाईं, जैसे,—द्वार, कारण,—से,
	...	सेवन कर ।
५७४२—सेइय	...	सेवन करिए, सेवन करना चाहिए,—सेवन करो, सेवा करो, ख़िदमत करो ।
५७४३—सेज	...	शय्या, सेज़ा, खाट, खटिया, मंझा, पलँग, बिछावन, बिछौना, बिस्तरा ।

नं० शब्द		अर्थ
५७४४—सेत	...	श्वेत, सफ़ेद, उज्ज्वल, साफ़, निर्मल, उजला ।
५७४५—सेतु	...	पुल, बाँध, मर्यादा, सोमा, हद ।
५७४६—सेन	...	सेना, फ़ौज, सिपाहियों का दल,—श्येन, बाज़, एक शिकारी पक्षी ।
५७४७—सेनप	...	सेनापति, फ़ौज का अफ़सर, कपतान ।
५७४८—सेयेउ	...	सेवन किया, सेवा की, ख़िदमत की ।
५७४९—सेर	...	व्याघ्र, बाघ, शेर,—तौलने का बाट ।
५७५०—सेल	...	बरछी, भाला, साँग, शक्ति, एक प्रकार के शस्त्र का नाम ।
५७५१—सेव	...	सेवा करे,—सेवा करता है,—सेवा की ।
५७५२—सेवक	...	सेवा करनेवाला, नौकर, दास, भृत्य ।
५७५३—सेवकाई	...	सेवा, नौकरी, दास्य, दासत्व, भृत्यत्व ।
५७५४—सेवत	...	सेवा करते ही,—सेवा करने से, सेवा करने में, सेवा करता है ।
५७५५—सेव्य	...	सेवा के योग्य, नौकरी के लायक़, सेवन करने योग्य ।
५७५६—सेवरी	...	भीलनी, किरातिन,—एक राम की भक्त भीलनी का नाम ।
५७५७—सेवा	...	सेवकाई, नौकरी ।
५७५८—सेष (शेष)	...	सहस्रफन, शेषनाग,—बचा हुआ, बाक़ी, अन्तिम ।
५७५९—सैन	...	कटाक्ष, इशारा, आँख का इशारा,—सेना, फ़ौज ।
५७६०—सैनहि	...	सैन कर के, आँख के इशारे से, कटाक्ष-द्वारा ।
५७६१—सैल (शैल)	...	पर्वत, पहाड़, गिरि, भूधर ।
५७६२—सैलजा (शैलजा)		पार्वती, गिरिजा, पर्वत की कन्या, हिमाचल की कन्या ।
५७६३—सैलराज (शैलराज)		पर्वतराज, हिमालय पर्वत ।
५७६४—सो	...	वह, वेही ।
५७६५—सोइ	...	वही, वेही ।
५७६६—सोई	...	वही, वह भी,—सो गई, सूत गई, सोती भई ।
५७६७—सोऊ	...	वह भी, सो भी ।
५७६८—सोक (शोक)	...	ग़म, अफ़सोस, खेद, दुख, सोग, रंज ।
५७६९—सोख	...	सूख गया, सुखा लिया, सुखाया गया ।
५७७०—सोखत	...	सुखता है, सोख लेता है, शुष्क कर देता है,—सुखाते हो ।
५७७१—सोखा	...	सोख लिया, सुखा दिया, सूख गया, शुष्क कर दिया ।
५७७२—सोग	...	शोक, खेद, दुख, रंज, ग़म, अफ़सोस ।
५७७३—सोचनीय / शोचनीय	...	सोचने-योग्य, विचार-योग्य, चिन्ता के योग्य ।
५७७४—सोच (शोच)	...	विचार, चिन्ता, खेदयुक्त विचार ।
५७७५—सोचिय	..	विचारिए, चिन्ता करिए,—सोचना चाहिए, चिन्ता करनी चाहिए ।
५७७६—सोती	...	शयन करती ।
५७७७—सोध	...	सुधि, ख़बर, पता, ठिकाना, हाल, अहवाल, खोज, तलाश ।
५७७८—सोधा	...	शुद्ध किया, ठीक किया, बनाया, दोष-रहित किया ।
५७७९—सोधि	...	शुद्ध कर के, ठीक कर के, बना कर,—ढूँढ़ कर, खोज कर, तलाश कर के, हेर कर ।

नं० शब्द		अर्थ
५७८०—सोधउ	...	साफ़ किया, शुद्ध किया, बनाया, खोजा, हेरा, ढूँढ़ा, तलाश किया ।
५७८१—सोन(शोण)	...	सोनभद्रानदी,—लाल,—सोना, सुवर्ण,—सो नहीं, वह नहीं ।
५७८२—सोना	...	कंचन, सुवर्ण, हेम, कनक, स्वर्ण ।
५७८३—सोनित (शोणित)		लोहू, रक्त, रुधिर, खून ।
५७८४—सोनिप(शोणिप)		पृथ्वीपति, भूपति, राजा, नरेश ।
५७८५—सोपान	...	सीढ़ी, निश्रेणी, निसेनी, ज़ीना ।
५७८६—सोपि	...	सो भी, वह भी, तौन भी ।
५७८७—सोभा(शोभा)	...	सुन्दरता, छबि, कांति ।
५७८८—सोम	...	चाँद, चन्द्र, चन्द्रमा,—सोमवार, चन्द्रवार ।
५७८९—सोरह	...	षोड़श, सोलह, १६ ।
५७९०—सोरा	...	हौरा, गुल, कोलाहल का शब्द, ज़ोर की आवाज़,—एक ओषधि का नाम ।
५७९१—सोवत	...	सोता है, शयन करता है, नींद लेता है, निद्रा लेता है,—सोते ही, निद्रा-लेते ही,—सोने से ।
५७९२—सोवसि		तू सोता है, तू शयन करता है, तू निद्रा लेता है ।
५७९३—सोवा	...	सोगया, सूता, शयन किया, विश्राम किया, सूत गया ।
५७९४—सोषक(शोषक)		सोखनेवाला, सुखानेवाला, शुष्क करनेवाला ।
५७९५—सोसि	...	सो हो, सो तू है ।
५७९६—सोसु	...	उसका, उसी का ।
५७९७—सोह	...	शोभा पाता है, सोहाता है, शोभायमान होता है, प्रिय लगता है, भला लगता है ।
५७९८—सोहमस्मि	..	वह मैं हूँ, मैं वही हूँ ।
५७९९—सोहाई	...	शोभायमान हुई, शोभित हुई, शोभा को प्राप्त हुई, भली लगने लगी ।
५८००—सोहात	...	शोभा पाता है, सजता है, सुहावना लगता है, भला लगता है ।
५८०१—सोहावनी	...	सुन्दर, शोभा देनेवाली, मनभावनी, पसन्दीदा ।
५८०२—सोहैं	...	शोभित हो, शोभा पावे, सजे, भला लगे, अच्छा लगे, सुहावे ।
५८०३—सौ	...	शत, १०० ।
५८०४—सौच (शौच)	...	शुद्धता, पवित्रता, सफ़ाई, शुद्धि,—मलशुद्धि की क्रिया ।
५८०५—सौध	...	मन्दिर, घर, मकान ।
५८०६—सौभागिनि	...	सुहागिन, सौभाग्यवती, सधवा,—अच्छे भाग्यवाली, भाग्यवती स्त्री ।
५८०७—सौमित्रि	...	सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न ।
५८०८—सौरज (शौरज)		शूरता, वीरता, बहादुरी,—शूरवीरों से उत्पन्न, वीर-पुत्र, बहादुर ।
५८०९—सौरभ	...	आम का वृक्ष,—सुगंधि-युक्त ।
५८१०—सं (श)	...	कल्याण, भला, अच्छा, मगल, शुभ ।
५८११—संक (शंक)	...	भय, डर,—संकोच, शर्म, लज्जा,—सहम,—संदेह, शक, शुबहा ।
५८१२—संकट	...	कष्ट, क्लेश, चपकुलिस, अँडस, विपत, आपद, मूर्च्छा ।
५८१३—संकन	...	डरों से, भयों से,—निशंक, निडर, निर्भय ।
५८१४—संकलप	...	प्रतिज्ञा, प्रण, पन, इरादा, विचार, मनसूबा ।

नं० शब्द		अर्थ
५८१५—संकर	...	मिश्रित, मिलाहुआ, गड़बड़, भिन्न भिन्न जाति के माता पिता से उत्पन्न,—कल्याणकर्त्ता ।
५८१६—संका (शंका)	...	संदेह, शक, शुबहा, भ्रम,—डर, सहम, भय, खुटका ।
५८१७—संकास (संकाश)		तुल्य, सम, समान, बराबर ।
५८१८—संकुल	...	पूर्ण, भरा हुआ, बिलकुल, पूरा, समस्त ।
५८१९—संकोच	...	लाज, लज्जा, शर्म, सकुच, हया,—न्यूनता, कमी, तंगी, घटी ।
५८२०—संख(शंख)	...	कम्बु, दर, नाकूस, एक प्रकार का जलजन्तु ।
५८२१—संग	...	साथ, मेलजोल, सोहबत ।
५८२२—संगत	...	मेल, साथ, संग, सोहबत,—सिक्खों का गुरुद्वारा वा धर्मशाला ।
५८२३—संगम	...	मेल, मिलाप, मिलन, नदियों के मिलने का स्थान ।
५८२४—संग्रह	...	अंगीकार, स्वीकार,—इकट्ठ करना, बटोरना, एकत्र, जमा ।
५८२५—संग्राम	...	रण, युद्ध, समर, लड़ाई ।
५८२६—संगा	...	साथ, मेल-मिलाप, सोहबत, संग ।
५८२७—संगिन } संगिनि }	...	साथिन, सहचरी, सहेली, सखी ।
५८२८—संघ	...	समूह, ढेर, राशि ।
५८२९—संघट	...	सजोग, मेल-मिलाप ।
५८३०—संघरषन(संघर्षण)		रगड़, घस्सा, रगड़ा ।
५८३१—संघा	...	समूह, बहुतायत, झुंड ।
५८३२—संघात	...	समूह, संबंध,—भलीभाँति मारण, पूर्णतया नाश ।
५८३३—संहार	...	नाश, विनाश, प्रलय, लय,—एक नरक का नाम,—एक भैरव का नाम ।
५८३४—संछेप(संक्षेप)	...	सारांश, ख़ुलासा, मुख़्तसर ।
५८३५—संजम(संयम)	...	बंधन, ध्यान, समाधि, योग, इन्द्रिय-निग्रह, व्रतादि के पूर्व दिन के कर्तव्य, व्रत, नियम ।
५८३६—संजात	...	उत्पन्न, पैदा, निकला, जन्मा ।
५८३७—संड़सिन	...	जंबूरियों से, चिमटों से ।
५८३८—संत	...	साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्मात्मा ।
५८३९—संतत	...	निरन्तर, सर्वदा, सब दिन, सदा, हमेशा ।
५८४०—संतति	...	सन्तान, लड़केवाले, औलाद ।
५८४१—संता	...	साधु-जन, सत्पुरुष, संत, महात्मा, सज्जन,—भये भी ।
५८४२—संतान	...	लड़केबाले, बालबच्चे, आल औलाद ।
५८४३—संताप	...	दाह, जलन, दुःख, क्लेश, अन्तर-दाह ।
५८४४—संतोष	...	तृप्ति, सबूरी, सब्र, क़नाअ़त ।
५८४५—संदेस (संदेश)		संदेसा, समाचार, पैग़ाम, अहवाल ।
५८४६—संदेह	...	अनिश्चय, भ्रम, खुटका, शक, शुबहा ।
५८४७—संदोह	...	समूह, ढेर, राशि, हजम ।
५८४८—संध	...	जोड़, दरार, दर्ज, मध्य, मेल ।

नं० शब्द		अर्थ
५८४९—संध्या	...	प्रात-मध्याह्न-सायंकाल-दिन और रात की संधि, द्विजातियों का नित्य का कर्त्तव्य कर्म्म ।
५८५०—संध्याबंदन	...	द्विजातियों का नित्य का कर्त्तव्य कर्म ।
५८५१—संधाने	...	जोड़े, चढ़ाये, निशाने पर लगाये ।
५८५२—संधि	...	जोड़, मेल, दर्ज, दरार, शिगाफ़, मध्य, बीच ।
५८५३—संपति / संपदा	...	धन, दौलत, रुपया पैसा, ऐश्वर्य, विभव ।
५८५४—संपन्न	...	संयुक्त,—धनी, मालवर, धनवान् ।
५८५५—संपाती	...	एक गीध का नाम, जटायु का बड़ा भाई ।
५८५६—संपादन	...	निर्माण, बनाना, कथन ।
५८५७—संपुट	...	कली,—डिब्बा, डिबिया,—मुँहबन्द, दो बराबर की वस्तुओं का निःसंध मेल ।
५८५८—संबल	...	राहख़र्च, तोशा, कलेवा, जलपान,—पूर्ण बल ।
५८५९—संवाद	...	परस्पर की बातचीत, जवाब सवाल, प्रश्नोत्तर, परस्पर की वार्त्ता ।
५८६०—संबुक	...	एक जलजन्तु, घोंघा ।
५८६१—संभल	...	एक ग्राम का नाम,—चैतन हो, चेत कर, होशियार हो ।
५८६२—संभव	...	उत्पन्न, जायमान, जन्मा हुआ,—होने योग्य, मुमकिन ।
५८६३—संभार / संभारा	...	बोझ, पूर्ण बोझ,—संभाल, हुशियार हो, चेत कर,—संभाला, बचा लिया, चेता, चेत किया ।
५८६४—संभावित	...	होने-योग्य, मुमकिन ।
५८६५—संभु (शंभु)	...	शिव, महादेव, हर, शंकर ।
५८६६—संभूत	...	उत्पन्न, जन्मा हुआ, पैदा ।
५८६७—संमत	...	एकमत, एकराय, अनुकूल, मुआफ़िक,—सलाह, राय ।
५८६८—संयुग	...	मेल, सामना, मुक़ाबिला, लड़ाई, युद्ध, संग्राम, समर ।
५८६९—संयोग	....	भलीभाँति, मेल-मिलाप, मुलाकात, जोड़ ।
५८७०—सँवारी	...	सजी हुई, शृंगारित, बनीठनी, सजाई, बनाई, शृंगारित की ।
५८७१—संसय(संशय)	...	संदेह, भ्रम, शक, शुबहा ।
५८७२—संसर्ग	...	संगति, साथ, मेल, संयोग, सम्बन्ध, स्पर्श, लाग, लगाव, संपर्क ।
५८७३—संसार	...	जगत्, विश्व, दुनियां ।
५८७४—संसृति	...	विश्व, संसार, जगत्, दुनिया,—जन्ममरण, आवागमन ।
५८७५—संहर्ता	...	हरण करनेवाला, छीन लेनेवाला, नाश करनेवाला, मार डालनेवाला ।
५८७६—संहार	...	नाश, विनाश, लय, प्रलय ।
५८७७—साँई	...	प्रभु, स्वामी, मालिक, ईश्वर ।
५८७८—साँग	...	एक प्रकार का शस्त्र, बरछी, भाला, शक्ति, शूल ।
५८७९—साँच	...	साँच, सत्य, सच्चा, यथार्थ, ठीक ठीक, वाजबी ।
५८८०—साँझ	...	सायंकाल, सन्ध्या समय ।

नं० शब्द		अर्थ
५८८१—सांत (शान्त)	...	स्थिर, अचंचल, निश्चल, सौम्य, संतुष्ट ।
५८८२—सांति (शान्ति)	...	स्थिरता, सन्तोष, निरुपद्रव, सौम्यता, निश्चलता ।
५८८३—साँधा	...	मिलाया, साना, घोला ।
५८८४—साँवर	...	साँवला, श्यामल, श्यामवर्ण, काले रंग का ।
५८८५—साँसति	...	दंड, पीड़ा, कठिन, व्याकुलता, कठोर दंड ।
५८८६—सिँगरौर	...	शृंगवेरपुर ।
५८८७—सिंगार	...	सजावट, रचना, बनाव, आभूषण, वस्त्र, सजावट की वस्तु ।
५८८८—सिंगारा	...	सजा, बनाया, रचना की, भूषित किया, सँवारा ।
५८८९—सिंघल	...	एक उपद्वीप का नाम ।
५८९०—सिंचावा	...	छिड़काया, छिड़काव कराया, तर कराया, भिगवाया ।
५८९१—सिंधु	...	समुद्र, वारीश, उदधि, समुद्र ।
५८९२—सिंधुर	...	हस्ती, गज, हाथी ।
५८९३—सिंसिपा	...	सरीफ़े का वृक्ष, सीसों का वृक्ष ।
५८९४—सिंह	...	शेर, बाघ,—श्रेष्ठ ।
५८९५—सिंहासन	...	राजाओं के बैठने की चौकी, देवताओं के बैठने की चौकी, श्रेष्ठ जनों के बैठने की चौकी, तख़्त, गद्दा, गादी, उच्चासन ।
५८९६—सींक	...	सींख, तृण, तिनका, तिनुका ।
५८९७—सींचत	...	तर करता है, भिंगाता है, छिड़कता है,—छिड़कते ही ।
५८९८—सींचि	...	तर करके, सींच के, भिगो कर, छिड़क कर, आर्द्र करके ।
५८९९—सींची	...	भिंगोई, तर करी, छिड़की, आर्द्र करी ।
५९००—सींव	...	सीमा, हद, सिवान, मर्यादा, छोर, नोक, किनारा, अन्त्य, परिणाम ।
५९०१—सुन्दर	...	प्रिय, दर्शनीय, देखने योग्य, अच्छा, बढ़िया, ख़ूबसूरत, रूपवान् ।
५९०२—सुन्दरताई	...	सौन्दय, सुन्दरता, लावण्य, ख़ूबसूरत ।
५९०३—सुन्दरी	...	सुन्दर स्त्री, सलोनी स्त्री, ख़ूबसूरत स्त्री, रूपवती स्त्री, स्त्री ।
५९०४—सृंग (शृङ्ग)	...	सींघ,—शिखर, पर्वत की चोटी ।
५९०५—सृंगवेरपुर / शृङ्गवेरपुर	...	सिंगरौर, एक ग्राम का नाम ।
५९०६—सौंदर्य	...	सुन्दरता, रूप, लावण्य, ख़ूबसूरती ।
५९०७—सौंपि	...	सिपुर्दकर के, सौंप कर, ज़िम्मे कर के, अधिकार में दे कर ।
५९०८—सौंह	...	सौं, शपथ, किरिया, सौगन्द, क़सम,—सामने, मुक़ाबिल ।
५९०९—सौंहैं	...	अनेक शपथ, सौगंदे, क़समें,—साम्हने से, मुक़ाबिल में, सम्मुख से ।

ह

५९१०—हुई	...	नाश की, मारी, मार डाली, हनी,—यह,—हैं ।
५९११—हए	...	नाश किये, मारे, हने, मार डाले,—यह, यहा ।
५९१२—हकरावा	...	बुलवाया ।
५९१३—हटक	...	रोक, डाँट, मनाही, रुकावट ।
५९१४—हट्ट	...	दुकान, हाट, रास्ता, मुहाना ।
५९१५—हठ	...	ज़िद, ज़बरदस्ती, जबरई, ज़ोरावरी ।

नं० शब्द		अर्थ
५९१६—हठि	...	ज़िद कर के, हठ से, ज़बरदस्ती से, ज़ोरावरी से, जबरई से।
५९१७—हत	...	मारा, नष्ट किया,—मार, नाश कर दे।
५९१८—हति	...	मार कर, नष्ट कर के, बिगाड़ कर, तोड़ कर।
५९१९—हते	...	मारे, नष्ट किये,—मारने से, नाश करने से, बिगाड़ने से,—रहे, थे।
५९२०—हथवासहु	...	डाँड़े उठाओ, डाँड़ रोको, डाँड़ा थाँभो।
५९२१—हन	...	मार, मार डाल, प्राण हरण कर।
५९२२—हनत	...	मारता है, मारते हो, मारते हुए।
५९२३—हनहिँ	...	मारते हैं, नाश करते हैं।
५९२४—हनि	...	मार कर, नष्ट कर के।
५९२५—हनुमत्, हनुमान्	...	अंजनी-नंदन, पवन-पूत, राम-दूत, महावीर, वानरश्रेष्ठ।
५९२६—हनू	...	ठोढ़ी, ठुड्डी, चिबुक।
५९२७—हनुमंत	...	हनुमान्, केशरी-किशोर, मारुती।
५९२८—हने	...	मारे, मारने से,—बजाये, बजाने से।
५९२९—हम	...	मैं का बहुवचन, हम लोग,—अहंकार।
५९३०—हय	...	अश्व, तुरंग, तुरग, वाजी, घोड़ा।
५९३१—हयगृह, हयशाला	...	अश्वशाला, घुड़साल, अस्तबल।
५९३२—हये	...	मारे, हने, मार डाले, मार गिराये,—मारने से, मार डालने से।
५९३३—हयो	...	मारा, हना, मार डाला।
५९३४—हर	...	महादेव, शिव, शंकर,—चुरा ले, छीन ले,—खेत जोतने का हल।
५९३५—हरगिरि	...	कैलाश पर्वत।
५९३६—हरत	...	लेता है, छीनता है, चुराता है,—लेते ही, छीनते ही, चुराते ही,—लेते भये, छीनते हुए, चुराते हुए।
५९३७—हरति	...	लेता है, छीनता है, चुराता है।
५९३८—हरद	...	हरदी, हलदी।
६९३९—ह्रद	...	ताल, गहरा तालाव, बड़ा भारी तालाव, वह सरोवर जो पर्वतों में स्वतः पृथ्वी फट कर बन जाता है।
५९४०—हरनी	...	हर लेनेवाली, नाश करनेवाली, चुरा लेनेवाली, ज़बरदस्ती छीन लेने-वाली, चोरी करनेवाली,—हिरनी, मृगी।
५९४१—हरष(हर्ष)	...	आनंद, सुख, प्रसन्नता, खुशी।
५९४२—हरषत	...	प्रसन्न होता है, आनंदित होता है, सुखी होता है।
५९४३—हरषाहीँ	...	प्रसन्न होते हैं, हर्ष को प्राप्त होते हैं, खुश होते हैं।
५९४४—हरासू	...	दुःख, शोक, हताशा, नाउमेदी, निमानापन।
५९४५—हरि	...	राम, कृष्ण, विष्णु,—वानर, घोड़ा, सिंह, मयूर, कोकिल, हंस।
५९४६—हरिचन्द, हरिश्चन्द	...	सत्य युग के एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

नं० शब्द		अर्थ
५९४७—हरिजाना } हरियान }	:	विष्णुयान, विष्णु की सवारी, वैनतेय, गरुड़ ।
५९४८—हरित	...	हरे रंग का, हरा,—चुराया हुआ, छीना हुआ ।
५९४९—हरिय	...	लेना चाहिए, हर लेना चाहिए, चुरा लेना चाहिए, छीन लेना चाहिए, झटक लेना चाहिए ।
५९५०—हरिलेहीं	...	हर लेते हैं, छीन लेते हैं, चुरा लेते हैं ।
५९५१—हरी	...	हरित-वर्णा, हरे रंग की,—छीन ली, चुरा ली, झटक ली, चुराई, छीनी,—बानर, विष्णु ।
५९५२—हरीसा	...	कपिराज, सुग्रीव ।
५९५३—हरु	...	हर ले, लेले, छीन ले, चुरा ले,—हलका, हलुक, सुबुक ।
५९५४—हरुआई	...	हलकापन, हरुवई, हलकई, सुबुकता, सूक्ष्मता ।
५९५५—हलधर	...	हल को धारण करनेवाले, बलदेवजी, दाऊजी, संकर्षण-भगवान् ।
५९५६—हलराई	...	बालकों को उछाल कर, झोका देकर, (बच्चों को खिलाने की स्त्रियों की एक रीति को हलराना कहते हैं) ।
५९५७—हलोरे	...	लहरें, जल के हलकोरे, हलरे,—बटोरे, समेटे ।
५९५८—हवाल	...	अहवाल, हाल, समाचार ।
५९५९—हवि	...	हव्य, यज्ञ की खीर, खीर, यज्ञ का प्रसाद ।
५९६०—हस्त	...	कर, पाणि, हाथ ।
५९६१—हहरि	...	घबरा कर, चौक कर, भयचक हो कर ।
५९६२—हा	...	खेद, दुःख, नाश ।
५९६३—हाट	...	दुकान, बाज़ार, ग्राम का बाज़ार जो प्रायः आठवें दिन लगता है ।
५९६४—हाटक	...	कंचन, कनक, सुवर्ण, स्वर्ण, हेम, जातरूप, सोना ।
५९६५—हाटकलोचन	...	हिरण्याक्ष दैत्य, हिरण्यकशिपु का भाई, प्रह्लाद का चाचा ।
५९६६—हाड़	...	हड्डी, अस्थि ।
५९६७—हाथ	...	हस्त, कर, पाणि, दस्त ।
५९६८—हानि	...	नुक़सान, हर्जा, घटी, टोटा, नाश ।
५९६९—हाय	...	दुःख, क्लेश, निःश्वास, ठंडी साँस,—पीड़ापूर्ण शब्द ।
५९७०—हार	...	माला, पुष्पमाला, चन्द्रहार, सोने का रत्नजटितमाल गले में पहिरने का भूषण विशेष,—पराजय, थकावट ।
५९७१—हारइ	...	हार जाय, पराजित हो, आशा छोड़ दे, ना उमेद होवे, थक जाय ।
५९७२—हारि	...	हार कर, पराजित हो कर, निराश हो कर, थक कर ।
५९७३—हारी	...	हार दी, पराजित हो गई, थक गई,—हर लेनेवाला, चोर, ठग, डाँकू, ले लेनेवाला ।
५९७४—हास	...	हँसी, हँसनि, प्रसन्नता, ठिठोली, दिल्लगी, मुसकान ।
५९७५—हास्यरस	...	कविता के ९ रसों में से एक जिस के पढ़ने वा सुनने से हँसी आवे—मसखरापन, ठिठोल बाज़ी, दिल्लगी, गप ।
५९७६—हासा	...	हास्य, हँसी, प्रसन्नता, हँसन ।

नं० शब्द		अर्थ
५९७७—हाहाकार	...	शोक, त्राहि त्राहि, शोक वा कष्ट का कोलाहल शब्द ।
५९७८—हि	...	निश्चय, दृढ़ ।
५९७९—हिकरई	...	हिकरता है, पीड़ा से कहरता है।
५९८०—हिकरि	...	कराह कर ।
५९८१—हित	...	प्यार, मित्रता, प्रेम, उपकार, भलाई,—नातेदार, सम्बन्धी, मित्र,—लिए, वास्ते, अर्थ, निमित्त,—कल्याण, भला ।
५९८२—हितकारी	...	कल्याणकर्त्ता, भला करनेवाला, हितू, प्रेमी, मित्र, बंधु ।
५९८३—हिम	...	पाला, शीत, ठर, सरदी,—एक ऋतु का नाम जो अगहन-पूष में होती है ।
५९८४—हिमउपल	...	बनौर, ओला, वर्षा के पत्थर ।
५९८५—हिमकर	...	निशाकर, शशि, चन्द्रमा ।
५९८६—हिमवत् हिमालय	...	हिमाचल ।
५९८७—हिय हिया	...	हृदय, हिरदा, हिया, मन ।
५९८८—हिये	...	हृदय में, हृदय से, मन से, मन में ।
५९८९—हिसिषा	...	बरोबरी, मुक़ाबिला, चढ़ा-ऊपरी ।
५९९०—ही	...	हृदय, हिय, हिया, मन, अन्तःकरण ।
५९९१—ही के	...	हृदय के, अन्तःकरण के, मन के ।
५९९२—हीना	...	हीन, रहित ।
५९९३—हीरा	...	एक श्वेत रत्न, पवि, वज्र ।
५९९४—हुटकि	...	ठोकर मार कर, ठुकरा कर ।
५९९५—हुति	...	आहुति,—रही, थी,—पारी, वारी,—संती, बदले, एवज़ में ।
५९९६—हुनर	...	कारीगरी, दस्तकारी, चतुराई, शिल्पविद्या ।
५९९७—हुने	...	होम किये, हवन किये, भस्म किये, जला दिये, अग्नि में डाल दिये,—हवन करने से, जला देने से ।
५९९८—हुमगि	...	कूद के, उछल कर, उमंग के साथ ।
५९९९—हुलस्यो	...	उत्साहित हुआ, अभिलषित हुआ, प्रसन्न हुआ, उछला, उमंग को प्राप्त हुआ।
६०००—हुलसी	...	उत्साहित हुई, प्रसन्न हुई, उमगी, उछली, अभिलषित भई ।
६००१—हुलास	...	उत्साह, उमंग, अभिलाष, मन का उछाल, प्रसन्नता, हर्ष, उद्वेग ।
६००२—हुलासी	...	उत्साहित करी, उद्वेगित की, उमगाई ।
६००३—हुलासू	...	उमंग, हुलास, उद्वेग, प्रसन्नता, हर्ष ।
६००४—हूहा	...	प्रसन्नता का शब्द, बानरों के आनन्द का शब्द ।
६००५—हृदय	...	हिय, हिया, अन्तःकरण, हिरदा, मन, दिल ।
६००६—हृदयेश	...	अन्तः करण का स्वामी, मन का स्वामी, चन्द्रमा,—अन्तर्यामी, ईश्वर ।
६००७—हृदिर	...	हृदय का, मन का, हार्दिक ।
६००८—हेति	...	ह इति, हाय यह, हाय इतना ।

नं० शब्द		अर्थ
६००९—हेती	...	प्रेमी, हितू, हितकारी, मित्र, बन्धु, नातेदार, बिरादरी ।
६०१०—हेतु / हेतू	...	कारण, सबब, अर्थ, निमित्त, वास्ते, लिए, अर्थ से, मतलब से, वजह ।
६०११—हेम	...	सुवर्ण, कंचन, सोना ।
६०१२—हेराई	...	खो गई, हेराय गई, जाती रही, ग़ुम होगई,—खो जाय, ग़ुम हो जाय,—खो जाती है ।
६०१३—हेरि	...	देख कर, खोज के, ढूँढ़ कर, तलाश कर के ।
६०१४—हेला	...	खेल, क्रीड़ा, दिल्लगी,—गोहार ।
६०१५—हेली	...	हे अली, हे सखी,—बुला कर, गोहराय कर ।
६०१६—होइ	...	होवे, होजावे, हो जाता है ।
६०१७—होई	...	होता है, होजाता है, होवे ।
६०१८—होती	...	होजाती,—रहती ।
६०१९—होते	...	रहे, थे, रहते थे, वर्त्तमान थे ।
६०२०—होनी	...	होनहार, भावी, होतव्यता, भव्य, भवितव्यता ।
६०२१—होब	...	होना, होगा ।
६०२२—होम	...	यज्ञ, हवन ।
६०२३—होसि	...	तू हो, तू होगा ।
६०२४—होहि	...	होवे,—होता है ।
६०२५—होहिं	...	होवे, होते हैं, होजाते हैं ।
६०२६—हँकरावा	...	बुलवाया ।
६०२७—हँकारी	...	बुलाई, बुला कर, बुलाई हुई ।
६०२८—हँस	...	एक पक्षी जो जल में मिले हुए दूध को अलग से निकाल लेता है,—एक प्रकार के साधु,—श्रेष्ठ,—सूर्य ।
६०२९—हँसति	...	हँसती है, प्रसन्न होती है,—हँसी करती है, परिहास करती है ।
६०३०—हँसब	...	हँसना, प्रसन्न होना, परिहास करना ।
६०३१—हँसहिँ	...	हँसते हैं, हँसे, प्रसन्न हों ।
६०३२—हँसा	...	हँस दिया, प्रसन्न हुआ,—हंस,—सूर्य,—एक साधु जाति, यति विशेष ।
६०३३—हँसाई	...	हँसी, परिहास,—निंदा, अपयश ।
६०३४—हँसि	...	हँस कर, प्रसन्न हो कर ।
६०३५—हँसिहँहिँ	...	हसेंगे, परिहास करेंगे, बदनामी करेंगे ।
६०३६—हँसी	...	प्रसन्नता, परिहास, दिल्लगी ।
६०३७—हाँक	...	आवाज़, शब्द, गोहार, बुलाने का शब्द, लम्बी आवाज़,—चलाव, बढ़ाव, रिँगाव ।
६०३८—हाँकहु	...	चलाओ, बढ़ाओ, रेंगाओ,—शब्द भी, आवाज़ भी, गोहार भी ।
६०३९—हाँती	...	मारी, नाश करी, मार डाली ।
६०४०—हाँसी	...	हँसी, दिल्लगी, प्रसन्नता, ठिठोली ।

नं० शब्द		अर्थ
६०४१—हिंडोरा	...	पलना, डोल, झूला।
६०४२—हिँस	...	हींस, हैंस, एक जंगली वृक्ष।
६०४३—हिंसक	...	मार डालने वाला, घातक, हिंसा करनेवाला।
६०४४—हिंहिंनाहीं	...	हिनहिनाते हैं, हिहिनाते हैं, घोड़े प्रसन्नता का शब्द करते हैं।
६०४५—हींचे	...	दबोचे, खींचे, सिकोड़े, बटोरे।



डा पं । प्रयंनाथ
मिसाइम
काप
दी कै अंतस
हैधर अपर मिल
कलकाता =
पीर कंड

ॐ [illegible]

दर्पणी) सीन्दूर

आभीर / गोप

यवन / मलीछि जाती

किरात / वन चर गुजर जाती

